श्रीमती काफे

समरेश बसु •

श्रीमती काफे

पहली बात तो यह है कि श्रीमती काफे कोई नामी-गिरामी रेस्तोरां नहीं है। फिर भी इसकी कई विशेषताएँ हैं। इन विशेषताओं ने इसे विशेष बना दिया है। मानो श्रीमती काफे के साथ एक परम्परा जुड़ी हुई है। यह परम्परा हमारे राष्ट्रीय जीवन की धूपछाँही झिलमिलाहट की है।

श्रीमती काफे उपन्यास है। इसकी कथा और इसके पात्र इसके असली उपकरण हैं। अगर ये यथार्थ हुए तो इनका स्रोत ढूंढ़ने पर जो इतिहास सामने आ जाता है, वह उपन्यास में भी गौण नहीं है। *वह किसी भी उपन्यास में गौण नहीं होता।*

जैसे हम सारे विश्व को रंगमंच कहते हैं, वैसे श्रीमती काफे भी मानो एक रंगमंच है। इसका क्षेत्र विस्तृत नहीं है। घटनाएँ अनेक हैं। यहीकारण है कि कथा को घिसी-पीटी लीक से इसका मार्ग थोड़ा अलग बन गया है। अगर यह मार्ग किसी को पसन्द आया तो सार्थक है।

फिर कह रहा हूँ कि श्रीमती काफे कोई विशेष रेस्तोरां नहीं है, इसलिए अगर इसके आईने में कोई अगर प्रतिविम्ब देखता है तो उसकी जिम्मेदारी लेखक की नहीं है। सभी पात्र लेखक की कल्पना से उपजे हैं।

—समरेश बसु

श्रीमती काफे

•

सन् १९२२ ई० का वर्णन। वसंत भी गर्मी में तब्दील होने लगा है। सारा देश मानो राख का विशाल ढेर बना हुआ है। विलायती कपड़ों की होली जलाये जाने से राख का यह ढेर है। ज्यादा खुलासा करके कहा जा सकता है कि राष्ट्रीय आंदोलन की चिता बुझ चुकी है, लेकिन उसकी राख हर सूबे हर जिले में बिखर गयी है। उसने पूरे देश को अपनी हलकी भूरी परत में समेट लिया है। पता नहीं चलता कि उस राख के नीचे आग छिपी है या नहीं। इसके अलावा जगह-जगह खून के धब्बे भी नजर आते हैं।

नये युग की शुरुआत में इधर कई बरसों के अन्दर जो विचित्र और असंभव लगने वाली घटनाएँ घटीं, अब वे सपनों की तरह लगती हैं। मानो नयी उम्र की भोली-भाली लड़की को कोई सीमाहीन मैदान में छोड़ कर भाग गया है। नूपुर और बाँसुरी के स्वर सुनाई नहीं पड़ते। सिर्फ चैत का पागल पवन उत्तर से दक्षिण तक पूरे वातावरण में असह्य आर्तनाद भर रहा है।

बारडोली में कांग्रेस वर्किंग कमेटी नया राग छेड़ चुकी है। उसने जनता के कंठ में नया स्वर भर गया है। सारा देश एक व्यक्ति के नेतृत्व में आ चुका है। वह व्यक्ति हैं गाँधी जी। देश उनकी उँगली के एक इशारे का इन्तजार कर रहा है। उन्होंने सविनय अवज्ञा आंदोलन वापस लिया है। उन्होंने देखा कि वे जिसे जगाने चले थे, वह तो सोया हुआ सिंह है। वह अहिंसा नहीं समझता।

लेकिन बारडोली का राग विवाह के हर्षित वातावरण में मानो विषाद बन कर आया। उसी के साथ हवा में भर गया वह आर्तनाद जिसने पूरे माहौल को बेमजा कर दिया।

बारामत के परगना हाकिम की कचहरी। कचहरी के तीन हिस्से हैं। यानी, इकमंजिली इमारत के तीन टुकड़े हैं। तीन कमरों में इजलास लगता है। एक नंबर कमरा सब-डिवीजनल मजिस्ट्रेट का है। दो नंबर कमरे में आनरेरी मजिस्ट्रेट बैठते हैं। तीन नंबर कमरा दोनों के लिए है। फिर एक तरफ मजिस्ट्रेट साहब का पुलिस विभाग है। परगना की हवालात भी यहीं है।

कचहरी के मैदान के एक किनारे बार लाइब्रेरी है। वहां चोगा-चपकन पहने ज्यादातर वकील और मुख्तार ऊँघ रहे हैं। कई लोग आपस में बात करने लगे हैं तो दो-चार जने आँखों में ऐनक लगाये कागजात देख रहे हैं। नामी-गिरामी !

बाबू का वही पुराना ठाट है। उम्र के कारण उनके गाल पिचक गये हैं। वे हमेशा की तरह नारियल के हुक्के का जोर-जोर से कश लेते हुए हिलते दाँतों से पान चबा रहे हैं।

हाकिम का लंच टाइम खतम हो चला है, लेकिन पूरी कचहरी मानो अब भी झपकी ले रही है।

कचहरी के एक किनारे रेलवे लाइन है। उस लाइन से अप बनगाँव लोकल ट्रेन धड़धड़ाती निकल गयी। दूसरे किनारे सुनसान जेसोर रोड निढाल पड़ा विशाल अजगर सा लग रहा है। चैती पवन के झकोरों से साखू, सेमल और अमलतास के पेड़ों में हल-चल मची हुई है। कुछेक की डालियों में लाल फूलों के गुच्छे ऐसे काँप रहे हैं जैसे लाल-लाल अंगारों से लपटें निकल रही हों। फूलों के उन्हीं गुच्छों की ढेर सारी परछाइयाँ जहाँ-तहाँ जमीन पर ऐसे कुलबुला रही हैं, जैसे वनवासी लड़कियाँ झुंड बना कर नाच रही हों।

लोनी हवा के झोंके रुक-रुक कर ऐसे चल रहे हैं, जैसे व्यथित धरती रह-रह कर आह भर रही हो। हवा के संग गर्द-गुबार भी खूब उड़ रहे हैं, जिससे लोग परेशान हैं। बीच-बीच में सूखी पत्तियाँ भी उड़ रही हैं, और उड़ कर आँखों से ओझल हो रही हैं। मानो वे पत्तियाँ पवन की गुमनाम पातियाँ हों। कैदियों से भरी हवालात के पास पेड़ पर चिड़िया बोल रही है — कुहू ! कुहू !

कचहरी ऊँघ रही है। बातचीत, सलाह-मशवरा, कानाफूसी, वादी-प्रतिवादियों और गवाहों की भीड़, सब अपनी-अपनी जगह पर हैं। फिर भी पूरी कचहरी मानो ऊँघ रही है। पूरा माहौल उनींदा है। मुंशी लिख रहे हैं, लेकिन कलम पर उनकी पकड़ ढीली है। बैंगनी-फुलौरी की दुकानों और होटलों के स्टूलों पर लोग बैठे हैं। वे सब ग्राहक हैं, खा चुकने के बाद थोड़ा सुस्ता रहे हैं।

सड़क के एक किनारे कई बैलगाड़ियाँ खड़ी हैं और दूसरे किनारे लगभग एक दर्जन घोड़ागाड़ियाँ। घोड़ागाड़ियाँ कतार में खड़ी हैं। उन गाड़ियों के जानवर भी ऊँघ रहे हैं और उनके मालिक भी।

एक बैलगाड़ी पर पड़े परदे में से कोई बहू गरदन निकाल कर झाँक रही है। वह भले घर की बहू लगती है। उसकी नाक में बुलाक पड़ा है। हो सकता है वह वादी हो, नहीं तो प्रतिवादी। लेकिन वह कौतूहल से कचहरी देख रही है। हवालात के बरामदे में कुछ मुलजिम खड़े हैं। उनके हाथों में रस्सी पड़ी है। उनको देख कर उस बहू के चेहरे पर अनायास मुस्कराहट आ गयी। लेकिन क्यों, यह शायद उसी को पता नहीं है। एक तरफ कुछ गँवार-अधगँवार लोग खड़े हैं। वे भी उन मुलजिमों को देख कर आपस में हँसते हुए कुछ बोल रहे हैं।

उधर होटल की बेंच पर कचहरी का कोई चपरासी सो रहा है। होटल के पिछवाड़े से एक बिल्ली आ कर बेखटके उस चपरासी की खोपड़ी पर से एक नंबर अदालत में चली गयी। वहाँ वह हाकिम की कुर्सी पर सिमट-सिकुड़ कर बैठी। उस

अदालत की कुर्सी पर कभी वंदे मातरम् के रचयिता बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय बैठते थे। दीवार पर उनका आयल पेंटिंग लगा है। बिल्ली की हरकत देख कर मानो उस चित्र के बंकिम बाबू के चेहरे पर हँसी की झलक दिखाई पड़ी। कहीं उन्हें कमलाकांत की बिल्ली का किस्सा तो याद नहीं आ गया?

किसी तरह झपकी नहीं जाती। बौराते आम की भीनी सुगंध के संग अवैध देशी शराब के गोदाम से आ रही तीखी मादक गंध पुन-मिल रही है। इससे इनसान और जानवर दोनों मतवाला हो रहे हैं। जेसोर रोड के किसी छोर से बैलगाड़ी का कोई गाडीवान देहाती गाना गा रहा है। हवा में उसका हलका सुर सहरा रहा है।

हर जगह झपकी है। देशभर में झपकी है। पिछले साल मुकदमों की तादाद बहुत कम हो गयी थी। किसी को वैसी उम्मीद नहीं थी। बहुत से मुकदमे तो अदालत ने वादी-प्रतिवादी की गैर-हाज़िरी पर या दोनों की रजामंदी से खारिज कर दिये थे। मानो एक साल के लिए लोग झगड़ा-झंझट करना भूलने लगे थे। हालांकि यह दीवानी और फौजदारी के मुकदमों की बात हो रही है। फिर भी पिछले साल कानून-व्यवस्था बनाये रखने में सरकार को साँस लेने की फुर्सत नहीं मिली थी। उसी की हलकी गूँज मानो अब भी मधुर लय के बीच टूटे तार की बेसुरी आवाज़ की तरह बनी हुई है। लेकिन चैत का उदास आकाश गहरा नीला है। वेदना का विलंबित सुर रुक-रुक कर चलने वाली चैती हवा के झोंकों की तरह बेताल नहीं है।

ठन् से एक का घंटा बजा। हाकिम की गाड़ी शोर मचाती हुई आयी। कचहरी ने अँगड़ाई ली। इधर से, उधर से हुजूर को सलाम किया जाने लगा। आँखों के इशारे से बात होने लगी। मौका देख कर वकीलों ने पीछे से मुवक्किलों के आगे हाथ फैलाया। कलम घसीटते हुए मुंशियों ने उधर कड़ी निगाह रखी। कहीं सिर को न गंदा कर दें, इस डर से लोग हाथ उठा-उठा कर पेड़ों पर बैठी चिड़ियों को भगाने लगे। बैलगाड़ी के परदे में से सिर निकाल कर यह बहू कचहरी का रंग-ढंग देख रही है। विस्मय से उसकी आँखें बड़ी-बड़ी हो गयी। आखिर यही हाकिम हैं, यानी 'मजिस्टर', यानी न्याय करने वाला काजी!

हाकिम की कुर्सी पर बैठी बिल्ली कटघरे के नीचे से खिसक गयी।

इजलास बैठने के दो-चारमिनट बाद नाजिर के इशारे पर कचहरी के प्यादे ने बाहर निकल कर हाँक लगायी — "म-हादेव हालदार हा-जिर!"

एक बार दो बार नहीं, प्यादे ने गला फाड़-फाड़ कर चार-पाँच बार आवाज़ लगायी।

नलिनी मुख्तार उछल कर खड़े हो गये। वे नारियल का हुक्का हाथ में लिये भाग कर मुंशी के पास पहुँचे। वहाँ उन्होंने देखा कि भूरे रंग का गलाबंद सूती कोट पहने महादेव हालदार अब भी सो रहे हैं। उनकी मोटी छड़ी उनके सिरहाने के पास रखी है। नलिनी बाबू पहले मुंशी पर बिगड़े, "तुम्हारी भी अकल की बलिहारी है। अभी तक इस सज्जन को जगा नहीं सके?"

मुंशी ने कहा, "जी हाँ, मैंने जगाया था। लेकिन वे नाराज होने लगे।"

नलिनी मुख्तार ने मुँह बना कर कहा, "हाँ ! नाराज होने लगे !"

फिर नलिनी बाबू ही जल्दी-जल्दी महादेव हालदार को जगाने लगे, "अरे महादेव भाई, उठो। उधर पुकार हो रही है।"

महादेव हालदार उठे। चिड़ियों ने उनके सिर को और कोट को दो-चार जगह गंदा कर दिया था। उधर ध्यान न दे कर हालदार बाबू ने कहा, "जाने से क्या फायदा होगा नलिनी भैया ? क्या पता चलना कुछ बाकी है ?"

नलिनी बाबू बोले, "क्या कहते हो ? आज मुक़दमे का फैसला है और तुम यहाँ होते हुए भी कचहरी के मैदान में बैठे रहोगे ?"

शायद नलिनी मुख्तार को अब भी आशा है, लेकिन महादेव हालदार बोले, "फिर क्या करूँ ?"

फिर अपनी बात में रुखाई का आभास हुआ तो जरा रुक कर हालदार बाबू बोले, "विश्वास करो, तुम्हारी मुख्तारी में मुझे रत्ती भर शक नहीं है। लेकिन अब सोच रहा हूँ कि अपनी बदनामी नहीं होने दूँगा। लोग मुझे मुकदमेबाज कह कर बदनाम करते हैं। उनका भी कहना सही है। थोड़ी सी जमीन के पीछे बहुत समय खराब किया, लेकिन अब नहीं। इसी मुक़दमे के पीछे बीबी गयी और दो-दो बेटों का क्या हो रहा है, वह भी तुमसे छिपा नहीं है। कभी उनकी खोज-खबर भी नहीं ली। ।ल९ बस, आज से — "

चपरासी ने फिर हाँक लगायी — "महादेव हालदार हा-जिर !"

हँस कर महादेव बोले, "हालदार मर गया है !"

नलिनी बाबू ने कहा, "नहीं भाई, तुम्हें चलना पड़ेगा।"

भौंहें सिकोड़ कर महादेव हालदार छड़ी के सहारे खड़े हो गये। वे थोड़ी देर हाकिम के इजलास की तरफ देखते रहे। फिर बोले, "चलो, चलता हूँ। बहादुर लोग अपनी हार की बात अपने कानों से सुनना पसंद करते हैं। सुन ही लूँ हाकिम की लफ्फाजी।"

आधे घंटे बाद हाकिम फैसला सुनाने लगे। महादेव हालदार ने जेब से अठन्नी निकाल कर चुपके से चपरासी की हथेली पर रख दी। हालांकि ऐसा करना न्यायालय की अवमानना है, लेकिन अक्सर ऐसे मौके पर न्यायाधिकारी अपनी आँखें बंद कर लेते हैं।

महादेव हालदार ने चपरासी से कहा, "लो भई, जल्दी करो। मुझे जाना है।"

"जी, आपका फैसला सुनाया जा रहा है।"

महादेव हालदार ने धीरे से मुस्करा कर कहा, "मेरा फैसला ? इस दुनिया में कौन किसका फैसला कर सकता है भाई ?"

यह बात महादेव हालदार ने कुछ ऐसे लहजे में कही कि हाकिम की टेढ़ी

नाराज निगाह एक बार उनकी तरफ कौंध गयी। इजलास के बाहर खड़े दो-चार लोग मुँह दाब कर हँसने लगे।

महादेव हालदार के इस मुकदमे मे प्रतिवादी एक विलायती कंपनी है। उस कंपनी के आइरिशमैन इंजीनियर भी कचहरी में मौजूद हैं। उन्होंने आश्चर्य से कंपनी के इस पुराने दुश्मन को देखा। इंजीनियर के साथ कंपनी का एक बाबू, कांत चक्रवर्ती भी खड़ा है। वह भी महादेव हालदार की हिम्मत देखने लगा।

कचहरी के नाजिर ने भारी आवाज मे कहा, "आप लोग चुप रहिए!"

हाकिम ने फैसला पढ़ कर सुनाया। अदालती अंग्रेजी में जो फैसला सुनाया गया, उसका लुब्बे लुबाब मतलब यही है कि महादेव हालदार मुकदमा हार गये हैं।

अब महादेव हालदार बाहर आये।

महादेव हालदार कभी खूबसूरत जवान थे। उनको देखने मे पता चलता है। जैसी लंबी काठी, वैसा तगड़ा बदन। रंग उजला सांवला। बड़ी-बड़ी आँखों मे मानो की हलकी झलक है। निगाह तेज, लेकिन उदास है। बड़ी-बड़ी भूरी मूँछों के सिरे ऐंठे हैं। आम आदमी ऐसे शख्स को सहसा छेड़ने की हिम्मत नहीं करता। माथा चौड़ा। बाल काले-सफेद मिले-जुले है, जिससे उनमें से भूरी चिकनाहट झलकती है। लेकिन बाल अब भी जड़ से मजबूत हैं, यह देखने से पता चलता है। यह सब होते हुए भी महादेव हालदार के चेहरे की विशेषता उनकी कटार जैसी ऊँची नाक है। लोग मजाक मे कहते हैं कि बगल से देखने पर हालदार बाबू के चेहरे का आधा हिस्सा उस नाक की वजह से दिखाई नहीं पड़ता। नाक तो नही, मानो खड़ी दीवार है। इसी लिए पड़ोसियों ने उनका नाम रखा है — नक्कू हालदार।

मुकदमा जीतने वाली कंपनी के लोगों को कचहरी वालो ने घेर रखा है। सब को अपना-अपना पावना लेना है — इनाम, बख्शिश वगैरह, वगैरह। महादेव हालदार देख रहे हैं कि नलिनी मुख्तार कहाँ हैं। नलिनी मुख्तार की पैरवी से महादेव हालदार उन्नीस मुकदमे हार चुके हैं। नलिनी मुख्तार किसी भी मुकदमे में हालदार बाबू को नहीं जिता सके। यह कलंक नलिनी बाबू के माथे पर है। इसलिए आज वे हुक्का सहित गायब हैं।

लेकिन मुंशी मे उतनी हया-शर्म नहीं है। उसने पूछा, "कहिए हालदार बाबू, जा रहे हैं?"

महादेव हालदार बोले, "हाँ, जाना तो है; लेकिन तुम्हारे मुख्तार साहब कहाँ गये?"

सिर खुजला कर मुंशी ने कहा, "जी, शायद वे पाखाना गये है।"

"इस समय?"

यह कह कर महादेव हालदार ने देखा कि नलिनी मुख्तार का हुक्का नही है। उन्होंने शक की निगाह से मुंशी की ओर देख कर पूछा, "क्या हुक्का ले कर ही पाखाना

गये हैं ? खैर, तुम उनसे कहना कि हुक्के पर गंगाजल छिड़क लें। हाँ, यह लो, तुम्हारा और उनका पावना।"

महादेव हालदार ने कोट के जेब से रुपया निकाल कर गुंणी के हाथ पर रखा, फिर वे घोड़ागाड़ियों की कतार के पास जा कर खड़े हुए।

कोचवान चिल्ला रहे हैं — "आइए बाबू, नीलगंज, बारिकपुर, टीटागढ़, खड़दा।"

फिर पलटकर वही लोग चिल्लाने लगे — "इछापुर, श्यामनगर, भाटपाड़ा।"

घोड़ागाड़ी या बैलगाड़ी के अलावा यहाँ और कोई सवारी नहीं मिलती। रेलगाड़ी से दमदम जंक्शन हो कर एक बार दक्षिण जा कर फिर उत्तर को लौटने में बड़ा लंबा चक्कर पड़ जाता है। इसलिए उत्तर को जाने वाले लोग अक्सर चार जने मिल कर शेयर में घोड़ागाड़ी कर लेते हैं और उसी से बैरकपुर स्टेशन जाते हैं। कानूनन घोड़ागाड़ी से चार लोगों को चलना चाहिए, लेकिन कानून की परवाह कौन करता है ? कभी-कभी एक गाड़ी में दस-बारह लोग बैठ जाते हैं।

महादेव हालदार आम तौर पर शेयर की घोड़ागाड़ी से चलते हैं। सभी कोचवान उनको पहचानते हैं। लेकिन आज महादेव हालदार ने सोचा कि चार पैसे बचाने के लिए हिस्सा-बाँट नहीं, पूरी गाड़ी में मैं अकेले जाऊँगा। उन्होंने यह भी सोचा कि साझे की गाड़ी में जितने लोग चलते हैं, वे सभी जानते हैं कि महादेव हालदार मुकदमेबाज नहीं, फरेबी भी हैं।

सलाह-मशवरा और राय देने में महादेव हालदार जितने होशियार हैं, उनकी बातों में उतना दम भी होता है। उनकी राय और सलाह से बहुतों को बहुत कुछ मिला है। लेकिन महादेव हालदार को अपनी जिंदगी में कुछ नहीं मिला। मुकदमेबाजी में वे कभी जीत का मुँह नहीं देख सके। इसलिए आज उनको फालतू लोगों की बकबक और मुफ्त में राय लेने वालों से वाहवाही सुनने की इच्छा नहीं हुई।

इस कचहरी में पान-बीड़ी बेचने वाले से ले कर कौन ऐसा है जो महादेव हालदार को नहीं जानता ? लेकिन महादेव हालदार ने आज किसी से बात नहीं की। घर लौटने की जल्दी उनको अंदर ही अंदर सताने लगी है।

कचहरी का काम-काज वैसे ही चलता रहा जैसे अब तक चलता आया है। बारासात परगना के कोने-कोने से रोज यहाँ लोगों का आना-जाना लगा रहता है। कभी तो यह जगह करीब-करीब पूरे जिले के लिए तीर्थ के समान थी। लेकिन बैरकपुर में कचहरी खुल जाने से इस कचहरी का उतना दबदबा नहीं रहा। फिर पहले के जैसे लोग भी कहाँ रहे ? इसलिए महादेव हालदार जिये या मरे, यहाँ किसी का कुछ नहीं बनेगा-बिगड़ेगा।

फिर भी महादेव हालदार ने एक बार पलट कर देखा। कहीं कुछ नया नजर नहीं आता। हाई कोर्ट से ज्यादा मुफस्सल की ये कचहरियाँ उनको आकृष्ट करती हैं। मुकदमेबाजी के पीछे उनको सदर और मुफस्सल की सभी कचहरियों की खाक छाननी

पड़ी है। मुफस्सल की कचहरियों में उनको घर का सा वातावरण मिला है। उनको ऐसा लगा है कि यह कोई कचहरी नहीं, बल्कि घर की बैठक है।

फाटक के ऊपर शेर घात लगाये बैठा है। शेर के सिर के *ठीक ऊपर अमलतास* के लाल-लाल फूल दहक रहे हैं। हवा के झोंके से जब वे फूल काँप उठते, तब ऐसा लगता कि उनकी आग से शेर जल मरेगा। पत्तों से खाली सेमल पास ही खड़ा है। मानो वह घरबार से फ़ुरसत पा चुका मनमौजी बावरा हो। लेकिन आज उसने भी अग्नि-जामा पहन रखा है।

सारा संसार ऊँघ रहा है, मानो यह भी थका हुआ शराबी हो। कहीं किसी एकांत में पेंडुकी बोल रही है। नहीं तो सारा माहौल मानो अलसाया हुआ निढाल पड़ा है। हाँ, लालमुनिया और गौरैया जैसी चिड़ियों को चैन कहाँ? उनकी चहक-फुदक बच्चों की लुकाछिपी जैसी लग रही है।

महादेव हालदार गाड़ी में बैठे।

गाड़ी पश्चिम को गयी गिट्टी वाली सड़क से शोर मचाती हुई चली। महादेव हालदार बाहर सिर किये गाड़ी के दोनों घोड़ों को देखते रहे। वे समझ गये कि दोनों घोड़ों में दोस्ती कम है। यह उससे बिदक रहा है तो वह इससे! महादेव हालदार ने सोचा कि पता नहीं उनमें क्या झगड़ा है और कौन उस झगड़े का फैसला करेगा? कचहरी में मुकदमा ले जाना भी उन जानवरों के वश की बात नहीं है। वे मामले-मुकदमे का क्या समझते होंगे? वे जो कुछ समझते हैं, वह है कोचवान हाकिम का चाबुक!

पशुओं के मुकदमे के मुद्दे से फ़ारिग़ हो कर न जाने महादेव हालदार का मन कब अपने बिन घरनी के घर और लड़कों के इर्द-गिर्द चला गया, यह उन्हीं को पता नहीं। आज वे उनके बारे में सोचने लगे। इसका यही कारण है कि उनको अपनी असहाय स्थिति सालने लगी है। ऊपर से बेलौस बने रहने के बावजूद उनके सीने में न जाने कैसा चक्का एक-एक मिनट में लाखों चक्कर घूमने लगा। वह चक्का कैसा है, यह भी उनकी समझ में नहीं आता। यह भी पता नहीं चलता कि उस चक्के की सही रफ्तार क्या है। इसी लिए महादेव हालदार अंदर से अशांत होते हुए भी ऊपर से शांत लग रहे हैं।

पैतृक मकान के अलावा और भी कुछ है, ऐसा नहीं लगता। खैर, जिस जमीन के लिए मुक़दमे में आज महादेव हालदार की हार हुई, उसका दाम उनको मिल जायेगा। गंगा किनारे जहाँ साहब लोगों ने कारखाना खोला है, वहाँ बहुतों की जमीन के साथ उनकी भी थोड़ी सी जमीन थी। लेकिन उनकी जिद थी कि मैं अपनी जमीन नहीं छोड़ूँगा। इससे उस कंपनी के लोगों को कम परेशान नहीं होना पड़ा। उनका बहुत सारा काम रुका रहा। अब कंपनी वाले भी महादेव हालदार को परेशान करने में पीछे नहीं रहेंगे। पहले उन लोगों ने जमीन का जो दाम देना चाहा था, अब वे उससे कम देंगे। खास कर कांत चक्रवर्ती जैसा आदमी जब उन लोगों के साथ है, तब

तो वैसा होगा ही। वह इतना खतरनाक आदमी है कि नक्कू हालदार की नाक पकड़ कर उसे नचा सकता है। फिर कन्हाई मुखर्जी जैसा टुच्चा जमींदार भी तो उस कंपनी का दोस्त है।

लेकिन वह बात नहीं है। महादेव हालदार को जमीन के बदले कंपनी से जो पैसा मिलेगा वह तो कर्ज चुकाने में ही खत्म हो जायेगा। जमीन के लिए मुकदमा लड़ने में उनको कर्ज लेना पड़ा था। जिस जेब से पैसा निकाल कर आज वे नलिनी मुख्तार को दे आये, वह एकदम खाली हो चला है। फिर भी वे खुशकिस्मत हैं कि लड़की की शादी हो चुकी है। पत्नी का श्राद्ध भी हो चुका है। ये दोनों काम उन्होंने खुद किये हैं। अब बचे हैं दो लड़के। बड़े का नाम नारायण है और छोटे का भजन। दोनों पढ़े-लिखे हैं। लेकिन नारायण तो एक तरह से इस संसार का मोह छोड़ चुका है। वह इस अभागे देश के लिए स्वदेशी आंदोलन में भाग लेने लगा है। महीना भर हुआ वह जेल से छूटा है। इसलिए एकमात्र भरोसा भजन का है। लेकिन वह भी बड़ा उद्दंड और बात-बात पर नाक सिकोड़ने वाला है। बाप से वह न जाने क्यों चिढ़ता है। शायद उसकी चिढ़ का कारण यही है कि बाप घर का ख्याल नहीं रखते। फिर बाप में शराब पीने की जबर्दस्त आदत है। यानी, उस शख्स ने कभी घर की तरफ ध्यान तो दिया ही नहीं, बल्कि उसे ऐसी जगह ला कर खड़ा कर दिया है जिसे अतल अँधेरी खाई का कगार कहा जा सकता है। लेकिन भजन नौकरी करना नहीं चाहता।

महादेव हालदार की आँखों के आगे अँधेरा छा चुका है। फिर भी उस अँधेरे में उनको भजन की दुकान दिखाई पड़ी। घर के सामने थोड़ी सी जगह में बाँस-बल्ली गाड़ कर भजन ने चाय की दुकान खोल ली है। आज डूबते महादेव हालदार को भजन का वही छोटा-मोटा धंधा तिनके का सहारा जैसा लगा। एकदम डूब जाने से पहले उनको पानी के नीचे थोड़ी सी कड़ी जमीन का आभास मिला।

गाड़ी बैरकपुर रेलवे क्रासिंग पार कर बायें स्टेशन की ओर मुड़ी। डूबते सूरज की रोशनी महादेव हालदार के परेशान चेहरे पर पड़ी। माथे पर पसीने की जमी बूंदें उस रोशनी में चमकने लगीं। उन्होंने कोचवान से कहा, "नंदी की दुकान चलो।"

चार्नक नाके की बगल से गाड़ी फिर पश्चिम की ओर मुड़ी।

तभी एकाएक महादेव हालदार के दिमाग में आया कि अगर किसी तरह भजन को मामले-मुकदमे की तरफ घसीटा जाय तो अब भी हाई कोर्ट में कम से कम तीन मुकदमों की अपील करने का मौका मिले। इसके अलावा आसपास कुछ ऐसी जमीनें महादेव हालदार की जानकारी में हैं, जिनको भजन थोड़ा-सा चालू बन कर अपने कब्जे में कर सकता है।

लेकिन भजन बड़ा अड़ियल है। वह दो पैसे कप चाय बेचेगा, लेकिन मुकदमेबाजी का रास्ता अख्तियार नहीं करेगा। मगर एक बात है, अगर उसकी शादी कर दी जाय और फिर उसकी बीवी के जरिये उसे इधर मोड़ा जाय तो काम बने। जोरू के आगे बड़े से बड़ा बहादुर भी अपना हथियार डाल देता है।

सड़क के दोनों किनारे लगे झाऊ और देवदार के पेड़ों से छन कर डूबते सूरज की लाल रोशनी महादेव हालदार के तमतमाये हुए चेहरे पर पड़ी। उनकी उत्तेजना कुछ ऐसी है जो भयानक दर्द से चीख पड़ने से पहले किसी के चेहरे पर दिखाई पड़ती है।

अचानक महादेव हालदार को अपनी पत्नी का चेहरा याद आया। भजन की माँ का चेहरा। भजन की माँ भी अपने असामान्य रूप और व्यक्तित्व से कभी महादेव हालदार को बाँध नहीं सकी। महादेव हालदार अपने दुर्निवार वेग से बढ़ते चले गये, और उनकी पत्नी पाँवों में महावर लगाये घर के कोने में बैठी अपने लाल होंठों को दबाये मुस्कराती रहीं। क्यों? शायद वे अपने आगे अपराजित थीं। फिर उसी तरह मुस्कराती और उदासीनता की नीरव घोषणा करती हुई वे इस दुनिया से चली गयीं।

महादेव हालदार के अधेड़ सीने में न जाने कैसी बाढ़ उमड़ आयी और उनके होंठ अपने आप हिलने लगे। उन्होंने मन ही मन भजन की माँ से कहना शुरू किया, अब मैं किसके पास रहूँगा? कौन मुझे देखेगा? मैंने कभी जिनकी परवाह नहीं की, आज मुझे उन्हीं के आगे भिखारी के समान हाथ फैला कर खड़ा होना पड़ेगा? एक मुट्ठी भात और एक लोटा पानी के लिए मैं दया का पात्र बन जाऊँगा? पता नहीं मेरे भाग्य में क्या है, लेकिन एक बात का मुझे संतोष है। तुम्हारी अजेय मुस्कराहट मेरे जीवन में अक्षय बनी रहेगी।

इतने में अचानक झपट्टा मार कर दक्षिण दिशा से हवा बह चली। मानो बंगाल की खाड़ी की उत्ताल तरंगें टूट-बिखर गयीं और चारों तरफ गरम खारा पानी फैल गया।

घोड़ागाड़ी नंदी की अंग्रेजी शराब की दुकान के सामने आ कर रुकी।

गोधूली की झिलमिल रंगीनी वातावरण में छा रही है। आसमान में दो तारे चमकने लगे। महादेव हालदार नंदी की दुकान से निकले। फिर उनकी घोड़ागाड़ी स्टेशन की ओर बढ़ कर बायें मुड़ गयी।

फिर भी थकावट दूर नहीं होती। महादेव हालदार की आँखों में सबको मानो मौरूसी पट्टा मिल गया।

बड़ी सड़क के पश्चिम किनारे दीमक चाटे बाँस और खपच्ची का कमरा। वह भी एक तरफ लटक आया है। मिट्टी के तेल का कनस्तर काट कर उससे छप्पर बनाया गया है। वह कमरा भी दो हिस्सों में बँटा हुआ है। आगे वाले हिस्से में टेबुल और चूल्हा हैं। पेटी काट कर उसकी लकड़ी से टेबुल बनाया गया है। चूल्हा तो मामूली है। चूल्हे पर चाय की केतली रखी हुई है। टेबुल पर कप और गिलास हैं। बाहर दो बेंचें पड़ी हुई हैं। वहाँ बैठ कर कई लोग चाय पी रहे हैं। देखने से लगता है, मिस्त्री वगैरह हैं।

उठा। लेकिन वह कितना विचित्र है। क्षण-क्षण वह चेहरा कितने ही रूपों में झलकने लगा। व्यक्ति एक, लेकिन चेहरे अनेक। एक-एक चेहरा मानो एकाएक उसे बेचैन करने लगा। पिता जी की बातों ने मानो उसके मन का छंद ही बदल दिया है। बार-बार उसके मन ने पूछा, वह कौन है ? वह कौन है ? अब पता चला कि भजन जैसे आदमी के मन के तार में भी वही साधारण सुर बँधा है। इसलिए शादी का नाम सुनते ही उसके मन की गहराई में इतना उछाह आ गया।

भजन ने बाहर अंधकार की ओर देखा। वह कविता लिखता है। लिखता ही कहना चाहिए। मासिक पत्र 'भारतवर्ष' में वह नियमित कविताएँ भेजता है, लेकिन उसकी कोई कविता अभी तक छापे के अक्षरों में सामने नहीं आयी। इस कारण उसके मन में अफसोस का अंत नहीं है। आजकल वह अपनी कविताएँ खुद ही पढ़ता है। इस समय भी उसके मन में एक कविता गुनगुना उठी।

लेकिन व्यवधान पड़ा। बाहर से किसी की आवाज सुनाई पड़ी — "चाय पिलाओ बाबू।"

भजन ने देखा कि कई जने आये हैं। उसने झटपट चाय बनाना शुरू करके पूछा, "कौन ? बंगाली हो क्या ? कितने जने हैं ?"

उस आदमी का नाम बंगाली है। वह रेलवे यार्ड में काम करता है और भजन का नियमित गाहक है। उसने कहा, "चार प्याली बनाओ। एक-एक पैसे की घुंघनी भी देना।"

"घुंघनी नहीं है।"

भजन ने उत्तर दिया। घुंघनी थी तो जरूर, लेकिन भजन के बाप महादेव हालदार ने आ कर उसमें से कुछ खाया और कुछ फेंका।

बाहर बैठे खरीदारों में भी यही बात हो रही है। महादेव हालदार को यहाँ आते जिन लोगों ने देखा है, वही लोग उनके बारे में आपस में बहुत धीरे-धीरे बात कर रहे हैं। वे फुसफुसा कर ऐसे बोल रहे हैं कि कहीं भजन न सुन पाये।

सिर्फ बंगाली की भारी आवाज सुनाई पड़ी। वह बात करता है तो ऐसा लगता है जैसे खांस रहा हो। उसने कहा, "भाग्य में घी खाना नहीं लिखा है तो कुप्पा खड़खड़ाने से क्या होगा ? दिन भर खट कर आया, सोचा कि भैया के यहाँ घुंघनी मिल जायेगी। लेकिन —"

इतना कह कर बंगाली चुप हो गया। उसके बिना इस तरह की बात मुश्किल से कोई कर पाता है। भजन जिन गुणों की कदर करता है, वे सब गुण बंगाली में भरपूर हैं। बंगाली में भी नाक सिकोड़ने की आदत है। छोटी जात का है तो क्या हुआ, बात बड़ी करता है। यानी, बंगाली अपने को जात की सीमा में बांधने को तैयार नहीं है।

एक बार इस टोले के तिलक ठाकुर ने न जाने क्यों गुस्से में आ कर बंगाली से कह दिया था, "छोटी जात के इन लोगों को बात-बात पर खड़ाऊँ लगानी चाहिए।"

तिलक ठाकुर का इतना कहना था कि बंगाली ने उसे दोनों हाथों से ऐसे उठा लिया था जैसे कोई बड़ा आदमी किसी छोटे बच्चे को हवा में टांग लेता है। फिर उसने तिलक ठाकुर के पांव से एक पाटी खड़ाऊँ निकाल ली थी। शायद वह तिलक ठाकुर को जमीन पर पटक ही देता, लेकिन उसने वैसा नहीं किया था। उसने तिलक ठाकुर को धीरे से जमीन पर लिटा कर कहा था — अब बोलो बामन देवता, तुम्हारी ही खड़ाऊँ अगर तुम्हारी पीठ पर तोड़ूँ तो कौन देवता आ कर तुम्हें बचायेगा?

शायद तिलक ठाकुर के किसी देवता में इतनी हिम्मत नहीं थी। इसलिए तिलक ठाकुर बंगाली के उस सवाल का जवाब नहीं दे सका था। यह घटना भजन के सामने घटी थी। इसलिए उसी दिन से बंगाली से भजन की दोस्ती पक्की हो गयी थी।

बंगाली ने फिर पूछा, "भैया, थोड़ा-सा परसाद भी नहीं मिलेगा?"

भजन ने बरतन की तरफ देखा। थोड़ी-सी घुंघनी अब भी पड़ी है। उसने कहा, "बस, परसाद ही समझ लो। थोड़ी-सी पड़ी है। बेचने लायक नहीं है। अगर वही खाना चाहते हो तो यों ही खा लो।"

बंगाली ने कहा, "वही बहुत है भैया। भूख के मारे पेट दुखने लगा है।"

तभी एक गाहक ने कहा, "आज का पैसा बाकी रहा भैया।"

एक क्षण के लिए भजन की भौंहें सिकुड़ गयीं। उसने कहा, "हिसाब करते समय तो कहोगे कि इतना कब खाया? इसलिए खाते रहो, लेकिन हिसाब याद रखना।"

तभी सामने वाले कारखाने में नौ के घंटे बजे। भजन चौंक पड़ा। सब को खाना देने के बाद वह सड़क पर आ कर खड़ा हो गया। उसने इधर-उधर देखा। सुनसान सड़क। दूर से रेल इंजन की छुक-छुक आवाज सुनाई पड़ रही है। उसी के संग कुलियों की हांक भी है। शायद कोई भारी सामान हटाया जा रहा है। अँधेरा। अँधेरे में तेज हवा के झोंके। पूरब तरफ एक जगह बहुत-से पेड़ हैं। उन्हीं के पीछे से पुराना दुमंजिला मकान दिखाई पड़ता है। इस समय वह मकान ऐसा लग रहा है कि कोई विशालकाय विचित्र जानवर घात लगाये दुबक कर बैठा हो।

दुकान के बाद थोड़ी-सी जमीन है। उसी के बाद भजन का मकान है। रेलिंग से घिरा बरामदा। न जाने कौन रेलिंग पकड़ कर बरामदे में खड़ा है। सड़क की थोड़ी सी मद्धिम रोशनी बरामदे के कोने में पड़ी है। उस रोशनी में गोरे हाथ का थोड़ा हिस्सा और सुडौल ठुड्डी का एक किनारा दिखाई पड़ रहा है। शरीर का शेष हिस्सा अँधेरे में छिपा है।

बकुल माँ खड़ी हैं। भजन की बकुल माँ। भजन की माँ की सहेली। एक दूसरे को बकुल फूल दे कर ये दोनों सहेलियाँ बनी थीं। भजन और नारायण का पालन-पोषण बकुल माँ ने ही किया। वे इसी गाँव की बहू हैं और कम उम्र में विधवा हो गयी थीं। भजन की माँ की वे सिर्फ सहेली ही नहीं थीं, बल्कि दोनों के लिए दोनों के प्राण हवा में काँपते कमलपत्र पर जलबिंदु के समान थे। दोनों युवतियाँ एक-दूसरी पर जान छिड़कती थीं। दोनों ही सुंदरी थीं। उन दोनों सुंदरियों को ले कर गाँव-टोले के लोगों

में चर्चा का अंत नहीं था। वे चर्चाएँ अच्छी और बुरी दोनों थीं। दोनों ही सुंदरी थीं, शायद इसी लिए लोग उनके बारे में चर्चा करते हुए थकते नहीं थे।

उन दोनों सहेलियों में से आज एक का पति नहीं है तो दूसरी अपने पति को पीछे छोड़ कर दूसरी दुनिया में चली गयी हैं। बकुल मां के बाल-बच्चे नहीं हैं। इसलिए सहेली की मृत्यु के बाद उसके बच्चों की परवरिश का भार बकुल मां ने अपने ऊपर लिया था। इस कारण भी लोगों ने न जाने कितनी बातें कही थीं। गांव-टोले में बकुल मां का चलना-फिरना दुश्वार हो गया था। लेकिन बकुल मां उससे घबड़ाने वाली महिला नहीं थीं। लोगों ने महादेव हालदार के नाम के साथ उनका नाम जोड़ कर उनको बदनाम किया, लेकिन उन्होंने बदनामी की परवाह नहीं की। सहेली के बच्चों को उन्होंने पाल-पोस कर बड़ा किया। आज भी इस घर में रसोई से ले कर सब कुछ उन्ही के जिम्मे है। इसके अलावा भजन की दुकान के लिए घुंघनी और चॉप भी वही बनाती हैं। उनका भी कौन है और किनको ले कर उन्हें रहना है!

एक जमाना ऐसा भी था कि बकुल मां शरम के मारे महादेव हालदार के सामने अपना सुंदर मुखड़ा खोल नहीं पाती थीं। आखिर सहेली का पति ठहरा न! फिर बकुल मां महादेव हालदार से डरती भी थीं। महादेव हालदार मुकदमेबाज और उजड्ड हैं। फिर जिस मर्द की नाक उतनी बड़ी हो, उससे कोई औरत कैसे बात करे! एक बार [illegible]ल मां ने भजन की मां से पूछा था — तू उतनी बड़ी नाक कैसे संभालती है?

इस पर भजन की मां ने भी मजाक में कहा था — मर्दों की नाक औरतों के आगे दबी रहती है।

आज वह शरम नहीं है, और न वह घूंघट काढ़ना। अब वह डर भी नहीं रह गया है। महादेव हालदार रोज घर में आते हैं, खाना खाते हैं और अपनी दिवंगत पत्नी की बकुल सहेली को देखते है। महादेव हालदार को यह महिला अपने ही घर की कोई लगती है। महादेव हालदार को ठीक से पता नहीं चलता कि उनके परिवार की कोई औरत खो गयी है।

लेकिन बकुल मां का रिश्ता बस लड़कों से है।

भजन ने देखा कि बकुल मां खड़ी हैं। शायद वे सोच रही हैं कि कब दोनों लड़के खाना खाने आयेंगे। दोनों लड़के खाना खा लेंगे तो बकुल मां अपने घर जायेंगी।

सड़क की ओर भजन ने देखा। उत्तर तरफ से कोई चला आ रहा है। उसके पीछे भी कोई है। विपरीत दिशा से यानी दक्षिण तरफ से भी एक आदमी आ रहा है। यह कारखाने की दीवाल के बगल से निकला था। वे सभी लोग भजन की चाय की दुकान में पहुंचे।

भजन को फिर दुकान में आना पड़ा।

कृपाल और हीरेन आये हैं। कृपाल दत्त और हीरेन नियोगी। दोनों ही भजन की उम्र के हैं। रथीन भी आया है। वह उम्र में दो-तीन साल छोटा है। आज तक वह मैट्रिक भी पास नहीं कर सका। स्वदेशी आंदोलन के पीछे वह दो-तीन साल से

दौड़-धूप कर रहा है। इसलिए हर वक्त उसे छिप कर घर से निकलना पड़ता है। किसी से मिलना-जुलना भी उसका एकदम बंद है। उसके घरवालों ने तो भजन की चाय की दुकान को प्रतिबंधित स्थल घोषित कर रखा है। फिर भी अगर वह कभी वहाँ दिखाई पड़ गया तो घर में उसकी अच्छी-खासी मरम्मत भी की गयी। इस लिहाज से कृपाल और हीरेन अब वयस्क हैं।

आध पाव सुंघनी भरा डिब्बा और लत्ता जेब में डाले कृपाल और हीरेन लगभग सारा समय बाहर घूमा करते हैं। उनकी सरस्वती भारतमाता की दुर्दम मूर्ति धारण कर उनको कालेज के क्लास-रूपी दुर्भेद्य कारागार से बाहर निकाल लायी है। पिछले साल वे दोनों नारायण के साथ जेल में थे। वे सभी नारायण के मित्र या शिष्य हैं। इसके अलावा उनको भजन का नियमित ग्राहक भी कहना चाहिए। लेकिन भजन के कहने के मुताबिक उनके हिसाब में उन लोगों के हिसाब से ज्यादा गड़बड़ी रहती है जो हिसाब करना ही नहीं जानते। भजन उनसे कहता है — अभी से दूसरों का पैसा देने में यह हाल है तो बाद में तुम लोग क्या करोगे? तब तो और ज्यादा तोताचश्म बन जाओगे।

कृपाल ने अपनी नाक के छोटे-छोटे छेद में एक-एक चुटकी में ढेर सारी सुंघनी डाल कर कहा, ''अरे भाई भजन, लाओ थोड़ी-सी चाय। बगैर चाय के मजा नहीं आता।''

एक बार में कृपाल कितनी सुंघनी लेता है, यह जब तक कोई नहीं देखता विश्वास नहीं करता। नाक में सुंघनी डाल लेने पर उसके बोलने का ढंग विचित्र हो जाता है। 'न' और 'म' का उच्चारण करना उसके वश का काम नहीं रहता।

भजन अपने बड़े भाई की बात सोच रहा है। अब तक तो बड़े भाई नारायण को आ जाना चाहिए। खैर, भजन चाय बनाने लगा।

रथीन बड़ा चंचल है, चुप नहीं बैठ सकता। ऐसा सिर्फ उम्र के कारण नहीं, यह उसकी आदत भी है। उसकी आँखें हर समय धधकती रहती हैं, न जाने उनमें क्या उन्माद भरा है। कृपाल और हीरेन काफी हद तक शांत हैं; किसी हद तक निर्विकार और निश्चिन्त। उनमें स्वाभाविक रूप से जो बात दिखाई पड़ती है, वह है नेताओं की सामान्य ललक। इस इलाके के जन-साधारण की श्रद्धा और विस्मयभरी आँखों से सतत अपने आपको देखते रहने से उनकी यह हालत हो गयी है। अब वे अपने को किसी हद तक नेता समझने लगे हैं। इससे उनकी छाती बार-बार फूल उठती है, और सिर भी ज्यादा ऊँचा लगने लगता है। इस कारण उनमें एक प्रकार का संकोच भी आ गया है, और आम लोगों के प्रति विशेष कृतज्ञता-बोध भी जगा है। लेकिन यह सब उनके सचेतन मन में है या नहीं, समझ में नहीं आता। फिर भी बहुत कुछ कर लेने की आकांक्षा उनके मन में घर कर गयी है।

चाय पी लेने के बाद बीड़ी सुलगा कर बंगाली ने कहा, ''हाँ बाबू, अब जरा देश का हाल-चाल सुनाओ, सुन कर घर जायें।''

२

वंगाली ने इस ढंग से यह बात कही कि मानो कोई गाँव-घर में रामायण या महाभारत सुनाने के लिए किसी से आग्रह कर रहा हो। हीरेन नियोगी आज शुरू से ही वंगाली पर नाराज है। वंगाली शराव पी कर आया है और हीरेन को वह पता चल गया है। उसने कहा, "देखो वंगाली, देश की बात सुनना चाहोगे तो तुम्हें पवित्र हो कर वैठना पड़ेगा। स्वराज तो हमारे-तुम्हारे हाथ में है। क्या तुमने वह कहानी नहीं सुनी ? राजा शिकार खेलने गये थे। वहीं वे कापालिकों के चक्कर में पड़ गये। कापालिक काली के आगे उनकी वलि देना चाहते थे। यह पता चलने पर राजा का होश उड़ गया। राजा वेहोश हो गये। तव देखा गया कि राजा के हाथ में एक उँगली नहीं है। देवी के आगे ऐसे आदमी की वलि नहीं दी जा सकती जिसमें कोई ऐव हो। याने, देवी-देवता की पूजा के काम आने के लिए वेऐव होना पड़ता है। देश की सेवा भी एक तरह की पूजा है। उसके लिए हमें भी वेऐव और अच्छे चाल-चलन वाला वनना पड़ेगा। गांधी जी ऐसे ही लोगों का इंतजार कर रहे हैं। हमारे लिए वेऐव वनने का मतलव है कि हमारे चरित्र में कोई खोट न हो। हमारा चरित्र हमारी असली चीज है। अगर उसमें कोई ऐव हो तो भारतमाता की पूजा संभव नहीं है।"

इतना कह कर हीरेन चुप हो गया।

चैत की अँधेरी रात मानो एकवारगी ठहर गयी। हीरेन की वातों से कृपाल आश्चर्यचकित है। रथीन का भी लगभग वही हाल है। वंगाली और उसके साथी मूर्खों की तरह मुँह वाये हीरेन की तरफ देखते रहे।

हीरेन के भाषण से भजन को भी कम आश्चर्य नहीं हुआ।

वंगाली तो वेवकूफ वन ही चुका। उसने वैसा ही मुँह वना कर कहा, "चरित्तर-ओरित्तर क्या कह रहे हो भैया, समझ में नहीं आता। हम इतना जानते हैं कि हम गँवार हैं; और गँवारों में वहुत ऐव होते हैं। इसलिए जरा समझा कर वताओ।"

हीरेन तेज, लेकिन दवी आवाज में वोला, "तुम शराव पी कर आये हो वंगाली, इसलिए तुमने पाप किया है। तुम्हें शराव पीने की आदत छोड़नी पड़ेगी।"

वंगाली और उसके साथ के लोग एक दूसरे का मुँह देखने लगे। वे समझ नहीं सके कि अचानक यह कैसी वात होने लगी ! वंगाली ने थोड़ा जोर दे कर कहा, "मारा ! सव कुछ छोड़-छाड़ कर अव तुम लोग हमारी शराव के पीछे पड़ गये वावू ?"

यह सुन कर कृपाल कुछ कहने ही जा रहा था कि हीरेन वोला, "ऐसी वात करते तुम्हें शरम नहीं आती वंगाली ? सोच रहे हो कि शराव पी करके और वदमाशी करके इस देश को स्वाधीन वना लोगे ? इसी पाप के कारण आज हम पराधीन हैं।"

वंगाली ने विरोध किया और कहा, "क्या कह रहे हो वावू ? वदमाशी कैसी ? क्या हम सव वदमाश हैं ? वदमाशी करने के लिए न हमारे पास पैसा है न फुर्सत। वंगाली का शराव पीना अगर पाप है तो इस दुनिया में रोज उससे कितना वड़ा-वड़ा पाप हो रहा है, लेकिन उधर कोई नहीं देखता ! हम सालों के पेट में दाना नहीं है।

जोरू का झाड़ू खाते-खाते जान हलाकान है। इसी लिए हम दो घूंट शराब पी लेते हैं। वह भी कहते हो कि छोड़ दें? फिर तो हमसे नहीं होगा भइया।"

इतना कह कर बंगाली उठ खड़ा हुआ। उसके साथ के लोग भी खड़े हो गये। हीरेन का दिल दया और घृणा से भर आया।

हीरेन ने बंगाली और उसके साथियों की ओर देखा। [illegible] ये लोग निशाचर प्रेत जैसे लगे। उसने मन ही मन कहा — ये ही हमारे देश के लोग हैं। ये लोग स्वतन्त्रता का मतलब तक नहीं समझते, भले-बुरे का अन्तर नहीं जानते, जीवन को नहीं पहचानते और धर्म क्या है उनसे कोई सरोकार नहीं रखते। ये स्वयं तो कुछ नहीं कर सकेंगे। इन लोगों में राक्षसी प्रवृत्ति है। इसी प्रवृत्ति के डर से गांधी जी को बार-बार पीछे हटना पड़ा है। लेकिन ये ही हमारे देशवासी हैं। ये [illegible] कुछ नहीं करेंगे, बल्कि हमारे संयमित आंदोलन में बाधा डालेंगे। फिर भी यह विष को हमें पीना पड़ेगा और इस जंजाल को हटा कर हमीं को स्वराज लाना होगा।

अब हीरेन को बंगाली से कुछ कहने में संकोच होने लगा। कहीं उस गुंडे के हाथ अपमानित न होना पड़े।

लेकिन बंगाली को यह सब सोचने की फुरसत नहीं है। उसने जेब से पैसा निकाला और गिन कर भजन के हाथ में दिया। चलते-चलते वह अचानक पलट कर खड़ा हो गया और बोला, "चलें बाबू लोग! हमारी बात का बुरा मत मानना। हमने जो कुछ कहा, भूल जाना।"

इतना कह कर वे सब चले गये।

कृपाल बोला, "इसी रविवार को बैठ कर नारायन भैया से बात कर सा हीरेन, शराब की दुकानों पर धरना देने का प्रस्ताव पास हो जाना चाहिए।"

हीरेन को मानो आशा की किरण दिखाई पड़ी। उसने कहा, "ठीक कह रहे हो रथीन, कल से तुम स्कूली लड़कों से बात करना शुरू कर दो।"

उन लोगों की बातचीत के बीच नारायण हालदार आ पहुँचे। नारायण भजन के बड़े भाई हैं। वे देखने मे भजन जैसे हैं, लेकिन भजन की तीव्रता उनमे नही है। जिस तीव्र वेग के कारण भजन चंचल है, उसे मानो अपने मे समेट कर नारायण शांत बन चुके हैं। उनमें धीरता और स्थिरता दोनों हैं। उनकी आँखों की पुतलियाँ भूरी नहीं हैं और उन काली आँखों में स्निग्धता का वास है। वक्ष का रुद्ध दीर्घश्वास मानो दबा हुआ दर्द बन कर उनकी आँखों मे जा बसा है। फिर भी उन आँखों मे अद्भुत तीक्ष्णता, दृढ़ता और क्षुब्धता की झलक है। होंठो के कोनों मे विषादयुक्त मुस्कराहट का आभास हर वक्त देखा जा सकता है।

नारायण अकेले नहीं आये। उनके साथ और एक आदमी है [illegible] अंग्रेजी पोशाक में है। उसके सिर की टोपी माथे तक खिंची हुई है। उसके [illegible] दोनों आँखें हल्के अँधेरे में मानो जल रही हैं। उसके हाथ में मझोला सूटकेस [illegible] नज़र सबको देख लिया। नारायण ने धीरे से उससे कहा, "अन्दर [illegible]

फिर नारायण ने जरा ऊँची आवाज में भजन से कहा, "अरे भजन, हम लोगों को चाय पिला दो।"

लेकिन सब उस आगन्तुक को देखने लगे। तो यही वह आदमी है? एकबारगी वहाँ का वातावरण मानो सहम गया। विभीषिका की काली छाया चारों तरफ दिखाई पड़ने लगी। एकाएक वहाँ मौजूद हर कोई सावधान हो गया। मानो हरेक को याद आ गया कि यहीं कहीं आसपास परछाईं की भांति दुश्मन घात लगाये बैठे हैं। इसलिए होशियार हो जाओ!

इन दिनों यों ही देशभर में सरकार का दमन-चक्र लोगों पर कहर ढा रहा है। स्वराज और स्वाधीनता जैसे शब्दों को बड़ी सावधानी से जबान पर लाना पड़ता है। इन्हीं शब्दों ने विद्रोह का रूप धर कर ब्रिटिश सिंह को भयभीत और विक्षिप्त बना दिया है। इस हालत में यह घटना और भी भयानक है।

आगन्तुक कमरे के अन्दर गया तो भजन ने उसे बैठने के लिए पार्टिशन की आड़ में रखी टूटी चौकी की ओर इशारा किया। उसके बाद वह ऐसे मन लगा कर चाय बनाने लगा कि जैसे कुछ हुआ ही नहीं।

दबी उत्तेजना के कारण रथीन के चेहरे पर अजीब चमक आ गयी। उसकी आँखें चमकने लगीं। कृपाल और हीरेन भी कम उत्तेजित नहीं हैं, लेकिन उनकी खामोशी दूसरों को खलने लगी।

नारायण बोले, "रथीन, तुम स्टेशन का चक्कर लगा लो। कहीं किसी बात का शक हो तो फौरन आ कर खबर करो।"

लगा कि इस निर्देश ने रथीन को निराश कर दिया। वह यहाँ से हटना नहीं चाहता। अभी यहाँ जिस रहस्य पर से परदा हटाया जायेगा, उसे वह नहीं जान पायेगा। लेकिन नारायण भैया का आदेश है। सारे संसार की उपेक्षा की जा सकती है, लेकिन नारायण भैया के आदेश का उल्लंघन नहीं किया जा सकता।

अनुशासित सैनिक की तरह रथीन उठा और एक बार उस पार्टिशन की ओर निगाह डाल कर बाहर चला गया।

बाहर अँधेरा है। खामोशी है। लेकिन कोई अशरीरी जीवंत सत्ता मानो चारों तरफ विराजमान है। सिर्फ बकुल माँ उसी तरह खड़ी हैं। मानो पत्थर की मूर्ति हों, हिलतीं भी नहीं।

नारायण चुपचाप बकुल माँ की ओर बढ़ गये। फिर उन्होंने दबी आवाज में मानो अपने आपसे कहा, "आ गया है।"

बकुल माँ में जरा भी हरकत नहीं हुई। सिर्फ एक बेचैन सुरीली आवाज सुनाई पड़ी, "जरा होशियार रहना बेटा!"

उसके बाद नारायण लौटे और हीरेन व कृपाल को साथ लिये पार्टिशन की आड़ में चले गये।

भजन इस विचित्र और भयानक खेल का मात्र दर्शक बना रहा। फिर भी

उत्तेजना की लहर उसके सीने को छूने लगी। वह चाय बनाता जा रहा है, लेकिन उतनी चाय कौन पियेगा कोई नहीं जानता। शायद वह फेंकनी पड़ेगी। लेकिन भजन पर नशा-सा छाने लगा है। उसने टेबुल पर रखे लैम्प को जरा खिसकाया तो रोशनी की लकीर पार्टिशन के पीछे चली गयी। फिर उसने नारायण से पूछा, "गाना गाऊँ भैया ?"

और कोई समय होता तो नारायण हँस देते, लेकिन इस समय बोले, "फिर तो सुनने वाले जुट जायेंगे।"

बात सही है। भजन थोड़ा शर्मिन्दा हुआ। वह भौंहें सिकोड़ कर अँधेरे में न जाने क्या देखता रहा। शायद वह सोचने लगा कि अब क्या किया जा सकता है ?

पार्टिशन के पीछे आगन्तुक ने अपना सूटकेस खोला तो कमरे में अफीम की मादक गंध फैल गयी। वहाँ मौजूद लोग समझ गये कि सूटकेस मे गैर-कानूनी अफीम है। फिर ऊपर से एक पैकेट हटा कर आगन्तुक ने नीचे से एक पैकेट निकाला और नारायण को दिया।

नारायण ने वह पैकेट खोला तो उसमें से काले नाग की तरह दो चमकते हुए रिवाल्वर निकले। छह खानों वाले रिवाल्वर। एक बार घोड़ा दबाने पर एक गोली छूटती है तो दूसरी गोली उसकी जगह ले लेती है। इस तरह लगातार छह गोलियाँ चलायी जा सकती हैं। रिवाल्वर देख कर नारायण की शांत आँखें एकाएक अंगार की भाँति जलने लगी। होठों पर विषादभरी मुस्कराहट खिल गयी जिससे निष्ठुरता ही झलकी। मानो उन्होंने दुश्मन को देख लिया हो।

कृपाल और हीरेन न जाने क्यो हक्का-बक्का लगने लगे। कहना चाहिए कि वे घबड़ा गये। जो कुछ हो रहा है, उससे उन दोनों ने डर और बेचैनी का अनुभव किया। हालाँकि जेल से छूटने के बाद उन्ही दोनों ने नये सिरे से आंदोलन छेड़ने की बात सोची थी। उन लोगो ने सोचा था कि नारायण भैया हमे कोई रास्ता बतायेंगे। लेकिन नारायण भैया का रास्ता इतना भयानक होगा, यह उन लोगों ने कभी नहीं सोचा था।

हीरेन और कृपाल जिन्दगी मे पहली बार अपने सामने रिवाल्वर देख रहे हैं। लेकिन उन लोगो ने अपने राजनीतिक जीवन में कभी इस रास्ते पर आने की बात नही सोची।

आगन्तुक ने नारायण को और एक पैकेट दिया। इस पैकेट मे कारतूस हैं। उसके बाद उसने एक पत्र भी दिया। पत्र सफेद कागज मात्र है। लेकिन आग की आँच मे उस पर लिखावट साफ होने लगेगी।

अब आगन्तुक ने अपनी टोपी उतारी। अब उसका चेहरा साफ दिखाई पड़ा। वह चेहरा इस देश का नहीं है। नाक चपटी और आँखें छोटी-छोटी हैं। साँप की आँखों की तरह उन आँखों की दृष्टि भी अपलक है। टूटी-फूटी बंगला में उसने कहा, "मैं कलकत्ते जाऊँगा। अभी और माल छुड़ाना है।"

वह अफीम का स्मगलर है। पैसा कमाने के अलावा उसका और कोई

नहीं है। हथियार पाने के लिए क्रांतिकारी बडी आसानी से ऐसे लोगों के चक्कर में आने लगे हैं। दुनिया के हर कोने में ऐसे लोगों का आना-जाना लगा रहता है। विभिन्न देशों की सीमाएँ पार कर इनको अपना धंधा चालू रखना पड़ता है। इनके कारोबार का रास्ता जोखिम भरा और खूनी है। बात-बात पर खून-खराबा लगा रहता है। इसलिए इनका काम वीभत्स भी है। अफीम की तरह ये हथियार भी लाते हैं। इस काम में भी इनको कम मुनाफा नहीं मिलता।

भजन ने झटपट आगन्तुक को चाय का गिलास थमाया। आगन्तुक ने अंग्रेजी में धन्यवाद कहा।

नारायण ने पूछा, "आप फिर कब आ रहे हैं ?"

उसने दबी, लेकिन भारी आवाज में कहा, "आफ्टर थ्री मन्थ्स।"

याने, तीन महीने बाद।

भजन उसकी विचित्र उच्चारण वाली अंग्रेजी तो समझ गया, लेकिन ऐसा विचित्र स्वर उसने पहली बार सुना।

उसी समय रथीन लौट आया। उसने बताया कि कहीं किसी तरह के खतरे का अंदेशा नहीं है।

चाय पीते हुए आगन्तुक ने एकाएक मुस्करा कर कहा, "अरमनी पिस्टल्स, फिफ्टीन रुपीज इच, वेरी चीप। बट आफ्टर थ्री मन्थ्स।"

याने, तीन महीने बाद वह आरमीनियाई पिस्तौल सिर्फ पन्द्रह-पन्द्रह रुपये में दे जायेगा।

उसके बाद उसने पूछा, "बोट रेडी ?"

याने, नाव तैयार है ?

नारायण ने अंग्रेजी में उत्तर दिया, "हाँ। आप जिस रास्ते से आये हैं, उसी रास्ते से जायेंगे। अभी ज्वार आया है, आप दो घंटे में कलकत्ता पहुँच जायेंगे।"

आगन्तुक मुस्कराया। इससे उसकी नाक सिकुड़ कर मानो गायब हो गयी और आँखें बंद हो आयीं। वह टोपी पहन कर निकलने ही वाला था कि भजन ने अचानक दबी आवाज में उससे कहा, "साहब, तुम मुझे भी अपने काम में लगा लो।"

साहब फिर हँसा। अब उसकी नाक और आँखें एकदम गायब हो गयीं। सिर्फ उसकी बत्तीसी खिली रही, जो एक वहशी हँसी का नमूना पेश करने लगी। दूसरे ही क्षण साहब भजन की दुकान से निकल कर हवा के झोंके की तरह न जाने कहाँ गायब हो गया।

भजन ने नारायण से कहा, "भैया, अब आप लोग जाइए, मैं दुकान बंद करूँगा।"

नारायण ने कहा, "जरा रुक जाओ भाई, हमें जरा जरूरी बातें कर लेने दो।"

भजन ने नारायण को सिर्फ दुकान बंद करने का समय होने की याद दिलायी और कोई बात नहीं है। भजन इस मंडली का कोई नहीं है। अगर वह सचमुच एतराज करेगा तो नारायण को दूसरा अड्डा ढूंढ़ना पड़ेगा। लेकिन भजन ऐसा नहीं करेगा।

उसमें इन लोगों के बारे में जानने और इनकी बातें सुनने का कौतूहल है। इसके अलावा इस खतरनाक काम के लिए वह अपने भैया को और कहीं जाने की सलाह कैसे दे सकता है ?

नारायण के अंदर छिपी उत्तेजना की छाप उनके चेहरे पर है। अब उनके जीवन में नया सूर्योदय हो रहा है और वे एक नयी दुनिया में प्रवेश कर रहे हैं। उन्होंने अपने साथियों से कहा, "आज सिर्फ तुम्हीं तीन लोगों को बुलाया है। इसका कारण यह है कि अभी से इस काम में सबको खींचना ठीक न होगा। अब रुको, जरा यह पत्र पढ़ लूँ। भजन, लैम्प यहाँ रख दो और बाहर निगाह रखो।"

फिर लैम्प की चिमनी पर उस कागज को रखते ही उस पर भूरे रंग के छोटे-छोटे अक्षर उभड़ आये। पत्र में लिखा है—

वीर क्रांतिकारी !

आपके पास दो पिस्तौल भेज रहे हैं। साथ में एक सौ कारतूस भी है। बाद में और भेजेंगे, क्योंकि अभी पिस्तौल इकट्ठा किये जा रहे हैं। इसके पहले आपको दल की सभी बातें सूचित की जा चुकी हैं। अभी इन पिस्तौलों से क्रांतिकारियों को पिस्तौल चलाना सिखाइए। क्रांतिकारी बनने के इच्छुक हर व्यक्ति को क्रांति की दीक्षा दीजिए। इसके नियम तो आप जानते हैं।

आपको हमेशा याद रखना होगा कि हमारा एकमात्र उद्देश्य इस देश में रहने वाले एक-एक अंग्रेज के खून से धरती को लाल करना है। जब तक इस देश में एक भी अंग्रेज रहेगा तब तक हम अपने माँ-बाप, भाई-बहन और घरबार को भूले रहेंगे। हम मर सकते हैं, लेकिन देश को दुश्मनों से खाली करके रहेंगे।

अगले निर्देश की प्रतीक्षा कीजिए।

वंदे मातरम !

दल की केन्द्रीय समिति

चिट्ठी पढ़ना खत्म हुआ, लेकिन नारायण का गंभीर स्वर मानो तब भी हवा में गूंजता रहा। रथीन को देख कर लगा कि मानो लाल अंगारा धधक रहा हो। हीरेन का भी चेहरा तमतमाया हुआ है। उसे देखने से ऐसा लगा कि मानो वह बहुत देर से धधकती भट्ठी के सामने खड़ा हो। कृपाल विमूढ़ आँखों से उस पत्र को देखता रहा।

एक केटली ठंढी चाय नाली में बहा कर भजन बोला, "आज भाग्य में नुकसान ही बदा है। भैया, आप लोग पैसा दीजिए।"

नारायण ने भजन की बात पर ध्यान नहीं दिया। उन्होंने अपने साथियों से कहा, "तुम लोगों को तो दीक्षा दी जा चुकी है। हाँ, एक चीज अब भी बाकी है। तुम लोगों को अपने मन से भय को भगाना होगा।"

यह सुन कर सबने नारायण की ओर देखा। हीरेन और कृपाल की तरफ देख कर नारायण मन ही मन मुस्कराने लगे। वे समझ गये कि दोनों थोड़ा डर गये हैं।

उनमें साहस लाने के लिए नारायण ने रथीन को बुलाया, "रथीन !"

रथीन आ कर नारायण के सामने खड़ा हो गया। बलवान शरीर, अपलक कठोर दृष्टि और भिचे हुए होंठ। होंठों पर मूँछों की हलकी रेखा दिखाई पड़ने लगी है।

नारायण ने रथीन से कहा, "आज रात बारह बजे तुम्हें अकेले श्मशान में जाना पड़ेगा। जिस चिता पर बूढ़े हरी को जलाया गया था, उसके पास तुम अपने नाम का पहला अक्षर लिखोगे। बताओ, यह कर सकोगे ?"

भिचे हुए होंठों में से रथीन ने सिर्फ कहा, "हाँ भैया, कर सकूँगा।"

इतना कह कर रथीन ने नारायण को प्रणाम किया। नारायण ने उसे अपने सीने से लगा लिया। दोनों हृदयों की धड़कनें मानो आपस में गुप्त बातें करने लगीं। नारायण की बड़ी-बड़ी काली आँखों में न जाने कैसी रोशनी चमक उठी। मन ही मन उन्होंने न जाने किससे कहा — रथीन को मैंने तुम्हारे हाथों सौंप दिया, अब तुम्हीं उसकी रक्षा करना !

भजन मुँह फेरे खड़ा है। उसे अपने सीने के अन्दर न जाने क्यों बार-बार मरोड़ महसूस होने लगी। अकारण ही उसके सीने में दर्द होने लगा। बार-बार उसका मन बस यही कहने लगा — मैं अकेला हूँ, मैं कंगाल हूँ। मेरे लिए इस संसार में स्नेह या प्यार कुछ भी नहीं है।

थोड़ी देर बाद भजन बड़ी जल्दी-जल्दी चूल्हे का आग गिरा कर कप-प्लेटें धोने लगा। चूल्हे से निकाले गये अंगारे धीरे-धीरे बुझते रहे।

नारायण फिर बोले, "हीरेन और कृपाल, तुम लोग भी ऐसी परीक्षा के लिए तैयार रहना।"

फिर नारायण ने रथीन से कहा, "तुम जाओ रथीन, मैं सवेरे श्मशान में जा कर देख आऊँगा कि तुमने अपना काम कैसा किया है।"

हीरेन आज नारायण भैया से शराब की दुकान पर धरना देने वाली बात कह न सका। उसने उसके बारे में बात करना दूसरे दिन के लिए रख छोड़ा।

बाहर अँधेरा है। अँधेरा मानो धीरे-धीरे गहरा होता जा रहा है। सड़क के किनारे मिट्टी के तेल की बत्तियों में से कुछ बुझ चुकी हैं और कुछ बुझने वाली हैं। तेल खत्म हो चुका है। सारा दिन और इतना सारी रात बिता कर चैती पवन अब मानो मतवाला हो उठा हैं। उसका पागलपन मानो गहराते अँधेरे को उड़ा देना चाहता हैं।

रेलवे यार्ड से हलकी सूँ-सूँ आवाज आ रही है। वहाँ इंजन की ऐसी आवाज रात भर होती रहती है। गंगा के किनारे सियारों का झुंड आया है। उसका हुआँ-हुआँ सुनाई पड़ रहा है। गांव मे कुत्ते रुक-रुक कर भूँक रहे हैं।

इतने में कही से किसी पक्षी का आर्त स्वर सुनाई पड़ा। शायद भोजन की तलाश में कोई विषधर उसकी ओर लपका है।

सारा संसार सो रहा है, फिर भी चेतना जाग रही है। आकाश-बतास में न

जाने कैसा कोलाहल है। फिर क्या यह नींद कोई धोखा है ? क्या यह रात भी किसी सर्वनाश की साजिश में लगा हुआ है ?

कहीं कोई उल्लू बोल रहा है। उसका कर्कश स्वर हवा में गूँज कर यही जता रहा है कि वही इस रात का एतबारी गवाह है। सिर हिला-हिला कर पेड़ भी मानो आपस मे बातें करने लगे हैं।

बकुल माँ ने दोनों भाइयों, नारायण और भजन को खाना परोसा है। नारायन धीरे-धीरे खा रहे हैं। वे चिन्तामग्न हैं, मानो अपने मे समाये हुए हैं। सूनी आँखों मे वे न जाने क्या देख रहे हैं। खाने में उनका मन नहीं लग रहा है। मानो जीवन की गति और उनके हृदय की लय घुल-मिल कर एकाकार हो रही हैं। वह गति और वह लय मिल कर मानो कोई नया सुर गुँजा रही हैं। उस सुर में न कहीं उतार-चढ़ाव है और न उसका आदि-अंत ही। सामने अँधेरा कंटकाकीर्ण मार्ग है, जिसे पार करना है।

भजन भी खोया-खोया सा लग रहा है। उसका भी मानो खाने में मन नहीं लग रहा है। मानो वह चकराया हुआ है। दिग्भ्रमित। बेचैन। व्यस्त। उसका भी रास्ता विचित्र है जिसका कोई ओर-छोर नहीं। उसके जीवन मे न कोई सुर है, न ताल। उसे जीवन का रास्ता बस कोलाहल से भरा हुआ लगता है। सिर्फ व्यग्रता है। न जाने वह क्या चाहता है और न जाने उसे क्या नहीं मिलता ? उसे लगता है कि वह सिर्फ निरुद्देश्य दौड़ रहा है, और उसका वह दौड़ना हजारों बरस से जारी है। पाठशाला, स्कूल, कालेज, काव्य, दर्शन, राजनीति और फिर चाय की दुकान। लेकिन कोई आधार नहीं है। उसे लगता है कि वह बहुत कुछ खो चुका है। लेकिन वह क्या खो चुका है, समझ नहीं पाता। उसका मन भी कोई जवाब नहीं देता। मानो उसके मन से ही उसका मेल नहीं है। वह न तो किसी के आगे सिर झुका सकता है और न किसी को प्यार से गले ही लगा पाता है। फिर भी उसे कहीं शहनाई का सुर सुनाई पड़ता है। बेताला ताल मे भी गजल की गूँज सुनाई पड़ती है।

और हैं बकुल माँ। वे देख रही हैं कि लड़के खा रहे हैं। शायद वे यह भी [illegible] देख रही है। शायद उनका भी मन अचानक कहीं खो गया है। वे इस तरह बैठी हैं, जैसे बकुल माँ न हो कर कोई किशोरी बालिका हो। उनकी उम्र [illegible] हुई है। उनकी यह उम्र तेज हवा की तरह है, जो पत्थर से टकरा कर [illegible] हुई है। वह पत्थर आज भी है और आज भी वह उतना ही कठोर है। सिर के [illegible] काले हैं। भौंहें भी काली और खूबसूरत हैं। रग गोरा है। उन्होंने [illegible] "तुम दोनों आराम से खाते रहो, मैं हालदार जी से पूछ आऊँ कि [illegible] बाद में।"

महादेव हालदार के कमरे मे जा कर बकुल माँ ने देखा [illegible] कुर्सी पर पड़े है। उनका अंग-अंग मानो ढीला पड़ा है। [illegible] कष्ट झलक रहा है। नाक के दोनों किनारे सिकुड़ और [illegible]

कपड़े भी नहीं बदले हैं। आरामकुर्सी के पास शराब की बोतल और मोटी छड़ी पड़ी हैं। आँखें बंद हैं।

यही हालदार हैं, महादेव हालदार; बकुल माँ की सहेली के पति नक्कू हालदार। शायद वे सोये-सोये कोई बुरा सपना देख रहे हैं। बकुल माँ ने सोचा कि रहने दूँ, बुलाने की जरूरत नहीं है। बकुल माँ का मन सहानुभूति से भर गया। उन्होंने सोचा — सोता रहे हालदार। कभी तो इस शख्स की आँखों में नींद नहीं आयी!

लेकिन महादेव हालदार की आँखें अचानक खुल गयीं। गुड़हर जैसी आँखों में धुंधली दृष्टि। बकुल माँ की तरफ देख कर उन्होंने सिर उठाने की कोशिश की। उन्होंने कहा, "कौन? स्वर्ण? बड़ी बहू?"

महादेव हालदार अपनी पत्नी का नाम ले कर पुकारने लगे।

बकुल माँ की छाती धड़कने लगी। उनके सुंदर होंठ हिले, लेकिन वे कुछ बोल न सकीं।

महादेव हालदार ने फुसफुसा कर कहा, "सुनो बड़ी बहू, मैं भजन की शादी करूँगा। नारायण ने धोखाधड़ी का रास्ता अपनाया है, अब वह लोगों को ठगता फिरेगा। लेकिन भजन वैसा नहीं है। वह घर बसाना चाहता है। समझ गयी न? खूब दहेज ले कर उसकी शादी करूँगा। उसके बाद मैं उसे अपने रास्ते पर ले आऊँगा, तुम देख लेना।"

बकुल माँ खामोश खड़ी रहीं। मानो उनके शरीर की सारी हरकतें रुक गयीं। अब वे महादेव हालदार को भी नहीं देख रही हैं। उनकी निगाह हालदार बाबू के सिर के पीछे दीवार पर टिक गयी।

महादेव हालदार ने कहा, "शायद तुम हँस रही हो स्वर्ण? बताओ, ऐसी हँसी तुम्हें कहाँ मिली? सुनो, पास आओ बड़ी बहू!"

बकुल माँ ने देखा कि मानो उनकी सहेली, भजन और नारायण की माँ, सामने आ कर खड़ी हो गयी हैं। खड़ी-खड़ी मुस्करा रही हैं। मानो वे अपनी सहेली बकुल से कह रही हैं — जवाब क्यों नहीं देती मुँहजली? मेरा भतार क्या तेरा जेठ लगता है?

न जाने कैसा झटका लगा और बकुल माँ काँप गयीं। उन्होंने जल्दी-जल्दी कहा, "मैं हूँ हालदार जी!"

महादेव हालदार ने आँखें फाड़ कर कहा, "कौन?"

— "मैं सुखदा हूँ।"

— "बकुल फूल?"

महादेव हालदार को बड़ा आश्चर्य हुआ। उसके बाद वे उसी तरह बदहवास आँखों से बकुल फूल की ओर देखते रहे। मानो वे अभी पहली बार अपनी पत्नी की सहेली बकुल फूल को देख रहे हों। हालदार बाबू ने सोचा कि यह भी तो स्वर्ण की तरह सुंदर है। सिर्फ इसके होंठों के बांकपन में वैसी मुस्कान नहीं है। आँखों में वैसी उदासीनता भी नहीं है। फिर इन आँखों में, इन होंठों में और इस चेहरे में क्या है?

हालदार बाबू को अपनी आँखों के आगे सब कुछ बेतरतीब लगने लगा। मन में बहुत-सी बातें उठ कर आपस में उलझ गयीं। पत्नी की सहेली बकुल फून की मूर्ति भी उनकी आँखों के आगे धुंधली पड़ने लगी। उन्होंने कुछ कहना चाहा, लेकिन वे कह न सके। सिर्फ उन्होंने बुदबुदा कर कहा — बकुल फून। बकुल —

खुली खिड़की से हड़बड़ा कर हवा का तेज झोंका आया। मानो स्वर्ण ने अचानक लम्बी साँस छोड़ी। एकाएक बकुल माँ ने भी लम्बी साँस ली। मानो उनके सामने उनकी सहेली स्वर्ण खड़ी हैं। एकदम आमने-सामने। इनमें से एक इस दुनिया को छोड़ कर भी मानो छोड़ नहीं सकी और दूसरी मानो यहाँ रह कर भी यहाँ नहीं हैं। इन दोनों के जीवन में पाने और न पाने का हिसाब मानो आज भी अधूरा पड़ा है।

जीवन की सारी व्यर्थता अपने में समेटे बकुल माँ जड़वत् खड़ी रहीं। लाछन और अपमान बरदाश्त करते हुए उनका जीवन एक नियम से उसी तरह चलता जा रहा है जिस तरह दिन-रात होते हैं। इस जीवन में उनको बार-बार एक ही बात सताती रहती है कि क्या अब भी कुछ बाकी है? उन्होंने अपने पति को याद करना चाहा, लेकिन ठीक से कुछ भी याद नहीं पड़ता। सिर्फ जिसकी याद आती है, वह उनकी सहेली है — भजन और नारायण की माँ स्वर्ण। बकुल माँ को ले कर इस गाँव के लोग न जाने क्या-क्या कहते हैं और उनको देख कर न जाने कैसी हँसी हँसते हैं। निराश्रित विधवा बकुल माँ के भाग्य में सदा से यही अपमान है। भजन और नारायण को वे अपने बेटों के समान मानती हैं, फिर भी उनकी छाती का एक हिस्सा खाली ही रह जाता है। उस खालीपन के रेगिस्तान में कोई झाड़-झंखाड़ भी नहीं, सिर्फ बालू ही बालू है — रेगिस्तानी बालू।

— "बकुल माँ।"

भजन की आवाज सुनाई पड़ी।

— "आयी बेटा।"

बकुल माँ ने जवाब दिया।

महादेव हालदार ने भजन की शादी की बात छेड़ी थी। बकुल माँ भी उसके बारे में हालदार बाबू से बात करना चाहती हैं। शायद हालदार बाबू नारायण के रंग-ढंग से डर गये हैं। फिर इस घर का भी तो कोई इंतजाम होना चाहिए। बकुल माँ को भी अब छुट्टी की जरूरत महसूस होने लगी है।

बकुल माँ ने गौर से देखा कि महादेव हालदार सो गये हैं। आश्चर्य है! अभी वे बात कर रहे थे और अभी सो गये। लगता है कि थोड़ी देर पहले उनको झपकी आयी थी और वह झपकी एक बार के लिए टूटी थी। उस दौरान वे दूर अतीत में पहुँच गये थे। लेकिन अब वे बेखबर सोने लगे हैं।

हालदार बाबू एक बच्चे से कम नहीं हैं। नींद में एक बच्चा जिस तरह हँसता है, हालदार बाबू ने भी उसी तरह हँस कर अपनी दिवंगत पत्नी से बात कर ली।

हालदार बाबू सचमुच सुखी हैं। ऐसे ही लोग सही माने में सुखी होते हैं। बकुल माँ यही सब सोचती रहीं।

बकुल माँ के पास रात आती है जागने की यंत्रणा ले कर। इस जीवन में शायद उनके पास सोचने के लिए कुछ भी नहीं है। फिर भी होनी-अनहोनी तरह-तरह की विचित्र बातें उनके मन में उठती हैं, और वही सब सोचते-सोचते उनकी रात बीत जाती है। अपने मकान के अँधेरे कमरे में जब वे अकेली लेटती हैं तब उनकी आँखें मानो जलने लगती हैं। फिर कभी वे आँखें नम हो आती हैं तो कभी दिग्भ्रमित सी इधर-उधर देखने लगती हैं। मानो अनेक अपरिचित आत्माओं में बकुल माँ एकाकार हो जाती हैं। उनके सारे बदन में सुई-सी न जाने क्या चुभती रहती है, और सिर के अंदर कोई हथौड़ी पीटता रहता है। मन करता है कि कहीं दौड़ कर चली जाऊँ। लेकिन वे समझ नहीं पातीं कि कहाँ जाने पर खुली हवा में साँस ले सकेंगी।

भजन कमरे में आया। उसने कहा, "चलिए बकुल माँ, बहुत रात हो गयी है।"

बकुल माँ ने मुड़ कर जल्दी-जल्दी कहा, "हाँ बेटा, चलो। तुम्हारे बाप तो आज की रात कुर्सी पर सो कर बिता देंगे। बुलाने पर क्या वे उठेंगे?"

भजन के चेहरे से लगा कि वह यह सब कुछ नहीं सोच रहा है। उसने बकुल माँ से कहा, "छोड़िए वह सब! उनके लिए यह कोई नयी बात नहीं है। आप जल्दी चलिए। आपको भी घर चल कर मुँह में एक कौर डालना पड़ेगा।"

बात तो सही है। न जाने कितनी रात हो गयी है। अब बकुल माँ को घर जा कुछ खाना पड़ेगा। इसके अलावा घर में थोड़ा-बहुत काम भी रहता है।

भजन के साथ बकुल माँ पीछे के दरवाजे से बाहर निकलीं। आकाश में अनगिनत तारे चमक रहे हैं। मानो हजारों हजार आत्माएँ आँखें फाड़ कर धरती की ओर देख रही हैं। न जाने किसकी प्रतीक्षा में उनकी आँखों में बड़ी व्यग्रता है।

कस्बे के रास्ते के दोनों किनारे अँधेरे में मकान ऐसे खड़े हैं, जैसे भेस बदल कर आततायी खड़े हों। कहीं से वनबिलाव जैसे निशाचर जंतु अचानक मनुष्य की आहट पा कर भाग निकले। वे सूखे पत्तों पर से भागे, इसलिए खड़-खड़ आवाज हुई। आस-पास कोई छिपकली बोली। दोनों तरफ के मकानों से टकरा कर हवा इस तरह गूँजने लगी, जैसे बहुत से लोग आपस में फुसफुसा कर बातें कर रहे हों।

भजन के बारे में सोच कर बकुल माँ को जरा आश्चर्य लगा। भजन तो कभी इस तरह चुपचाप नहीं रहता। रोज रात को बकुल माँ को घर पहुँचाते समय वह न जाने कितनी बातें करता है। देश, दुनिया, कारोबार और अपनी आशा-आकांक्षा के बारे में वह न जाने क्या-क्या कहता है। फिर बात से बात निकलती जाती है। भजन किसी पर नाराज होता है तो कहता है कि उसे देख लूँगा, या उसे पीटूँगा। उसके बाद वह यह भी कहता है कि सारी बुराई की जड़ मेरे पिता जी हैं। अंत में वह बकुल माँ से कहता है — आप अपने नक्कू हालदार को मामूली मत समझिए!

बकुल माँ भी हँस-हँस कर भजन की बातों का जवाब देती जाती हैं।

लेकिन आज भजन को गुमसुम देख कर बकुल माँ को बडा आश्चर्य हुआ। उन्होंने पूछा, "क्यों भजन, आज तुम बाप से लडे हो क्या ?"

इस सवाल से भजन चौंक पडा। मानो एकाएक होश में आ कर उसने कहा, "क्यो ?"

— "फिर क्यों नही बोल रहे हो ?"

— "यों ही।"

बकुल माँ के मन मे खटका लगा। यो ही क्यों ? भजन के साथ तो ऐसा कभी नही होता। यह तो बड़ा साफगो लड़का है। उसके मन में जो कुछ रहता है, कह देता है। फिर क्या उसे किसी बात का कष्ट है ?

हाँ, भजन को कष्ट है। इससे उसका मन दुखी है। उसे दोहरा कष्ट झेलना पड़ रहा है। दो चेहरे उसे दो तरफ से कष्ट दे रहे हैं। इनमें से एक चेहरा रथीन का है। रथीन के चेहरे मे कठोरता है, वीरता की झलक है। उस चेहरे को सीने से लगा कर नारायण प्यार कर रहे हैं। नारायण भैया ने उस चेहरे को दोनों हाथों में ले रखा है। लेकिन वह चेहरा रथीन का है, भजन का नही — यही भजन के लिए कष्ट का कारण है। दूसरा चेहरा किसका है, पता नही चलता। शायद वह चेहरा किसी रहस्य-मयी का है। हर क्षण उस चेहरे का भाव बदल रहा है। वह चेहरा हँसता हुआ सा है, लेकिन वह तो हँसी नहीं है। फिर भी उन आँखों में पन्नई चमक है। लेकिन यह पता नही चलता कि वह चमक हँसी की है या आँसुओं की। क्या उस चेहरे पर विराग है या अनुराग ?

बकुल माँ रुक गयी। बोली, "भजन, तुम कहाँ चले जा रहे हो ? मेरा घर तो आ गया है।"

शर्मिंदा हो कर भजन रुक गया। उसकी चिंता का तार टूटा। उसने कहा, "अरे हाँ !"

बकुल माँ के मन को फिर भी चैन नहीं मिला। पता नही, इस लडके को क्या हो गया है ? कहीं नारायण ने तो इससे कुछ नही कह दिया ? लेकिन वह तो ऐसा लड़का नही है। वह तो कभी किसी से कुछ नहीं कहता। बल्कि भजन ही सबसे सब कुछ कह देता है। वह न तो किसी से डरता है और न किसी की परवाह करता है। उसके मन मे जो कुछ आता है, वह फटाफट कह देता है। फिर ऐसे लडके को क्या हो गया ? वह तो अपनी बकुल माँ से कभी कोई बात नही छिपाता।

— "आओगे मेरे घर ? बैठो न थोड़ी देर ?"

बकुल माँ ने कहा।

भजन बोला, "नही बकुल माँ, मैं जाऊँगा। आपका कोई काम हो तो बताइए।"

— "नही, मेरा कोई काम नही है। आज तुम बडे उदास लग रहे हो, इसलिए कहा।"

वकुल माँ का स्वर स्नेह के कारण भारी हो गया। वे कुछ रूठ-सी गयीं। उनकी आँखों में आँसू आ गये। कोई काम न रहे तो क्या नहीं आना चाहिए ? न जाने कितनी रातें भजन ने मेरी छाती से लगे सो कर बितायी हैं। मेरी जिस छाती में विधाता ने कौमार्य के दर्द का काँटा चुभो रखा है, उसी छाती में भजन ने अपनी माँ को ढूँढ़ा है और मैंने ढूँढ़ा है अपने मातृत्व को। असल में भजन अपने मन की बात कहना नहीं चाहता।

फिर वकुल माँ ने कहा, "इतनी रात को और कहीं मत जाना, सीधे घर जा कर सो जाओ।"

वकुल माँ अपने मकान में चली गयीं। वे सिर्फ रूठीं नहीं, चिंतित भी हुईं। मरते समय उनकी सहेली ने जो बातें कही थीं, याद पड़ गयीं — वकुल, इन बच्चों के बाप के अनेक बच्चे मर चुके हैं। वे सब बच्चे थे उनके मुकदमे। लेकिन तू इन बच्चों की परवरिश करना, मेरी खातिर करना। इन बच्चों का और कोई नहीं है।

पुरानी बातें याद आने पर वकुल माँ की छाती के अंदर न जाने कैसा दर्द होने लगा। नारायण का रास्ता तो सर्वनाश का है। भजन भी आज न जाने किस तरह चला गया। पता नहीं, उसके मन में क्या है ?

पता नहीं, भजन के मन में क्या है ? अपने मकान के पीछे वाले दरवाजे के पास आ कर वह एकाएक रुका। उसे रथीन का चेहरा याद आ रहा है। बड़ा ही कठोर चेहरा। वीर क्रांतिकारी का चेहरा। लेकिन भजन तो क्रांतिकारी नहीं बन सकता। उस रास्ते पर चलने के लिए उसके मन में कोई आकर्षण नहीं है। लेकिन उस रास्ते पर उसके बड़े भाई नारायण गये हैं। शायद इसी लिए नारायण को रथीन प्राणों से ज्यादा प्यारा है। रथीन निर्भय है, इसलिए उसे देख कर नारायण की छाती फूल उठती है।

अचानक पश्चिम की ओर मुड़ कर भजन तेज-तेज चलने लगा। उसने अगल-बगल नहीं देखा और न अँधेरे की परवाह की। मानो वह हवा के आगे-आगे चलता रहा। वह सीधे गंगा के किनारे पहुँच गया।

गंगा के किनारे हवा मानो ज्यादा तेज चल रही है, जो आँखों में चुभने लगी और मुँह पर थपेड़े लगाती रही। कटाव के कारण गंगा का किनारा बुरी तरह धँस चुका है। उस किनारे से पानी तक पहुँचना असंभव है। उस खड़े किनारे से अभी थोड़ी देर पहले आये ज्वार का पानी छल-छल टकरा रहा है। उसकी आवाज मानो भजन से कहने लगी — चलता चल ! चलता चल !

अँधेरे में भी नदी की तेज धारा एक रेखा सी दिखाई पड़ रही है। उत्तरी हवा उस धारा में हलचल पैदा कर रही है। उठ रही लहरें रुक-रुक कर रुपहली हँसी हँस रही हैं। फिर भी उस अँधेरे में गंगा एक जगह मानो आकाश से घुल-मिल गयी है।

खुले आसमान के नीचे अबाध हवा मानो ऐसे कराह रही है जैसे कोई अदृश्य प्रेत चीखता हुआ दौड़ रहा है। पास-पास खड़े पेड़ ऐसे सिर हिला रहे हैं, जैसे उनको आपस मे खुल कर बातें करने का मौका मिला हो। सिर के ऊपर से कोई पक्षी फड़फड़ा कर उड गया। भीग रही रात में न जाने कहाँ खट-खट आवाज हो रही है। सहसा सुनने पर वह आवाज ऐसी लगती है जैसे कोई दरवाजे पर टहोका मार रहा हो। क्या उस आवाज का कोई मतलब है ?

कुछ फासले पर एक झुंड गीदड़ हुआँ-हुआँ कर चिल्लाने लगे। क्षण भर के लिए उन जंतुओं की आँखें मानो चमक उठीं। न जाने कैसी तीव्र मधुर गंध वातावरण को मतवाला किये दे रही है।

ओर-छोर हीन गंगा मे घुलती स्वर-लहरी में भजन को मानो सुनाई पड़ा कि कोई पुकार रहा है — मृण्मयी ! मृण्मयी ! अनायास भजन को कपालकुंडला की बात याद आयी। तभी उसकी आँखों के आगे एक चेहरा झलकने लगा। एक चेहरे से दूसरा, फिर दूसरे से तीसरा। भजन को लगा कि शायद वह भी कभी किसी को यहाँ इसी कगार के नीचे, इस तेज जल-धार में उठ रहे भँवर की अतल गहराई में छोड गया है। आज इस संसार और समाज मे उसके प्राण दिग्भ्रमित हैं, इसलिए वह नये सिरे से पहल कर उसे बुलाने आया है। संशय से व्याकुल यह जीवन उससे बर्दाश्त नही हो रहा है।

भजन को वहाँ से दक्षिण दिशा मे थोड़ी दूर पर अँधेरे के सीने पर चढ बैठे अधिक डरावने अँधेरे की तरह श्मशान के बड़े-बड़े पेड़ों की चोटियाँ दिखाई पड़ीं। उधर देखते ही भजन को अचानक फिर रथीन की बात याद आयी। भजन तुरंत उसी तरफ चलने लगा। रथीन तो रथीन ही है, बहादुर है; लेकिन भजन सिर्फ भजन है। घर का नाम भोजू। फिर भी क्या वह भोजू श्मशान नही जा सकता ? परीक्षा किस बात की ? क्या वह यो ही बेमतलब वहाँ नही जा सकता ? भले ही किसी ने उसे गले से न लगाया हो, फिर भी क्या उसका साहस भय के मुँह पर पदाघात नही कर सकता ?

ऊँचे कगार के सँकरे रास्ते से भजन दृढ़ पग धरते हुए बढ़ चला। उसके पाँवों के नीचे सूखे पत्ते खड़खड़ाने लगे। हवा मानो उसके पीछे दौड़ पड़ी — अरे, उधर मत जा ! मत जा !

लेकिन भजन जायेगा। वह ऐसे चलने लगा जैसे उसे नीद में चलने का रोग हो गया हो। जैसे उस पर उधर चलने का नशा ही सवार हो। सिर्फ रथीन नही, भजन भी ऐसा कर सकता है। जीवन की परीक्षा में मानो भजन अनुत्तीर्ण होना नही जानता।

फिर वही चेहरा मानो भजन की आँखों के आगे आ गया। न जाने कैसी दुर्बोध चिंता उसके मस्तिष्क के कण-कण मे उलझने लगी। संस्कार से आच्छन्न भजन का मन बार-बार कहने लगा — मृण्मयी मरी नही, वह आज भी जीवित है। उसकी बंदिनी

वकुल माँ का स्वर स्नेह के कारण भारी हो गया। वे कुछ रूठ-सी गयीं। उनकी आँखों में आंसू आ गये। कोई काम न रहे तो क्या नहीं आना चाहिए? न जाने कितनी रातें भजन ने मेरी छाती से लगे सो कर वितायी हैं। मेरी जिस छाती में विधाता ने कौमार्य के दर्द का काँटा चुभो रखा है, उसी छाती में भजन ने अपनी माँ को ढूंढ़ा है और मैंने ढूंढ़ा है अपने मातृत्व को। असल में भजन अपने मन की बात कहना नहीं चाहता।

फिर वकुल माँ ने कहा, "इतनी रात को और कहीं मत जाना, सीधे घर जा कर सो जाओ।"

वकुल माँ अपने मकान में चली गयीं। वे सिर्फ रूठीं नहीं, चिंतित भी हुईं। मरते समय उनकी सहेली ने जो बातें कही थीं, याद पड़ गयीं — वकुल, इन बच्चों के बाप के अनेक बच्चे मर चुके हैं। वे सब बच्चे थे उनके मुकदमे। लेकिन तू इन बच्चों की परवरिश करना, मेरी खातिर करना। इन बच्चों का और कोई नहीं है।

पुरानी बातें याद आने पर वकुल माँ की छाती के अंदर न जाने कैसा दर्द होने लगा। नारायण का रास्ता तो सर्वनाश का है। भजन भी आज न जाने किस तरह चला गया। पता नहीं, उसके मन में क्या है?

पता नहीं, भजन के मन में क्या है? अपने मकान के पीछे वाले दरवाजे के पास आ कर वह एकाएक रुका। उसे रथीन का चेहरा याद आ रहा है। वड़ा ही कठोर चेहरा। वीर क्रांतिकारी का चेहरा। लेकिन भजन तो क्रांतिकारी नहीं वन सकता। उस रास्ते पर चलने के लिए उसके मन में कोई आकर्षण नहीं है। लेकिन उस रास्ते पर उसके वड़े भाई नारायण गये हैं। शायद इसी लिए नारायण को रथीन प्राणों से ज्यादा प्यारा है। रथीन निर्भय है, इसलिए उसे देख कर नारायण की छाती फूल उठती है।

अचानक पश्चिम की ओर मुड़ कर भजन तेज-तेज चलने लगा। उसने अगल-वगल नहीं देखा और न अँधेरे की परवाह की। मानो वह हवा के आगे-आगे चलता रहा। वह सीधे गंगा के किनारे पहुँच गया।

गंगा के किनारे हवा मानो ज्यादा तेज चल रही है, जो आँखों में चुभने लगी और मुँह पर थपेड़े लगाती रही। कटाव के कारण गंगा का किनारा बुरी तरह धँस चुका है। उस किनारे से पानी तक पहुँचना असंभव है। उस खड़े किनारे से अभी थोड़ी देर पहले आये ज्वार का पानी छल-छल टकरा रहा है। उसकी आवाज मानो भजन से कहने लगी — चलता चल! चलता चल!

अँधेरे में भी नदी की तेज धारा एक रेखा सी दिखाई पड़ रही है। उत्तरी हवा उस धारा में हलचल पैदा कर रही है। उठ रही लहरें रुक-रुक कर रुपहली हँसी हँस रही हैं। फिर भी उस अँधेरे में गंगा एक जगह मानो आकाश से घुल-मिल गयी है।

खुले आसमान के नीचे अबाध हवा मानो ऐसे कराह रही है जैसे कोई अदृश्य प्रेत चीखता हुआ दौड़ रहा है। पास-पास खड़े पेड़ ऐसे सिर हिला रहे हैं, जैसे उनको आपस में खुल कर बातें करने का मौका मिला हो। सिर के ऊपर से कोई पक्षी फड़फड़ा कर उड़ गया। भीग रही रात में न जाने कहाँ खट-खट आवाज हो रही है। सहसा सुनने पर वह आवाज ऐसी लगती है जैसे कोई दरवाजे पर टहोका मार रहा हो। क्या उस आवाज का कोई मतलब है ?

कुछ फासले पर एक झुंड गीदड़ हुआँ-हुआँ कर चिल्लाने लगे। क्षण भर के लिए उन जंतुओं की आँखें मानो चमक उठीं। न जाने कैसी तीव्र मधुर गंध वातावरण को मतवाला किये दे रही है।

ओर-छोर हीन गंगा में घुलती स्वर-लहरी में भजन को मानो सुनाई पड़ा कि कोई पुकार रहा है — मृण्मयी ! मृण्मयी ! अनायास भजन को कपालकुंडला की बात याद आयी। तभी उसकी आँखों के आगे एक चेहरा झलकने लगा। एक चेहरे से दूसरा, फिर दूसरे से तीसरा। भजन को लगा कि शायद वह भी कभी किसी को यहाँ इसी कगार के नीचे, इस तेज जल-धार में उठ रहे भँवर की अतल गहराई में छोड़ गया है। आज इस संसार और समाज में उसके प्राण दिग्भ्रमित हैं, इसलिए वह नये सिरे से पहल कर उसे बुलाने आया है। संशय से व्याकुल यह जीवन उससे बर्दाश्त नहीं हो रहा है।

भजन को वहाँ से दक्षिण दिशा में थोड़ी दूर पर अँधेरे के सीने पर चढ़ बैठे अधिक डरावने अँधेरे की तरह श्मशान के बड़े-बड़े पेड़ों की चोटियाँ दिखाई पड़ीं। उधर देखते ही भजन को अचानक फिर रथीन की बात याद आयी। भजन तुरंत उसी तरफ चलने लगा। रथीन तो रथीन ही है, बहादुर है; लेकिन भजन सिर्फ भजन है। घर का नाम भोजू। फिर भी क्या वह भोजू श्मशान नहीं जा सकता ? परीक्षा किस बात की ? क्या वह यों ही बेमतलब वहाँ नहीं जा सकता ? भले ही किसी ने उसे गले से न लगाया हो, फिर भी क्या उसका साहस भय के मुँह पर पदाघात नहीं कर सकता ?

ऊँचे कगार के सँकरे रास्ते से भजन दृढ़ पग धरते हुए बढ़ चला। उसके पाँवों के नीचे सूखे पत्ते खड़खड़ाने लगे। हवा मानो उसके पीछे दौड़ पड़ी — अरे, उधर मत जा ! मत जा !

लेकिन भजन जायेगा। वह ऐसे चलने लगा जैसे उसे नींद में चलने का रोग हो गया हो। जैसे उस पर उधर चलने का नशा ही सवार हो। सिर्फ रथीन नहीं, भजन भी ऐसा कर सकता है। जीवन की परीक्षा में मानो भजन अनुत्तीर्ण होना नहीं जानता।

फिर वही चेहरा मानो भजन की आँखों के आगे आ गया। न जाने कैसी दुर्बोध चिंता उसके मस्तिष्क के कण-कण में उलझने लगी। संस्कार से आच्छन्न भजन का मन बार-बार कहने लगा — मृण्मयी मरी नहीं, वह आज भी जीवित है। उसकी बंदिनी

आत्मा आज भी बेचैन हो कर इस श्मशान का चक्कर काट रही है। आज भजन उसी को मुक्त करेगा। हठी नवकुमार को भी वह मुक्ति दिलायेगा। साथ ही साथ वह सैकड़ों बरसों से प्रतीक्षा कर रहे नारी-मांस के लोभी तांत्रिक कापालिक को भी निराश कर देगा।

पांवों के नीचे न जाने क्या चरमरा कर टूटा। भजन ने अब देखा कि वह श्मशान के बीच खड़ा है। जहां वह खड़ा है वहां न जाने कैसा कीचड़ है। शायद मुर्दा जला कर लोग पानी से चिता को बुझा गये हैं। उसी से वहां कीचड़ हो गया है। चारों तरफ बड़े-बड़े पेड़ों का घेरा और बीच में घोर अंधेरा। हवा के बेरोक-टोक चलने में पेड़ बाधक बन रहे हैं जिससे हवा पगला रही है।

लेकिन रथीन कहां है ?

भजन ने चारों तरफ देखा। आश्चर्यचकित एक झुंड सियार उसके आसपास निडर खड़े हैं। सिर के ऊपर कोई गिद्ध पंख फड़फड़ा रहा है।

अब नाम भी तो लिखना पड़ेगा। भजन झुक कर नाम लिखने के लिए कोई चीज ढूंढ़ने लगा तो उसे मिट्टी के टूटे घड़े का एक ठीकरा मिल गया। उसने सोचा कि अपना पूरा नाम ही लिखूंगा। फिर उसने सोचा कि पूरा नाम लिखने पर सबको पता चल जायेगा। इसलिए उसने सिर्फ लिखा — 'श्री'।

उसके बाद भजन श्मशान के बाहर आ कर खड़ा हो गया। पसीने से तर बदन पर अब उसे हवा की ठंडक महसूस हुई। उसे बड़ा आराम मिला। इस आराम से उसकी आंखें बंद हो आयीं। वह कगार की ढाल से नीचे उतर गया। उसने अंजुरी भर पानी चेहरे पर छिड़का। पानी ले कर उसने आँखें धोयीं। इससे उसका मन भी शीतल हो गया। अब उसने सोचा कि शायद रथीन जा चुका है। अब तो नारायण भैया का मन खुशी से भर जायेगा।

भजन को पिता की बात याद आयी। उसे ऐसा लगा कि पिता, याने सरकश महादेव हालदार अब समाप्तप्राय इनसान हैं। पता नहीं आज वे किस पर भरोसा करेंगे ? नारायण भैया अपने रास्ते दुर्निवार वेग से बढ़े चले जा रहे हैं। अब वे लौट नहीं सकते। बकुल मां भी अब कितने दिन इस घर को अगोरती रहेंगी ? भजन को लगा कि अब उसके परिवार को संभालने वाला कोई नहीं है। फिर उसका अपना रास्ता ही कौन-सा है ?

किनारे खड़े हो कर भजन गंगा की बीच धारा में न जाने क्या देखता रहा। उसकी मानसिक उत्तेजना एकाएक बहुत कम हो गयी। अपनी शादी की बात सोचने के कारण मृण्मयी की चिंता उसके हृदय की गहराई में उथल-पुथल मचाने लगी। उसे लगा कि उसके विमूढ़ मन को कोई न कोई चाहिए। चाहे वह कोई भी हो। भैया, रथीन, पिता जी और बकुल मां जायं अपने-अपने रास्ते ! भजन भी अपने रास्ते जायेगा। फिर वह क्यों इतना सोचता है ? क्यों उसके मन में इतनी उथल-पुथल मचती है ? फिर, मान-मनौअल कैसा ? भजन कभी अपने भैया का साथी नहीं बन सकता। वह

अपने बाप से झगड़ा भी नहीं कर सकता। बकुल माँ से अपने को बाँधना भी उसे पसंद नहीं। रथीन जैसों से वह होड़ लगाना भी नहीं चाहता। वह स्थिर होना चाहता है, ठहराव चाहता है, जीवन के इस ऊलजलूल ढंग को छोड़ कर वह नयी नाव से नयी यात्रा शुरू करना चाहता है। इसलिए वह अपने सारे दुख-दर्द, हँसी-आँसू और मान-अभिमान सहित अपने को किसी के हवाले करना चाहता है।

अचानक एक लहर किनारे से आ टकरायी और पानी के छींटे भजन के बदन और चेहरे पर पड़े। एकाएक उसे जाड़ा-सा लगने लगा। उसने देखा कि कपड़ा काफी भीग गया है। फिर उसे मानो नये सिरे से याद आया कि वह श्मशान में बैठा हुआ है। वह झटपट उठ खड़ा हुआ। उसने सोचा कि कल शायद रथीन अपने क्रांतिकारी जीवन में और दो कदम आगे बढ़ जायेगा। खैर, इससे क्या हुआ? जरूरत पड़ने पर शायद भजन भी रिवाल्वर की गोली से दुश्मन की खोपड़ी उड़ा सकता है। लेकिन वह काम सबके लिए नहीं है। भजन क्रांतिकारियों के दल में शामिल हो कर अपने भैया का स्नेह नहीं पा सकता। उसके भैया उसकी भलाई-बुराई का ख्याल भी नहीं रखते। वह तो जीवन में अकेला ही चलता चला जायेगा।

हवा की तीव्रता बहुत कम हो चुकी है। आकाश में तारे भी कुम्हलाने लगे हैं। अब भजन को लगा कि श्मशान भी मानो बहुरूपिया है। थोड़ी देर पहले वह प्रेत का रूप धर कर डराने लगा था, लेकिन अब एक भला आदमी सा लग रहा है। अँधेरा भी छँट गया है। अब सब कुछ साफ दिखाई पड़ने लगा है।

अब गंगा भी शांत है। लहरों की हलचल कम हो गयी है। ज्वार का पानी किनारे तक लबालब भरा हुआ है। आकंठ सुधा भर जाने पर वाचालता कहाँ रह जाती है? ऐसा जिसके भाग्य में नहीं होता, वही उछल-कूद मचाता रहता है। अधजल गगरी ही छलकती जाती है।

श्मशान से विदा लेने से पहले भजन ने और एक बार गंगा की तरफ देखा। गंगा ने समुद्र का रूप ले लिया है। भजन के ही भविष्य की तरह गंगा अकूल है, अतल है। उस अपरम्पार असीम के बीच और कुछ नहीं, सिर्फ एक चेहरा बार-बार विभिन्न विचित्र रूपों में झलकने लगा। लबालब भर आयी गंगा की गूँज भजन को शहनाई की अविराम स्वर-लहरी जैसी लगने लगी।

भजन के मन में न जाने कितनी बातें थीं। न जाने सोचने और विचारने के लिए कितना कुछ था। जीवन की सारी शिक्षा-दीक्षा ले कर तर्क-वितर्क के कितने ही ढकोसले थे। लेकिन इस अँधेरे में वे सब न जाने कहाँ खो गये और इस समय सारे आकाश में सिर्फ एक मुखड़ा अनंत मुस्कराहट के रूप में फैल गया। स्कूल-कालेज में भजन हर इम्तहान में हँसते-खेलते पास होता रहा, लेकिन उन दिनों उसके मन में कोई विश्वास जम नहीं सका था। क्या होना चाहिए, इस बात का उसे पता नहीं था। आज अचानक जीवन-गंगा के मुहाने पर आ कर वह रास्ता भूलने लगा। लेकिन हर मोड़ पर सिर्फ एक चेहरा है। भजन को अचानक एक गाना याद आया—

हर गली हर मोड़ पर वह रहती है,
हर घड़ी वह मुझको छलती रहती है।

शायद उसी समय भजन ने गंगा के आगे शपथ ली — मैं शादी करूँगा। इस अविश्वास और अनादर के संसार में मैं उसी को चाहता हूँ। वही मेरे प्राणों की सहेली बनेगी। उसी से मुझको प्यार है।

उसके बाद भजन लौट चला। मानो जीवन के अथाह समुद्र में वह अपनी मृणमयी को ढूँढ़ने निकला। आधी रात के बाद वह श्मशान से इस सदी की एक अभिशप्त आत्मा की परछाईं की तरह लौटने लगा।

दूसरे दिन सवेरे कारखाने में चाय पीने की छुट्टी हुई तो भजन की दुकान में भीड़ लग गयी। मजदूरों और मिस्त्रियों की भीड़।

सड़क पर लाल-लाल धूल भर गयी है। पूरब की तरफ मदार और पाकड़ के कई पेड़ हैं। उन पेड़ों से पत्ते झड़ रहे हैं। वे पत्ते हवा में उड़ रहे हैं। धूल और पत्ते। लोग परेशान हैं। सभी चेहरे सिकुड़े हुए हैं, सभी आँखें मिचक रही हैं। सामने आम के कई पेड़ हैं। वे सब बौराने लगे हैं। उसकी भीनी गंध हवा में है। नन्हे-नन्हे आम भी लगे हैं। ऐसे आम जहाँ-तहाँ जमीन पर पड़े हैं। टोले के कुछ बच्चे उन आमों को बिन रहे हैं।

पूरब तरफ एक साथ बहुत से पेड़ हैं। उस झुरमुट के पीछे वही पुराना मकान दिखाई पड़ता है। ऊँची जमीन पर बहुत बड़ा मकान — टूट-टाट गया है, बदरंग हो चला है और जहाँ-तहाँ उस पर काई के धब्बे भी हैं। उसी मकान के पीछे मंदिर का शिखर दिखाई पड़ता है।

भजन मन लगा कर चाय बना रहा है। चाय बनाते हुए वह चाय पीने वालों से बात भी कर रहा है और उनसे पैसा भी ले रहा है। लेकिन जो लोग चाय पी रहे हैं, वे जानते हैं कि भजन कोई चाय वाला नहीं, बल्कि बाबू है। यह बाबू की दुकान है। बाबू पढ़ा-लिखा आदमी है, बड़ा विद्वान है और बड़ा मिलनसार। घमंड उसमें जरा भी नहीं है। बाभन का लड़का है, नेक है। नारायण बाबू का भाई और नक्कू हालदार का बेटा है वह। एक बात में उस पर खानदान का असर जरूर है, वह है नाक चढ़ाना। इस माने में वह लाट साहब जैसा है। बहुत से लोग ऐसा कहते भी हैं।

कमरे के बाहर गाहकों की भीड़ है। कमरे में भी भीड़ है। वहाँ नारायण भैया के चेले गाहक बने जमे हैं। हाँ, गाहक तो हैं, क्योंकि वे चाय के लिए बैठे हैं। लेकिन कौन चाय पियेगा? गजब हो गया है! इसलिए सभी विस्मित और विमूढ़ हैं। वे सब परेशान हैं और सोचने लगे हैं। रास्ते पर कदम रखते ही न जाने कैसी बाधा खड़ी हो गयी जिससे सभी चिंतित हैं। हीरेन और कृपाल के साथ और भी कई युवक आये हैं।

उन सबने रथीन से सारी घटना सुनी है। वे शायद सोचने लगे हैं कि अब तो हमारी बारी है। अगर हमारे साथ भी ऐसा हुआ तो नारायण भैया को क्या जवाब देंगे ?

नारायण भी पहले विश्वास नहीं कर सके थे। कल रात वे भी तो उस कारखाने की चहारदीवारी से आगे गंगा के किनारे बरगद के नीचे अँधेरे में खड़े थे। रथीन की सच्चाई जांचना उनका उद्देश्य नहीं था, वे तो उसकी सुरक्षा के लिए चिंतित थे। हो सकता है कि क्रांतिकारियों के क्षेत्रीय अधिनायक के रूप में उनका इस तरह परेशान होना नियम-विरुद्ध है, लेकिन वे चुप नहीं बैठ सके थे। वे अपने को छिपा कर बराबर दूर से रथीन पर निगाह रख रहे थे। लेकिन रथीन का कहना है कि उसने और एक आदमी को देखा है। वह आदमी देखने मे शरीफ था, लेकिन शराबी लग रहा था। वह बड़ी तेजी से आ रहा था, लेकिन उसके पांव लडखडा रहे थे। रथीन ने सोचा था कि वह आदमी उसी का पीछा कर रहा है। इसलिए रथीन डर गया था। अपना काम खत्म कर लौटते समय वह बेतहाशा दौड़ने लगा था।

फिर नारायण भी अपनी आंखो से देख आये हैं कि चिता के पास काफी बड़ा करके 'श्री' लिखा हुआ है। मानो लिखने वाले ने और भी कुछ लिखना चाहा था, लेकिन न लिख कर 'श्री' के बाद लापरवाही से लंबी लाइन खीच दी थी। लेकिन कौन है वह ? किसने ऐसा लिखा ? आश्चर्य, उत्तेजना और संदेह के कारण नारायण का शांत मन चंचल हो उठा। इस इलाके के सभी लोगों के चेहरे उन्होने एक-एक कर याद किये। यहाँ तक कि पुलिस के जाने-पहचाने खुफियों को भी उनसे अलग नही किया गया। फिर भी नारायण के मन को कोई समाधान नही मिला।

नारायण ने रथीन से फिर पूछा, "रथीन, तुमने यह कैसे समझ लिया कि वह आदमी शराबी था ?"

रथीन चिंता में डूबा हुआ है। वह चिंता के अथाह सागर में गोते लगा रहा है। अचानक नींद से जागने की तरह उसने कहा, "जी हाँ, वह शराबी था। वह बड़बडा रहा था और झूम भी रहा था।"

भजन कमरे के आगे के हिस्से में चाय बना रहा है। उससे बिना हँसे नहीं रहा गया। अकारण हँस कर उसने एक गाहक से कहा, "अरे, तुमने मूँछों को तो जबर्दस्त बना लिया है !"

जिससे यह कहा गया, उसने चेहरे पर हाथ फेर कर कहा, "मूंछें कहा हैं बाबू ? अभी तो मूँछें आयी ही नही।"

भजन ने झटपट अपने को सँभाल लिया, "अच्छा, अच्छा, मैंने ख्याल ही नहीं किया। पता नहीं मुझे क्या हो गया है, न जाने किससे क्या कह देता हूँ। तुम तो बंगाली के भतीजे हो न ?"

बंगाली के भतीजे ने आश्चर्य से भजन को देखते हुए कहा, "जी हाँ !"

लेकिन कमरे के अंदर जो परेशान लोग बैठे हैं, उनका इस बातचीत की तरफ कोई ध्यान नहीं है। वे भजन की चालाकी भी नही समझ सके। वे आपस में तरह-तरह

की चर्चाएँ कर रहे हैं। कोई सोच रहा है कि यह जरूर किसी खुफिये की कारस्तानी है। कोई यह समझ रहा है कि किसी चोर या डाकू ने ऐसा किया है। रथीन खास तौर से तांत्रिक मदन भट्टाचार्य के बारे में सोच रहा है। भट्टाचार्य जी अक्सर शराब पी कर देवी का ध्यान करने के लिए श्मशान चले जाते हैं। लोगों का ऐसा कहना है।

नारायण बहुतों के बारे में सोच रहे हैं। सोचते-सोचते जब उनको भजन का ख्याल आया तब एकाएक उनका सोचना रुक गया। उनका मन मानो सहम कर एक जगह ठहर गया। लेकिन ऐसा असंभव है। उन्होंने सोचना चाहा। लेकिन उनका मन आगे सोचने के लिए राजी न हुआ। वे एकटक भजन की तरफ देखने लगे। उनको लगा कि स्वभाव से, मन से और अपनी चिंता धारा से अस्थिर भजन मानो अपने जीवन में दिग्भ्रमित है।

भजन को नारायण किसी हद तक समझते हैं। वे उसके आस्थाहीन मन के बारे में भी जानते हैं। वे यह भी जानते हैं कि इस संसार और समाज के भँवरजाल से भजन के दुखी हृदय में कड़ुवापन भर गया है। लेकिन यह जान कर भी वे निरुपाय हैं। उनका अपना विश्वास है, मत और पथ भी हैं; लेकिन भजन के पास वह सब कुछ भी नहीं है। इस जीवन में अपने भाई के साथ उनके सम्पर्क का कोई सूत्र भी नहीं है।

फिर भी नारायण अपने भाई भजन को किसी हद तक समझते हैं। संशय रहने पर भी उनका मन न जाने क्यों बार-बार कहने लगा कि कल रात भजन ही श्मशान में गया था। भजन में विश्वास नहीं है, लेकिन दुस्साहस है। भजन के मन की अंतर्धारा की गति बड़ी विचित्र है। उसने नारायण के आगे साफ-साफ इनकार किया है और परोक्ष रूप से कह दिया है कि भैया, आप अपने रास्ते चलिए। लेकिन नारायण जानते हैं कि यहीं अंत नहीं है, भजन के मन में और भी कुछ है। लेकिन प्राण रहते भजन उसे प्रकट नहीं करेगा। फिर नारायण के पास भी वह सब सुनने-समझने के लिए फ़ुरसत नहीं है।

नारायण ने सोचा कि अभी भजन को बुला कर पूछा जाय। लेकिन उन्होंने न भजन को बुलाया और न उससे कुछ पूछा। वे जानते हैं कि इतने लोगों के सामने भजन कुछ भी नहीं कहेगा। फिर अपने को इस चिंता से मुक्त कर वे फिर पुराने प्रसंग पर लौट आये। वे बोले, "सुनो ! मेरा ख्याल है कि इस तरह सोचते रहने से कोई लाभ न होगा। मुझे ऐसा लगता है कि कल रात श्मशान में जो भी रहा हो, वह हमारा दुश्मन नहीं है। लेकिन आज रथीन को फिर परीक्षा देनी होगी। आज रथीन को एक सूटकेस ले कर श्मशान जाना होगा। उस सूटकेस में रहेंगे दो रिवाल्वर। विश्वास और साहस दोनों की परीक्षा हो जायेगी। बोलो रथीन, तैयार हो न ?"

रथीन मन ही मन थोड़ा विस्मित हुआ, लेकिन वह अपना विस्मय प्रकट न कर सका। उसने कहा, "तैयार हूँ भैया।"

फिर किसी को कुछ कहने का मौका न देकर नारायण ने गंभीर स्वर में कहा, "कल कृपाल की परीक्षा ली जायेगी।"

कृपाल चुप रहा। उसकी खामोशी से उसकी अस्वीकृति का पता नही चल सका।

हीरेन ने जल्दी-जल्दी कहा, "नारायण भैया, इस बीच शराब की दुकान पर पिकेटिंग करने की तारीख भी निश्चित कर ली जाय।"

नारायण ने असमंजस भरे स्वर में कहा, "उसके लिए कोई ऐसा दिन तय किया जाय जिस दिन कारखाने में छुट्टी हो। नही तो मजदूरों से झगड़ा होने की आशंका रहेगी। इसके अलावा मैं तो भैया नही रह पाऊँगा। शायद मुझे कई दिनों के लिए बाहर जाना पड़ जाय।"

हीरेन इधर कुछ दिनों से देख रहा है कि राष्ट्र के चरित्र-निर्माण के ऐसे कामों के प्रति नारायण भैया न जाने कैसी उपेक्षा बरत रहे हैं। हर समय वे कुछ और ही सोचा करते हैं। स्वराज की प्राप्ति के लिए उन्होंने दूसरा रास्ता अपनाया है। खास कर फरवरी के महीने में बारडोली में हुई बैठक के दौरान कांग्रेस वर्किंग कमेटी में जो दरार पड़ गयी, उसके बाद से नारायण भैया दूसरे रास्ते पर तेजी से चलने लगे हैं। इसके अलावा बारडोली में जो कुछ हुआ, उसे उन्होंने कायरता की संज्ञा दी। अब वे व्यायाम समितियों की ओर अधिक ध्यान देने लगे हैं। वे खास तरह के कुछ लड़कों की तलाश में हैं। इससे जाहिर है कि वे अपने को गांधी जी के रास्ते से अलग करते जा रहे हैं। यह बड़े दुख और निराशा की बात है। हीरेन जैसे युवकों के मार्गदर्शक नेता नारायण भैया आतंकवाद के भयानक रास्ते पर चल पड़े हैं।

कुछ लड़कों, खास कर हीरेन के लिए यह धर्मांतरण के समान है। फिर भी शराब की दुकान पर धरना देने के मामले में उसमें भी थोड़ी दुविधा है। एक बात यह भी है कि इसमे गिरफ्तार होने की संभावना है। फिर मजदूरो से अगर झगड़ा हो जाय तो? मजदूरों के चरित्र के इस पहलू के बारे मे सोच कर भी उसे कोई समाधान नही मिल पाता। मजदूर जैसे अपना भला-बुरा नही समझते, वैसे वे किसी को यह सब समझने भी नही देते। अगर कोई उनके नैतिक पतन को रोकने आता है तो वे लाठी ले कर उसे मारने दौड़ते हैं। लेकिन हां, यह भी सही है कि हमने अपने को उनसे हमेशा दूर रखा है। अछूत इसके प्रमाण हैं। हमने तथाकथित अछूतों को हमेशा अपने से दूर रखा है। अब हमें खुद उनके पास जाना पडेगा, उनका मंदिर मे प्रवेश करने का और तथाकथित सवर्णों के साथ बैठ कर खाने का अधिकार देना होगा। हृदय का एक दरवाजा उनके लिए भी खोलना पडेगा। लेकिन वह दरवाजा प्यार का होना चाहिए।

हीरेन जिस समय चिंतामग्न था, तभी रथीन ने नारायण से कहा, "... सुनिर्मल भी हमारे साथ आना चाहता है।"

नारायण न जाने क्या सोच रहे थे, वे जरा चौंक पड़े। मानो दे... उसी हालत में उन्होंने पूछा, "कौन सुनिर्मल..."

— "मेरा मित्र। स्कूल में पढ़ता है।"

नारायण बोले, "उसे मेरे पास ले आना। लेकिन अब नहीं, ..."

बजे। अभी तुम सब जाओ। शाम को व्यायाम समिति में आना मत भूलना।"

एक-एक कर सभी चले गये। नारायण बैठे रहे। वे भजन के बारे में सोचने लगे। अब उनको कोई संदेह नहीं है कि कल रात भजन ही श्मशान में गया था। अब उनको यह भी याद आया कि कल आधी रात के बाद भजन घर लौटा था। उस समय नारायण लेटे जरूर थे, लेकिन उनको नींद नहीं आयी थी। उतनी रात को भजन कहाँ गया था? बकुल माँ को घर पहुँचा कर लौटने में वह कभी उतनी रात नहीं करता।

नारायण को इतनी सारी बातें याद आयीं, लेकिन सवेरे बकुल माँ ने जो बात कही थी वह उसे याद नहीं आयी। बकुल माँ ने नारायण से कहा था कि साहा की दुकान से ढाई मन चावल मँगा देना। साहा की दुकान का हिसाब लिखा कागज नारायण के पिता महादेव हालदार के पाँव के पास पड़ा था। उसी कागज को देख कर बकुल माँ ने नारायण से कहा था कि साहा को रुपया दे देना और उससे चावल ले लेना। नारायण को उन बातों का ध्यान नहीं है। उन्हें इस बात का भी ध्यान नहीं है कि घर में पैसा नहीं है। बाप का जेब खाली है। घर में चावल भी नहीं है। पता नहीं, बकुल माँ के पास पैसा है या नहीं।

भजन की दुकान में गाहकों की भीड़ कम हो चुकी है। जो दो-चार जने हैं, वे सब पश्चिमी प्रांत के हिंदीभाषी हैं। उनके बदन पर नीला कुर्ता है। वे रेल-रोड के मजदूर हैं। उनके अलावा गोलोक चटर्जी भी हैं। उनके एक हाथ में हुक्का और दूसरे में चाय का गिलास है। वे इसी टोले के हैं। वे कोई खास बूढ़े नहीं हैं, लेकिन उनकी उम्र ढलने लगी है। वे हर वक्त अफीम के नशे में ऊँघते रहते हैं। फिर भी निपुण अभिनेता की तरह कहानी सुनाने के लिए इस इलाके में उनका बड़ा नाम है। लोग कहते हैं कि बूढ़ा गपबाज है! उनकी कहानियाँ अद्भुत होती हैं। उनके न सिर-पैर होते हैं और न उनकी प्रामाणिकता। लेकिन लोग उनकी कहानियाँ बड़े चाव से सुनते हैं।

इस समय गोलोक चटर्जी हुक्का और चाय का गिलास हिला-हिला कर उन दोनों हिंदीभाषी मजदूरों को अपने किसी हिंदीभाषी मित्र की मूँछों की कहानी सुनाने लगे हैं। कहानी सुनाने में गोलोक बाबू जिस भाषा का प्रयोग कर रहे हैं, वह न बंगला है न हिंदी। वह उनकी अपनी भाषा है। उस भाषा के अपने रस और सौंदर्य हैं। उस भाषा को समझने-बोलने में कोई परेशानी भी नहीं है। खैर!

गोलोक बाबू कह रहे हैं कि मेरे मित्र को उन मूँछों की खिदमत में चार नौकर लगे थे। एक दिन उन मूँछों के मालिक ने मूँछों में तेल-पानी लगाने के बाद उनको कंघी से झाड़ कर खिड़की में फैला दिया था। वे खुद खिड़की के पास तखत पर लेटे हुए थे। उनकी मूँछें खिड़की से बाहर एकदम जमीन तक लटकने लगी थीं। खिड़की के बाहर आम रास्ता था। उस समय उस रास्ते से एक भले घर का लड़का जा रहा था। उसने उन मूँछों के बाल देख कर सोचा कि जिसके केश इतने सुंदर हैं, वह लड़की न जाने कितनी सुंदर होगी। अपने को सँभाल न पा कर उस नौजवान ने धीरे से बालों

का वह गुच्छा उठाया और बड़े प्यार से मीठी आवाज में कहा — मेरी जान ! ज्यों ही उसने ऐसा कहा, त्यों ही —

अब आगे कुछ कहने की जरूरत नहीं है। दोनों मजदूर हँसते-हँसते लोट-पोट होने लगे। अपना काम करते हुए भजन भी हँसने लगा। लेकिन उसकी हँसी न जाने क्यों जम नहीं पायी।

बाहर हवा मतवाली हो रही है। गिट्टी बिछी सड़क पर जमी धूल उड़ने लगी है। सुर्खी की तरह लाल धूल उड़-उड़ कर पेड़ों में, पत्तों में, खंभों पर लगे मिट्टी के तेल के लैम्पों की चिमनी में और लोगों के मुँह-आँखों में भरने लगी है। न जाने वह धूल हवा में कितनी ऊँचाई तक पहुँच गयी है जिससे आसमान भी बदरंग दिखाई पड़ने लगा है। सामने वाले आम के पेड़ में मकड़ी का जो बहुत बड़ा जाला लगा हुआ है, उस धूल के कारण धूप में वह भी लाल दिखाई पड़ रहा है।

नारायण का चेहरा भी लाल हो गया है। भजन की ओर देखते-देखते उनके हृदय में न जाने कैसी मरोड़ पैदा होने लगी। सोचना शुरू करने पर तो उससे छुटकारा नहीं मिलता। इस संसार के बंधन में अपने को बांधना न चाह कर भी मानव से लगाव तो छूट नहीं पाता। वही भजन जो खड़ा है, वह भी अपने जीवन के बारे में अनिश्चित और असहाय है। अपने मन में वह अपने बड़े भाई के बारे में चाहे जो सोचा करे, लेकिन बड़े भाई नारायण ही जानते हैं कि भजन के लिए उनके हृदय में कितनी जगह है। फिर भी भजन को अपने रास्ते चलना है, चाहे सच्चाई कुछ भी हो। भजन के लिए जीवन का कोई और मोड़ इंतजार कर रहा है। नारायण के स्नेह का संबल उसके लिए मूल्यवान नहीं भी हो सकता है। इसलिए भजन क्यों उनकी परवाह करेगा और क्यों उनकी खबर रखेगा ?

फिर भजन को भी तो जिंदा रहना है। नारायण ने सोचा कि अगर मेरा अनुमान सही है और भजन सचमुच कल रात श्मशान में गया था तो वह निस्संदेह चिंता का विषय है। सनक के पीछे जान को जोखिम में डालने का कोई मतलब नहीं है।

नारायण ने पुकारा, "भजन !"

उधर भजन मन ही मन डर रहा था और इस पुकार का इंतजार कर रहा था। वह इंतजार कर रहा था, फिर भी चौंक पड़ा। उसने भैया की ओर मुँह नहीं किया। वह कोई काम भी नहीं कर रहा है, इसलिए व्यस्त होने का बहाना बनाना भी संभव नहीं है। फिर भी पानी में लत्ता भिगो कर टेबुल पोंछते हुए उसने नारायण भैया की पुकार का उत्तर दिया, "क्या कह रहे हैं ?"

नारायण ने गंभीर स्वर में कहा, "सुनो, इधर आओ।"

भजन समझ गया कि नारायण भैया के पास जाना पड़ेगा। नारायण भैया ऐसे आदमी हैं जिनकी किसी बात की उपेक्षा करना संभव नहीं है। लेकिन भजन को क्या सुनना है ? कल रात उसने जो कुछ किया था, वह एक तरह का खेल था। हाँ, एक

तरह का खेल ही था। आज सवेरे वह खेल बड़ा हास्यकर लग रहा है। ऐसा लग रहा है कि वह खेल उसने बहुत दिन पहले खेला था। अब उसके सामने एक ही रास्ता खुला हुआ है, और वह है एक विशेष काम का रास्ता। मन ही मन उसने उस रास्ते पर बहुत देर पहले ही चलना शुरू कर दिया है। नहीं, अब उसमें किसी तरह के मान-अभिमान का बोध नहीं है।

नारायण भैया के पास जा कर भजन खड़ा हो गया। वह इस तरह खड़ा रहा कि नारायण का विश्वास दृढ़ हो गया। उन्होंने पूछा, "क्यों भजन, कल रात तुम श्मशान में गये थे ?"

किसी तरह आगा-पीछा किये बिना भजन ने उत्तर दिया, "श्मशान ? मुझे क्या गरज पड़ी है वहाँ जाने की ?"

यह जवाब सुन कर नारायण निस्संदेह हो गये कि कल रात भजन ही श्मशान में गया था। अगर वह न जाता तो अब तक कितने ही सवाल कर भैया को परेशान कर देता। उसमें हर बात को गहराई से जानने का कौतूहल है। इसलिए वह जरूर पूछता कि क्यों यह सवाल किया गया, श्मशान में क्या हुआ था, किस पर क्या शक किया जा रहा है और उसी से क्यों यह पूछा गया। एक ही जवाब में वह कभी साफ इनकार न करता।

नारायण बोले, "तुम्हें गरज पड़ी हो या नहीं, यह सवाल नहीं है। लेकिन उस तरह वहाँ जा कर तुमने ठीक नहीं किया। पता नहीं कब क्या हो जाय। अगर कल कुछ हो जाता तो ?"

थोड़ी देर रुक कर नारायण ने फिर कहा, "मैं जानता हूँ कि तुम्हारे अंदर साहस है। जिस तरह रथीन की परीक्षा ली गयी, उस तरह तुम्हारी परीक्षा लेने की जरूरत नहीं है। साहब की गाड़ी पर ढेला मारने की बात मुझे खूब याद है। उस टोली के किसी ने हिम्मत नहीं की, मैंने भी नहीं; लेकिन तुमने देखते-देखते ढेला चला दिया।"

भजन को अपनी हिम्मत का बखान अपने भैया के मुँह से सुनना अच्छा नहीं लगा। भैया मेरी हिम्मत की दाद देते हैं, यह जान कर भजन को अचानक अपने हृदय में न जाने कैसा मीठा-मीठा दर्द महसूस हुआ। उसे लगा कि अभी आँखों से आँसू बह निकलेंगे। नहीं, अब वह कुछ सुनना नहीं चाहता। उससे बरदाश्त भी नहीं हो रहा है।

नारायण भैया ने यहाँ तक कह दिया कि अगर तेरा जैसा साहस हमारे एक भी लड़के में होता तो —

भजन झटपट बोला, "वह सब छोड़िए भैया, आज आपसे एक बात कहनी है।"

नारायण बोले, "कहो।"

एक नटखट बच्चा जैसे मचलता है, वैसे मचल कर भजन ने कहा, "आप तो भैया शादी नहीं करेंगे, लेकिन अब मैं कर लूँगा।"

क्षण भर के लिए नारायण अचंभे में पड़ गये। फिर वे दिल खोल कर हँसे

और बोले, "तब ? क्या तुम मेरे आदेश का इंतजार कर रहे हो ? अगर मैं कहूँगा तो तुम्हें विश्वास न होगा, लेकिन कितने ही दिन मैंने इस बारे में सोचा है। फिर ऐसा मौका भी नहीं मिला कि कुछ कहूँ। तुम जब भी चाहो, शादी कर लो भजन, उससे हमारे घर में रौनक आयेगी।"

भजन हँस नहीं सका। नारायण भैया की हँसी न जाने क्यों उसके मन में चुभने लगी। यह हँसी आशीर्वाद है या अभिशाप, वह समझ नहीं सका। लेकिन अब और नहीं, उसे अपने रास्ते बढ़ना है।

अगर नारायण भैया विरोध करते हैं, तो भी भजन नहीं रुकेगा।

गोलोक चटर्जी की खुमारी शायद अब भी बरकरार है, क्योंकि वे ऊँघ रहे हैं। फिर एकाएक उन्होंने पूछा, "क्या बात है भाई, दोनों जने इतने खुश क्यों हो ? जरा हमें भी पता चले।"

नारायण बोले, "भजन शादी करेगा दादा।"

"यह बात है!" गोलोक चटर्जी ने हुक्के में दो-चार कश लगाये, लेकिन चिलम बुझ चुकी है। फिर उन्होंने कहा, "तो सुनो, एक शादी के बारे में बता रहा हूँ।"

भजन ने जल्दी-जल्दी कहा, "अभी रहने दीजिए दादा। आपने पहले भी जो कहानी सुनायी, उसी से आपकी [illegible] ही चुकी है।"

"यह बात है!" खुश हो कर दादा ने आँखें बंद कर लीं। फिर उनका इस दुनिया से कोई मतलब नहीं रहा।

ठीक उसी समय नारायण की आँखों के आगे एक किशोरी का चेहरा चमक उठा। गंगा किनारे वाले पाठकों के घर की लड़की का चेहरा। यह तो आज से [illegible] नौ साल पहले की बात है। दुबली-पतली नाटी-सी लड़की, बड़ी-बड़ी आँखें। पान की सी शक्ल का चेहरा। सिर में उसके [illegible] बनाया जाता था। वह जूड़ा [illegible] हुए हो। कल तक की नासमझ लड़की। उसकी शादी में [illegible] मजाक में [illegible] पूछा था कि तू किससे शादी करना चाहती है ? इस पर [illegible] हलवाई के [illegible] लड़के से। [illegible] शादी करना चाहती [illegible]

[illegible]

हँसी की बात हँसने-हँसाने तक सीमित रह गयी थी। अब नारायण किशोर नहीं हैं। अब वे सबके आदर के पात्र हैं। लोग उनकी इज्जत भी करते हैं। फिर भी हँसी की वह बात एकदम हँसी बन कर नहीं रही। उस हँसी में न जाने कहाँ दर्द छिपा रहा। बड़ा हलका सा दर्द। नारायण ने उसके बाद उस लड़की को कई बार देखा। पल भर के लिए, घड़ी भर के लिए। देह गदराने के साथ उस लड़की का रूप निखर आया था। अब तो वह जवान हो गयी है। अब उसे देखने पर नारायण को बस उसकी दादी, पाठक बुढ़िया की बात याद आती है — मेरी नतिनी शिव जी की ऐसी मूर्ति बनाती है जैसे नक्कू हालदार का बड़ा बेटा हो।

नहीं, यह बात गलत थी। उस लड़की की बनायी शिवमूर्ति को देख कर बुढ़िया को नक्कू हालदार के बड़े बेटे का भ्रम जरूर हुआ था, लेकिन उस शिवमूर्ति में किसी और की प्राण-प्रतिष्ठा होने लगी थी। वह कोई और था।

अचानक हवा का झोंका आते ही खपच्चियों का कमरा चरमरा उठा। मानो किसी ने भजन की दुकान को झकझोर दिया। छप्पर के संद-संद में इकट्ठी धूल सारी दुकान में भर गयी। धुएँ की कालिख से काले मकड़ी के जाले टूट-टूट कर गिरने लगे।

तेज हवा के कारण आसपास के पेड़ों से सर-सर आवाज आने लगी। मानो वे पेड़ पगला कर जोर-जोर से सैकड़ों हाथ हिलाने लगे। उससे चिड़ियों के झुंड अपने शरण-स्थल छोड़ कर आकाश में उड़ चले। आम के सूखे बौर झरने लगे। बौर में कालापन आ गया है। उनमें नन्हे-नन्हे आम भी लगे हैं। वे कनफूल के हरे नग जैसे लग रहे हैं। किसी-किसी पेड़ में हरी पत्तियाँ निकल आयी हैं, लेकिन ज्यादातर पेड़ों की सूखी पत्तियाँ हवा के संग उड़ने लगीं।

सुनसान रास्ते से एक बैलगाड़ी जा रही है। उसका कोई गाड़ीवान पश्चिम का है — शायद बिहार या उत्तर प्रदेश का। मौज में आ कर उसने गाना छेड़ दिया है। दोनों सुस्त बैल मानो ऊँघते हुए चल रहे हैं, लेकिन उनका थूथन हिल रहा है। याने, वे आराम से जुगाली करते जा रहे हैं।

भजन की दुकान में सभी लोग चुप हैं। मानो वे बात करना भूल गये हैं। लेकिन गोलोक चटर्जी को चाय मिल चुकी है। उसी खुशी में वे धीरे-धीरे कोई लोक-गीत गाने लगे — बरसों बाद पिया घर आया और राधा का मन उल्लसित हो उठा।

गोलोक बूढ़े का मन भी कम उल्लसित नहीं है।

गीत के हर बोल के संग गोलोक चटर्जी की खनकती आवाज काँपने लगी। हवा में भी उल्लास भर चुका है। उल्लसित हवा उनकी स्वरलहरी को न जाने कहाँ-कहाँ उड़ा ले चली। धीरे-धीरे हवा तेज होती गयी। मानो कालवैशाखी का आक्रोश प्रकट होने लगा। बंगाल में चैत्र-वैशाख में यों भी प्रायः अपराह्न में कालवैशाखी चला करती है। इस आँधी के साथ अक्सर पानी बरसता है। भजन की दुकान में बैठे लोगों ने सोचा कि कालवैशाखी चलने लगी है, अब जरूर पानी बरसेगा।

करीब आधा वैशाख बीत चुका है। बहुत रात हो चुकी है। लेकिन कितनी रात हुई है, यह कौन बता सकता है? आंधी चलने लगी है, लेकिन धीरे-धीरे। मानो दुनिया सो रही है और उसी का लाभ उठा कर पश्चिम-उत्तर कोने में न जाने कौन साजिश करने लगे। सन्-सन् चलने वाली हवा में, आकाश के दूरागत आर्तनाद में, बिजली की सर्वनाशिनी चमक में और घटाटोप अंधकार में मानो उसी का संकेत मिलने लगा। मानो तोपों से गोले बरसाती हुई विशाल सेना बहुत दूर से चली आ रही है। मानों यह गड़गड़ाहट, आग की यह झलक और क्षण-क्षण फैलने वाले गहरे काले धुएं जैसे बादल मानो उसी की सूचना देने लगे।

फिर दूसरे ही क्षण तूफान का तांडव शुरू हो गया। मानो आकाश में कोई विकट अट्टहास करने लगा। पेड़-पौधों की गर्दन पकड़ कर न जाने कौन उनका सिर जमीन पर धुनने लगा। पानी की बड़ी-बड़ी बूंदें तड़ातड़ पड़ने लगीं।

नक्कू हालदार का इकमंजिला मकान अंधेरे में समा चुका है। बादल के घटाटोप और पेड़ों की उथल-पुथल के बीच कहीं उसके अस्तित्व का पता नहीं चलता।

भजन की चाय की दुकान थर-थर कांप रही है। कनस्तर के टुकड़ों का बना छप्पर हिलने लगा। बांस की बाड़ चरमराने लगी। बंद दरवाजे पर न जाने कौन अशरीरी प्रेत धक्के मार रहा है। चाय के दाम लिखे ब्लैकबोर्ड को न जाने कौन उठा-उठा कर पटक रहा है, जिससे खट-खट आवाज हो रही है।

अपने कमरे में भजन जाग रहा है। वह सिगरेट पी रहा है। उसने अभी हाल में सिगरेट पीना शुरू किया है। छत में लगे हुक से पुराने जमाने की किरासिन की बत्ती लटक रही है। घर के लोग उसे बिल्लौरी बत्ती कहते हैं। बत्ती जल रही है, लेकिन मद्धिम कर दी गयी है। उस रोशनी में दिखाई पड़ा कि अब वह कमरा सिर्फ भजन का नहीं है, बल्कि उसमें और भी कोई है। नयी खाट पर लगे बिस्तर में फूल बिखरे हैं और उस पर भजन की पत्नी सो रही है। भजन परसों उससे शादी कर उसे घर लाया है। आज 'फूलशय्या' की रात्रि याने सुहागरात है। घर में बहुत से लोग आये हैं जो अलग-अलग कमरे में ठहरे हुए हैं। सिर्फ भजन के पिता के कमरे में कोई नहीं ठहरा है। रिश्ते में भजन के मौसा-मौसी, फूफा-फूफी, चाचा-चाची और मामा-मामी वगैरह आये हैं। एक बहन भी बाल-बच्चा लिये अपने पति के साथ आयी है। बहुत-से लोग आये हुए हैं, जिनमें से बहुतों को भजन पहचानता भी नहीं। 'फूलशय्या' के कारण घर में उत्सव का वातावरण है।

समारोह समाप्त हो चुका है। लोग अपने-अपने कमरे में सो रहे हैं। नवदम्पति के कमरे में ताक-झांक करने वाली या दरवाजे-खिड़की पर कान लगा कर कुछ सुनने की कोशिश करने वाली नयी उमर की औरतें लौट गयी हैं। अब वे अपने-अपने कमरे में सो रही हैं। रात बहुत हो चुकी है। मौसम भी ठीक नहीं है। बाहर तेज आंधी चल रही है।

भजन अलमारी के पास दीवार के सहारे खड़ा है। मानो वह हैरत में पड़

गया है और उसकी बुद्धि काम नहीं कर रही है। उसके चेहरे पर असह कष्ट की छाप है। लेकिन क्यों, यह वह भी नहीं जानता। उसके सीने के अन्दर दारुण बेचैनी है और असीम शून्यता का हाहाकार। वह किसी तरह अपने को समझ नहीं पाता। हाथ में सिगरेट लिये वह एकटक खाट की ओर देख रहा है।

नयी खाट और बिस्तर भी नया, गद्देदार। उस पर फूल बिखरे हैं। सारे कमरे में खुशबू महमहा रही है। खाट पर जूही सो रही है — भजन की नवविवाहिता पत्नी। जूही सो रही है — करवट ले कर आराम से सो रही है। जूही सांवली, स्वस्थ और लंबी काठी की है। नीद में डूबी उसकी आंखों की पलकें कुछ खुली हुई हैं। वे आंखें श्वेत अपराजिता की पंखुड़ियां जैसी लग रही हैं। नाक पतली और खड़ी है। उसमें छोटी-सी लौंग पड़ी है। ललाट पर सिंदूर है। सिंदूर थोड़ा फैल जाने से रेखा-सी बन गयी है। सिंदूर की टेढ़ी-मेढ़ी रेखा मांग तक चली गयी है। चेहरे पर से घूंघट हट चुका है। भारी जूड़ा ढीला हो कर आधे तकिये पर पड़ा है। उसमें लिपटी माला भी खुल गयी है। जूही थकी है। उसके चेहरे पर थकान है, लेकिन उस थकान से संतोष झलक रहा है। उसके लाल-लाल अधखुले होंठ ऐसे लग रहे हैं, जैसे हँस रहे हों। हँसते होंठों के बीच दो-तीन सफेद दांत दिखाई पड़ रहे हैं। रंगीन शीशे की तरह चमकने वाली बूटीदार शांतिपुरी साड़ी अस्तव्यस्त हो चुकी है। उसी साड़ी में लिपटी जूही पड़ी है। उसे अपनी सुध नहीं है। वह कोई अमीर घर की लड़की नहीं है। फिर भी उसे गहने कम नहीं मिले हैं। लेकिन वे गहने उसके वदन पर नहीं हैं। भजन को गहने अच्छे नहीं लगते। इसलिए जूही ने गहने उतार रखे हैं।

जूही निश्चिंत हो कर सुख की नींद सो रही है। उसका बायां हाथ बिस्तर पर उस जगह पड़ा है जहां भजन लेटा था। वह परिपूर्ण संतोष की नींद सो रही है। उसे जरा भी पता नहीं कि बाहर कितनी तेज आंधी चल रही है। भजन जूही को देख रहा है। बूंद-बूंद पसीना भजन के माथे पर जमा है। चेहरा अंगारे की तरह लाल हो गया है। भूरी आंखें शोले की तरह चमकने लगी हैं।...हां, यही तो वह लड़की है जिसको भजन ने कुछ दिन पहले चाहा था। इसी को प्यार देने में आज भजन ने आधी रात बिता दी। उसने चूम-चूम कर इस लड़की का दिल भर दिया है और न जाने इससे कितनी बातें की हैं। अतृप्त कौतूहल से उसने इस लड़की का अंग-अंग पहचाना है, महसूस किया है। फिर इसी क्रम में उसके रोम-रोम में आग जल उठी है।

आग अब भी जल रही है। नस-नस से आग की लपटें बह रही हैं। लेकिन भजन के सीने में अनन्त हाहाकार गूंज रहा है। उस सूनापन का जरा-सा हिस्सा भी तो नहीं भरा। फिर भी इसी लड़की को भजन ने चाहा था। इसमें उससे कोई गलती नहीं हुई। अगर ऐसा है तो कौन उसके मन के अन्दर चीख रहा है कि नहीं, मैंने इसे नहीं चाहा था? मैं कैसे इसके आगे अपने को समर्पित कर सकूंगा?

फिर भजन ने किसको चाहा था? उसके मन ने फिर वही उत्तर दिया कि इसी को। लेकिन अब उसे लगने लगा कि मैं तो इसे नहीं चाहता, मैं तो किसी को भी नहीं

चाहता। भजन का तो मानो अपने मन में ही मेल नहीं है। इसलिए उसके चाहने और पाने का कोई अता-पता नहीं चलता। उसका मन मानो विनाशकारी भयानक यन्त्र हो!

इसके बावजूद इस दुनिया में मनुष्य अपने पथ पर विश्वास ले कर चलता है। भजन के बड़े भाई चले गये हैं। इसलिए वे भजन के विवाह में उपस्थित नहीं हो सके। उनका अपना रास्ता है, विश्वास है और विचार है। उनका बुलावा आया और उसी क्षण वे चले गये। भजन उनको रोक नहीं सका। उनको यह संसार ही नहीं रोक सकता तो किसी का लाड़-प्यार या स्नेह क्या रोकेगा?

भजन के पिता जैसे पहले थे, वैसे आज भी हैं। शराब पी कर वे अपने कमरे में पड़े हैं। कोई भी उनको इस काम से रोक नहीं सकता। उनकी मौज में कोई रत्ती भर भी खलल नहीं डाल सकता। उनका मन होगा तो वे और भी शराब पी लेंगे। रुपया मिल जाने पर वे अभी किसी पर मुकदमा चालू कर देंगे।

बकुल माँ अपने विचार में डूबी हुई हैं। भजन ने शादी कर ली तो अब उनको जल्दी ही छुट्टी मिल जायेगी। अब वे भी यहाँ से विदा ले कर चली जायेंगी।

सिर्फ भजन संतुष्ट नहीं हो सका। उसमें संतोष है ही नहीं। यह युग ही उसके लिए विश्वासघात का है। इस युग में एक शिक्षित व्यक्ति का अभिशप्त जीवन ले कर वह जिंदा है। इस जीवन में वह कुछ चाह कर भी नहीं पा सका। फिर भी उसने चाहा था। इस अनिश्चय के बीच वह विमूढ़ हो उठा है। इसलिए उसके संवेदनशील परंतु गूंगे और बेचैन प्राणों में आग लगी हुई है। उसे नहीं मालूम कि कल उसका जीवन-प्रवाह किस दिशा में बह चलेगा। सिर्फ एक संशय उसके मन के कोने से झांक रहा है। इस समय वह निदारुण विफलता के आमने-सामने खड़ा है।

बाहर बादल की गड़गड़ाहट जारी है। बिजली का कौंधना चालू है। आंधी-पानी के आक्रोश में जरा भी कमी नहीं आयी। मूसलाधार वर्षा के थपेड़े धरती को बेचैन किये दे रहे हैं।

जूही हँस रही है। शायद वह कोई सपना देख रही है। उसी के आवेश में उसके चेहरे पर और होंठों के कोनों में मुस्कराहट है। मृण्मयी मुस्करा रही है। न जाने उसके मन में कौन-सी बात छिपी है! पता नहीं, वह क्यों मुस्करा रही है?

भजन को याद आ रहा है कि नारायण भैया नहीं हैं। उधर जूही हँस रही है। भैया चले गये हैं, पिता जी शराब पी कर मदहोश पड़े हैं, बकुल माँ छुट्टी पाने की खुशी में विभोर हैं, रिश्ते-नातेदार दिन भर खाने-पीने और खुशियां मनाने के बाद अब आराम से सो रहे हैं, लेकिन जूही मुस्करा रही है। भजन को लगा कि उसे ले कर लोग खिलवाड़ करने लगे हैं। वह खिलवाड़ बड़ा ही निर्मम है, लेकिन लोग उसके प्रति उदासीन हैं।

गर्दन पर ठंडक महसूस होते ही भजन चौंक पड़ा। लेकिन यह तो माला है।

साँप नहीं, गोजर नहीं, फूलों की माला है ! झटके से माला उतार कर उसने दूर फेंकी, फिर वह बाहर वाले बरामदे में निकल गया।

बरामदे का दरवाजा तथा खिड़कियाँ बंद हैं। हालदार बाबू के कमरे से रोशनी झाँक रही है। भजन चुपचाप, लेकिन बेचैन कदमों से उस कमरे में गया। जो स्नायुएँ मनुष्य को सोचने के लिए मजबूर करती हैं, उनको मानो भजन पीस कर नष्ट कर देना चाहता है।

महादेव हालदार बिस्तर पर पड़े हैं। उनका लगभग आधा शरीर तख्त के बाहर लटक रहा है। उनको इसका होश भी नहीं है। सिरहाने में तकिये के पास शराब की बोतल पड़ी है।

किसी प्रकार संकोच किये बिना भजन ने शराब की बोतल उठा ली। लेकिन वह एकाएक सहम गया। शायद उसका शिक्षित और मार्जित मन ही एकबारगी चौंक पड़ा। लेकिन इस सोचते रहने से छुटकारा पाना है, आराम करना है। निडर हो कर उसने गले में शराब उँड़ेली। शराब की तेज भभक से छाती मानो अन्दर से जल गयी। तीखे स्वाद के कारण उबकाई आने लगी। पेट में अँतड़ियाँ जलने लगीं। थोड़ा सँभल कर भजन ने फिर गले में शराब उँड़ेली। उसके बाद वह बाहर निकल आया।

भजन देख नहीं पाया कि लम्बे बरामदे के अँधेरे कोने में बकुल माँ पत्थर की मूर्ति बनी खड़ी हैं। बकुल माँ की आँखों में नींद नहीं है। वे चुपचाप खड़ी हो कर भयानक सर्वनाश का नाटक देखने लगीं।

अपने बारे में सोचते-सोचते बकुल माँ यहाँ आ पहुँची थीं और अब उनको यह दृश्य देखना पड़ा। जिस दिन से भजन की शादी की बात चली थी, उसी दिन से उन्होंने सोचना शुरू कर दिया था। अपने आपको भी वे पूरी तरह समझ नहीं सकी थीं। उन्होंने घर-गृहस्थी के झमेले से छुटकारा पाना चाहा था। उन्होंने यह बात साफ-साफ कही भी थी। लेकिन अब लगता है कि उनका मन इसके लिए तैयार नहीं हो सका है। इस कारण वे दिग्भ्रमित सी हो रही हैं। अब उनको ऐसा लग रहा है कि पेट जायी संतान जिस तरह दुश्मन होती है, उसी तरह भजन भी अचानक शादी करके मुझे इस घर से निकालना चाह रहा है। इस पश्चात्ताप से उनकी छाती में जलन होने लगी और छाती से खून रिसने जैसा कष्ट होने लगा।

उस दिन रात को बकुल माँ को घर पहुँचाते समय भजन भी यही सोचने लगा था, लेकिन उसने बकुल माँ से कुछ नहीं कहा था। वह कहना नहीं चाहता था; इसी लिए उसने कुछ नहीं कहा था। लेकिन बकुल माँ ने कौन-सा अपराध किया है ? अब वे किसको और किसके परिवार को ले कर रहेंगी ?

जीवन में बकुल माँ ने क्या चाहा था, यह तो वे पहले भी नहीं समझ सकी थीं और आज भी नहीं समझ पातीं ! फिर भी असहनीय पश्चात्ताप से उनका मन भर उठा। अपने को उन्होंने कभी इतना असहाय महसूस नहीं किया था। बरसों वे खाना बना कर भजन और नारायण को खिलाती रहीं और उनकी देखभाल करती रहीं।

किसी को पता भी नहीं है कि अपने ससुर के दिये गहने वे चोरी से बेच-बेच कर महादेव हालदार के घर का सारा खर्च कैसे पूरा करती रहीं। महादेव हालदार ने भी कभी इस बारे में कुछ जानने की इच्छा प्रकट नहीं की। खैर, इससे बकुल माँ का न कुछ बना है और न कुछ बिगडा है। अगर महादेव हालदार इस बारे में कुछ पूछते तो बकुल माँ असमंजस में पड़ जातीं। चुपचाप अपने को निचोड़ कर देने में ही बकुल माँ को शांति मिली। फिर भी उनका वैधव्य अपने में अनिर्वाण अग्नि-स्रोत छिपाये हुए है। उस अग्नि-स्रोत की ज्वाला कभी तीव्र हो गयी तो बकुल माँ अनमनी हो पड़ी। फिर उनको नींद नहीं आयी और किसी ने अदृश्य रह कर मुँह चिढाया। तभी उन्होंने कहा कि मुझे छुट्टी चाहिए, मैं कहीं और जाना चाहती हूँ।

लेकिन कहाँ ? कहीं नहीं। सिर्फ कहने के लिए बकुल माँ ने ऐसा कहा है। यह सब छोड़ कर वे भला कैसे कहीं जा सकती हैं ? कई दिन पहले नारायण ने भी जाते समय उनसे पूछा था और उन्होंने जाने की आज्ञा दी थी — जाओ ! लेकिन भजन ने अनुमति नहीं माँगी। उसने सिर्फ एक बार कहा था कि मैं शादी करूँगा और बकुल माँ ने भी कहा था कि क्यों नहीं करोगे बेटा, जरूर करोगे।

केवल महादेव हालदार अबोध शिशु की तरह हाथ फैला कर अक्सर कहते हैं — बकुल, कुछ रुपये दो न !

कहाँ से कैसे रुपया आयेगा, यह बकुल माँ कभी नहीं पूछतीं। उन्होंने हमेशा रुपया ला कर दिया और आज भी वे दे रही हैं। लेकिन अब महादेव हालदार का कौन देखेगा, कौन दोनों वक्त उनकी खोज-खबर लेगा, उनको खिलायेगा-पिलायेगा और सुलायेगा ? लौट कर नारायण फिर किसको आवाज देगा ? भजन की चाय की दुकान के लिए रोज घुँघनी बना कर कौन देगा ?

बकुल माँ ने तो यह सब करने से कभी इनकार नहीं किया। ठाकुर जी के दर्शन के लिए उन्होंने कभी वृन्दावन जाना नहीं चाहा। ठाकुर जी तो उनके [illegible] छिपे हुए हैं। इसी लिए आज इतनी रात गये वे सब कुछ घूम-घूम कर देखने [illegible] अन्त में वे महादेव हालदार के कमरे की तरफ चली गयी थीं। वह [illegible] ठीक करके रखना था और हालदार बाबू की भी खोज-खबर लेनी [illegible]

लेकिन वहाँ पहुँच कर बकुल माँ ने क्या देखा ? भजन [illegible] पी रहा है। क्यों, क्या हो गया है भजन का ? जब एकान्त [illegible] से बातें करेंगी, तब क्या कहेंगी ? भजन क्यों ऐसा करने [illegible]

बकुल माँ नये सिरे से समझ गयी कि उनके [illegible] सब कुछ उनकी पकड से छटक कर निकल चुका है। [illegible] में वे अपने आपका निशाचरी प्रेतनी समझने [illegible] इस मकान के कोने-कोने में घूमने लगीं। फिर [illegible]

भजन ने बरामदे की एक खिड़की [illegible] बरसने लगा है। भजन का मन अचानक [illegible]

लगा। सिर भारी लग रहा है। फिर भी जोर-जोर से गाने को मन कर रहा है। वह बड़बड़ाने लगा — अब मैं नहीं डरूंगा। चाहे जो हो जाय, मैं नहीं डरूंगा।

मन ही मन भजन कहने लगा कि सवेरा होते ही कल मैं अपनी दुकान जाऊँगा। कहूँगा कि जूही, दुकान के लिए घूंघनी बना दो। नयी वहू आश्चर्य से मेरी तरफ देखेगी। वह सोचेगी कि वह एक पढ़े-लिखे चाय वाले की बीबी बनी है। लेकिन आज जो हाल है, वह नहीं रहेगा। मैं नयी दुकान खोलूंगा। स्टेशन के पास फैशनेबुल रेस्तोरां होगा। परचून की दुकान वाला साहा वहाँ जा कर रुपया माँगने में संकोच करेगा। सभी लेनदार वहाँ सहमे हुए खड़े रहेंगे। जूही के रुपये से मैं बहुत बड़ा रेस्तरां खोलूंगा। उसका नाम रखूंगा जूही रेस्तोरां। नहीं, जूही केबिन। लेकिन नाम जम नहीं रहा है। काफे द जूही नाम कैसा रहेगा? लेकिन दुकान का नाम बीवी के नाम पर रखने से लोग क्या कहेंगे?

फिर भजन जोर-जोर से हँसने लगा — ठठा कर, गला फाड़ कर। उसके बाद वह अचानक भोंड़ी आवाज में गाने लगा—अब मैं नहीं डरूंगा, नहीं डरूंगा!

वकुल माँ ने किसी तरह रुलाई रोक ली, लेकिन उनके गले से दबी आवाज में चीख-सी निकल आयी। उन्होंने दौड़ कर भजन का हाथ पकड़ लिया और कहा "भजन! बेटा भजन! तुझे क्या हो गया है?"

खिड़की में से आंधी का अन्तिम झोंका हड़बड़ा कर कमरे में आया। सुहागरात वाले कमरे में फूल तितर-बितर हो गये। दुल्हन जूही चौंक कर उठ बैठी। उधर महादेव हालदार का हाथ लग जाने से शराब की बोतल फर्श पर गिर पड़ी और उसके टूटने की आवाज हुई। फिर भी भजन मानो जिद्द में आ कर गाता रहा — अब मैं नहीं डरूंगा, नहीं डरूंगा!

नया साल आया। वह साल भी भविष्य की बात सोचते-सोचते गुजर गया। उसके बाद और एक साल भी जोड़-तोड़ में बीत गया। यह सारा जोड़-तोड़ भजन के दुकान खोलने के लिए था।

शायद इतना समय न लगता, लेकिन पिछले साल से चारों तरफ ऐसी अव्यवस्थ फैल गयी कि भजन कोई रास्ता नहीं निकाल पाया। उसने 'प्लान' और 'प्रोग्राम' खू बनाये, लेकिन सफलता न जाने कहाँ मुंह छिपाये पड़ी रही। इस बीच जूही एक बच्चे की माँ बनी।

पिछले साल के शुरू से भजन के बड़े भाई नारायण गायब हैं। भजन की शाद के बाद वे कई महीने के लिए लौट आये थे। उस समय भी वे घर पर बहुत कम रह थे। वे किसी से बोलते भी नहीं थे। अगर वे कभी किसी से कुछ कहते भी थे तो उन स्वर से ऐसा लगता था कि न जाने कैसा विषाद उनके मन में भरा हुआ है। जू अगर कभी खांस भी देती तो वे भजन से कहते — बहू की तबीयत खराब लग रही है

भजन के बच्चे को ले कर भी नारायन कम परेशान नहीं रहते थे। लेकिन उस परेशानी में भी न जाने कैसा अपनत्व का भाव था। मानो वह सब आँखों के सामने था इसलिए, नहीं तो उस सबसे उन्हें कोई मतलब नहीं था। बाहर वे नित नवल व्यस्त रहते थे, लेकिन घर में आते ही उनका रूप बदल जाता था और उनको पहचानना मुश्किल होता। बाहर से वे कठोर और अनुशासन के जोरदार पक्षधर थे। लेकिन उनका वह रूप सबके लिए नहीं, अपने दल के लोगों के लिए था। कभी वे बड़े नाराज हो जाते थे तो उनका वह रूप बड़ा भला लगता था। कभी वे भावुक हो जाते थे तो बड़े भोले-भाले।

घर में नारायन विरक्त-से रहते। किसी चीज से उनका मतलब नहीं, दूर-दूर से वे दूर भगाते। कौन आया, कौन गया, क्या हुआ और क्या नहीं हुआ, इससे उनका कोई मतलब नहीं रहा। लेकिन वे पहले ऐसा नहीं थे। पता नहीं, अब उन्हें क्या हो गया है? क्या भजन ने शादी कर ली, इसी लिए? ऐसा शायद भजन को भी हुआ। उसे लगा कि उसके शादी करने से कोई खुशी नहीं है। भैया नहीं, बहुत माँ को नहीं। मानो इनको भगाने के इरादे से भजन बुद्धी को घर में लाया है। पहले नारायन भजन से न जाने कितनी बातें करते थे, लेकिन अब वह बात नहीं रह गयी। नारायन के रुख-ढंग से भजन आश्चर्य में पड़ जाता और मन ही मन कहता कि मैं तो भैया की राह पर चल नहीं सकता। इसलिए वह भी मन ही मन थोड़ा खिंचा बन गया।

जब घर की हालत ऐसी हो चुकी थी, तभी अचानक एक दिन आधी रात को भजन शोरगुल सुन कर जागा और उसने देखा कि उसके दरवाजे पर लोग खड़े हैं। वे लोग टार्च जला कर न जाने चारों तरफ क्या देख रहे हैं। भजन को लगा कि वे लोग कई हैं और वे उस टार्च की रोशनी फेंक कर न जाने क्या ढूंढ़ रहे हैं। मानो अंधेरे जंगल में वे लोग शिकार की खोज में आये हैं।

हड़बड़ाहट कम होने पर भजन ने देखा कि वे लोग पुलिस के हैं और उन पुलिस वालों ने उसके मकान को घेर लिया है। खिड़की से यह सब देख कर भजन लालटेन लिये सीधे भैया के कमरे में चला गया। दरवाजा खुला है, लेकिन नारायन भैया कमरे में नहीं हैं। कमरे का सामान अस्त-व्यस्त छोड़ कर वे भाग निकले हैं। लेकिन वे कैसे भागे, किस रास्ते से भागे? भजन ने देखा कि मकान का पीछे वाला दरवाजा बंद है। फिर क्या वे चहारदीवारी कूद कर भागे? लेकिन बाहर तो पुलिस वाले खड़े हैं।

भजन यह सब सोच ही रहा था कि किसी ने दरवाजा पीटना शुरू किया। भजन ने झटपट बुद्धी की सहायता से नारायन भैया का कमरा ठीक किया, फिर दरवाजा खोल दिया। उसके किसी सवाल का जवाब दिये बिना पुलिस वाले घर में घुस आये। महादेव हालदार बाहर आ गये। फिर पुलिस वालों ने रात को दो बजे से भोर के पाँच बजे तक घर की तलाशी ली। तलाशी लेने और पूछताछ करने के बाद वे चले गये।

तभी जो नारायण भाग निकले थे, फिर नहीं लौटे। पिछले साल मेदिनीपुर में मजिस्ट्रेट की हत्या के तीन दिन बाद फिर पुलिस वालों ने पूरे वहशीपन के साथ आधी रात के बाद इस मकान पर धावा मारा था। उस समय महादेव हालदार की लड़की याने भजन की बहन के बच्चा हुआ था। घर में सौरी थी। सौरी में ही कपड़े-लत्ते के अंदर वे सब कागज-पत्तर छिपा दिये गये थे जो नारायण छोड़ गये थे। बिस्तर के पास बकुल माँ बैठी थीं।

देशी पुलिस अफसर ने सौरी में घुसने में संकोच किया था, लेकिन अंग्रेज अफसर बेघटके वहाँ चला गया था। उसके मन में किसी तरह का संकोच नहीं था। वह प्रसूति के बिस्तर को पलट कर देखना चाहता था।

लेकिन बकुल माँ ने भजन को बुला कर उससे कह दिया था कि साहब से कह दो कि जच्चा-बच्चा को कोई नुकसान न होने पाये। अगर उनको कोई नुकसान होगा तो साहब को ही हर्जाना भरना पड़ेगा।

इस पर साहब सहम गया था। बकुल माँ का रंग भी अंग्रेजों जैसा गोरा था। वे अंग्रेज अफसर की तरफ देख नहीं रही थीं। उनकी निगाह दीवार की ओर थी। फिर भी उनकी दो बड़ी-बड़ी आंखों की तेज निगाह मानो उसी साहब को बिंध रही थी। वे बाल खोले बैठी थीं। उनका एक हाथ जच्चा पर था। अंग्रेज अफसर को ऐसा लगा कि बंगाली लिबास में उसके सामने मूर्तिकार रुबेन की माडल बैठी है। लेकिन एक 'नेटिव' औरत की इतनी हिम्मत देख कर वह अंदर ही अंदर जल-भुन उठा था। फिर भी न जाने कैसा भय उसके मन में समा गया। बाद में उसने अपना गुस्सा बंगाली अफसर पर उतारा। उसने बंगाली अफसर को डांटा और कहा कि तुम किसी जमादारिन क्यों नहीं साथ लाये ?

कई दिन बाद फिर भजन की दुकान पर छापा पड़ा था, लेकिन पुलिस वालों को कुछ भी नहीं मिला था। हाँ, इतना नुकसान जरूर हुआ था कि बूढ़े गोलोक चटर्जी के अलावा अन्य गाहकों ने दो-चार दिन दुकान पर आना बंद कर दिया था। फिर पंद्रह दिन बाद खबर मिली थी कि नारायण गिरफ्तार हुए हैं और उनको अलीपुर के प्रेसीडेंसी जेल में रखा गया है।

उसी समय भजन के जीवन में भी एक के बाद एक कई मोड़ आने लगे थे। भजन को ऐसा लगने लगा था कि उसके मन में विश्वास जमने लगा है। जैसे आग जल उठती है, वैसे एक बात उसके मन में कौंध गयी थी। उसने सोच लिया था कि नारायण का अधूरा काम उसी को पूरा करना है। फिर उसने नियम से व्यायाम समिति में जाना शुरू कर दिया था। उस पर बहुतों का विश्वास था। लोग उसके साहस का आदर करते थे। फिर कुछ ही दिनों में उसकी चाय की दुकान का काम ठप पड़ने लगा था। रथीन और सुनिर्मल वगैरह उसके साथी बन गये थे और हर घड़ी परछाईं की तरह उसके साथ घूमा करते थे।

लेकिन इस तरह अधिक समय नहीं बीता। कुछ ऐसी घटनाएँ हो गयीं जिनके

कारण भजन को रुकना पड़ा। इसी समय कई महीने बाप के घर रह कर जूही लौट आयी।

यह जूही पहले की वह जूही नहीं थी जिसके होंठो पर भजन ने मृण्मयी की मुस्कान देखी थी। यह वह जूही भी नहीं थी, सुहागरात को जिसकी नींद में डूबी आँखों में थकावट के साथ संतोष का आवेश था। उत्सव की वह रात बीतते ही जूही समझ गयी थी कि सुख का सपना देखते-देखते वह न जाने किस भीड़ भरे नरक में पहुँच गयी है। दूसरे दिन भी घर में अनेक लोग थे, लेकिन सब चुपचाप थे। गुप-चुप बातें और दबी हँसी इस कमरे में, उस कमरे मे, बरामदे में, आँगन में, पिछवाड़े के दरवाजे की देहली पर और कुएँ के चबूतरे पर, हर कहीं थी। जूही का चेहरा फूंक मार कर बुझाये गये दीपक के समान प्रकाशहीन दिखाई पड़ने लगा था। उस अँधेरे के माहौल में मानो बेचैन जिज्ञासा छटपटा रही थी। जूही मानो भूल गयी थी कि वह कहाँ आयी है और किस लिए आयी है। वह कुछ भी नहीं समझ सकी, लेकिन उसके अंदर की कई दिन पहले की कुमारी किशोरी चुपचाप, लेकिन हाहाकार कर रोने लगी।

लेकिन जूही में गजब की सहनशीलता है। वह रोयी नहीं। बाप के घर जाकर उसने किसी से कुछ नहीं कहा। किसी ने उससे कुछ पूछा भी नहीं। दिन बीतते चले गये। आधीरात को नींद खुली तो उसने आश्चर्य से भजन के चेहरे की तरफ देखा। भजन सो रहा था। जूही को वह चेहरा जाग्रत का नहीं, निद्रित का नहीं, बल्कि एक ज्वरग्रस्त व्यक्ति का लगा जो ज्वर से अचेत पड़ा हो। आखिर भजन को क्या हो गया है? क्या उसने जूही को पसंद नहीं किया? लेकिन उसे क्या पसद है, यह भी तो उसने कभी नहीं बताया, कभी किसी को पता चलने नहीं दिया। जूही के पास जो कुछ था, वह सब वह अपने साथ लायी है। जूही के पास उसके स्वयं के अलावा और कुछ भी तो नहीं है। उसे अपना अस्तित्व या व्यक्तित्व कभी बुरा नहीं लगा। वही सब कुछ ले कर वह यहां आयी है और भजन का इंतजार कर रही है। लेकिन भजन को क्या हो गया है?

इसी तरह एक साल पूरा हुआ। जूही की गोद मे बच्चा आया। लेकिन वह कभी अपने को पूरी तरह भजन के आगे सौंप न सकी। जूही ने उस बेचैन आदमी से प्यार तो किया, लेकिन वह कभी उस आदमी का प्यार जीत नहीं सकी। इसी लिए वह विषाद रागिणी की तस्वीर सी लगती है।

ऐसे ही समय जूही बाप के घर से आयी। उसने आ कर देखा कि सारा घर अस्तव्यस्त है। ससुर महादेव हालदार पहले से ज्यादा उदासीन हैं। जेठ नारायण जेल में बंद हैं। बकुल माँ दुखी हैं। उनको देखने से ऐसा लगता है कि वे तंग आ चुकी हैं। पति भजन को चाय की दुकान बंद है। वह बेचैन-सा न जाने कहाँ-कहाँ का चक्कर लगा रहा है। लेकिन उसकी बेचैनी का कारण समझ मे नहीं आता। आजकल वह दारू भी ज्यादा पीने लगा है।

जूही ने उसी दिन शाम को दुकान के लिए घुंघनी बना दी। यह देख कर भजन एक क्षण के लिए हक्का-बक्का सा रह गया। फिर वह झटपट दुकान खोल कर बैठा।

अब महादेव हालदार भी जरा चंगा हो उठे। सुहागरात के दिन उनके बेटे भजन ने उन्हीं की बोतल से शराब पी थी। दूसरे दिन महादेव हालदार को इसका पता चला था तो उनकी मूँछों में विचित्र हरकत हुई थी। उनके होंठों पर अद्भुत हँसी झलक गयी थी। उसके बाद न जाने कैसे महादेव हालदार की शराब की बोतल रोज भजन के कमरे में पहुँचने लगी। भजन ने भी उस बोतल के सदुपयोग में कोई कमी नहीं की। लेकिन वैसा ज्यादा दिन नहीं चला। वह बात अपने में ही खत्म हो गयी। खास कर इस घर में पुलिस का छापा पड़ने के बाद से घर का ढर्रा ही थोड़ा बदल गया।

उस बार जूही के लौटते ही महादेव हालदार ने भजन को पकड़ा। कागजात के बंडल से ढूँढ़-ढाँढ़ कर उन्होंने कुछ कागज निकाले। किसी बयनामे की नकल। असली बयनामा मिल जाने का आश्वासन दे कर उन्होंने भजन से मुकदमा दायर करने के लिए कहा। इस मामले में उन्होंने जूही को भी उकसाया।

उन्हीं दिनों अचानक बकुल माँ महादेव हालदार की गृहस्थी का जिम्मा जूही को सौंप कर अपने घर चली गयीं। आखिर उनका अपना घर भी तो है। उनका कर्तव्य पूरा हो चुका था। अब उनके अभाव में हालदार बाबू के घर की गाड़ी नहीं रुकेगी। जितने दिन जरूरत थी, वे यहाँ रहीं।

ये सारी बातें ऐसे घट गयीं कि कुछ दिनों तक भजन की समझ में कुछ नहीं आया। इधर घर की गाड़ी चलना मुश्किल हो गया। फिर एक दिन भजन ने दुकान में बैठ कर बंगाली के साथ शराब पी। उसके बाद घर में आ कर उसने चिल्ला कर सबको बता दिया कि मैंने आज छोटी जाति की जूठन खायी है।

महादेव हालदार ने सोचा कि यही मौका है। उन्होंने ज्यों ही मुकदमे की बात छेड़ी, भजन ने साफ कह दिया, "फिर कौन-सा मंत्र फूंकने आये हैं? दूसरे के पीछे बेमतलब पड़ना भजन से नहीं होगा, समझ गये? यह सब सलाह जिनको देते हैं, उन्हीं को दीजिए। मुझसे यह सब नहीं होगा।"

इतने दिनों बाद सचमुच महादेव हालदार के जीवन से सारी आशा जाती रही। उन्हें एक बार अपनी पत्नी का चेहरा याद आया। उस चेहरे पर न जाने कैसी अजेय हँसी रहती थी। उस हँसी ने महादेव हालदार को ऐसे घेर रखा था, जैसे पैने चाकू सर्कस के चीनी करतबिया को घेरे रखते हैं। उस घेरे से महादेव हालदार कभी नहीं निकल सके। लेकिन अब उनकी पत्नी नहीं हैं। उनकी पत्नी की बकुल सहेली भी जा चुकी हैं। एक घूंट शराब के लिए अब महादेव हालदार को किसी के आगे हाथ फैलाना नहीं पड़ेगा। नारायण तो कभी भुलावा दे कर भाग निकला है। फिर भी महादेव हालदार को उम्मीद है कि पुलिस द्वारा सताये जाने पर शायद नारायण अपना रास्ता बदल दे। लेकिन वह तो बहुत दूर की बात है। अब बची बहूरानी जूही। लेकिन

वह तो भजन की पत्नी है। चाहने पर भी वह पति की इच्छा के विरुद्ध कुछ नहीं कर सकती।

महादेव हालदार स्वयं से बहुत तंग आ चुके हैं। वे रातदिन मौके की तलाश में रहते हैं कि कैसे कोई मुर्गा फँसे। उन्होंने उम्मीद की थी कि सुरथ वंद्योपाध्याय के सहयोग से किसी तरह अपनी हालत सुधार लेंगे। उस बार कौंसिल के चुनाव के सिलसिले में वंद्योपाध्याय बाबू महादेव हालदार के पास आये थे। लेकिन भजन के कारण महादेव हालदार उस सज्जन का समुचित आदर-सम्मान भी नहीं कर सके थे। खैर, उन्होंने देशबंधु चित्तरंजन दास की स्वराज पार्टी के प्रत्याशी को जिताने का आश्वासन दिया था। लेकिन वे स्वराज पार्टी के प्रत्याशी से अपने मतलब की बात नहीं कर सकते थे। अविवाहित युवक डॉ० प्रधानचंद्र राय स्वराज पार्टी के प्रत्याशी थे। देशबंधु के नाम का जयटीका उनके माथे पर था।

देशबंधु के प्रत्याशी से महादेव हालदार ने वादा किया था और अपना वादा निभाया भी था। लेकिन उनके माथे पर अफसोस की टेढ़ी-मेढ़ी शिकन ही उभरी। उन्होंने अपने को धिक्कारा। हर साँस के साथ उनकी उम्र खत्म हो चली थी, लेकिन उनके जीवन में खुशहाल वसंत नहीं आया।

उसी समय भजन भी जी-जान से अपनी नयी दुकान को सँभालने में लग गया। जूही भी एक-एक कर अपने गहने उतार कर उसे देती गयी। इसके लिए जूही के मन में जरा भी अफसोस नहीं था। उसके पास जो कुछ था, उसने भजन को दे दिया। जिस तरह देवता की पूजा की जाती है, उसी तरह उसने अपना यह कर्तव्य पूरा किया। भजन ने भी जो कुछ मिला, एक-एक पैसा खर्च कर दिया। चुनाव के समय स्वराज पार्टी से भी भजन को कुछ मिल गया। लेकिन उसने सब कुछ दुकान में लगा दिया। फिर देखते-देखते तीन वर्ष बीत गये।

भजन गा रहा है — डूब जा रे मन, जय काली कह कर!

इसे गाना नहीं कहा जा सकता, बल्कि लड़खड़ाती आवाज में सस्वर पाठ कहना चाहिए। अपने ही गाने की आवाज कानों में गयी तो भजन को लगा कि बरसात की रात में कोई मेढक खुशी के मारे टर्राने लगा है।

दक्षिण बंगाल के चौबीस परगना जिले के उत्तरी हिस्से का एक कस्बाई जंक्शन स्टेशन। भजन के घर से यह रेलवे स्टेशन आधा मील दूर है। दीया जलने के बाद भी यहाँ काफी चहल-पहल रहती है। उस चहल-पहल में भजन के गाने की आवाज किसी को सुनाई नहीं पड़ी।

जाड़े की शुरुआत है। गुलाबी ठंडक पड़ने लगी है। हवा थमी हुई है। रेल इंजनों का धुआँ, सड़क की धूल, आसपास की दुकानों तथा घरों के चूल्हे का धुआँ भरती

। थोड़ी ऊँचाई पर कोहरा बना छाया हुआ है। आसमान में तारे निकल आये हैं, लेकिन उनमें चमक नहीं है।

स्टेशन के तीनों प्लेटफार्मों पर बत्तियाँ जल गयी हैं। मुसाफिरों की भीड़ और उनके शोरगुल से स्टेशन का पूरा इलाका गमक रहा है। सामने वाले प्लेटफार्म पर कुछ परदेसी भिखमंगों ने स्थायी रूप से अपना अड्डा जमा लिया है। पुलिस वालों की डाँट-डपट और बेंत के डर से वे नहीं भागते। दिन भर बाद वे औरत-मर्द-बच्चे अपने अड्डे पर जमा हुए हैं। फिर रोज की तरह उनका शोरगुल तथा लेन-देन का हिसाब शुरू हो गया है। इस समय कई ट्रेनें आती-जाती हैं, इसलिए मुसाफिरों की भीड़ ज्यादा रहती है। कलकत्ते में नौकरी करने वाले डेली पैसेंजर लौट रहे हैं। पछाँहिया कुली भी मुसाफिरों के साथ भाग-दौड़ में लगे हैं।

एक नंबर प्लेटफार्म के साथ बहुत बड़ा चबूतरा-सा बना हुआ है। प्लेटफार्म और उस चबूतरे के बीच ऐसा पार्टीशन बनाया गया है कि मानो प्लेटफार्म के साथ उस चबूतरे का कोई संबंध नहीं है। असल में यह चबूतरा सीढ़ी का हिस्सा है जो सड़क से लगा हुआ है और जिससे प्लेटफार्म में जाना पड़ता है। इसलिए स्टेशन में कोई काम हो न हो, छुट्टी के समय या शाम को घुमक्कड़ लोग इस चबूतरे पर बैठे रहते हैं, मूँगफली खाते हैं और कुछ बच्चे पार्टीशन की रेलिंग से लटक कर ट्रेनों का आना-जाना देखते हैं।

कारखाने में काम करने वाले कुछ पछाँही मजदूर चबूतरे के एक कोने में अँगोछा बिछाये बैठे हैं। तेज सुरीली आवाज को खींच-खींच कर कँपाते हुए वे गाने भी लगे हैं। स्टेशन के शोरगुल के बीच उनका गाना ऐसा लग रहा है कि मातमी हाहाकार के बीच कुछ लोग तेज आवाज में रोने लगे हैं। चबूतरे के उत्तर तरफ चाय की दुकान है। उसी के दक्षिण में टिकटघर है। उसी के पास ओवरब्रिज में जाने के लिए लकड़ी की सीढ़ी है। लेकिन वह सीढ़ी दीवार की आड़ में छिपी हुई है। उसी के नीचे सड़क की तरफ यह चबूतरा खुला है और विंग्स के बाद प्रशस्त रंगमंच जैसा लगता है। पता नहीं, अभी ओवरब्रिज से कौन उतरेगा और किसका उस मंच पर आविर्भाव होगा। कोई सोचता कि अब वहाँ एक खूबसूरत लड़की दिखाई पड़ेगी, लेकिन देखा गया कि एक बिल्ली उस कालोनी का चक्कर लगाने के बाद ओवरब्रिज से स्टेशन के इस पार आ कर चबूतरे के एक कोने में बैठ गयी।

चबूतरे के नीचे ही सड़क है। सुरखी और गिट्टियाँ बिछी सड़क। सड़क के किनारे एकदम स्टेशन से सटी तीन घोड़ागाड़ियाँ खड़ी हैं। तीन गाड़ियों में चार घोड़े और दो घोड़ियाँ हैं। दोनों ही घोड़ियाँ तगड़ी हैं। उनकी आँखों की पलकें बड़ी-बड़ी, नजर मानो कहीं ठहरती ही नहीं, उठे हुए कान बार-बार हिल रहे हैं और दोनों अपनी-अपनी दुम जोर-जोर से फटकार रही हैं। लेकिन चारों घोड़े मरियल हैं। उनके बदन पर जहाँ-तहाँ घाव हैं और आँखों में कीचड़ भरा हुआ है। मक्खियों के घेरे वे आँखें बंद किये ऊँघ रहे हैं। फिर भी उनकी साज-सज्जा में कमी नहीं है। हर

घोड़े के गले में चमडे के पट्टे मे चमकते घुंघरुओं की माला गुंथी है। हरेक के गले में न जाने किस चीज की रंगीन माला पड़ी है। हरेक के सिर पर राख से मल कर साफ किया हुआ टीन का टोप जैसा कुछ है। इस साज-सज्जा के कारण वे घोडे नौटंकी के जोकर जैसे लग रहे हैं।

घोड़ों के पानी पीने के लिए बनी चरही के पास दीवार पर अंग्रेजी में लिखा है, 'फाइव हॉर्स कैरेजेस'। चबूतरे को सीढ़ी की उत्तरी दीवार पर लिखा है, 'टैक्सी कैब स्टैंड फॉर थ्री'। भुन्नू कोचवान की राय में कम्पनी ने टैक्सी इस्टैन बेकार बनवाया है। वह भी घोड़ागाड़ियों का अड्डा होता तो ठीक रहता। इस कस्बे में पांच से ज्यादा घोड़ागाड़ियाँ तो हैं, लेकिन टैक्सी शायद एक ही है। हालांकि मिल के साहबों और अफसरों के लिए प्राइवेट कार है। उसके लिए प्राइवेट जगह भी बनी हुई है। उस जगह और अन्य गाड़ियों के लिए बनी जगहों में फर्क वही है जो घर की और बाजार की औरतों में रहता है।

टैक्सी की शक्ल भी भद्दी है। सामने से देखने पर ऐसा लगता है कि कोई बूढ़ा दांत निकाले खड़ा है। बड़ी-बड़ी आंखों की तरह दोनों हेडलाइटों में कोई चमक नही है। लगता है कि उन दोनों धुंधली आंखों से वह गाड़ी दूसरी तरफ पटरी पर बनी दुकानों को देख रही है। वाटरप्रूफ याने मोमजामा के बने 'हुड' पर जगह-जगह पैबंद लग जाने से अब वह कम से कम वाटरप्रूफ नही रह गया है। आसपास कई जूट मिलें हैं, इसलिए हफ्ते के आखिरी दो-तीन दिन यह टैक्सी बहुत कम दिखाई पड़ती है। जिन साहबों के पास कार नहीं है, वे छुट्टी के दिनों में इसी टैक्सी से कलकत्ता जाते हैं। इसके अलावा कभी-कभी यह टैक्सी बरातियों और मरणासन्न रोगी को भी ढोती है। अन्य दिनों कबाड़ की तरह यहीं पड़ी रहती है, जैसे आज पड़ी है।

थोड़ा उत्तर तरफ हट कर और एक मोटरगाड़ी खड़ी है। दूर से देखने पर वह सड़क के किनारे पान-बीड़ी की गुमटी जैसी लगती है। लेकिन वह बस है। लाल रंग की उस बस पर सफेद हरफों मे लिखा है, 'पुष्पमयी'। यहाँ कोई बस-रूट नहीं है, इसलिए तमाम अन्य गाड़ियों की तरह वह भी सवारियों की मर्जी पर चलती है।

रोज की तरह टैक्सी ड्राइवर आज शाम को भी गायब है। बस का ड्राइवर नीचे खड़े हो कर हार्न दबा रहा है और चिल्ला रहा है। अभी तक उसे तीन आदमी मिले हैं। उसी की तरह घोड़ागाड़ियों के कोचवान भी चिल्ला रहे हैं।

गाड़ी वालों की चिल्लाहट और शाम की चहल-पहल के कारण स्टेशन का पूरा इलाका बाजार बन गया है। सड़क की दूसरी तरफ पश्चिम मे कतारों में कुछ दुकानें हैं। लगभग सभी दुकानें हलवाइयों की और पान-बीड़ी वालों की हैं। उन दुकानों पर भीड़ है।

लेकिन जिस दुकान पर एकबारगी सबकी निगाह पड़ती है, वह इस इलाके का अप-टु-डेट रेस्तोरां है। स्टेशन के ठीक सामने सड़क पर सबसे बड़े साइनबोर्ड मे लिखा है, 'श्रीमती काफे'। उस परिवेश मे वह साइनबोर्ड नयी उम्र के गँवई दूल्हे के सिर पर

रखे मोर की तरह लग रहा है। उस साइनबोर्ड का एक-एक हरफ लगभग एक फुट लंबा है। 'काफे' को किसी ने पेन्सिल से 'काफिर' बना दिया है। लेकिन गौर से देखने पर ही पता चलता है। जिसने भी ऐसा किया हो वह विनोदी और हिम्मती है, इसमें कोई शक नहीं। श्रीमती काफे के नीचे कुछ छोटे हरफों में लिखा है, 'स्थापित सन् १८२० ई०'।

काफे के सामने चौड़ा बरामदा है। बरामदे के बाद दरवाजा देखने लायक है। कमरे में सामने की तरफ दीवार नहीं है — दो बड़े-बड़े पल्लों वाला खूबसूरत दरवाजा है। महोगनी लकड़ी का फूलदार दरवाजा। नक्काशीदार अलमारी के दरवाजे की तरह उसमें भी ऊपर के आधे हिस्से में शीशा लगा हुआ है। शीशे के चारों तरफ बने चौखटे की कारीगरी भी तारीफ करने लायक है। उस शीशे पर भी दोनों तरफ अंग्रेजी और बंगला में लिखा है, 'श्रीमती काफे' और 'स्वागतम्'। प्रोप्राइटर श्री भजनानन्द हालदार का भी नाम लिखा हुआ है। दरवाजे के पास दायें कोने में दीवार से सटा काउंटर है।

कमरा मझोले साइज का है। फर्श से तीन फुट ऊपर तक तीन तरफ की दीवारों में मोजेक के चौकोर टुकड़े लगे हैं। उन पर फूलदार नक्शे बने हैं। उससे ऊपर दीवार में संगमरमर के टेबुल लगे हैं। कमरे की तीनों दीवारों में ऐसे टेबुल बने हैं। दरवाजे के पास दीवार में पुरानी घड़ी लगी है। कभी वह दीवार-घड़ी कीमती थी। उसका ढांचा महोगनी लकड़ी का और नक्काशीदार है। चांदी के गोल डायल पर समय के अंक लिखे हैं। पेंडुलम में नरकंकाल का मुंड बना हुआ है। घड़ी के ठीक ऊपर शंख-चक्र-गदा-पद्मधारी नारायण का चित्र है। इसके अलावा कई विलायती पेंटिंग्स के प्रिंट हैं। वे सभी सुंदर लैंडस्कैप हैं। रंगीन। विलायती लैंडस्कैप की नकल में कई देशी लैंडस्कैप भी हैं। कमरे में दोनों तरफ विलायती आइने भी लगे हैं।

कमरे में तीनों तरफ की दीवारों में बने टेबुलों के सामने कतार में फोल्डिंग कुर्सियां लगी हैं। चीनी मिट्टी के दुधिया शेड में बिजली के बल्ब तीनों तरफ जल रहे हैं। हर शेड पर लिखा है — 'श्रीमती काफे'। लाल रंग के चिकने फर्श पर बिजली की रोशनी पड़ रही है।

इस कमरे के पीछे की तरफ एक छोटा-सा कमरा है। उस कमरे में कोई खास सजावट नहीं है। लगता है कि वह कमरा अपना सब कुछ इस कमरे को दे कर फकीर बन चुका है। यही कहा जा सकता है कि वह रंगमंच की आड़ में एक उपेक्षित अँधेरा कोना है, जिसकी तरफ ध्यान देना किसी ने मुनासिब नहीं समझा। उस कमरे में रेस्तोरां के कुछ सामान रखे रहते हैं। फिर भी उस कमरे का रंग-ढंग देख कर ऐसा लगता है कि काफे के मालिक ने उसे भी सजाने-सँवारने का व्यर्थ प्रयास किया था। एक कोने में पानी के लिए टोंटी लगा कंडाल रखा हुआ है। एक सँकरा लंबा टेबुल भी पड़ा है। उस पर चीनी मिट्टी के जूठन भरे प्लेट, प्याज के टुकड़े, पावरोटी का चूरा और घुँघनी के सूखे दाने बिखरे पड़े हैं। टेबुल के नीचे कई खाली बोतलें बेतरतीब पड़ी हैं। जाहिर है कि वे शराब की बोतलें हैं।

उस छोटे कमरे के पीछे रसोई का कमरा है। उसे कमरा कहना ठीक न होगा क्योंकि खपच्चियों की बाड़ लगा कर ऊपर टीन का छाजन लगा दिया गया है। उसमें घुसने का रास्ता, यानी दरवाजा तो है; लेकिन कोई खिड़की नहीं है। इससे उसके अन्दर अँधेरा है। फर्श कच्चा और ऊबर-खाबर है। वहाँ एक तरफ कोयला और उपले रखे हैं। पानी रखने के लिए मिट्टी का घड़ा भी है। कप-प्लेट धोने की जगह है। दूसरी तरफ चूल्हा है। चूल्हे के पास जाली लगी अलमारी में खाने के सामान ढके रखे हैं।

रसोई के कमरे के पीछे, एकदम उससे सटी कच्ची नाली है। पिछवाड़े से कहीं जाना हो तो टट्टर हटा कर उस नाली को लाँघना पड़ता है। नाली के पास कूड़े-करकट का ढेर लगा है जिससे वहाँ बड़ी गंदगी है। नाली के बाद जो थोड़ी-सी खुली जमीन है, वहाँ सूरज डूबते ही अँधेरा छा जाता है। बस्ती का पिछवाड़ा होने के कारण वहाँ बाजार की रोशनी नहीं पहुँच पाती। वहाँ से सिर्फ बाजार का शोरगुल सुनाई पड़ता है। इस समय भी वही शोरगुल सुनाई पड़ रहा है। उस शोरगुल में दो आवाजें आश्चर्यजनक ढंग से साफ सुनाई पड़ रही हैं। मानो पास खड़े हो कर दो लोग बतिया रहे हैं। उनमें से एक कह रहा है कि सूद के कारोबार में माँ-बाप का भी लिहाज नहीं किया जाता। उधार दिया गया पैसा तो बेकार है, सूद ही असली रकम है। इसलिए ब्याज का और साढ़े तेरह आना चाहिए। इस पर दूसरे ने गुस्से में आ कर रेजगारियाँ फेंकीं। उसकी भी खनक साफ सुनाई पड़ी।

श्रीमती काफे की एक विशेषता के बारे में अभी तक नहीं बतायी गयी, वह है घड़ी के दायें दीवार में लगी देशबंधु चित्तरंजन दास की तस्वीर। उस तस्वीर के नीचे रवीन्द्रनाथ ठाकुर की वही मशहूर पंक्ति लिखी हुई है जो उन्होंने देशबंधु के निधन के बाद उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कही थी —

एनेछिले साथे करे मृत्युहीन प्राण
मरणे ताहाइ तुमि करे गेले दान।

[तुम अपने साथ मृत्युहीन प्राण लाये थे, मर कर वही दान कर गये।]

और एक बड़े फ्रेम में चार छोटी-छोटी तस्वीरें हैं — रैफेल की माँ-बेटे की, माता मेरी की, रवीन्द्रनाथ ठाकुर की और सिराजुद्दौला की। इन चार तस्वीरों का एकत्र समावेश क्यों हुआ, यह तो इस काफे के मालिक भजनानन्द के अलावा और किसी के लिए बता पाना मुश्किल है।

भजनानन्द — भजन — भोजू — नक्कू हालदार के बेटे के नाम का क्रम-विकास है। वह ग्रेजुएट है। नारायण हालदार का भाई लाट साहब भजन। सब यह जानते हैं कि हर विषय पर भजन की अपनी अलग राय है। सब उसकी शिक्षा का आदर करते हैं, लेकिन उसकी एक कुटेव ने सब चौपट कर दिया है। वह कुटेव है उसकी शराब की लत। शराब रूपी राहु उसे चौबीस घंटे ग्रसे रहता है। इस इलाके के कई [illegible] और सुप्रतिष्ठित सुरासक्त व्यक्तियों की उसके हाथ बड़ी दुर्गति हुई है। उनके [illegible]

शराब पीने गया, लेकिन उसने दुनिया के सामने उन शरीफ लोगों का कच्चा चिट्ठा खोल कर रख दिया। इसके अलावा वह शुरू से दुर्विनीत और कटुभाषी है, इसलिए उसका दोस्त भी नहीं है।

बहुत दिनों बाद भजन का लाट साहब नाम सार्थक हुआ। वह जो शराब पिये हुए काफे की भीड़ में मटरगश्ती कर रहा है, उससे जीवन के प्रति चाहे उसकी जितनी उपेक्षा प्रकट हो, उसके मन की गहराई की भव्य आदमीयत आज आजाद हो कर सामने आ सकी है। सिल्केन ट्विल की बिना कालर की अमरीकन कफ वाली छोटी कमीज (उन दिनों यही फैशन था), जिसमें पान की शक्ल के काज-बटन पड़े हैं, महीन काली किनारे और सफेद धारियों वाली स्वदेशी धोती की लंबी कोंछी, धोती के नीचे अंडरवियर का हल्का आभास और पाँवों में ग्लैसकिड के जूते। कान के पास से साफ करके दाढ़ी बनायी गयी है। लाल-लाल पतले टेढ़े होंठों के बीच तारा निशान वाली मैगनम साइज की कैपस्टन सिगरेट दबी है। भजन की यह साज-सज्जा कभी-कभार की नहीं, रोज की है। इससे उसका व्यक्तित्व प्रकट होता है। वह जब बाजार जाता है तो दुकानदार कहते हैं कि अब एक खरीदार आया है।

लोगों को लगता है कि भजन में परिवर्तन आया है। अगर परिवर्तन आया है तो वह असंभावित नहीं है। भजन के जीवन में कोई नया छंद नहीं बना और न उसे कहीं ठहराव मिला। उसका असहाय मन अंधे पक्षी के समान निरुद्देश्य उड़ चला है। युक्ति-तर्क और कारण-अकारण उसके लिए महत्त्वहीन है। बहुत दिनों पहले वह श्मशान से इसी तरह किसी तरफ ध्यान दिये बिना तेजी से लौटा था। आज भी वह उसी तरह तीव्र गति से भागा जा रहा है। एक समय था जब उसने सोचा था कि वह किसी को चाहता है। उसके आगे अपने को सौंप कर वह शांति पा सकेगा। उसके जीवन के अदृश्य कोने से सिर उठाने वाले सारे संशय और संदेह मिट जायेंगे।

लेकिन सुहागरात के बाद सुनहरा सवेरा नहीं आया। पथ की किरण-रेखा मानो अचानक दूसरी ओर घूम गयी। उधर देख कर भजन चौंक पड़ा। वह समझ गया कि वह अपने रास्ते से भटक चुका है। उसी रात के उन्माद का परिणाम यह श्रीमती काफे है।

भजन ने सोचा था कि इस रेस्तोरां का नाम जूही केबिन रखा जाय। लेकिन असली जूही की ओर से जैसे अनुकूल प्रतिक्रिया नहीं मिली, वैसे भजन को भी अपने मन में इसके लिए समर्थन नहीं मिला। भजन को यह सारी बात आश्चर्यजनक लगती है। अतीत में भी उसे कोई ऐसी लड़की नहीं मिली जिससे वह प्यार कर सकता था। भविष्य में कोई ऐसी मिलेगी, इसकी भी संभावना नहीं है। फिलहाल उसने जूही से प्यार करना चाहा, लेकिन कर नहीं सका। न जाने क्यों उसका प्यार मंद पड़ गया। फिर भी किसी की धुंधली शक्ल उसके अस्थिर मन को हर घड़ी हाथ के इशारे से बुलाती रहती है। उस शक्ल की एक भी रेखा साफ नहीं है। उसमें हँसी नहीं है, आँखें नहीं हैं और वह बोलती भी नहीं। उसका कोई नाम भी नहीं है। सिर्फ भजन जब

अपने आपसे बातें करता रहता है तब वह उससे पूछता है — तुम कौन हो श्रीमती ? मैंने तो अपना जीवन तुम्हीं को सौंप दिया है। और तुम्हें क्या चाहिए ?

यही श्रीमती काफे है और यही भजन के कल्पना-लोक की श्रीमती। श्रीमती के साथ आधुनिक काफे शब्द जोड़ कर भजन ने इसे रेस्तोरां का रूप दिया। इतना ही नहीं, उसने अपनी सारी पूंजी निकाल कर इसे सजाया-संवारा। उसने इसके चरणों में मानो अपना सब कुछ अर्पित कर दिया — अपने अस्थिर प्राणों की ममता, विवेक और बुद्धि भी। अब यही उसके लिये प्रिया और प्रेयसी है, उसका जीवन है। इनसान के पास भले ही कुछ रहे या न रहे, फिर भी उसे कुछ तो चाहिए। उसके लिए श्रीमती काफे वही 'कुछ' है।

किसी और बात के लिए भजन में गर्व नहीं है — उसका सारा गर्व श्रीमती काफे के लिए है। फिर, सच कहा जाय तो कलकत्ते से दूर इस कस्बे में ऐसा दूसरा रेस्तोरां नहीं है। इसलिए इस इलाके में इसे अद्वितीय कहा जाय तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। दस-बारह मील के घेरे में सभी लोग श्रीमती काफे को पहचानते हैं।

भजन कहता है कि पराधीन जब रहना ही पड़ेगा, तब उस पराधीनता के बीच अलगाव-बिलगाव करने से बेहतर एक किनारे हट कर स्वाधीन रहना है। श्रीमती काफे वही एक किनारे हटना है। यहाँ न बड़े साहब या छोटे साहब की दया का सवाल है और न उनके आँखें लाल करने का भय। यहाँ लाट ही कहो या गवर्नर, सब कुछ वही भजन हैं।

नौजवान लड़के मौका पाते ही श्रीमती काफे में आते हैं। यहाँ बैठ कर आपस में हँसी-मजाक करते हुए खाने-पीने को वे बहुत बड़ी बात समझते हैं।

श्रीमती काफे में कहीं गंदगी का नाम नहीं है। इसलिए बार-बार किसी से साफ करने के लिए कहना नहीं पड़ता। श्रीमती काफे हर वक्त चमचमाता रहता है। भजन उर्फ लाट साहब की खूबसूरत बीबी की तरह वह अपनी साज-सज्जा की चकाचौंध के कारण हमेशा टीप-टाप लगता है। भजन उसे अपने हाथों से सजाता है। वह खड़े हो कर साफ-सफाई कराता है। जरूरत पड़ने पर वह खुद गीला लत्ता ले कर साफ-सफाई में जुट जाता है। ऐसा न करने से उसे चैन नहीं मिलता। पहले तो इस कस्बे के आम लोगों को एकाएक श्रीमती काफे में पहुँच पाना बड़ा मुश्किल काम लगता था। श्रीमती काफे की साज-सज्जा और उसके रंग-ढंग में कुछ ऐसी विशेषता है। लोगों को लगता है कि अभी उसके चेहरे पर स्वागत की हँसी है तो दूसरे ही क्षण वह चेहरा गंभीर हो जायेगा। मानो वहाँ घुसने से पहले खरीदार को अपनी हैसियत का ख्याल करना पड़ता है।

फिर लाट साहब भजन स्वयं काउंटर पर रहता है। उसका बड़ा-सा चेहरा और बड़ी-बड़ी आँखें देख कर भी कभी-कभी किसी को पीछे हटना पड़ता है। ऐसे बहुत-से छोकरे हैं जो एकदम चोरों की तरह यहाँ आ कर खाने-पीने के बाद भाग जाते हैं। लेकिन यह श्रीमती काफे का दोष नहीं, गाहक का भाग्य है।

यहाँ के बहुत-से लोगों ने श्रीमती काफे को लाट साहब भजन की चाट की दुकान का नाम दिया है। इसके जवाब में भजन कहता है कि भले ही यह चाट की दुकान हो, लेकिन इस चाट में कैसा रस है यह रसिक लोग ही बता सकते हैं। इसके अलावा अगर किसी में हिम्मत हो तो एक बार यहाँ शराब की बोतल ले कर आ जाय और साबित कर दे कि यह चाट की दुकान है। श्रीमती काफे को चाट की दुकान कहने वालों में से सचमुच किसी ने ऐसी हिम्मत नहीं की।

श्रीमती काफे में शाम की भीड़ जमी है। कस्बे के फैशनेबुल कहलाने वाले नौजवान जुटे हैं। वे 'रामपाखी' याने मुरगे का मांस खायेंगे। भजन इसे फाउल-करी कहता है। इस कारण भी यहाँ के हिन्दू सज्जनों के मन में श्रीमती काफे के प्रति विद्वेप है। अब भी कट्टर हिन्दू मुरगा-मुरगी से नफरत करते हैं और उन लोगों ने उस पक्षी का नामकरण किया है 'रामपाखी'। एक तो लाट साहब भजन खुद शराब पीता है, फिर उसकी दुकान में मलेच्छ खाद्य की भरमार है। इस ब्राह्मण-बहुल इलाके के बहुत-से युवक भी इस कारण भजन की दुकान से दूर रहते हैं। फिर भी कई बार कइयों ने बाजी लगा कर यहाँ मुरगे का मांस खाया, लेकिन बाहर निकलते ही उलटी कर दी। बड़े-बूढ़ों को अगर यह पता चलता है कि उनके लड़के श्रीमती काफे में गये हैं, तो वे घबरा जाते हैं। आजकल तो यों ही लड़के जात-कुजात का ख्याल नहीं रखते, फिर यहाँ पहुँच जाने पर तो वे एकदम बिगड़ जायेंगे। लेकिन यहाँ बकरे का गोश्त भी मिलता है। भजन कहता है मटन-करी। भजन की दुकान पर चाप, कटलेट, घुंघनी वगैरह मिर्च-मसालेदार दूसरी बहुत-सी चीजें मिलती हैं। लेकिन सभी चीजें बड़ी चटपटी और जायकेदार होती हैं। भजन भले ही और कुछ न समझे, लेकिन सामान्य जन के मुँह में क्या रुचता है, यह वह अच्छी तरह समझता है। इसलिए वह हर चीज अपने हाथों से बनाता है और आज तक कोई उन हाथों को बदनाम नहीं कर सका।

रेस्तोराँ में गाहकों के अलावा ऐसे लोगों की भी भीड़ है जो गाहक नहीं हैं। हीरेन और कृपाल रोज की तरह आज शाम को भी दो उँगलियों में सुंघनी की चुटकी लिये गप्प हांके जा रहे हैं। ये पैसा दे कर कभी कुछ खरीद कर नहीं खाते, अभी मुफ्त में दो कप चाय पी कर चल देंगे।

पीछे के कमरे में, पानी के कंडाल के सामने चौड़ी बेंच पर यू० पी० के एक लड़के ने शरण ली है। शरण क्या ली है, वह यहाँ छिपा हुआ है। अपने दल के काम से उसे कानपुर से रिवाल्वर के पुर्जे लाना पड़ा है। नाटे कद का लड़का, लेकिन उसका शरीर सुगठित और बलिष्ठ है। उसके चेहरे पर कोमलता के साथ कठोरता भी है। फिर भी कलीदार कुरते और पाजामे में वह बड़ा भला लगता है। उसका नाम है सूरज सिंह। यहाँ उसके आ पहुँचते ही पुलिस ने पूरे इलाके में चौकसी बढ़ा दी है। यहाँ उसके आने की खबर जरूर पुलिस को मिल गयी होगी। रथीन और सुनिर्मल का दल

इस कारण बड़ी परेशानी में पड़ गया है। सूरज सिंह को छिपाने के लिए कोई सही जगह नहीं मिली तो वे लोग उसे श्रीमती काफे में ले आये। फिर सूरज सिंह यहीं छिप गया — सब की निगाह से दूर, परदे के पीछे। श्रीमती काफे के खुले रंगमंच से उसका कोई मतलब नहीं है।

ये रथीन, सुनिर्मल वगैरह गाहक नहीं हैं, लेकिन इनके मामले में भजन का वश नहीं चलता। यह भी एक तरह से श्रीमती काफे का भाग्य है। भजन कहता है कि ये सब बेकार ही नहीं, सनकी भी हैं। ये किसी की बात नहीं मानेंगे, कुछ कहो तो फौरन चल देंगे। इसलिए भजन चाहे जिससे जो कुछ कह दे, लेकिन इन लोगों से एक शब्द भी नहीं कह सकता।

गोलोक चटर्जी रोज की तरह नारियल का हुक्का हाथ में लिये जमे हुए हैं। उनकी उम्र और उनके साथी नारियल के हुक्के को देखकर नये जमाने के श्रीमती काफे की अति-आधुनिकता आँखें लाल कर सकती है। वह कह सकती है कि बाबा आदम के जमाने के इस बूढ़े को जरा शरम भी नहीं आती? लेकिन चटर्जी बाबू यह सब फैशन देख कर हँसते हैं और मन ही मन कहते हैं कि चाहे तुम जितना चिढ़ो, कोई असर पड़ने का नहीं! घर की मेहरी सज-धज कर चाहे जितनी परी बने, वह वही रहती है जो हकीकत में है। यह दुकान इसी कस्बे के भजन की है। भले ही भजन लाट साहब बन गया हो, भले ही उसका मिजाज आसमान पर चढ़ गया हो, लेकिन है तो वह पड़ोस के रिश्ते में मेरा नाती!

आज शाम को जो महफिल जमी है, उसमें गोलोक चटर्जी मछली मारने की कहानी सुनाने लगे हैं। यह कोई कहानी सुनाना नहीं, मानो पक्का गाना सुनाना है। शास्त्रीय गायन शुरू होने पर बंद होने का नाम नहीं लेता, भले ही श्रोता बिदक जायँ। इसी तरह चटर्जी बाबू जब कहानी सुनाना शुरू करते हैं तब यह नहीं देखते कि सुनने वाले मेरी कहानी पर विश्वास कर रहे हैं या नहीं। पूरी कहानी सुने बिना किसी को छुटकारा नहीं मिलता।

सड़क पर हो-हल्ला जारी है। श्रीमती काफे के अंदर भी शोरगुल कम नहीं है। दोनों मिल कर वातावरण में विचित्र संगीत भर रहे हैं। सड़क पर भीड़ है तो दुकान के अंदर भी। इस भीड़भाड़ में एक गति है। यही गति सड़क और दुकान को एकाकार कर रही है। सिर्फ 'पुष्पमयी' बस के हार्न की तीखी आवाज सबसे निराली है। लगता है कि कोई गधा रेंक नहीं रहा है, बल्कि गला फाड़ कर चिल्ला रहा है। फिर गाड़ीवानों की चीख-पुकार अलग से सुनाई पड़ रही है। लेकिन कुल मिला कर सड़क पर शोर ज्यादा है।

भजन टेबुल पर ऐसे सिर लटकाये बैठा है, जैसे सो रहा हो। थोड़ी देर बाद अचानक उसने सिर उठा कर टेबुल की तरफ देखा। श्रीमती काफे का मालिक भजन। उसकी बड़ी-बड़ी आँखें लाल हैं। खुमारी भरी निगाह। टेबुल पर बिखरे कुछ पैसों की तरफ देखते-देखते अचानक उसकी निगाह टेढ़ी हो गयी। ऐसे ही उसके लाल-लाल

होंठ आपस में सटे रहने पर ज्यादा टेढ़े लगते हैं, इस समय तो अलकोहल की अधिक मात्रा चढ़ी रहने के कारण वे ज्यादा लाल और टेढ़े लग रहे हैं। यही लाली भजन के गालों पर भी है। लेकिन इसी उम्र में उसकी आंखों के नीचे कालो लकीरें खिच गयी हैं। माथे पर शिकन भी साफ है।

आज तीसरे पहर ही भजन ने ज्यादा पी ली थी। इसलिए इस समय उसका दिमाग मानो हवा में लहरा रहा है। बाहर की तरफ देखते हुए वह मुस्करा कर कह उठा —

इस धुंधली संध्या में वह तारा।
किसके माथे पर जलता प्यारा ?

फिर भजन ने मन ही मन अपने से पूछा — किसके माथे पर ?

दूसरे ही क्षण अपनी छाती पर हाथ रख कर उसने कहा — मेरे माथे पर। लाट साहब भजन के माथे पर बैठा !

फिर टेबुल पर थप्पड़ मार कर उसने आवाज लगायी, "बिस्सू !"

बिस्सू अंदर से बाहर निकला। बिस्सू याने विश्वनाथ। श्रीमती काफे का नौकर। गाहकों को खिलाना और कप-प्लेट धोना उसका काम है। उसके विशाल शरीर पर छोटा-सा सिर ऐसा लगता है कि मानो किसी ने उसे अलग से बैठा दिया हो। उसकी तरफ देखते ही विष्णु का वाहन गरुड़ याद आ जाता है।

भजन के पुकारने पर बिस्सू ने कोई जवाब नहीं दिया, चुपचाप सामने आ कर खड़ा हो गया। उसकी आंखों से बेचैनी झलकने लगी ! वह बेचैनी उसकी आंखों में हमेशा भरी रहती है। भजन के सामने खड़े हो कर वह इधर-उधर देखते हुए आंखें मिचकाने और जबान से होंठ चाटने लगा।

बिस्सू की हरकत देख कर भजन ने लाल-लाल आंखें तरेर कर पूछा, "अंदर बैठ कर क्या खा रहा था ?"

दुकान में बैठे गाहकों की तरफ जल्दी से देख कर बिस्सू ने विचित्र महीन आवाज में कहा, "मां की कसम मालिक, कुछ नहीं खा रहा था।"

यह कोई नयी बात नहीं है। बिस्सू भी पुराना नौकर है और गाहक भी सभी पुराने। इसलिए इस नौकर-मालिक संवाद से किसी को आश्चर्य नहीं हुआ। बस, इधर-उधर बैठे कई लोग हँस पड़े।

बिस्सू के काम-काज में कोई खास कमी नहीं है, लेकिन उसमें एक जो कमी है वही बहुत बड़ी है। भजन कभी-कभी गुस्से में आ कर उससे कहता है — कमबख्त जनम का भूखा है !

बात किसी हद तक सही है। रात में छछूंदर जिस तरह नाली में छुछुआता फिरता है, ठीक उसी तरह बिस्सू भी कुछ खाने के चक्कर में श्रीमती काफे के कोने-अंतरे में मुंह मारता फिरता है। भजन ने कितनी ही बार उसे कुछ न कुछ चुरा कर खाते समय पकड़ा है। पकड़े जाने पर वह कहता है — मालिक, जरा चख रहा था।

प्लेट में घुंघनी निकालते समय अगर एक दाना भी नीचे गिर जाता है तो विस्सू फौरन उसे उठा कर मुंह में रख लेता है। चाप या कटलेट का टुकड़ा प्लेट में पड़ा मिल जाता है तो उसकी खुशी का ठिकाना नहीं रहता। प्लेट धोने जा कर वह पहले उस जूठन को मुंह में रख लेता है। भजन उसे खिलाने में कभी कंजूसी नहीं करता, फिर भी उसे ऐसा करते हुए घिन नहीं लगती।

बिस्सू की बात पर भजन को विश्वास नहीं हुआ। उसने बिस्सू से कहा, "मुंह खोल, मैं देखूंगा।"

यह कह कर भजन अपनी नाक बिस्सू के मुंह के पास ले गया। बिस्सू ने कई बार थूक निगल कर मुंह खोला।

भजन तो शराब के नशे में था ही, चिल्ला पड़ा, "हरामजादा, तूने शराब पी है?"

छः माह के बच्चे की तरह बिस्सू जोर से रो पड़ा, फिर सँभल कर बोला, "मां की कसम मालिक, मां की कसम खा कर कहता हूं, मैंने शराब नहीं पी। आप मालिक शराब पिये हुए हैं, इसलिए आपको —"

"इसलिए मुझको शराब की बू मिल रही है?"

इतना कह कर भजन बिस्सू को घसीटते हुए गोलोक चटर्जी के पास ले गया और बोला, "दादा जी के पांव छू कर बोल कि शराब नहीं पी और कुछ नहीं खाया।"

बिस्सू चोरी-डकैती या खून-कतल कर सकता है, लेकिन ब्राह्मण देवता के पांव छू कर झूठ नहीं बोल सकता। अगर ऐसा किया तो नरक में सड़ना पड़ेगा न? बिस्सू सहमा-सा खड़ा रहा और सड़क के मरियल कुत्ते की तरह आंखें मिचियाते हुए उसी की तरह मुंह से विचित्र आवाज निकालने लगा। एक विशाल शरीर वाले आदमी को कूं-कूं करते और बार-बार होंठ चाटते देख कर श्रीमती काफे में मौजूद सभी लोगों को मजा आ गया। थोड़ी देर बाद बिस्सू बोला, "चाप का एक टुकड़ा मालिक, चाप का एक टुकड़ा — मां की कसम मालिक!"

गोलोक चटर्जी अफीम के नशे में हैं। उन्होंने अधखुली आंखों से बिस्सू की तरफ देख कर भजन से कहा, "अब इसे छोड़ दो भैया। अगर यह फिर कभी कुछ चुरा कर खाता है तो इसे भगा देना।"

"आप भी ऐसा कह रहे हैं दादा?"

"हां, भैया।"

भजन ने बिस्सू से कहा, "जा भाग! ब्राह्मण की बात ठुकरा नहीं सकता।"

बिस्सू जान बचा कर खिसकने लगा तो भजन ने वहां मौजूद लोगों पर निगाह दौड़ाते हुए कहा, "मैं शराबी हो सकता हूं, लेकिन अपने राम को धोखा देने वाला अभी पैदा नहीं हुआ! कमबख्त को मैं इतना खिलाता हूं, फिर भी रोज कुछ न कुछ चुरा कर खायेगा। सिरीमती काफे का भाग्य ही फूटा है।"

इतने में गोलोक चटर्जी बोले, "तो सुनो एक पेटू की कहानी!"

चटर्जी बाबू के पास बैठे लोगों ने उनको टोकते हुए कहा, "दादा जी, अभी तक मछली मारने की कहानी पूरी नहीं हुई।"

"क्या पूरी नहीं हुई?"

नारियल का हुक्का चूम कर चटर्जी बाबू जोर से हँसे, फिर आँखें बंद कर बोले, "मछली कँटिया में फँस चुकी है न? असल में शाम को मोताद के कारण ज्यादा मौज रहती है, इसलिए भूल गया। मोताद समझ गये न? अफीम की गोली।"

चटर्जी बाबू के लिए फौरन एक कप चाय का आर्डर हो गया। हुक्का ठंढा पड़ चुका है, लेकिन चाय का आर्डर सुन कर चटर्जी बाबू उत्साह का धुआँ छोड़ने लगे। उन्होंने शुरू किया, "हाँ, मछली तो कँटिया में फँस चुकी थी, लेकिन डोर खींच कर उसे किनारे तक लाना क्या आसान था? वृषभानु की बेटी जिस तरह नंदलाल को परेशान करती थी, उसी तरह वह कम्बख्त मछली मुझे परेशान करती रही। सूरज डूब ही चुका था — अँधेरा छा गया, रात हो गयी, चारों तरफ जुगनू चमकने लगे और झींगुरों का गाना शुरू हो गया। मैं भी पसीने से तर हो उठा था। मछली किनारे आने का नाम नहीं ले रही थी। जोर लगा कर खींच भी नहीं सकता था, कहीं डोर न टूट जाय। उसके बाद —"

गरम चाय का कप मुँह से लगा कर गोलोक चटर्जी क्षण भर के लिए चुप हो गये। फिर वे नींद से जागने की तरह बोले, "उसके बाद जब मछली को किनारे ले आया, हें-हें, क्या बताऊँ भैया, तालाब में एक बूँद पानी नहीं बचा!"

चटर्जी बाबू के मछली मारने की कहानी सुन कर लोग हँसते-हँसते लोट-पोट होने लगे। यह कहानी कहाँ तक सही है, यह जाँचने-परखने का सवाल नहीं उठता। लोगों को कुछ सुनने को मिला और मजा आ गया — क्या यही कम है?

मछली मारने की कहानी सुनने में जिनकी रुचि नहीं है, वे हैं हीरेन और कृपाल। उन दोनों के साथ और भी एक है। उसका नाम ललित मुखर्जी है। वह घोर मुस्लिम विरोधी है। कांग्रेस के प्रति उसकी आस्था नहीं है। फिर भी अपनी बातें कहने के लिए वह इन दोनों के साथ लगा रहता है।

हीरेन और कृपाल देश की हालत पर बात कर रहे हैं। दो साल पहले उन लोगों ने शराब की दुकान पर धरना दिया था। उसका परिणाम बड़ा बुरा हुआ था। सिर्फ पुलिस वालों ने नहीं, मजदूरों तक ने लाठी ले कर उनको भगाया था। उस सड़क पर झाड़ू लगाने वालों ने भी लाठी तान ली थी। ऐसे ही एक बूढ़े की लाठी हीरेन के सिर पर पड़ी थी और उसे पंद्रह दिन चूँचड़ा के अस्पताल में रहना पड़ा था। जब वह अस्पताल से लौटा तब भी उसके सिर पर पट्टी बँधी थी। उसी हालत में कृपाल ने उसे एक जनसभा में ले जाना चाहा था, लेकिन वह नहीं गया था। उसे गौरव का अनुभव क्या होता, बड़ी शरम लगने लगी थी।

शराब की दुकानों पर धरना देने की बात इसलिए दब गयी थी। हीरेन अपना पूरा समय हरिजनों की सेवा में देने लगा था। वह आज भी वही काम करता है। इस

समय वे सब म्युनिसिपैलिटी के चुनाव के बारे मे बात कर रहे हैं।

एक चुटकी सुँघनी नाक मे डाल कर कृपाल बोला, "तुम्हारे हरिजन तो वोट नही देंगे, देंगे ऊँची जाति के लोग। देशबंधु सी० आर० दास के पाँच बडे सहयोगियों के बारे में तुम चाहे जितनी डींग हाँको, प्रधान राय को बुला कर उनसे भाषण कराने में तुम्हें क्या एतराज हो सकता है ?"

हीरेन के चेहरे पर शांति और बुद्धि की झलक है। उसकी तुलना में कृपाल को हलका और बडबोला लगता है। उसकी हर बात में जोश भरा रहता है। उसकी बातो में न गंभीरता होती है और न सूझ-बूझ की तीव्रता, जो कुछ होता है वह है उत्साह, नहीं तो आवेश।

अब हीरेन ने नाक सिकोड कर कहा, "इसमें प्रधान राय की बात कैसे आ गयी, यह मैं नही समझ पा रहा हूँ। तुम तो उस सारदा चौधरी को चुनाव में खड़ा कराने के पक्ष मे हो और मुझे उसी मे आपत्ति है। अगर वह कांग्रेस का मेम्बर भी होता तो कोई बात थी। वह तो हमेशा अंग्रेजो के तलवे चाटता रहा।"

कृपाल मन ही मन गरम हो गया। उसने कहा, "तुम्हारा वह नसीराम घोष भी क्या एकदम साधु-महात्मा है ? हमारी कमेटी की राय भी सारदा बाबू के पक्ष में है। एक तुम्ही को आपत्ति है। इसका यही कारण है कि नसीराम धार्मिक विचार का है। धरम-धरम करके ही तुम चौपट हुए ! वह भी कांग्रेस का सदस्य नही है।"

हीरेन बोला, "फिर तो मेरा कुछ कहना बेकार है। कमेटी की राय है तो मैं क्या कह सकता हूँ ? लेकिन नसीराम खडे होंगे। हम उनका समर्थन करें या न करें, वे अकेले ही काफी हैं। इतना सभी जानते हैं।"

इसी बीच ललित जोर-जोर से बोलने लगा, "मैं कह रहा हूँ कि विजय बनर्जी सब से योग्य हैं ! इस पूरे जिले में अगर कोई सच्चा हिन्दू है, अगर कोई हिन्दुओं की इज्जत रख सकता है तो बस विजय बनर्जी। मैं तुम लोगों से अपील कर रहा हूँ कि —"

कृपाल जोर से चिल्लाया, "वोट फॉर सारदा चौधरी !"

फिर से बहस-मुबाहिसा का दौर चालू हो गया। श्रीमती काफे मे जितने लोग बैठे थे, सभी आपस में म्युनिसिपैलिटी के अगले चुनाव की चर्चा करने लगे। लोगों ने तीनो प्रत्याशियों के ऐसे-ऐसे कारनामे सुनाये कि सुनने वाले आश्चर्य मे पड़ गये। फिर तो सबने अपने मन मे यही कहा कि अपना सिक्का खोटा तो परखैया का क्या दोष ?

उधर भजन सडक पर चला गया था। उसने एक घोड़ागाडी के पास जा कर चिल्लाना शुरू किया, "अरे मरियल उच्चैःश्रवा का बाप उतर आ। नीचे उतर आ।"

उच्चैःश्रवा तो इंद्र का घोडा है, लेकिन यहाँ इसका मतलब भुन्नू कोचवान की गाड़ी में जुते घोड़ों से है। भजन भुन्नू को उन घोड़ों का बाप कहता है। भुन्नू को इस इलाके के कोचवानो का सरदार कहा जा सकता है। शाम होते ही उसने एक कुल्हड़ ताड़ी पी ली है और तभी से वह चिल्लाता जा रहा है, लेकिन अभी तक उसे एक भी सवारी नही मिली। दूसरी गाड़ियाँ इस बीच एक-दो बार सवारी पहुँचा चुकी हैं।

स्टेशन से निकलने वाले मुसाफिर भुन्नू की शक्ल-सूरत देख कर उसकी तरफ बढ़ने की हिम्मत नहीं कर सके। पियक्कड़ कोचवान की गाड़ी में बैठ कर कौन अपनी जान गँवाना चाहता है ?

ताड़ी के नशे में धुत्त भुन्नू गाड़ी में अपनी जगह पर आधा लुढ़क चुका था। भजन की पुकार सुन कर वह विशाल शरीर लिये नीचे उतर आया। नशा चढ़ जाने के कारण उसका चेहरा तमतमाया हुआ है। आँखें लाल हो चुकी हैं। उसने कहा, "इनको इन्दर के घोड़े मत कहो बाबू, ये दोनों मेरे राजा-रानी हैं।"

"राजा-रानी ?"

भजन दिल खोल कर हँसने लगा। उसकी मस्त हँसी की गूँज से सड़क का वह हिस्सा गूँजने लगा। धीरे-धीरे वहाँ कुछ लोग जमा हो गये। आसपास खड़ी गाड़ियों के कोचवान भी मजा लेने के लिए भजन के पास आ कर खड़े हो गये। भजन ने सबको भुन्नू के दोनों घोड़े दिखाते हुए कहा, "देखो, ये राजा-रानी हैं। रानी को खाज है और राजा को खुजली !"

इस मजेदार बात को सुन कर सब हँसने लगे। हँसी की गूँज से खुजली वाले बूढ़े घोड़े की चमड़ी काँप उठी। रात के वक्त भी उसके बदन में कई मक्खियाँ चिपकी हुई थीं। घोड़ी ने कान खड़े कर लिये। मानो उसने आँखें तरेर कर पूँछ फटकारी। शायद भुन्नू को राजा-रानी के नाम लेते सुन वे चौकन्ने हो गये।

भुन्नू ने गुस्सा भरी आँखों से एक बार श्रीमती काफे की तरफ देखा, लेकिन उस होटल को गरियाने के लिए भुन्नू को उसी वक्त कोई उचित शब्द नहीं मिला।

भजन ने हाथ जोड़ कर भुन्नू से पूछा, "ये किस मुलुक के राजा-रानी हैं भैया ? अरब के या आस्ट्रेलिया के ?"

भुन्नू इसका कोई जवाब नहीं दे सका तो गाड़ी में अपनी जगह पर जा कर बैठ गया।

भजन जब से यहाँ आया है, याने रेस्तोराँ खोला है, तब से रोज एक बार भुन्नू को छेड़ा करता है। फिर कभी-कभी वह भुन्नू को बुला कर खिला भी देता है। इसलिए भुन्नू ठीक से भजन को समझ भी नहीं पाता। भजन उसके लिए एक रहस्य है। भजन हँसी-मजाक में जो कुछ कहता है, भुन्नू को बुरा नहीं लगता। लेकिन राजा-रानी को ले कर मजाक भुन्नू बरदाश्त नहीं कर सकता। इसके अलावा वह कभी लाट साहब भजन को अपनी गाड़ी में नहीं बैठा सका। फिर भजन भुन्नू की सब से कमजोर जगह पर चोट करता है। वह भी अकेले में नहीं, सब के सामने भजन भुन्नू के घोड़ों की खिल्ली उड़ाता है। इससे दूसरे कोचवान दाँत निपोर कर हँसने लगते हैं। आज भी यही हुआ। आज भी भजन ने भुन्नू के घोड़ों को ले कर ऐसा मजाक किया कि भुन्नू का दिल दुखी हो गया। भुन्नू को कोई जवाब नहीं सूझा तो उसने लगाम हाथ में ले कर कहा, "भजन बाबू, आपका फैशनेबुल होटल आपको रोटी देता है तो मेरे ये ही

घोड़े मेरे लिए रोटी का इंतजाम करते हैं। ये मेरे लिए राजा-रानी से बढ़ कर हैं। समझ गये न ?"

इतना कह कर भुन्नू ने लगाम को झटका मार कर खींचा और दोनों घोड़े एक दूसरे के मुँह से मुँह सटा कर गाड़ी को खींचते हुए सड़क पर पहुँच गये। फिर चाबुक की फटकार होते ही वे दौड़ने लगे।

भुन्नू गाड़ी भगा कर जाने लगा तो दूसरे कोचवान हँसने लगे, लेकिन भजन नहीं हँसा। उसने आवाज लगायी, "भुन्नू, लौट आ। एक बात सुनता जा।"

भजन की पुकार भुन्नू के कानों तक पहुँची। सचमुच इस शख्स को पुकार ने भुन्नू के मन को न जाने किस तरह बांध रखा है। भुन्नू जानता है कि भजन उससे घृणा नहीं करता। भुन्नू को इसका पक्का विश्वास है। फिर भी वह नहीं लौटा। सिर्फ *उसकी गाड़ी के पहियों की और घोड़ों की टापों की मिली-जुली आवाज* दूर से सुनाई पड़ने लगी।

अचानक भजन ने आसपास खड़े तमाशबीनों को डांट लगायी, "साले दांत निपोर कर हँस रहे हैं। भाग यहाँ से।"

तमाशा देखने वाले लोग इधर-उधर हो गये। भजन अपनी जगह लौट आया। उसकी जगह वही श्रीमती काफे है। भुन्नू ने अभी थोड़ी देर पहले श्रीमती काफे को फैशनेबुल कहा था — मजाक उड़ाने के लिए कहा था, लेकिन उसका वही शब्द बार-बार भजन के कानों में गूंजने लगा। भजन को लगा कि तमाशबीन उसे घेर कर हँस रहे हैं। लेकिन श्रीमती काफे क्या सिर्फ फैशनेबुल है ? क्या उसमें और कुछ नहीं है ?

रात बढ़ने लगी है। श्रीमती काफे खाली हो चुका है। इस समय काफे में सिर्फ दो जने हैं — हीरेन और कृपाल। सड़क भी सुनसान हो चली है। एक-दो लोग आ-जा रहे हैं। बाहर का धुआँसा साफ हो चुका है। शाम की तरह इस समय धूल और धुआँ ज्यादा नहीं हैं। पूरब-उत्तर कोने से हवा चल रही है। हवा ठंडी और नम है।

वातावरण में हेमंत का हलका कोहरा है। आसमान में बादल भी है, लेकिन कहीं-कहीं, फटा-फटा। सिर्फ बड़े-बड़े तारों के धुंधले चेहरे दिखाई पड़ रहे हैं।

कृपाल ने हीरेन से पूछा, "तो तुम कल कलकत्ते जा रहे हो ?"

इस सवाल से हीरेन चौंक पड़ा। वह हर समय न जाने क्या सोचता रहता है। बोला, "हाँ, जाऊँगा। अगले हफ्ते प्रफुल्ल घोष यहाँ आयेंगे और उनकी सभा मुख्य रूप से छुआछूत विरोधी होगी।"

कृपाल बोला, "यह मुझे पता है। लेकिन तुम्हें *क्या हो गया है, यह तो बताओ।* क्या घर में कोई बात हो गयी है ?"

हीरेन ने कहा, "नहीं तो !"

फिर थोड़ी देर चुप रहने के बाद अचानक हीरेन ने बड़े ही गंभीर स्वर में

कहना शुरू किया, "तुमने देश की मौजूदा हालत के बारे में सोचा है न ? मुझे पूरा विश्वास है कि गांधी जी देश को इस हालत से जरूर उबार लेंगे, लेकिन हम भी तो उनके आदर्श से बहुत दूर होते जा रहे हैं। 'टेररिस्ट' अपनी जगह पर हैं, लेकिन वे बहुत जल्दी ठंढा पड़ जायेंगे। इधर सुना है कि नवीन गांगुली रूसी क्रांति की बात करने लगा है। शायद 'टेररिज़म' के बल पर अब उसे कुछ कर पाने की उम्मीद नहीं है।"

कृपाल बोला, "अगर यही कहते हो तो जवाहरलाल भी तो इंग्लैंड से लौट कर रूसी क्रांति की बात करने लगे हैं।"

एक क्षण आगा-पीछा करने के बाद हीरेन ने जवाब दिया, "लेकिन जवाहरलाल ने कम्युनिस्ट पार्टी के नाम से अलग संगठन बनाने की बात तो नहीं की ? क्या तुम समझते हो कि वर्कर्स ऐंड पेजेंट्स पार्टी इस देश की धरती पर कुछ कर सकेगी ? इस देश को जो लोग समझ नहीं सके, वही विदेशियों के आंदोलन की नकल करना चाहते हैं। उनमें से कोई भी गांधी जी के आदर्श को नहीं समझ सका। लेकिन इसके लिए हम जिम्मेदार हैं। हम अपनी ईमानदारी को बरकरार नहीं रख सके कृपाल ! जरा सोचो तो, दो हजार गज सूत काते बिना हम लोगों में से अनेक महारथियों ने कमेटी के मेम्बर बनने का मौका लिया।"

अब कृपाल को करारा जवाब मिला। कई वर्ष पहले गांधी जी ने कांग्रेस को ऐसा ही निर्देश दिया था कि हर महीने दो हजार गज सूत काते बिना कोई कमेटी में नहीं आ सकेगा। इस निर्देश के अनुसार कृपाल अपनी योग्यता का परिचय नहीं दे सका। महीने में दो हजार गज सूत काते बिना ही वह तहसील कांग्रेस का मेम्बर बन गया। फिर भी क्या उसने और कोई काम नहीं किया ? क्या उसमें किसी तरह की योग्यता नहीं है ?

चेहरे को कठोर बना कर कृपाल ने तेज आवाज में पूछा, "उलटी-सीधी बातें क्यों सुनाने लगे ? इसका क्या मतलब है ?"

हीरेन ने जल्दी से कृपाल का हाथ पकड़ कर कहा, "कैसी बात कर रहे हो ? मैंने तुमसे तो कुछ नहीं कहा। मैं कह रहा हूँ कि हम गांधी जी के आदर्श को अपने जीवन में नहीं उतार सके। हम उनके निर्देश के अनुसार जन-आंदोलन चला नहीं पा रहे हैं। साइमन कमीशन का ओछापन देख कर गांधी जी ने साम्राज्यवादियों को और साल भर का समय दिया है। उसी के बाद हम पूर्ण स्वतंत्रता के लिए आंदोलन छेड़ने जा रहे हैं। इस एक साल के अंदर हमें तैयार होना है। अहिंसा के रास्ते चल कर हम सारे दमन-चक्र का विरोध करने के लिए तैयार होंगे। कृपाल, तुम तो जानते हो कि मैं भंगियों की बस्ती में जाता हूँ। छुआछूत और उनकी अशिक्षा को मिटाने के लिए मैं ऐसा करता हूँ।"

अचानक दोनों हाथ ऊपर उठा कर अधखुली आँखों से हीरेन और कृपाल को देखते हुए लड़खड़ाती आवाज में भजन ने उनसे कहा, "बस कर यार, बस कर ! क्या

तुझमें से कोई मेरे एक सवाल का जवाब दे सकता है ?"

भजन का रंग-ढंग देख कर हीरेन जरा घबड़ा गया। मानो थोड़ा सिकुड़ कर उसने पूछा, "कैसा सवाल ?"

"क्या तू बता सकता है कि तुझे कहाँ खाना मिलता है ? तुझे और तेरे साथी को कौन खिलाता है ? तू जैसे छोकरो का कौन पेट भरता है ? बता सकता है ?"

इतना कह कर भजन कुर्सी छोड़ कर खडा हो गया। मानो अपने सवाल का जवाब सुने बिना वह चुप नही बैठेगा।

कृपाल और हीरेन एक-दूसरे की तरफ देखते हुए खडे हो गये। कृपाल ने भजन से कहा, "अब तुम हमारे पीछे क्यों पड़ गये ? रात हो गयी है, अब हम जा रहे हैं।"

भजन बोला, "हाँ यार, अब क्यो नहीं जायेगा ? लेकिन जाते समय इकन्नी छोड़ते जाना। कई बार चाय पी है।"

हीरेन ने झटपट जेब से पैसा निकाल कर भजन के हवाले किया। इस मामले मे हीरेन या कृपाल के नाराज होने का सवाल नही उठता। दोनों ही भजन को अच्छी तरह जानते हैं। लेकिन हीरेन के चेहरे पर से चिंता का बादल नही छँटा। उसने संस्कृत और पाली की दो किताबें बगल मे दबा कर रुई और तकली की थैली हाथ में ले ली। फिर वह श्रीमती काफे से निकल कर सड़क पर आ गया। कृपाल चला गया, लेकिन हीरेन उसी तरह सड़क पर खड़ा रहा।

सुनसान सड़क और रात का सन्नाटा। मिट्टी के तेल की बत्तियाँ दूर-दूर टिमटिमा रही हैं। बडे-बडे पेड गूँगे निशाचर प्रेत के समान चुपचाप खडे हैं। हीरेन ने सोचा कि आज रात कुछ ज्यादा हो गयी है। कही पुलिस वाले ने देख लिया तो कैफियत देने के लिए थाने जाना पडेगा। इसके अलावा श्रीमती काफे के पीछे वाले कमरे मे छिपे लड़के को पकड़ने के लिए कई दिनो से खुफिया चक्कर लगा रहे हैं। उस लडके का क्या नाम है ? सूरज सिंह। हीरेन उससे बात कर चुका है। आश्चर्य है, उस लडके का विचार कितना सुलझा हुआ है ! उसी दिन उस लडके ने कहा कि मै गीता में विश्वास करता हूँ, नरनारायण मेरा मार्गदर्शक है। फिर उसने यह भी कहा कि रूस मे जैसा रेवोल्यूशन हुआ है, हम भी उसी तरह आदोलन शुरू करेंगे। उसने अफसोस किया कि मेरठ कान्सपिरेसी सक्सेसफुल नहीं हुई। अगर वह सक्सेसफुल होती तो आजादी मिल जाती। उसने मुजफ्फर अहमद और डांगे के बारे मे भी बताया।

हीरेन ने सोचा, नही ! वह रास्ता नही, गगा की बाढ़ कछार पर आ कर ज्यादा जोर मारती है। मुझे तो और भी गहराई मे जाना है, युगों पहले खोये भारत की तलाश करनी है, और उसकी आत्मा को ढूँढ निकाला है। हीरेन सोचता रहा, सिर्फ मुझे नहीं, हम सब को उस भारत की खोज करनी होगी जहाँ अस्पृश्यता नहीं है, अशिक्षा नही है और जहाँ करुणामय जन-जन के हृदय मे समान रूप से प्रतिष्ठित है। वही होगी सब के लिए नवभारत की जययात्रा।

फिर भूताविष्ट के समान हीरेन स्वप्नावेश मे अँधेरी सड़क से चलने ल

ड्रायर खोल कर सारा पैसा जेब में भरते हुए भजन अचानक हँस पड़ा । असल में हीरेन के चार पैसे देने की बात याद आते ही उसे हँसी आ गयी । मन ही मन वह बोला — साला मुझ पर नाराज हो गया है शायद !

फिर भजन ने आवाज लगायी, "बिस्सू !"

बिस्सू आया । वैसा ही सहमा हुआ और आगा-पीछा करता हुआ । उसका बदन कितना कड़ा है । लेकिन उसे देखने से यही लगता है कि मार खाने के भय से उसका शरीर हर वक्त ऐंठा हुआ है ।

भजन ने बिस्सू से पूछा, "क्या और कुछ खाया है ?"

महीन आवाज में बिस्सू ने झटपट जवाब दिया, "माँ की कसम मालिक, कुछ भी नहीं खाया ।"

हर बात में माँ की कसम खाना बिस्सू का तकियाकलाम है । इसके लिए वह मौका-बेमौका नहीं देखता । अनायास उसके मुँह से निकल आता है — माँ की कसम !

भजन ने जेब से चार पैसे निकाल कर बिस्सू को देते हुए कहा, "ले चार पैसे ! मुझे ये चार पैसे बरदाश्त नहीं होंगे, लेकिन तू तो सब कुछ पचा लेता है ।"

बिस्सू चार पैसे हाथ में लिये खड़ा रहा । डर के मारे वह मुट्ठी न बाँध सका और न ताँबे के चार सिक्कों को कहीं रख सका । मानो किसी ने उसकी हथेली पर जहर रख दिया हो । फिर अचानक वह हें-हें कर हँस पड़ा और बोला, "खाने के लिए पैसा दिया मालिक ? लेकिन हलवाई की दुकान तो अभी बंद हो गयी होगी ।"

भजन ने बिस्सू की इस बात का जवाब नहीं दिया । वह घर के बारे में सोचने लगा । जूही यहाँ नहीं है । कुछ दिन हुए वह बाप के घर गयी है । अब वह तीसरी संतान का जन्म देगी । सात साल के विवाहित जीवन में वह तीसरी संतान की माँ बनने वाली है ।

जूही । भजन ने सोचा कि पता नहीं, जूही इस समय क्या कर रही है । शायद वह सो रही है । नहीं, वह सो न रही होगी । बाप के दुमंजिले मकान के ऊपर वाले दक्षिण तरफ के कमरे में वह खाट पर करवट लिये लेटी होगी । उसकी आँखें बगीचे के अँधेरे में खोयी होंगी । शायद उसे तकलीफ हो रही होगी और उसी के मारे उसे नींद न आ रही होगी । इस हालत में ऐसा होता ही है । भजन सोचता ही गया । शायद जूही की आँखें धँस गयी होंगी । शायद उसकी आँखों के नीचे कालापन आ गया होगा । शायद उसके हाथ-पाँव शिथिल पड़ गये होंगे । इस हालत में तो औरतों को बेहद थकान रहती है । शायद जूही के दोनों बच्चे गौर और निताइ अपनी माँ की छाती से सटे सो रहे होंगे और माँ सोच रही होगी··· । यहाँ तक आ कर भजन की कल्पना रुक गयी । उसने सोचा कि नहीं, जूही मेरे बारे में क्या सोचेगी ? वह तो अपने अभिशप्त जीवन के बारे में सोच रही होगी । विवाहित जीवन के दुख-दर्द ही उसे याद आ रहे होंगे । उसके पास बुद्धि है, हृदय है और सब से बढ़ कर उसका यौवन आज भी अटूट है । लेकिन एक बेकार आदमी के हाथ पड़ कर उसकी सारी जिंदगी बेकार हो गयी ।

अलकोहल का नशा कम होता जा रहा है। भजन के फेफड़ों से ढेर सारी हवा निकल आयी। उसने लंबी सांस छोड़ी। व्यर्थ ! वह जीवन में विफल हो चुका है। अपने साथ वह कभी समझौता नहीं कर सका। लेकिन जूही ने तो कुछ करना चाहा था। उसे ग्रेजुएट पति मिला था। वह स्वयं भी कुछ पढ़ी-लिखी थी। लेकिन आज ? आज उसने चुपचाप, मुँह से एक शब्द निकाले बिना एक शराबी के आगे आत्मसमर्पण कर दिया है। अपमान, घृणा और अभिशाप से भजन की छाती मानो अंदर ही अंदर जल उठी।

अचानक भजन का दिल धड़क उठा। वह अभिशाप मानो जिंदगी भर भजन को जलाता रहेगा। जूही की आँखों में अब भी वही एकटक दृष्टि है, अब भी उसमें खामोशी है और थकावट। पास-पड़ोस की बहुओं और उसमें कोई फर्क नहीं रह गया है। सब की तरह वह भी खुश नहीं है, लेकिन परिवार के रंगमंच पर अब भी एक बहू की भूमिका में अभिनय करती जा रही है। प्रिया और माता की भूमिकाओं में उसका अभिनय बेऐब है। फिर भी क्या वह भजन को छोड़ कर कहीं और नहीं जा सकती ?

यह सोचते ही भजन के सीने के भीतर न जाने कौन चीत्कार कर उठा—नहीं, नहीं, जूही ऐसा नहीं कर सकती ! शायद यह प्यार नहीं है, फिर भी इस व्यर्थ जीवन से भजन जूही को अलग नहीं कर सकता, उसे मुक्ति नहीं दे सकता। आठों पहर नियम से भजन जूही को चाहता है। यह मानो भजन के मन और देह की आदत बन गयी है। टेबुल पर हाथ फेरते हुए भजन कविता-पाठ करने की तरह बोल उठा, "अफसोस है कि वो कली बिन खिले मुरझा गयी !"

इतने में भजन चौंक पड़ा। लगा कि कोई उसका नाम ले कर पुकार रहा है। लेकिन कहीं तो कोई नहीं है। हँसने लगा भजन। उसने सोचा कि मुझे कौन पुकारेगा ? नारायण भैया तो जेल में हैं। कई बार भजन अलीपुर जा कर उनसे भेंट कर आया है। पिता जी शायद अभी तक बाहर वाले बरामदे में आरामकुर्सी पर पत्थर की मूर्ति बने बैठे हैं। भजन के पिता जी महादेव हालदार मानो दिन भर डरावने सपने देखते रहते हैं। मानो खना (बंगाल की महूरी) की कहानी के उस जिह्वाहीन मिहिर की तरह वे बोलने की शक्ति खो चुके हैं, लेकिन अपनी दोनों आँखों से वे सब कुछ देखते रहते हैं। और बकुल माँ ? शायद अब तक वे भजन के लिए खाना ढक कर अपने घर चली गयी होंगी।

जूही के जाने के बाद बकुल माँ को फिर महादेव हालदार के घर आना पड़ा है और उनको इस घर की बागडोर सँभालनी पड़ी है। बकुल माँ में आश्चर्यजनक परिवर्तन आ गया है। अब वे पहले की तरह गंभीर नहीं बनी रहती। वे जोर-जोर से हँसती हैं। उस हँसी की गूँज मानो लोगों की छाती में बिंध जाती है। उनके कपड़े-लत्ते में भी परिवर्तन आ गया है। वे जो इस कदर सजना-धजना पसंद करती हैं, यह पहले किसको पता था ? अब तो वे बात-बात पर गाने लगती हैं। कभी-कभी वे भजन के पिता हालदार बाबू के पास बैठ जाती हैं और भजन की माँ के बारे में बात करती

हैं। वे भजन की माँ की सहेली थीं। सहेली की बात करते-करते वे अपनी जवानी की बात भी करने लगती हैं।

इस संसार में छंद, ताल या लय नाम की कोई चीज नहीं है। भजन ने हाथ झटक कर मानो अपनी चिंता को परे हटाना चाहा। लड़खड़ाते कदमों से वह श्रीमती काफे के पीछे वाले कमरे में गया। वहाँ उसने बेंच के नीचे से शराब की बोतल निकाली, लेकिन वह खाली निकली। भजन ने कई बोतलें देख डालीं, लेकिन सब खाली हैं। सिर्फ एक में थोड़ी सी शराब पड़ी है। भजन ने उसी को अपने गले में उँड़ेल लिया।

भजन को देख कर सूरज सिंह ने धीरे से कहा, "सुन्हेन !"

सुन्हेन, याने सुनिए ! सूरज सिंह बंगला सीखने की कोशिश कर रहा है, लेकिन वह ठीक से बोल नहीं पाता। उसका उच्चारण सही नहीं हो पाता। उम्र के हिसाब से उसका चेहरा ज्यादा कमसिन लगता है। चेहरे से वह किशोर है।

भजन ने गर्दन टेढ़ी करके सूरज सिंह की नकल में कहा, "बल्हेन !"

याने, बोलिए। लगा कि सूरज इस उत्तर से थोड़ा शरमा गया। फिर भी उसने कहा, "मेरा मील चार्ज ?"

सूरज के हाथ में गोल-गोल कई रुपये चमक रहे हैं। भजन ने भौंहें सिकोड़ कर उन रुपयों की ओर देखा और पूछा, "कहाँ से मिले ?"

"सुनिर्मल ने दिया है।"

"सुनिर्मल ?"

हँस पड़ा भजन; फिर बोला, "सुनिर्मल तो बाप का जेब काटता है। ये रुपये उसी को लौटा देना। तुम्हारा मील चार्ज मेरे खर्च के खाते में लिखा रहेगा। अंग्रेज मारने वाले गिरोह के किसी से श्रीमती काफे पैसा नहीं लेता।"

सूरज सिंह भजन की पूरी बात समझ नहीं सका। वह बेवकूफ की तरह खड़ा देखता रहा।

कमरे से निकलते समय भजन ने सूरज से फिर कहा, "चला सूरज, अब चाँद बन कर यहीं रात भर चमकते रहो। यहाँ चारों तरफ बड़े-बड़े गोजर और तिलचटे हैं, जरा होशियार रहना ! समझ गये ?"

बहुत रात हो गयी है। लेकिन कितनी रात, इसका अंदाजा लगाना मुश्किल है। अचानक सूरज की नींद खुल गयी। पहले तो उसे लगा कि बेंच के नीचे चूहे और छछूंदर दौड़ रहे हैं और उसी के कारण खट-पट आवाज हो रही है। घुप अँधेरा। कुछ दिखाई भी नहीं पड़ता। सूरज थोड़ी देर उस आवाज को सुनता रहा। उसे लगा कि-कोई आदमी चल-फिर रहा है। चूहों और छछूंदरों की भागदौड़ से ऐसी आवाज नहीं हो सकती। यह तो किसी के भारी पाँवों की धप-धप आवाज है। सूरज घबड़ाया कि कहीं दो-चार लोग तो नहीं हैं ?

पुलिस की निगाह बचा कर भागे सूरज का दिल धड़कने लगा। झटपट उसने कमर के पास खोंसा रिवाल्वर निकाल लिया। रिवाल्वर को हाथ में लिये वह भयानक क्षण की प्रतीक्षा करने लगा। इतने में उसकी निगाह टट्टर वाले कमरे की ओर गयी। उसे लगा कि पीछे वाला टट्टर आधा खुला है और वहाँ कोई खड़ा है। गजब हो गया! वहाँ जो भी हो, उसने सूरज के भागने का रास्ता रोक रखा है। सामने वाले कमरे में से बाहर ताला लगा है, क्योंकि श्रीमती काफे बंद हो चुका है। सूरज का दिल बुरी तरह धड़क उठा। अब तो पकड़े जाने के अलावा दूसरा रास्ता नहीं है।

मरने-मारने के लिए तैयार हो कर सूरज बिस्तर पर बैठ गया। उसे लगा कि अभी कोई भयानक बात होने वाली है। फिर भी उसने अंत तक लड़ने का फैसला कर लिया। उसने टट्टर की ओर रिवाल्वर का निशाना साध कर स्विच दबा दिया तो कमरे की बत्ती जल गयी। बत्ती जलते ही कमरे में प्रकाश हो गया और सूरज को अपनी आँखों के सामने एक भयानक जानवर दिखाई पड़ा। उस जानवर की छोटी-छोटी आँखें डरी हुई हैं, उसका मुँह खुला हुआ है और उस मुँह में खाने को ढेर सारी चीजें ठूँसी हुई हैं।

अब सूरज ने गौर से देखा कि वह डरावना जानवर बिस्सू है। कुछ चबाते हुए वह सिर हिला रहा है। बत्ती जलते ही उसका मुँह चलना रुक गया और डर के मारे उसके गले से दबा आर्तनाद निकल आया।

यह देख कर सूरज हक्का-बक्का रह गया। उसके मन में जो अजाना भय समा गया था, वह दूर हुआ। लेकिन किसी आदमी को उसने कभी इस तरह खाते नहीं देखा था। उसने झटपट अपना रिवाल्वर छिपा लिया। उसके मुँह से अनायास ही निकल आया, "विश्वनाथ!"

अभय पा कर विश्वनाथ उर्फ बिस्सू ने फिर जल्दी-जल्दी मुँह चलाना शुरू किया। उसने शाम को दो-चार चांप और मांस के कुछ टुकड़े छिपा कर रख दिये थे, अब उन्हीं को वह चबा-चबा कर, स्वाद ले-ले कर खा रहा है। मुँह में भरा अंतिम ग्रास निगल कर उसने कहा, "सो जाओ मुन्ना बाबू, नहीं तो तुम्हारे पिता जी जब आयेंगे तब उनसे कह दूँगा कि मुन्ना बाबू रात भर सोता नहीं था। माँ की कसम, कह दूँगा।"

पूरा खा चुकने के बाद बिस्सू ने अचानक रोनी सूरत बना कर पतली आवाज में कहा, "मुन्ना बाबू, तुम बहुत अच्छे हो! भजन ठाकुर को मत बताना कि बिस्सू चाँप खा रहा था। माँ की कसम कह रहा हूँ कि भजन ठाकुर को पता चल गया तो वे मुझे मार डालेंगे। क्या करूँ भैया, जबान साली नहीं मानती, चटपटी चीज खाने को ललचती है। इसलिए रहा नहीं जाता।"

सूरज का मन उदास हो गया। उसने सोचा कि अगर मैं गोली चला देता त क्या होता? बेचारा बिस्सू खाते-खाते मारा जाता! फिर सूरज ने बिस्सू से कहा, " -- है। अब सो जाओ। किसी से कुछ नहीं कहूँगा।"

बिस्सू गट-गट आवाज करता हुआ सेर भर पानी पी गया और उसके बाद चुपचाप अपनी चटाई पर गेंडुरी मार कर लेटा। दो-चार बार उसने कनखियों से सूरज को देख लिया।

सूरज ने बत्ती बुझा दी। वह आज ही रात को भागने की बात सोच रहा है। ऐसी जगह छिप कर रहना उसे खतरे से खाली नहीं लग रहा है। एक तो यह रेस्तोराँ है, फिर एकदम स्टेशन के पास। किसी भी समय खतरा हो सकता है। इसके अलावा सूरज का काम पूरा हो चुका है, अब उसे सिर्फ सही-सलामत लौटना है।

पौ फटने से पहले ही पुलिस वालों की पुकार से बिस्सू की नींद खुल गयी। आँखें मल कर उसने टट्टर वाले घेरे के पीछे देखा तो वहाँ बड़ी-बड़ी मूंछों वाला सिपाही खड़ा था और वह उसी को बुरी तरह घूर रहा था। बिस्सू के मन में चोर था। उसने सोचा कि कल तो भजन ठाकुर ने मुझे चुरा कर चॉप खाते समय पकड़ लिया था, शायद उसी के बारे में आज उन्होंने पुलिस वाले को बुलाया हो। बिस्सू ने पीछे वाले कमरे में भी झाँक कर देख लिया, लेकिन वहाँ मुन्ना बाबू नहीं था।

बिस्सू के मुँह से कोई आवाज नहीं निकली। वह रोनी सूरत बना कर घबड़ायी हुई आँखों से सिपाही की ओर देखता रहा। थोड़ी देर बाद एक जवान पुलिस अफसर ने बिस्सू को अपने पास बुलाया। बिस्सू समझ गया कि अब भागने का कोई रास्ता नहीं है। वह हाथ जोड़ कर पुलिस अफसर के सामने खड़ा हो गया।

पुलिस अफसर को बिस्सू की हालत देख कर हँसी आ गयी। उन्होंने पूछा, "तुम्हारे मालिक कहाँ हैं?"

"जी हुजूर, घर में हैं।"

"जाओ, उनको बुला लाओ।"

भजन को बुलाने के लिए बिस्सू दौड़ता हुआ चला गया।

जब तक भजन आया, तब तक स्टेशन के आसपास पुलिस वालों की भाग-दौड़ शुरू हो गयी थी। रात वाला नशा तो उतर चुका था, लेकिन उसकी खुमारी अब भी भजन के दिमाग पर छायी हुई है। वह मन ही मन कहने लगा — पाँच पैसे की पूजा चढ़ाऊँगा माँ काली, सूरज को सही सलामत सही जगह पहुँचा देना!

भजन को देख कर पुलिस अफसर ने कहा, "सर्च वारंट है।"

"किसके खिलाफ? मेरे खिलाफ या श्रीमती काफे के खिलाफ?"

पुलिस अफसर हँसे और बोले, "दोनों के खिलाफ। आपके यहाँ यू० पी० के किसी आदमी ने शेल्टर लिया था?"

भजन ने पुलिस अफसर के चेहरे की तरफ देखते हुए कहा, "जनाब क्या मुझसे मजाक करने लगे? नशा तो मैं अकेले ही करता हूँ?"

अब पुलिस अफसर थोड़ा गंभीर हो गये। एक सब-इंस्पेक्टर को तलाशी लेने

का निर्देश दे कर वे भजन की कुर्सी पर बैठने लगे तो भजन ने उनको तुरंत रोक दिया, "न न, उस कुर्सी पर नही, वह प्रोप्राइटर की कुर्सी है। बिस्सू, बाबू साहब के बैठने के लिए दूसरी कुर्सी दे।"

जवान पुलिस अफसर का चेहरा तमतमा गया। वे कुर्सी पर बैठे बिना तलाशी की कार्रवाई देखने लगे।

भजन ने फिर पुलिस अफसर से कहा, "देखिए, इस गरीब के कप-प्लेट न टूटने पाये।"

अब पुलिस अफसर ने अफसरी लहजे में कहा, "यह आपके कहने की जरूरत नही है।"

भजन बोला, "भैया, पुलिस से डर लगता है।"

सड़क पर भीड लग गयी। श्रीमती काफे की तलाशी ली जा रही है। लोग आश्चर्य से वही देखने और आपस में तरह-तरह की बातें करने लगे। उनमें कोचवान, सड़क पर झाड़ू लगाने वाले झाड़ूदार, स्टेशन के रेलवे कर्मचारी, कुली, आसपास के दुकानदार और राह-चलते लोग भी हैं। कोई कहने लगा कि यहाँ से दो बम निकले है। कोई कहने लगा कि लाट साहब भजन का बड़ा भाई नारायण जेल से भाग निकला है। कहने वाला यह भी कहने लगा कि भजन भी तो खुद वही है! खून का असर कैसे जायेगा? शराबी बन कर पडे रहने से क्या होता है?

भीड़ बढने लगी तो पुलिस वाले लोगों को हटाने लगे। कचौड़ी बेचने वाला किसी तरह वहाँ से हटना नही चाहता, आखिर ऐसा तमाशा देखने का मौका बार-बार कहाँ मिलता है? वह अपना सामान बेचने का बहाना बना कर चिल्लाने लगा — कचौड़ी! गरमागरम कचौड़ी!

श्रीमती काफे के अदर बिस्सू हाथ मे इकन्नी लिये खडा है। भजन ने कल उसे यह इकन्नी दी थी। कचौड़ी वाला ज्यों ही चिल्ला कर अपनी कचौडी का बखान करता, बिस्सू के मुँह में लार भर आती और वह इकन्नी को अपनी मुट्ठी मे मसलने लगता।

हीरेन स्टेशन की सीढी पर खड़ा है। वह रोज की तरह आज भी श्रीमती काफे की तरफ आ रहा था, लेकिन यहाँ पुलिस वालों की भीड देख कर स्टेशन की सीढ़ी पर जा कर खडा हो गया। पुलिस वालों के नजदीक जाने पर पता नही क्या हो जाय! राम के बदले रहीम को पकड़ने में पुलिस वालों को कितनी देर लगती है? इसलिए इस झमेले से दूर रहना ही हीरेन ने उचित समझा।

फिर भी हीरेन के मन मे बेचैनी है। वह बार-बार सडक की तरफ देख रहा है। उसे भजन का इंतजार है। भजन के अंदर हीरेन ने भारत की आत्मा का आविष्कार किया है। भजन रोज इस समय तक यहाँ आ जाता है। हीरेन भजन के बारे में सोचने लगा — भजन मे अंध विश्वास है, बुरे संस्कार हैं, फिर भी उसका हृदय निर्मल है और उस हृदय को संसार का कोई ओछापन छू नही सका। भजन की तरह और भी एक

है। वह युवती है। वह रोज तड़के इस सड़क पर झाड़ू लगाती है। वह अछूत है लेकिन कोई बुराई उसके मन को छू नहीं सकती। वह निरक्षर है, लेकिन उसके मा पर बुद्धि की चमक है। सवेरे की धूप की तरह उसकी हँसी निर्मल है। उसकी आँखें में हरेक के प्रति कृतज्ञता भरी रहती है। जब वह 'नमस्ते बाबू जी' कहती है, तब हीरेन को ऐसा लगता है कि पवित्र पूजा-मंडप से सुमधुर शंख ध्वनि आ रही है। आज वह भी नही दिखाई पड़ी।

रथीन और सुनिर्मल भीड़ में शामिल हैं। उनके चेहरे पर चिंता की लकीरें खिची हुई हैं। उनकी भी आँखों में बेचैनी है। सूरज सिंह के पास रिवाल्वर ही नहीं, जरूरी कागजात भी हैं। उनमें से एक भी कागज पुलिस के हाथ लगेगा तो नवीन गांगुली पकड़ा जायेगा और हथियारों का भेद भी खुलेगा।

श्रीमती काफे से थोड़ा दक्षिण की तरफ हट कर नाड़ू पंडित की गली है। उस गली का मतलब है बदनाम इलाका। उस गली में भी औरतों की भीड़ लगी है। आज जल्दी नींद खुल जाने के कारण सब की लाल-लाल आँखें धँसी हुई हैं। भीड़-भाड़ देख कर उन सब ने कुछ होने का अनुमान लगा लिया और वे भीड़ लगा कर खड़ी हो गयीं। तमाशा देखना उनका उद्देश्य नहीं है। लाट साहब भजन को वे महामानव समझती हैं। वे शरीर का व्यापार करती हैं, इसलिए पुलिस वालों से भी नहीं डरतीं। भजन के प्रति पड़ोसिन की सहानुभूति लिये वे जुटी हैं।

भजन सूरज के बारे में सोचने लगा — अगर वह छोकरा गंगा पार कर चुका है तो खतरे की कोई बात नहीं है। फिर तो वह जरूर निकल जायेगा। लेकिन वह गंगा पार कर सका [illegible] यही सोचने की बात है। कहीं वह पुलिस के घेरे में तो नहीं फँस गया?

भीड़ जुटी है। आखिर बिस्मू भी तो श्रीमती काफे का एक महत्त्वपूर्ण व्यक्ति है।

भजन ने बिस्मू को आवाज लगायी, "पहले सब साफ कर ले, उसके बाद चूल्हा जला।"

मालिक की आवाज सुन कर बिस्सू जल्दी-जल्दी दुकान पर आ गया।

बिस्सू की कहानी सुनने के लिए सड़क पर जो भीड़ जुटी थी, वह अपनी जगह जमी रही। सवेरे आने वाले गाहकों में से किसी ने श्रीमती काफे में घुसने की हिम्मत नहीं की। सब डरे हुए दूर खड़े रहे। उनमें स्टेशन के टिकट कलक्टर और गुड्स क्लर्क भी हैं। श्रीमती काफे में सबका माहवारी हिसाब है। महीने के आखिर में जेब खाली है, चाय के लिए मन ललच भी रहा है, लेकिन पुलिस के डर से कोई आगे बढ़ना नहीं चाहता।

प्लेटफार्म के काले शेड के पीछे से सूरज निकल रहा है। सुर्ख लाल सूरज। साफ लग रहा है कि वह फिरकी की तरह चक्कर काटता हुआ ऊपर उठ रहा है। हर दिशा में उसकी रोशनी छिटक रही। वह रोशनी श्रीमती काफे के दरवाजे पर और पत्थर की दीवार पर भी पड़ रही है।

उसी सूरज की तरफ देखते हुए भजन अपने मन में बड़बड़ाने लगा —

किरीटिनं गदिनं चक्रिनञ्च
तेजोराशिं सर्वतो दीप्तिमन्तम्।

फिर अचानक भजन चिल्ला उठा, "बम नहीं, पिस्तौल नहीं, सूरज को पकड़ने आया था। लेकिन वह तो बह रहा आसमान में।"

इतना कह कर भजन ने आसमान की तरफ उँगली से इशारा किया।

भीड़ में खड़े लोगों ने पूरब की ओर आसमान में देखा। लेकिन वहां क्या है? आश्चर्य से सब एक दूसरे की तरफ देखने लगे।

सुनिर्मल ने रथीन का कंधा दबाया। याने, सूरज भाग निकला है। हीरेन भी भजन का इशारा समझ गया। वह चुपचाप आ कर अपनी जगह पर बैठ गया। वह रोज यहीं बैठता है। लेकिन आज वह झोले से तकली और रुई निकालना भूल गया। उसका मन उदास होने लगा। उसने सोचा, वह तो नहीं आयी। पुलिस का झमेला देख कर शायद वह नहीं आयेगी।

उधर भजन के चेहरे पर परेशानी की काली छाया गहराने लगी। वह समझ गया कि अब कई दिन श्रीमती काफे में गाहकों का आना कम रहेगा। वह अपने ऊपर खीझने लगा। ऐसा होता रहेगा तो शायद दुकान बंद करनी पड़ेगी। लेकिन सिर्फ गाहकों को ले कर भी तो कोई जिंदा नहीं रह सकता। फिर भजन के जीवन से जो लोग जुड़े हुए हैं, अगर वे भजन को नहीं छोड़ते तो भजन भी कैसे उनको छोड़ सकता है? क्रांति में भजन का विश्वास नहीं है, यह तो मानना पड़ेगा; लेकिन इस देश में क्रांति के दीवानों के अलावा और है भी क्या? भैया, याने नारायण भैया भजन के लिए प्राणों से प्यारे हैं। सुदर्शन चक्रधारी नारायण। नरनारायण। उसी नारायण का चित्र भजन ने

श्रीमती काफे में टाँग रखा है। फिर उस नारायण के चेलों से भजन और कहाँ जाने के लिए कह सकता है ?

विस्सू ने चूल्हा सुलगा दिया।

भजन बाहर निकला।

बकुल माँ इंतजार कर रही हैं। वे जानना चाहती हैं कि क्या हुआ। इसलिए भजन पहले घर जायेगा, उसके बाद बाजार।

सड़क पर लगी भीड़ छँट चुकी है। सब अपने-अपने काम से जा चुके हैं। सिर्फ रेलगाड़ी के मुसाफिरों का आना-जाना लगा है। घोड़ागाड़ियों के कोचवानों का हो-हल्ला चालू है।

इतने में भारत की आत्मा आयी। हीरेन इसी को भारत की आत्मा कहता है। यह बीस-बाईस साल की पछांही लड़की है। पछांही याने पश्चिम की, बिहार या यू० पी० की लड़की। इसके साड़ी पहनने का अपना ढंग है। पेट के पास खोंसी साड़ी में चुनट पड़ी हुई है। इसका अँचरा बंगाली लड़कियों का सा सीधा नहीं है। हाँ, आज इसकी साड़ी साफ है। इसके गेहुँए रंग में अजीब चिकनाहट है। बाल रूखे हैं। कद मझोला। चेहरे पर भय है, फिर भी मुस्करा रही है। इसकी काली आँखों में वक्रता नहीं; भय, जिज्ञासा और क्षमा-याचना है। गले में ताबीज है। यह म्युनिसिपैलिटी की झाड़ूदारिन है, नाम रमिया। शायद रमा का बिगड़ा हुआ रूप हो।

हीरेन को याद आया कि साल भर पहले वह जेल से छूटा था और उस वक्त इसी समय यहाँ आ कर बैठा था। और इसी लड़की ने उससे भीख माँगी थी।

पुरानी बात हीरेन को याद आयी। उसने इसी लड़की की तरफ आँख उठा कर देखा था। चिथड़ों में एक लड़की खड़ी थी। लड़की का हाल भी चिथड़ों जैसा था। चिथड़ों से उसकी आबरू ढक नहीं रही थी। आँखों में कीचड़ भरा हुआ था। लेकिन उस कीचड़ में से शिशु की सरलता झाँक रही थी। पतले होंठों के पीछे गंदे दाँत दिखाई पड़ रहे थे। चेहरे पर भूख का खामोश रुदन था। रूखी त्वचा पर सफेद लकीरें खिची हुई थीं। शायद खुजलाने से बदन पर वे निशान पड़ गये थे। बाल सन जैसे उलझे हुए थे।

इसी लड़की की खुली छाती की तरफ निगाह जाते ही हीरेन की आँखें अपने आप झुक गयी थीं। हीरेन के मन में भले-बुरे का संस्कार था। उसका मन उस खुली छाती की बेबाकी बरदाश्त न कर सका था। जेल से लौटने के बाद यों ही उसका मन उदास था। उस लड़की की दशा देख कर अचानक उसका मन मसोस उठा था। उसे लगा था कि गांधी जी की भारत-कन्या सामने खड़ी है। उसी की तरह क्षुधातुर, निरक्षर और अंध विश्वासी। पूछने पर हीरेन को पता चला था कि वह बिहार की नट जाति की लड़की है। अपने पति के साथ यहाँ ईंट-भट्ठे में काम करने आयी थी। लेकिन पति चल बसा, इसलिए उसे भीख माँगनी पड़ रही है।

फिर हीरेन ने उस बेसहारा लड़की को म्युनिसिपैलिटी में नौकरी दिलायी थी

और गांधी जी का संदेश सुनाया था। हीरेन ने उसे साफ-सुथरा रहना सिखाया था। यह भी बताया था कि अस्पृश्यता अभिशाप है। उसी ने उसे तकली से सूत कातना सिखाया था।

हाँ, उस दिन की उस रमिया में परिवर्तन आया है। अब वह सीख गयी है कि कैसे साफ-सुथरा रहा जाता है। रोज सूत कात कर वह इसी समय श्रीमती काफे में आ कर हीरेन को दे जाती है। हीरेन उसे बताता है कि भारतवासी को क्या बनना पड़ेगा, उसका क्या भविष्य है।

हीरेन को भी रोज यहाँ बैठे रहने और रमिया से भेंट करने की आदत सी पड़ गयी है। अगर किसी दिन रमिया नही आती तो हीरेन को बेचैनी महसूस होने लगती है। उसके मन मे तरह-तरह की बुरी चिंताएँ आने लगती है।

रमिया मे सचमुच बड़ा परिवर्तन आया है। लेकिन उसे झाड़ूदारों की बस्ती मे रहना पड़ता है। इस बीच उस बस्ती के कई युवको ने उससे शादी करना चाहा। उसका इस तरह बिना मर्द के रहना बहुतों को बुरा लगा है। बहुतो ने इसे अनाचार माना है। यहाँ तक कि पचायत बुला कर उसे सजा देने की भी बात कही गयी है।

लेकिन रमिया के मन मे बार-बार यही बात आयी है कि क्या यही मेरी जिंदगी है? अगर यही है, तो वह कौन सी वस्तु है जिसने उसके हृदय को बुरी तरह जकड़ रखा है। रमिया खुद नही समझ पाती कि क्यो उसके उठने-बैठने मे, बोलने-बतियाने मे और मन के हर कोने मे संकोच ही संकोच है? कभी कभी उसे अपना हर काम अभिनय जैसा लगता है। हो सकता है कि किसी हद तक परोपकारी हीरेन की इज्जत का ख्याल कर वह अपने मन मे संकोच का अनुभव करती है। फिर भी किसी-किसी दिन वह निःसंकोच हो कर ताड़ी पी लेती है। फिर उस दिन झाड़ूदारों की बस्ती में हो-हल्ला मचने लगता है और रमिया बस्ती के नौजवानों के साथ नाचने-गाने लगती है। उस दिन रुई और तकली पड़ी रह जाती है, सूत कातना धरा रह जाता है और हीरेन की दी हुई हिंदी पहली किताब के पन्ने हवा मे फड़फड़ाने लगते हैं। फिर रमिया एक-दो दिन श्रीमती काफे मे नही आती।

ऐसा होने पर हीरेन झाड़ूदारो की बस्ती मे जाता है। सारा मामला उसकी समझ में आता है। लेकिन वह गुस्सा नहीं करता। उसका हृदय मसोसने लगता है। उसका मन दुखी होता है। वह देखता है कि उसके अपने हाथों से बनायी इमारत जबर्दस्त भूकंप से लड़खड़ाने लगी है। वह डरता है कि कहीं वह इमारत भड़भड़ा कर गिर न जाय।

रमिया की बदौलत हीरेन झाड़ूदारों की इस बस्ती से परिचित हुआ है। कभी-कभी वह झाड़ूदारों की बस्ती में सभा करता है और सब को शराब न पीने के लिए समझाता है। जब वह बस्ती मे होता है, तब लोग उसे घेरे रहते हैं। इससे पता चलता है कि बस्ती के लोग उसे चाहते हैं और गांधी जी का चेला समझ कर उसका करते हैं।

आजकल रमिया में नयी चंचलता दिखाई पड़ने लगी है। इस दुनिया में वह सबको धोखा दे सकती है, लेकिन हीरेन की आँखों में धूल नहीं झोंक सकती। आज रमिया के चेहरे पर प्रसन्नता है, उसके होंठों पर हँसी है और उसकी बातों में नया अंदाज है। हीरेन इस हँसी और इस अंदाज का नाम नहीं जानता। फिर भी वह समझता है कि रमिया की हालत उस अबोध शिशु की तरह है जो अपनी ही दुनिया में खुश रहता है। लेकिन वह डरता भी है कि क्या रमिया को उससे नवीन जीवन-दर्शन के अलावा और कुछ मिला है ? हीरेन के मन में यह भय सर्वनाश के संकेत की तरह भयानक रूप लेता है। क्या रमिया की यह प्रसन्नता, यह आकुलता इसी लिए है ? एक क्षण के लिए हीरेन का मन कमजोर पड़ने लगता है। उसी दुर्बलता के क्षण में वह मन ही मन कहता है —

इन्द्रियाणां हि चरतां यन्मोनहनु विधीयते।
तदस्य हरति प्रज्ञां वायुर्नावमिवाम्भसि॥

लेकिन दूसरे ही क्षण हीरेन मन ही मन चीत्कार कर उठा है — नहीं ! नहीं ! किसी तरह की इंद्रियासक्ति मेरे हृदय को तूफान में फँसी नाव की तरह विपथगामी नहीं कर सकती। यह तो मेरा आदर्श है, कर्तव्य है। मैं उसे कैसे पददलित होते देख सकता हूँ ?

रमिया ने आँखों में भय लिये श्रीमती काफे के अंदर झाँका और कहा, "नमस्ते बाबू जी।"

चेहरे पर गंभीरता लिये हीरेन मुस्कराया। उसकी मुस्कराहट बड़ी करुण लगी। उसने भी जवाब दिया, "नमस्ते। क्या तुम्हारी ड्यूटी खतम हो चुकी है ? क्या हाथ-मुँह धो कर आयी हो ?"

रमिया ने घबड़ा कर हिंदी-बंगला मिली-जुली भाषा में कहा, "नहीं बाबू जी। पुलिस वालों को देख कर बड़ा डर लगा। मेरा तो दिल रो उठा। सोचा कि हमारे बाबू जी को पुलिस वाले पकड़ ले जायेंगे।"

यह कहते-कहते रमिया की आँखें भर आयीं। फिर भी उसके होंठों पर भय-हीन मुस्कराहट खिल गयी।

हीरेन के मन के कोने में मधुर रागिनी गूंज उठी। उसके मन में मिठास भरने लगी। रमिया की आँखों में आँसू देख कर उसकी आँखों में नयी रोशनी चमक उठी। रमिया की बेचैनी और घबड़ाहट भरी बातें हीरेन के हृदय में मधुर रस घोलने लगीं। हीरेन ने मन ही मन सोचा कि मेरी आशंका निर्मूल है। रमिया मेरे ही आदर्श पर बनी है। हीरेन ने कहा, "पुलिस और किसी को खोजने आयी थी। लेकिन मुझे भी, आज न सही, किसी दिन तो जाना पड़ेगा।"

रमिया की आँखों में आँसू की बूंदें चमकने लगीं। उसने कहा, "यह तो सच है बाबू जी, मगर मेरा दिल तो फट जायेगा।"

मगर मेरा दिल तो फट जायेगा ! हीरेन ने इस वाक्य का जो भी मतलब लगाया

हो, उसके दिल में खून का दौरा बढ़ गया। वह राजनीतिक कार्यकर्ता है। [illegible] प्रकार के अनुभव होते रहते हैं, लेकिन ऐसा अनुभव कभी नहीं हुआ। [illegible] से वाक्य का इतना विचित्र अभिप्राय हो सकता है, इसका उसे पता ही नहीं था। [illegible] आँसू की दो बूँदें! भले ही रमिया छोटी जाति की हो, भले ही वह [illegible], लेकिन वह मेरी ही शिष्या है। हाँ, मेरी ही शिष्या है। मैंने उसे गांधी जी की [illegible] बतायी है। हीरेन सोचता रहा। वह यह भी सोचता रहा कि मनुष्य कितना [illegible], लेकिन वह कितनी छोटी-सी चीज के लिए कंगाल बनता है।

लेकिन यहीं रुका नहीं जा सकता। रमिया की काली आँखों की गहराई में [illegible] हीरेन ने एक साथ करुणा के अश्रु और क्रोध की अग्निशिखा को देख लिया। [illegible] नवभारत की नायिका है। मूर्तिकार अपने हाथों से मिट्टी की जो मूर्ति बनाता है, [illegible] वह उसी के पाँवों में पुष्पांजलि अर्पित करता है। हीरेन अपने मानस-नेत्रों के [illegible] देखने लगा कि गांधी जी की बगल में रमिया खड़ी है। रमिया युगेश्वरी बन गयी है।

श्रीमती काफे की घड़ी ने टन-टन कर नौ बजाये। किसी किशोरी की हँसी की गूँज की तरह वह आवाज मधुर है। हीरेन चौंक पड़ा। उसने हृदयाकाश की राम खींच ली। उसने आँखें उठायीं तो देखा कि रमिया आतुर आँखों से उसी को देखे जा रही है।

रमिया! हीरेन फिर चौंका। रमिया के बदन से बड़ा अच्छा सुगन्ध आ रही है। हीरेन ने देखा कि रमिया के जूड़े में फूलों की काली माला बाँधी हुई है। उसके कानों में चाँदी के नये झुमके हैं। हीरेन समझ नहीं पाया कि रमिया की देह की हर रेखा इतनी जोरदार और ऐसी जानदार कैसे हो गयी!

"बाबू जी, आपकी तबीयत खराब है?"

हीरेन बोला, "नहीं।"

रमिया चुपचाप खड़ी रही।

अब हीरेन ने पूछा, "सूत लायी हो?"

सिर झुका कर संकोच के साथ रमिया मुस्करायी। फिर बोली, "[illegible] मिली बाबू जी।"

यह जवाब सुनते ही हीरेन के चेहरे पर गंभीरता का [illegible]। [illegible] उसने पूछा, "क्यों?"

शरम और संकोच के कारण रमिया थोड़ी देर चुप रही। [illegible] मान लेने वाली मुस्कराहट के साथ उसने कहा, "[illegible]।"

हीरेन ने घबरा कर पूछा, "[illegible]?"

मानो नट जाति की कोई अपरिचित उच्छृङ्खल युवती खड़ी है। वह युवती आदिम हँसी हँस रही है। वही आदिम हँसी जिसकी गूँज से आसमान चौंक पड़ता है, हवा चलते-चलते बिफरने लगती है और मिट्टी का लोंदा भी बोल पड़ता है।

घबड़ा कर हीरेन ने कहा, "रमिया !"

"बाबू जी !"

"तुम पर मुझे बड़ा भरोसा है। बड़ी उम्मीद है तुमसे। सिर्फ मुझको नहीं, पूरी बस्ती को, इस पूरे कस्बे को और इस देश को। तुम्हारे जितने अपने हैं, सब को तुमसे उम्मीद है कि तुम कुछ करके दिखाओगी। क्या तुम सब की उस उम्मीद को गलत साबित करना चाहती हो ?"

रमिया के होंठों से मुस्कराहट गायब हो गयी। अब उसकी आँखों से लज्जा टपकने लगी, विस्मय उमड़ने लगा। वह खामोश खड़ी हीरेन को देखती रही।

हीरेन कहता रहा, "तुम झाड़ूदारों की बस्ती में रह सकती हो, लेकिन तुम्हारा रास्ता अलग है। तुम गंगा हो। तुम्हें नाले-पनाले की सारी गंदगी को अपने साथ ले कर समुद्र से जा मिलना है। लेकिन तुम गंगा हो कर सँकरे नाले की तरह बहने लगी हो। वह तुम्हारा रास्ता नहीं है। वह तुम्हारा भाग्य नहीं है। तुम तो उन नालों को रास्ता बताओगी।"

अबूझ विस्मय से रमिया की भौंहें टेढ़ी हो गयीं। उसने पूछा, "सच बाबू जी ?"

भावावेश के कारण हीरेन का स्वर लरज गया। उसने कहा, "जरूर ! मैं यही तो देखना चाहता हूँ कि तुम सबके आगे खड़ी हो। तुम इस देश को रास्ता बता रही हो।"

बाढ़ के समय बाँध टूट जाने पर जलधारा जिस तेजी से बहने लगती है, उसी तेजी से हीरेन के मुंह से बातें निकलती गयीं। रमिया चुपचाप खड़ी रही। वह इतना समझ गयी कि मैंने अपनी करनी से बाबू जी को तकलीफ पहुँचायी है। मेरे काम से बाबू जी दुखी हैं। लज्जा और पश्चात्ताप के भार से रमिया दबने लगी। हीरेन की एक भी बात वह समझ नहीं सकी, फिर भी मानो बहुत कुछ समझ गयी। वह चुपचाप खड़ी हो कर हीरेन की एक-एक बात ध्यान से सुनती रही।

थोड़ी देर बाद रमिया ने कहा, "बाबू जी, मुझसे गलती हो गयी है। मैंने आपका दिल दुखाया है। अब ऐसा कभी नहीं होगा।"

अब हीरेन ने कुछ नहीं कहा। उसने सिर्फ रमिया की तरफ देखा।

तभी भजन आता दिखाई पड़ा। वह बाजार से लौट रहा है। उसने बाजार जा कर क्या किया, यह तो पता लगाना मुश्किल है। लेकिन यह तो पता चल गया कि उसने हौली जा कर शराब पी है। वह लड़खड़ा नहीं रहा है, लेकिन अपनी धुन में हँसने लगा है। उसका चेहरा आग की लपट जैसा लाल है और हँसी भी विचित्र। हीरेन समझ नहीं सका कि यह हँसी सुख की है या दुख की।

भजन से रमिया बहुत डरती है। लेकिन इस बाबू ने कभी उसका अपमान नहीं किया, कभी उसे नहीं दुतकारा और न कभी उसे झाड़ूदारिन समझ कर भगा ही दिया। रमिया ने सोचा कि यह बाबू शराबी है तो क्या हुआ, दिलदार तो है। कभी-कभी रमिया को लगता है कि यह बाबू अल्हड़ जवान झाड़ूदार है। झाड़ूदार की तरह सीधा सादा। लेकिन यह बाबू गांधी जी का भक्त नहीं है। यह तो बात-बात पर हंसता है और रमिया को देखते ही पूछता है — क्यों री लडकी, क्या खबर है ? के गज आगे बढ़ सकी है ?

याने, कितना गज सूत काता है ?

कभी भजन बाबू कहता है — तू झाड़ूदारिन रमिया है या रजकी रामी, समझ में नहीं आता।

फिर थोड़ा रुक कर भजन कहता है — रजकी का मतलब नहीं समझ सकी न, रजकी का मतलब है धोबिन। धोबिन समझ रही है न ? जो कपड़ा धोती है।

थोड़ा रुक कर भजन बाबू फिर कहता है — रामी धोबिन का किस्सा सुनेगी ? वह थी तो धोबिन, जैसा कि लोग कहते हैं और किताबों में है, लेकिन उसने चंडीदास को चंडीदास बनाया था। तू तो यह भी नहीं जानती कि यह चंडीदास हैं कौन ? अरी, वे बहुत बड़े साधक और भक्त कवि थे। लोग आज भी उनके पद गाते हैं। रामी की वजह से वे अमर हो गये हैं। रामी भी कोई मामूली धोबिन नहीं, बल्कि बहुत बड़ी साधिका थी।

भजन का भाषण सुनते-सुनते हीरेन ऊब जाता। रामी और चंडीदास के अलौकिक प्रेम की ओर इशारा भी उसे अच्छा नहीं लगता। वह भजन से कहता है — बस करो न ! अगर बना नहीं सकते तो बिगाड़ क्यों रहे हो ? कोई चीज गढ़ोगे तो नहीं, बस तोड़ोगे।

हीरेन की बातों का बुरा न मान कर भजन दिल खोल कर हँसता है। उसका हँसना देख कर रमिया को बस जवान झाड़ूदार याद आता है। भजन उसी तरह हँसता रहता है और हीरेन से कहता है — मां की कसम भैया, अपना राम तो इस जिंदगी में कुछ भी नहीं बना सका। तू सब बना, मैं देखूंगा।

फिर भजन को न जाने क्या सूझता है, वह रमा के आगे हाथ जोड़ कर कहता है — झाड़ूदारिन रमिया या रजकी रामी, मुझे पता नहीं तू क्या है। इस अबोध संतान की गलती माफ़ कर देना मां। दो पीस पावरोटी खा ले और जाते समय दुकान के सामने जरा झाड़ू लगा देना।

रमिया ने बहुत दिन इस दुकान में झाड़ू लगाया है और कुछ न कुछ खाया है। न खाने पर भजन बाबू दुखी होगा, यही सोच कर रमिया ने खाया है। नहीं तो बाबू लोगों के होटल में कुछ खाने में उसे बड़ा डर लगता है। एक झाड़ूदारिन को लोग दुतकारते हैं। रमिया उसी की आदी हो गयी है। इसलिए भजन का व्यवहार वह समझ नहीं पाती। फिर, भजन के व्यवहार को इस दुनिया में कौन समझ पाता है ?

भजन को आते देख कर रमिया ने हीरेन से कहा, "मैं कल आऊँगी बाबू जी, अभी जाऊँ।"

हीरेन ने भी कहा, "ठीक है, अभी जाओ।"

जाते-जाते रमिया रुक गयी। उसने दांतों से निचला होंठ दबा कर मुस्कराते हुए न जाने क्या सोच लिया, फिर जल्दी-जल्दी कह डाला, "बाबू जी, आपने एक दिन कहा था कि झाड़ूदारों की बस्ती में खाना खाऊँगा। लेकिन वहाँ सब लोग कह रहे हैं कि उससे हमें पाप लगेगा।"

यह सुन कर हीरेन के चेहरे पर मुस्कराहट खिल गयी। उसने कहा, "नहीं रमिया, ऐसी बात नहीं है। जो साफ-सुथरा और नेक रहता है, वह छोटी जाति का नहीं होता। छोटी जाति का वह है जो गंदा है, बुरा है। इसलिए उस बस्ती का कोई अछूत नहीं है। यही सब को बताने के लिए मैं किसी दिन तुम्हारी बस्ती में खाना खाऊँगा। फिर वह सबके साथ मिल कर पिकनिक हो जायेगा। उसमें घबड़ाने की क्या बात है?"

संकोच के साथ रमिया मुस्करायी और मुस्करा कर जाने लगी। उसके सिर पर घूंघट नहीं है। कंधे पर से अँचरा सरक चुका है। चाल में अजीब मस्ती है। हीरेन एकटक उसकी तरफ देखता रहा। मेहनत-मशक्कत के कारण रमिया के छरहरे बदन में कड़ापन है, कसाव है। वह चलती चली जा रही है। हीरेन को लगा कि कोई जंगली बेल हवा के संग लहरा रही है। अचानक हीरेन ने लम्बी सांस छोड़ी।

श्रीमती काफे के बरामदे में पाँव रखते ही भजन ने कविता-पाठ करने के ढंग से कहा, "फागुन ने मेरी मन की मौज छीन ली। वाह! वाह! इसके बाद क्या है? दूसरी लाइन ही गड़बड़ा गयी।"

फिर भजन ने जोर से हांक लगायी, "बिस्सू!"

हीरेन झटपट अंदर की तरफ एक कुर्सी पर जा कर बैठ गया। वह झोले से रुई और तकली निकाल कर सूत कातने लगा। भजन को देख कर वह चिढ़ गया। उसके माथे पर पड़ी शिकन उसकी चिढ़ को जाहिर करने लगी।

उधर बिस्सू नहीं आया और न उसने जवाब ही दिया।

भजन ने कहा, "हरामजादा गया किधर?"

इतना कह कर भजन खुद अंदर वाले कमरे की तरफ बढ़ा।

"आज मैं उस राक्षस के बच्चे को मार डालूंगा!"

यह कहते हुए भजन उस कमरे के सामने पहुँचा। फिर भी बिस्सू की आहट नहीं मिली।

मालिक की गैर-मौजूदगी का फायदा उठा कर बिस्सू तो अपना काम करने लगा था। उसने चार-छः आलू उबाल लिये थे और अब वह उनके छिलके उतारने में जुटा था। भजन की आवाज पाते ही वह उनको छिपाने लगा, लेकिन पकड़ा गया।

भजन ने बिस्सू की गर्दन पकड़ ली। इस हालत में बिस्सू सचमुच एक राक्षस

का बच्चा लगने लगा। उसके गंदे दांत दिखाई पड़ने लगे। उसकी छोटी-छोटी आंखों में डर समा गया। देखने वालों को लगा कि एक बड़े राक्षस ने किसी राक्षस के बच्चे की गर्दन पकड़ रखी है।

बिस्सू के गले से 'हूं-हूं' की आवाज निकलने लगी।

भजन ने पूछा, "क्या कर रहा था ?"

बिस्सू ने मिमियाती आवाज में कहा, "चॉप के लिए आलू उबाल रहा था।"

"चॉप के लिए आलू उबाल रहा था तो छिपा क्यों रहा था ?"

थोड़ी देर के लिए खामोशी छा गयी। फिर बिस्सू फुक्का मार कर रो पड़ा। उसने भजन के पाँवों से लिपट कर कहा, "माँ की कसम मालिक, बड़ी तेज भूख लगी थी। मुझे नौकरी से निकाल दीजिए, लेकिन मारिए मत।"

"नौकरी से निकाल दूंगा ?"

भजन ने ऐसे कहा कि मानो उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा। फिर वह जोर-जोर से हँसने लगा। हँसना बंद कर वह बोला, "अब मैं तुझसे हार गया। तू चुरा कर खाना बंद नहीं करेगा, यही तो साफ-साफ कह रहा है न ? अब इस पर मैं क्या कर सकता हूं ? आलू उबाल लिया है, अब नमक ले, प्याज ले, पावरोटी काट ले और आराम से खा। मैं तुझे कभी नौकरी से नहीं निकालूंगा, घाटा होगा तो दुकान बंद कर दूंगा।"

यह कह कर भजन बाहर वाले कमरे में आ गया। वहाँ अपनी कुर्सी पर बैठ कर उसने हीरेन से कहा, "तुम तो अपनी राजनीति कर रहे थे और वह कमबख्त उधर मेरा दिवाला निकालने में लगा था। समझ गये हीरेन ?"

फिर भजन ने भारी आवाज में हीरेन का नाम ले कर पुकारा। हड़बड़ी में हीरेन ने थोड़ा मोटा सूत तकली में लपेट लिया। उसका ध्यान बँट गया था। पता नहीं, भजन अब क्या कहेगा! हीरेन ने पूछा, "क्या कह रहे हो ?"

"कह रहा हूँ कि खुल जा सिम-सिम का क्या माने है ? बता सकते हो ?"

हीरेन डर गया। उसके चेहरे से डर झलकने लगा। पता नहीं, शराबी भजन क्या कहना चाहता है ? हीरेन ने पूछा, "क्या ?"

हँस कर भजन ने कहा, "क्या का क्या मतलब ? बता नहीं पाये न ? खुल जा सिम-सिम का मतलब नहीं जानते ? अलादीन का किस्सा नहीं जानते ? खजाने का दरवाजा, खुल जा! सोना-चाँदी और हीरे-जवाहरात मैं समेट लूं!"

हीरेन इस पहेली का मतलब नहीं समझ सका। वह भजन की तरफ देखता रह गया।

भजन बोला, "आज दुकान पर पुलिस आयी थी, यह तो पता है न ? हमारे गाहक भी तो सब भारत माता के सपूत हैं! पुलिस देखते ही किसी ने इधर का रुख नहीं किया। समझ गये न, दुकान का खजाना खुल गया। तुम तो खैर, रमिया देवी

को भारत की नेत्री बनाने की बात सोच रहे हो। तुमको दुकान से या खजाने से क्या सरोकार ?"

अब मौका पा कर हीरेन ने कहा, "लेकिन गलती तो तुम्हारी है। तुमने उसे क्यों अपने यहाँ ठहराया था ? पिस्तौल वालों का क्या भरोसा ?"

भजन समझ गया कि हीरेन के दिमाग पर हिंसा-अहिंसा का झगड़ा हावी है। सूरज जैसे लोगों का दल हीरेन जैसे लोगों के दल से अलग है। हीरेन जैसे लोग दूसरे दल के दोष निकालने में सब से आगे रहते हैं। इसलिए भजन ने कहा, "अगर वैसी बात करते हो तो सुन लो भइया, तुम भी नहीं बचोगे। लेकिन इस संसार में कौन सही है और कौन गलत, यह बताना मुश्किल है। फिर यह किसी को पता भी नहीं है, भले ही लोग पता होने का ढोंग करते हों।"

इतना कह कर भजन ने टेबुल पर सिर रख दिया। हीरेन भी अनमना हो कर सामने स्टेशन की तरफ देखता रहा। अचानक उसका मन चिहुँक पड़ा। स्टेशन के चबूतरे पर कोई लड़की झाड़ू लगा रही है। लेकिन वह रमिया नहीं, कोई और है। हीरेन का मन तकली, सूत, श्रीमती काफे वगैरह भूल कर न जाने कहाँ खो गया।

दोपहर हो चली है। आजकल रात में हलकी ठंड पड़ती है, लेकिन दोपहर में धूप मानों चिलचिलाने लगती है। इस समय धूप तेज होती जा रही है और माहौल ऊँघने लगा है। रेलगाड़ियों का आना-जाना कम हो गया है। स्टेशन के चबूतरे पर कुली और कुछ मुसाफिर सो रहे हैं। सबके मुँह पर कपड़ा पड़ा है। घोड़ागाड़ी एक भी नहीं है। घोड़ों के लिए जो चरही बनी है, वह भर कर पानी बहने लगा है। उसके पास एक भारी-भरकम सांड़ खड़ा है। देखने से लगता है कि वह छुट्टा है। शायद वह यही सोच रहा है कि घोड़ों के लिए बनी चरही से पानी पीना ठीक होगा या नहीं। चौपाया होने पर भी तो पशु और पशु में फर्क है। दुपाया जानवर भी तो समानता की बात करते हुए कितना भेदभाव बरतता है।

आसमान के दक्षिण-पश्चिम कोने में रुई से गाले जैसे सफेद बादल जुटने लगे हैं। मानो कोई जादूगर अदृश्य लोक से फूंक मार कर उन बादलों को आसमान में भेज रहा है। सड़क पर खड़ा एक पागल उन बादलों की तरफ देख कर न जाने क्या धीरे-धीरे कहते हुए मुस्करा रहा है। फिर बिगड़ कर वह आसमान में किसी को डाँटने लगा। भैंसासुर जैसी शक्ल, आबनूसी काला रंग और सिर मुड़ाया हुआ। बारहों महीने वह सिर मुड़ाये रहता है। गले में तुलसी की माला पड़ी है। कभी-कभी वह पागलपन छोड़ कर कुली का काम करता है। उस समय मुसाफिरों को खूब परेशान होना पड़ता है। लोगों ने उसका नाम रखा है कुट्टी पगला।

भजन जब शराब पी कर मदहोश हो जाता है, तब कुट्टी पगला जोर-जोर से हँसता है और कहता है — राजा बेटा पगला गया है !

इस समय कुट्टी पगला आसमान की तरफ देख कर न जाने क्या बड़बड़ा रहा है। थोड़ी दूर पर पीपल के नीचे बैठा मोची उसे देख रहा है। मोची के पास कोई काम

नहीं है। कीड़े को देख कर छिपकली जैसे जबान निकाल कर होंठ चाटती है, वैसे वह मोची भी अपने होंठ चाट रहा है और आश्चर्य से कुट्टी पगले की तरफ देख रहा है। कुट्टी का पागलपन देख कर उसे हँसी नहीं आती। वह सोचता है कि कुट्टी जरूर किसी सयाने गुरु का चेला है, नहीं तो ऊपर वाले से कैसे बात कर सकता है!

सड़क खाली होने लगी है। दोपहर की खामोशी माहौल में भर चुकी है।

हीरेन सूत नहीं कात रहा है, लेकिन उसे घर जाने को भी मन नहीं कर रहा है। घर में उसका मन नहीं लगता। उसके घर में किसी बात की कमी नहीं है। भरा-पूरा परिवार। सब को पता है कि नियोगी बाबू के पास अकूत पैसा है। नहीं तो घर-बार छोड़कर हीरेन के लिए इस तरह देश का काम करना संभव न होता। लेकिन उस भरे-पूरे घर में आये दिन कलह लगा रहता है। भावजों की ठसक और गहने के लिए लाग-डाट हीरेन बरदाश्त नहीं कर पाता। उसके मकान का अंदर का हिस्सा बहुत बड़ा है। वहाँ कई जोड़ी सुंदर आँखें हैं और कई ऐसी आंखों वालियों से हीरेन का हँसी-मजाक का रिश्ता भी है। उस हँसी-मजाक में कोई दुराव-छिपाव नहीं रहता। हँसी-मजाक के बहाने डोरे डालने की भी कोशिशें होती हैं। लेकिन हीरेन को वह सब कभी पसंद नहीं आया और न उससे उसका मन रीझा है। बल्कि उस वातावरण से उसे घृणा होती है। अगर उसके खाना खाते समय औरतें वहाँ भीड़ करती हैं तो उससे खाया नहीं जाता।

इसी लिए हीरेन को अपने घर की जवान औरतों के मुकाबले में रमिया बहुत अच्छी लगती है। रमिया के पास भले ही कुछ न हो, लेकिन उसका दिल बहुत बड़ा है। हीरेन मन ही मन में कहता है कि स्त्रियों की सुंदरता उनके रूप में नहीं, गुण में है। सुंदर मुखड़ा नहीं, सुंदर चरित्र ही मन को भाता है। नहीं तो रमिया क्यों हीरेन को इतनी अच्छी लगती? रमिया की शक्ल-सूरत तो नियोगी परिवार की किसी नौकरानी से भी अच्छी नहीं है। लेकिन उसी रमिया में हीरेन ने भारत की सतायी हुई आत्मा का आविष्कार किया है। यहाँ तो आंखों से देखने का सवाल नहीं, मन से अनुभव करने की बात है। रमिया में हीरेन का आदर्श साकार हो सका है। हीरेन ने रमिया को सही रास्ते पर ले चलने का प्रण किया है। इसलिए हीरेन का मन घूम-फिर कर एक ही बात सोच रहा है। नहीं, रुकने से काम नहीं चलेगा। हीरेन को अपने रास्ते पर आगे बढ़ना है।

हीरेन ने कृपाल के बारे में सोचा। कृपाल शायद जल्दी ही शादी कर लेगा। यहाँ तक कि वह चोरी-छिपे सिगरेट भी पीने लगा है। अगर उसने देश की सेवा को दूसरी तरह का काम समझ लिया है तो उसे अपने साथ रखना हीरेन के लिए संभव नहीं है। हीरेन तो अपने भूखे-नंगे देशवासियों की सेवा में अपना जीवन लगा देना चाहता है। उसका सब कुछ दरिद्र नारायण के चरणों में अर्पित है।

श्रीमती काफे का रसोईघर पुआल से छाया खपच्चियों का छोटा-सा कमरा है। दिन में भी वहाँ हलका अँधेरा रहता है। उसी के पीछे नाली है। सब्जियों के छि

वगैरह फेंके जाने से उसमें कतवार का ढेर जमा हो गया है। वहाँ हर वक्त मक्खियाँ भिनभिनाती हैं और कीड़े बिलबिलाते हैं। उसी रसोईघर में विस्सू भट्ठी के पास डरावने भूत की तरह खड़ा है।

बिस्सू के हाथ में उबले हुए आलू अब भी हैं। पसीने से तर गंदे हाथ की गंदगी उन आलुओं में लगी है। उसके होंठों के कोने में लार चमक रही है। थोड़ी देर वह उसी तरह खड़ा रहा। उसके चेहरे पर कोई भाव नहीं है। फिर मानो वह अपने को रोक न सका। वह जल्दी-जल्दी उन आलुओं को खाने लगा। मानो वह एक-एक आलू निगलता गया। फिर उसकी आँखें भर आयीं। शायद उसे भी इसका एहसास न हुआ, लेकिन उसकी आँखों में आँसू उमड़ आये। होंठों को सिकोड़ कर उसने अपना छछूंदर का सा मुंह ऊपर किया। वह रो रहा है या खाना बेमजा हो जाने के अफसोस से उसके होंठ काँप रहे हैं, समझ में नहीं आया।

इस हालत में थोड़ी देर खड़े रहने के बाद बिस्सू अचानक सीधे सामने वाले कमरे में चला गया। भजन वहीं बैठा है। विस्सू ने भजन के पाँव पकड़ लिये और कहा, "मालिक !"

भजन इस समय शराब के नशे में नहीं है। वह न जाने क्या सोच रहा है। उसकी आँखें बंद हैं। उसी हालत में उसने पूछा, "फिर कुछ खाया है ?"

"नहीं।"

विस्सू की आवाज अस्वाभाविक रूप से भारी सुनाई पड़ी।

"फिर ?"

"दुकान मत बंद कीजिए मालिक, मुझको भगा दीजिए।"

भजन ने आश्चर्य से बिस्सू की तरफ देखा। हीरेन को भी बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने भी विस्सू की तरफ देखा। हीरेन की नाक सिकुड़ गयी और उसके चेहरे पर शिकन उभड़ आयी। खीझ और नफरत से भरी शिकन।

शायद रोने के कारण विस्सू का गला भर आया। वह उसी तरह भारी आवाज में कहने लगा, "मालिक, आपका बिस्सू नहीं मरेगा। अगर आप पूछें, तो सुनिए। उस समय मैं दूध पीता बच्चा था। न जाने क्या बात हो गयी थी, माँ मुझे खुले आँगन में छोड़ कर दो दिन और दो रात के लिए कहीं चली गयी थी। माँ की कसम मालिक, सियार-कुत्ते ने भी मुझे नहीं खाया। भाई बहन पैदा हो कर मर जाते थे, इसलिए साला बाप मुझे पीटता था और कहता था कि यही सब को खा जाता है। बचपन से मेरी इसी तरह खाने की आदत है। माँ की कसम मालिक, सच कह रहा हूँ। फिर घर बाबू के घर काम करने लगा था तो इसी आदत के कारण उन लोगों ने मेरी जीभ काट लेने की धमकी दी थी। इसी आदत के मारे मेरी शादी नहीं हुई। इसलिए मालिक, मुझे भगा दीजिए। मैं मर नहीं जाऊँगा।"

हीरेन ने मुंह फेर लिया। न जाने क्यों विस्सू का गिड़गिड़ाना उसे बहुत बुरा लगा। उसे लगा कि कोई बदसूरत प्रेत नकिया कर रो रहा है। रुई और तकली का

झोला सँभाल कर वह उठा।

बिस्सू की बातों का भजन कोई जवाब न दे सका। उसे कभी इस बात की उम्मीद नहीं थी कि बिस्सू कभी इस तरह सब कुछ सही-सही बता कर अपनी गलती मान लेगा। वह अपने को उघाड़ कर रख देगा। उसकी बातें सुनते-सुनते भजन को भी न जाने कैसा डर लगने लगा। मानो उसे परोसी गयी थाली दिखाई पड़ने लगी। उस थाली में भात, सब्जी, मछली और न जाने क्या-क्या है। उसे भी भूख लग आयी। जैसे ही उसने खाना चाहा, किसी ने थाली हटा ली। उसे भी लगा कि शायद भूख के मारे वह भी बिस्सू की तरह मुहल्ले-टोले में डोलता फिरेगा। उसे याद आया कि वह दो बच्चों का बाप बन चुका है। अब तीसरा बच्चा भी होगा। शायद वे बच्चे भी कभी दारुण भूख के मारे बिस्सू की तरह इनसान से हैवान बन जायेंगे। फिर उस समय क्या होगा? जूही का क्या होगा? जूही उन बच्चों की माँ है। कोमल कठोर धरती से बढ़ कर जूही में सहनशीलता है। लेकिन उसकी सहनशीलता से क्या होगा? क्या इस धरती पर कभी अकाल नहीं आयेगा?

दूसरे ही क्षण भजन को लगा कि मैं यह क्या सोचने लगा हूँ! मैं तो भजन हूँ। लाट साहब भजन! मेरे लड़के बिस्सू जैसे बनेंगे, यह कैसी बात मैं सोचने लगा हूँ? भजन ने बिस्सू की तरफ देखा। बिस्सू उसी तरह मुँह बाये अपने मालिक को देखे जा रहा है।

भजन ने कहा, "तुझे नहीं भगाऊँगा बिस्सू। अगर इस दुकान से तुझे इतना प्यार है तो तू इसे बचा कर तबीयत भर खाना। तेरा जो मन चाहे खाना, घबड़ाना मत। लाट साहब भजन के नसीब में मुनाफा नहीं लिखा है, लेकिन वह जिंदा रहना चाहता है, सिर्फ जिंदा रहना।"

इतना कह कर भजन उठा। न जाने क्यों उसे अपने मन में विचित्र जलन महसूस होने लगी। मानो कोई जलती हुई मशाल ले कर उसे जला मारने के लिए उसका पीछा कर रहा है। वह बड़ी तेजी से कमरे से निकला।

उस दिन सचमुच पास-पड़ोस के बहुत से लोग श्रीमती काफे में झाँकने तक नहीं आये। सरकार का इंटेलिजेन्स डिपार्टमेंट भी कितना सक्रिय हो गया था कि दिन भर लगभग एक दर्जन नये चेहरे ताक-झाँक के चक्कर में आसपास घूमते रहे। उनमें से कई अंदर आ कर चाय भी पी गये।

भजन दिन भर शराब में डूबा रहा। उसने दुकान के लिए कोई सामान नहीं बनाया। लेकिन बिस्सू ने समझ लिया कि सारी गलती उसी की है। [illegible] उसका मुँह चलाना भी ठीक से नहीं हुआ। वह एक तरह से अनमना सा [illegible]।

शाम को श्रीमती काफे में फिर चहल-पहल शुरू हो गयी। लेकिन [illegible] हो के गाहक नहीं हैं। वे इस इलाके के राजनीतिक कार्यकर्ता हैं। [illegible] सिर्फ रंजन और सुनिर्मल के साथ के लोग नहीं आये। कुछ दिन [illegible] है,

उनकी बड़ी बहस होती थी। दो साल पहले डॉ० अन्सारी की अध्यक्षता में मद्रास कांग्रेस ने साइमन कमीशन के बहिष्कार का निर्णय लिया था। उस मामले में यहाँ की कांग्रेस कमेटी ने यहाँ के किसी आंदोलन में उनकी सहायता नहीं की थी। हीरेन उस समय जेल में था। जेल से लौट कर उसने देखा कि देश की राजनीति में हड़ताल करना फैशन सा बन गया है। कहीं कोई बात हुई कि हड़ताल हो गयी। उस साल एक महीने के अंदर हाई स्कूल में तीन बार हड़ताल हुई। सुनिर्मल ने हड़ताल करायी थी। फिर वह भी दो महीने जेल की हवा खा आया। पुलिस की पिटाई से भी रथीन दुरुस्त नहीं हुआ। उसका आंदोलन भी कितना विचित्र था। उससे फायदा यही हुआ कि कई सीधे-सादे मजदूर हवालात में रहे और उनको नौकरी से हाथ धो कर घर बैठना पड़ा। अब वे सब नेता बन गये हैं। यह सब देख कर हीरेन को हँसी आयी है। जो बेचारे पढ़े-लिखे नहीं हैं, उनसे ऐसी भँड़ैती कराने से फायदा ?

इन्हीं सब मुद्दों को ले कर आज की महफिल जमी है। आतंकवाद और ट्रेड यूनियन, इन दो से निबटने में ब्रिटिश सरकार एकदम बेरहम है। फिर आज ही श्रीमती काफे में ऐसी एक बात को ले कर पुलिस का हंगामा हो जाने से बहस उसी पर चलने लगी। सिर्फ जवाहर लाल के कई समर्थक चुप रहे। कृपाल और हीरेन उम्र में कुछ बड़े हैं, इसलिए उनसे किसी की बहस नहीं जमी। म्युनिसिपैलिटी इलाके के लगभग सभी कांग्रेस मेम्बर आज मौजूद हैं। पता नहीं चलता कि यह श्रीमती काफे है या कांग्रेस का दफ्तर ?

विस्सू बड़े आश्चर्य से सब की बातें सुन रहा है। वह अंदर वाले दरवाजे के खड़े हो कर उन बातों को ऐसे सुन रहा है कि जैसे वे लोग अरबी या फारसी बोल रहे हों। वे लोग खाना नहीं खाते, चाय या पानी भी नहीं पीते, सिर्फ बात करते हैं। आखिर इनसान भी कितनी बातें कर सकता है !

भजन अभी तक नहीं था। वह अचानक दौड़ता हुआ आया। वह पीये हुए है। आते ही वह श्रीमती काफे के बरामदे में रुक गया। एक तो उसकी आँखें भूरी हैं, फिर जब उनमें शराब की लाली छा जाती है, तब ऐसा लगता है कि कोई खूँखार शेर घूर रहा है। कमरे में बैठे लोगों पर निगाह दौड़ा कर उसने कहा, "वाह ! वाह ! बहुत खूब बड़ा अच्छा लग रहा है। सभी महानुभाव जुटे हैं। मानो सभा चल रही है। लेकिन लौट कर देखूंगा कि पुलिस की चौकी लग गयी है। विस्सू !"

विस्सू चुपचाप भजन के पास जा कर खड़ा हो गया। उसके चेहरे पर दबी खुशी की झलक है। याने, अब बातूनी बाबू लोग दुरुस्त होंगे।

भजन ने कहा, "सब बाबुओं को एक-एक कप चाय दे दे। किसी से पैसा लेना मत भूलना। सिर्फ दादा से पैसा मत लेना। समझ गया न ?"

विस्सू ने सिर्फ कहा, "हूँ।"

दादा का मतलब है गोलोक चटर्जी। वे अपने नियम से आये हैं। लेकिन आज की महफिल में उन पर किसी का ध्यान नहीं है। आज उनके भाग्य में सिर्फ बैठे-बैठे ऊँघना लिखा है।

भजन को देखते ही सब लोग चुप हो गये। खास कर नये कांग्रेसी कार्यकर्ता तो सकपकाने लगे। सभी समझ गये कि यहाँ सिविल नाफरमानी नहीं चल सकती!

उधर भजन भुन्नू की गाड़ी के पास जा खड़ा हुआ। उसके हाथ में कोई कागज है। वह कागज नहीं, चिट्ठी है। जूही के पिता ने वह चिट्ठी भेजी है। जूही के पिता याने भजन के ससुर ने भजन के पिता, याने हालदार बाबू को वह खत भेजा है। जूही के पिता ने उस खत में जो मन में आया, वही लिखा है। कोई गाली-गलौज नहीं लिखी है, लेकिन जूही के पिता ने भजन के पिता से शिकायत की है कि आप अपनी उदासीनता के कारण न बेटे की खबर रखते हैं, न बहू की। अपनी बेटी ससुराल में आराम से नहीं रही, इसी बहाने जूही के पिता ने हालदार बाबू को लिखा है कि इस उम्र में आपको जरा ढंग से चलना चाहिए।

इस चिट्ठी की बात सुन कर भजन पागल की तरह दौड़ता हुआ अपने होटल में आया। उसकी ससुराल लगभग दस मील दूर है। इस समय कोई ट्रेन भी नहीं है। लेकिन किसी मामले में एक मिनट चुप बैठे रहना भजन की आदत नहीं है। चुप बैठे रहने का मतलब है उस मामले को ठंडा पड़ने देना। इस लिए अभी कुछ नहीं किया गया तो जिंदगी में कभी उसका मौका नहीं आयेगा।

भजन हमेशा भुन्नू के घोड़ों को गाली देता है, लेकिन आज उसने भुन्नू से जा कर कहा, "देख भुन्नू, बहू को लाने के लिए अभी ससुराल चलना पड़ेगा। आज तू मेरा सारथी बनेगा। कहना चाहिए कि तुझे एकदम भगवान् कृष्ण बनना है। समझ गया न? *तू श्रीकृष्ण बनेगा और मैं अर्जुन बनूंगा। लेकिन तेरे मरियल घोड़े —*"

बस, इसी एक बात पर भुन्नू बिगड़ गया। उसने कहा, "मरियल घोड़े मत कहो लाट साहब, ये दोनों राजा-रानी हैं।"

भजन समझ गया कि कल का गुस्सा अब भी भुन्नू में भरा हुआ है। भजन अपना लाल भभूका चेहरा भुन्नू के मुँह के पास ले जा कर बोला, "मैं प्यार से मरियल कहता हूँ। तेरे घोड़े तो सचमुच तगड़े हैं। लेकिन आज उन दोनों को सचमुच राजा-रानी बनना पड़ेगा।"

भुन्नू इतनी सारी बातों का मतलब नहीं समझ सका। शाम होने से पहले ही दो कुल्हड़ ताड़ी साफ कर वह मस्त बना बैठा है। लेकिन एक भी पसिंजर नहीं आता देख कर वह मन ही मन पसिंजरों को गाली देने लगा। ठीक उसी वक्त लाट साहब भजन आया। अब तो लाट साहब ही उसकी गाड़ी से जाना चाहता है। पहले तो भुन्नू अपने कानों पर विश्वास न कर सका। उसने सोचा कि राजा-रानी का दिन बुलाना भी भजन बाबू की दिल्लगी का एक ढंग है।

ताड़ी की खुमारी भरी आँखों से भुन्नू ने एक बार भजन को तरफ देखा। अब भी उसे शक है कि यह मजाक है। लेकिन वह तुरंत समझ गया कि यह मजाक नहीं है। फिर भी उसे यह सोच कर आश्चर्य हुआ कि आज सवेरे जिसकी दुकान पर पुलिस ने छापा मारा, यार-दोस्तों के चक्कर में जिसकी दुकान निकलने वाला है,

वही इस रात के समय अपनी बीवी को लाने के लिए ससुराल जा रहा है। भुन्नू ने सोचा कि यह लाट साहब शराबी ही नहीं, मनिया की तरह विचित्र भी है। मनिया भुन्नू की बीवी है। भुन्नू कभी अपनी बीवी को समझ नहीं सका।

आज भुन्नू को भजन की एक बात बहुत पसंद आयी। आज भजन ने मान लिया कि भुन्नू के घोड़े तगड़े हैं और सचमुच राजा-रानी जैसे हैं। भुन्नू सारी पुरानी बातें भूल गया और यही एक बात उसके दिमाग में बैठ गयी। चुम्बक जिस तरह लोहे को खींचता है, उसी तरह इस एक बात ने भुन्नू को भजन के प्रति आकृष्ट किया।

फिर भुन्नू ने हुक्म करने के अंदाज में कहा, "फिर गाड़ी में बैठ जाइए भजन बाबू।"

सारथी की तरह रथी की हालत भी अच्छी नहीं है। लाट साहब भजन किसी तरह गिरता-पड़ता गाड़ी के अंदर चला गया और भुन्नू के राजा-रानी जल्दी से गाड़ी को मोड़ कर दक्षिण दिशा में दौड़ने लगे। थोड़ा-सा मुड़ कर यह सड़क सीधे चली गयी है। ऊबड़-खाबड़ सड़क पर गिट्टियाँ बिछी हैं। बरसात के दिनों में गाड़ियाँ चलने से सड़क के दोनों किनारे गिट्टियाँ उखड़ कर धँसी सी पट्टियाँ बन गयी हैं। उन पट्टियों पर जहाँ-तहाँ गिट्टियाँ बिखरी पड़ी हैं। गाड़ी खींचने वाले जानवरों के पाँवों की ठोकर से और पहियों की टक्कर से वे गिट्टियाँ इधर से उधर होती रहती हैं।

इस समय सड़क पर अँधेरा है। चारों तरफ हलके कोहरे और धुएँ का परदा खींचा हुआ है। हेमंत की रात होने से हलकी सरदी भी है। लेकिन आसमान में बादल [illegible] हैं और न हवा ही चल रही है। इसलिए सरदी का एहसास भी नहीं होता। लेकिन कोहरे और धुएँ का जो झीना परदा चारों तरफ मकड़ी के जाले की तरह लटक रहा है, उससे वातावरण बड़ा जादुई बन गया है। लकड़ी के लैम्प-पोस्ट दूर-दूर खड़े हैं। उनमें से किसी-किसी पर मिट्टी के तेल की बत्ती टिमटिमा रही है।

थोड़ी देर बाद भजन को लगा कि राजा-रानी सचमुच उड़े जा रहे हैं। गाड़ी के पहियों की घड़-घड़-घटर-घटर के साथ दोनों घोड़ों की टापों की तड़-तड़ ताल मिलाने लगी। साथ ही साथ भुन्नू चाबुक फटकार कर घोड़ों को होशियार करता जा रहा है। गाड़ी सचमुच तेज भागने लगी। एक-दो बार तो वह उलटते-उलटते बची। फिर भी वह बीच-बीच में इस कदर उछलती रही कि भजन डर गया। वह डरता रहा कि कहीं गाड़ी के अंजर-पंजर न बिखर जायँ। 'सँभल के-सँभल' के की हाँक पर कई बार भजन का नशा उखड़ गया। गाड़ी की खतरनाक चाल पर सड़क से चलने वाले लोग भी कई बार चिल्ला पड़े।

शुरू में एक-दो बार भजन को लगा कि शायद नशे की हालत में होने के कारण ऐसा एहसास हो रहा है। लेकिन बाहर की तरफ निगाह डालते ही उसे पता चला कि गाड़ी सचमुच हवा से बात करने लगी है। सड़क के किनारे की हर चीज उतनी ही तेजी से आँखों के आगे से ओझल होती जा रही है। गाड़ी की ऐसी तेज रफ्तार देख कर भजन ने बार-बार भुन्नू के मरियल राजा-रानी के बारे में सोचना चाहा और

उनकी शक्ल याद करने की कोशिश की। लेकिन उसकी याददाश्त गड़बड़ा गयी। उसकी आँखों के आगे दो ऐसे घोड़ों की तस्वीर खिंच गयी जो जवान हैं, बलवान हैं और जिनके अयाल उठे हुए हैं। मरियल राजा-रानी में इतनी ताकत कहाँ से आयेगी!

भजन जब ससुराल पहुँचा तब उसने देखा कि ससुर पर पहले जो गुस्सा आया था, वह बहुत कम हो चुका है। भजन इसका कारण समझ नहीं सका, लेकिन रास्ते भर की उतनी उत्तेजना के कारण ऐसा हुआ। फिर ससुराल पहुँचते ही भजन ने सुना कि जूही माँ बनी है।

ससुराल में भी सबको आश्चर्य हुआ। सब ने भजन को घेर लिया। लेकिन सहसा कोई कुछ कह न सका। भजन का चेहरा लाल है। मानो अभी खून टपक पड़ेगा। भजन उत्तेजित और पसीने से तर-बतर है। उसकी आँखें भाले के फल की तरह तीखी लगीं। उन आँखों की तरफ देखते ही डर लगता है कि कहीं सीने में न चुभ जायें।

अभी थोड़ी देर पहले इस घर के सब को बहुत बड़ी बेचैनी से छुटकारा मिला था। जूही सही-सलामत और एक बच्चे की माँ बनी थी। ठीक उसी के बाद बिन बादल बिजली गिरने की तरह जो शख्स आ धमका वह जूही का पति है।

जूही की एक बहन ने आगे बढ़ कर भजन से कहा, "जीजा जी, मझली दीदी के बच्चा हुआ है।"

भजन ने अपनी साली की तरफ देखा। इस साली की शादी हो चुकी है।

साली ने क्या कहा, यह तो भजन ने सुन लिया। फिर उसका ध्यान दूसरी तरफ चला गया। क्षण भर बाद उसने फिर साली की तरफ देखा। यह साली भी देखने में सुंदर है। जूही की तरह सेहतमंद और बदन का रंग गोरा। खूबसूरत ही है। लेकिन इसकी खूबसूरती में वह धार नहीं है जो जूही में है। भजन ने देखा कि साली हँस रही है और डर भी रही है। डरते-डरते हँस रही है।

किसी को प्रणाम करने की बात भजन को याद नहीं आयी। उसने ससुर जी के बारे में कुछ नहीं पूछा। उसने उसी साली से कहा, "मुझे तुम अपनी मझली दीदी के पास ले चलो। उसे देखूँगा।"

भजन की बात सुन कर सब को आश्चर्य हुआ। मुँह दाब कर सभी औरतें मुस्करायीं। बच्चे को नहीं, मियाँ एकदम अपनी बीबी को देखना चाहता है!

सलहज ने चुटकी ली, "यों ही खाली हाथ?"

भजन ने सलहज की तरफ देख कर कहा, "इसी लिए तो बच्चे को नहीं देखना चाहा। तुम्हारी मझली ननद को देखना चाह रहा हूँ। वह तो मेरी देखी हुई है। उसी से मिलने आया हूँ।"

साली लालटेन उठा कर सौरी की तरफ चली। भजन उसके पीछे चलने लगा। सौरी रसोईघर की बगल में मकान के पिछवाड़े बगीचे में खुलने वाले दरवाजे के पास है। भजन के पीछे-पीछे और भी कई स्त्रियाँ वहाँ पहुँचीं।

वही इस रात के समय अपनी बीवी को लाने के लिए ससुराल जा रहा है। भुन्नू ने सोचा कि यह लाट साहब शरावी ही नहीं, मनिया की तरह विचित्र भी है। मनिया भुन्नू की बीवी है। भुन्नू कभी अपनी बीवी को समझ नहीं सका।

आज भुन्नू को भजन की एक वात वहुत पसंद आयी। आज भजन ने मान लिया कि भुन्नू के घोड़े तगड़े हैं और सचमुच राजा-रानी जैसे हैं। भुन्नू सारी पुरानी वातें भूल गया और यही एक वात उसके दिमाग में बैठ गयी। चुम्बक जिस तरह लोहे को खींचता है, उसी तरह इस एक वात ने भुन्नू को भजन के प्रति आकृष्ट किया।

फिर भुन्नू ने हुक्म करने के अंदाज में कहा, "फिर गाड़ी में बैठ जाइए भजन बाबू।"

सारथी की तरह रथी की हालत भी अच्छी नहीं है। लाट साहब भजन किसी तरह गिरता-पड़ता गाड़ी के अंदर चला गया और भुन्नू के राजा-रानी जल्दी से गाड़ी को मोड़ कर दक्षिण दिशा में दौड़ने लगे। थोड़ा-सा मुड़ कर यह सड़क सीधे चली गयी है। ऊवड़-खावड़ सड़क पर गिट्टियाँ बिछी हैं। बरसात के दिनों में गाड़ियाँ चलने से सड़क के दोनों किनारे गिट्टियाँ उखड़ कर धँसी सी पट्टियाँ बन गयी हैं। उन पट्टियों पर जहाँ-तहाँ गिट्टियाँ बिखरी पड़ी हैं। गाड़ी खींचने वाले जानवरों के पाँवों की ठोकर से और पहियों की टक्कर से वे गिट्टियाँ इधर से उधर होती रहती हैं।

इस समय सड़क पर अँधेरा है। चारों तरफ हलके कोहरे और धुएँ का परदा खींचा हुआ है। हेमंत की रात होने से हलकी सरदी भी है। लेकिन आसमान में वादल नहीं हैं और न हवा ही चल रही है। इसलिए सरदी का एहसास भी नहीं होता। लेकिन कोहरे और धुएँ का जो झीना परदा चारों तरफ मकड़ी के जाले की तरह लटक रहा है, उससे वातावरण वड़ा जादुई वन गया है। लकड़ी के लैम्प-पोस्ट दूर-दूर खड़े हैं। उनमें से किसी-किसी पर मिट्टी के तेल की वत्ती टिमटिमा रही है।

थोड़ी देर वाद भजन को लगा कि राजा-रानी सचमुच उड़े जा रहे हैं। गाड़ी के पहियों की घड़-घड़-घटर-घटर के साथ दोनों घोड़ों की टापों की तड़-तड़ ताल मिलाने लगी। साथ ही साथ भुन्नू चाबुक फटकार कर घोड़ों को होशियार करता जा रहा है। गाड़ी सचमुच तेज भागने लगी। एक-दो वार तो वह उलटते-उलटते बची। फिर भी वह बीच-बीच में इस कदर उछलती रही कि भजन डर गया। वह डरता रहा कि कहीं गाड़ी के अंजर-पंजर न विखर जायँ। 'सँभल के-सँभल' के की हाँक पर कई वार भजन का नशा उखड़ गया। गाड़ी की खतरनाक चाल पर सड़क से चलने वाले लोग भी कई बार चिल्ला पड़े।

शुरू में एक-दो बार भजन को लगा कि शायद नशे की हालत में होने के कारण ऐसा एहसास हो रहा है। लेकिन वाहर की तरफ निगाह डालते ही उसे पता चला कि गाड़ी सचमुच हवा से बात करने लगी है। सड़क के किनारे की हर चीज उतनी ही तेजी से आँखों के आगे से ओझल होती जा रही है। गाड़ी की ऐसी तेज रफ्तार देख कर भजन ने वार-वार भुन्नू के मरियल राजा-रानी के बारे में सोचना चाहा और

उनकी शक्ल याद करने की कोशिश की। लेकिन उसकी याददाश्त गड़बड़ा गयी। उसकी आँखों के आगे दो ऐसे घोड़ों की तस्वीर खिंच गयी जो जवान हैं, बलवान हैं और जिनके अयाल उठे हुए हैं। मरियल राजा-रानी में इतनी ताकत कहाँ से आयेगी !

भजन जब ससुराल पहुँचा तब उसने देखा कि ससुर पर पहले जो गुस्सा आया था, वह बहुत कम हो चुका है। भजन इसका कारण समझ नहीं सका, लेकिन रास्ते भर की उतनी उत्तेजना के कारण ऐसा हुआ। फिर ससुराल पहुँचते ही भजन ने सुना कि जूही माँ बनी है।

ससुराल में भी सबको आश्चर्य हुआ। सब ने भजन को घेर लिया। लेकिन सहसा कोई कुछ कह न सका। भजन का चेहरा लाल है। मानो अभी खून टपक पड़ेगा। भजन उत्तेजित और पसीने से तर-बतर है। उसकी आँखें भाले के फल की तरह तीखी लगीं। उन आँखों की तरफ देखते ही डर लगता है कि कहीं सीने में न चुभ जायें।

अभी थोड़ी देर पहले इस घर के सब को बहुत बड़ी बेचैनी से छुटकारा मिला था। जूही सही-सलामत और एक बच्चे की माँ बनी थी। ठीक उसी के बाद बिन बादल बिजली गिरने की तरह जो शख्स आ धमका वह जूही का पति है।

जूही की एक बहन ने आगे बढ़ कर भजन से कहा, "जीजा जी, मझली दीदी के बच्चा हुआ है।"

भजन ने अपनी साली की तरफ देखा। इस साली की शादी हो चुकी है।

साली ने क्या कहा, यह तो भजन ने सुन लिया। फिर उसका ध्यान दूसरी तरफ चला गया। क्षण भर बाद उसने फिर साली की तरफ देखा। यह साली भी देखने में सुंदर है। जूही की तरह सेहतमंद और बदन का रंग गोरा। खूबसूरत ही है। लेकिन इसकी खूबसूरती में वह धार नहीं है जो जूही में है। भजन ने देखा कि साली हँस रही है और डर भी रही है। डरते-डरते हँस रही है।

किसी को प्रणाम करने की बात भजन को याद नहीं आयी। उसने ससुर जी के बारे में कुछ नहीं पूछा। उसने उसी साली से कहा, "मुझे तुम अपनी मझली दीदी के पास ले चलो। उसे देखूँगा।"

भजन की बात सुन कर सब को आश्चर्य हुआ। मुँह दाब कर सभी औरतें मुस्करायीं। बच्चे को नहीं, मियाँ एकदम अपनी बीबी को देखना चाहता है !

सलहज ने चुटकी ली, "यों ही खाली हाथ ?"

भजन ने सलहज की तरफ देख कर कहा, "इसी लिए तो बच्चे को नहीं देखना चाहा। तुम्हारी मझली ननद को देखना चाह रहा हूँ। वह तो मेरी देखी हुई है। उसी से मिलने आया हूँ।"

साली लालटेन उठा कर सौरी की तरफ चली। भजन उसके पीछे चलने लगा। सौरी रसोईघर की बगल में मकान के पिछवाड़े बगीचे में खुलने वाले दरवाजे के पास है। भजन के पीछे-पीछे और भी कई स्त्रियाँ वहाँ पहुँचीं।

सौरी का दरवाजा ओढ़काया हुआ है। अंदर से दाई की आवाज सुनाई पड़ रही है।

अंदर जूही अधलेटी पड़ी है। वह थकी है, लेकिन कमजोर नहीं। उसकी गोद के पास ढेर सारे कपड़े-लत्तों में से एक चेहरा झाँक रहा है। वह चेहरा लाल रबड़ की गुड़िया का सा है। जरा सा सिर भूरे रोयें से भरा है। भौंहें सिकुड़ी हुई हैं। होंठ हिल रहे हैं। उसी तरफ देखती जूही हँस रही है। हँसते-हँसते न जाने क्या सोच कर वह गंभीर भी बनती जा रही है।

ठीक उसी समय जूही ने अपने सामने जिसको देखा, उसको देखते ही वह आश्चर्य के मारे सकपका गयी। मानो उसे अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हुआ। उसे लगा कि उसका अंतर्यामी उसे कोई तमाशा दिखा रहा है। लेकिन यह कैसे संभव हुआ। उसने तो बस मन ही मन इस आदमी के बारे में सोचा था। मन ही मन इससे बातें भी की थीं। न जाने कितनी बातें ! लेकिन मन के अंदर की बातों को तो एक अंतर्यामी के अलावा दूसरा कोई सुन भी नहीं सकता। फिर वैसी बातें तो किसी से बतायी भी नहीं जा सकतीं। सिर्फ इस नन्हे नवजातक को साक्षी मान कर उसने इससे अपने मन की बातें कही थीं। वह यही सोचने लगी थी कि इस समय इस बच्चे का बाप कहाँ होगा ? शायद कहीं नशे में चूर हो कर पड़ा हो। फिर उसने उस बच्चे से कहा था कि तू जो इस दुनिया में आया है, यह खबर भी आज उसे नहीं मिल पायेगी। उसने यह भी कहा था कि अब मैं तू जैसे और किसी को इस दुनिया में लाने से रही ! अब मुझसे बरदाश्त नहीं होता। मैं उससे यही कहूँगी, जरूर कहूँगी !

भजन की तरफ देख कर जूही शरमा गयी। उसे हँसी आयी। फिर वह रूठ गयी और उसे रुलाई आयी। अचानक उसकी छाती पर से युग-युगांत का विरह-भार उतर गया। पहाड़ के समान वह बोझ था। खून बहा कर जिस दर्द से उसे छुटकारा मिला, उसकी याद भुलाते न भुलाते भजन की बाँहों में समा जाने के लिए उसका मन बेचैन हो उठा। कैसी शरम की बात है ! हाय ! मनुष्य का मन भी कितना विचित्र है, उसका धर्म भी कितना अद्‌भुत है।

दूसरे ही क्षण जूही को लगा कि भजन ही अंतर्यामी है। छी ! छी ! फिर तो उसको सब कुछ पता चल गया होगा। जूही ने जल्दी-जल्दी घूंघट खींच कर अपनी थकी-मांदी देह को सँभालने की कोशिश की।

भजन ने कहा, "अरे, अरे, अभी वह सब रहने दो। मैं अभी चला जाऊँगा।"

फिर भजन ने पीछे खड़ी सलहज से कहा, "किसी से कह दीजिए कि एक गमला पानी बाहर दे आये। राजा-रानी को प्यास लगी होगी। हमारे भुन्नू कोचवान के घोड़ों के नाम हैं राजा और रानी। आज दोनों ने अपने नाम का जौहर दिखाया है। पता नहीं, अब तक स्वर्ग तो नहीं सिधार गये ?"

अचानक भजन ने गौर किया कि एक-दो को छोड़ कर सबकी नाक पर कपड़ा है। अब उसे ख्याल आया कि अरे, मैंने शराब पी है न ! शराब की बू इन सबको

नागवार है। भजन को यह भी याद आया कि इसी बात को ले कर अब भी जूही से मेरा झगड़ा है। जूही को शराब से बड़ी नफरत है। जूही के पिता को भी है। वे अपने खत में अनेक बार इसका संकेत कर चुके हैं।

यही सब सोचते हुए भजन ने न जाने क्यों अपमान का अनुभव किया। उसने साली की तरफ देख कर पूछा, "तुम्हारे पिता जी कहाँ हैं ?"

साली ने कहा, "मझली दीदी के बच्चा हो जाने के बाद पिता जी अपने एक दोस्त के घर गये हैं। घूमने और चौसर खेलने।"

जूही ने जरा अधिकार के स्वर में भजन से कहा, "आज रात यहीं रह जाइए। गौर-निताइ भी तो हैं।"

गौर और निताई भजन के दो बेटे हैं।

भजन ने कहा, "नहीं।"

फिर अचानक जूही की तरफ देख कर भजन ने कहा, "मैं शराबी हूँ। तुम्हारे पिता जी नाराज होंगे। जूही, तुम्हारे पिता जी से दो बातें कहने के लिए भागा-भागा आया हूँ। लेकिन उनसे भेंट नहीं हुई। तुम्हारी भी तबीयत ठीक नहीं है। फिर भी अपने पिता जी से कह देना। पहली बात यह है कि मेरे पिता जी को अच्छी बातें सिखाने का समय बीत चुका है। अब उनसे कुछ कहना बेकार है। दूसरी बात यह कि मैं स्वयं अपनी देखभाल ठीक से कर नहीं सकता। शायद इसी लिए मुझसे किसी दूसरे की देखभाल नहीं हो पाती। हमारे यहाँ तुमको स्वयं अपनी देखभाल करनी पड़ेगी। तुमको कैसे आराम मिलेगा, इसका इंतजाम तुम्हीं को करना होगा। कम से कम इसकी आजादी तुम्हें है।"

भजन की बात सुन कर भजन की साली आश्चर्य में पड़ गयी। आड़ में खड़ी भजन की सास घबड़ा गयी। जूही को भी हैरानी हुई और अफसोस हुआ। उसने भजन से पूछा, "क्यों ऐसी बातें कर रहे हैं ?"

"तुम्हारे पिता जी ने जानना चाहा था।"

यह कह कर भजन जाने लगा तो जूही ने कहा, "सुनिए।"

भजन रुक गया।

जूही ने पूछा, "पिता जी कैसे हैं ?"

पिता जी का मतलब ससुर जी।

भजन ने कहा, "ठीक हैं।"

"जेल से जेठ जी की कोई खबर मिली ?"

"नहीं। तीन दिन बाद मैं उनसे मिलने जाऊँगा।"

"और आपके···"

जूही रुक गयी। श्रीमती काफे के बारे में पूछना चाह कर भी जूही रुक गयी। श्रीमती काफे से उसको हमेशा से बड़ी चिढ़ है। यह उसकी बातों से भी अनेक बार प्रकट हुई है। वह दुकान मानो उसकी सौत है। इसलिए कभी उसने उस दुकान के

बारे में नहीं पूछा। आज पूछना चाह कर भी वह ऐसा न कर सकी। उसे बड़ा संकोच हुआ। फिर उसने प्रसंग बदल कर कहा, "शायद किसी कारण से पिता जी का मिजाज ठीक नहीं था, इसलिए उन्होंने कुछ लिख दिया होगा। आप चले जायेंगे तो पिता जी दुखी होंगे।"

भजन ने कहा, "लेकिन कोई उपाय नहीं है जूही। मुझे जाना पड़ेगा।"

आड़ से सामने आ कर सास ने कहा, "अगर कोई जरूरी काम है तो जाओ बेटा, लेकिन तुम्हें बिना खिलाये कैसे जाने दे सकती हूँ ?"

भजन बोला, "बुरा मत मानिए। अभी जरा भी फ़ुरसत नहीं है। और किसी दिन आ कर खा लूँगा।"

इस ढंग से भजन ने ये बातें कहीं कि सास समझ गयीं, अब आगे कुछ कहना बेकार है।

जूही की माँ के मन में बड़ी इच्छा थी कि इस मातृहीन शिक्षित लड़के को अपने स्नेह के आँचल में बांध रखेंगी। लेकिन वे ऐसा नहीं कर सकीं। उनकी बेटियों में जूही सबसे अच्छी है, लेकिन वह भी भजन को नहीं बांध सकी। भजन बंधन में पड़ने वाला लड़का नहीं है।

भजन चलने के लिए तैयार हो गया। सास की उपस्थिति के कारण किसी प्रकार संकोच किये बिना उसने जूही से कहा, "जूही, मैं रातदिन अपने को धिक्कारता रहता हूँ, लेकिन दूसरा कोई मुझे धिक्कारता है तो बरदाश्त नहीं होता। फिर भी जब तक मैं जिंदा रहूँगा, तुम्हारे और तुम्हारे बच्चों के लिए किसी को परेशान नहीं होना पड़ेगा। लोग मुझे लाट साहब कहते हैं।"

अंतिम वाक्य कह कर भजन हँस पड़ा और आगे बढ़ गया।

जूही की आंखों के कोनों में आँसू की बड़ी-बड़ी बूंदें दिखाई पड़ीं। नहीं, भजन की बातों से ऐसा नहीं हुआ। भजन ने बार-बार उसकी छाती में हाहाकार मचाया है। यह कोई नयी बात नहीं है। पति के चले जाते समय एक साधारण स्त्री को जिस तरह रुलाई आती है, यह वैसी ही प्यार भरी रुलाई है। जूही के होंठ कांप उठे। उसने क्या कहा, कोई नहीं समझ सका।

मानो इस घर में तूफान आया था, भजन के जाने के बाद वह तूफान थम गया।

भजन ने बाहर आ कर देखा [illegible] चना खा कर पानी पी रहे हैं।

उसके बाद वह बड़े प्यार से घोड़ों की पीठ पर हाथ फेरने लगा।

भजन बोला, "भुन्नू, अब मैं मान गया कि ये तेरे असली राजा-रानी हैं। जिंदगी में कभी ऐसी घोड़ागाड़ी में नहीं बैठा। क्या तू मंतर जानता है? तेरी गाड़ी की चाल देख कर मैं दंग रह गया।"

भुन्नू के मुँह से कोई आवाज नहीं निकली। रानी घोड़ी ने भुन्नू के कंधे पर इस तरह सिर टिका दिया कि भुन्नू के छाती की अंदर दर्द होने लगा। ऐसा लगा कि उसकी बड़ी-बड़ी आँखों से आँसू बह निकलेंगे। उसने सिर्फ घोड़ी का सिर दोनों हाथों से पकड़ कर कहा, "बड़ी तकलीफ हुई रानी? मेरी रानी!"

फिर भुन्नू ने राजा घोड़े से कहा, "क्यों बे राजा, चलने का मन नहीं है? अब तो लाट साहब मान गये हैं कि तू सचमुच राजा है और वह सचमुच रानी।"

अब भुन्नू ने भजन से कहा, "बाबू जी, बहू जी से कहिए कि गाड़ी में बैठ जायें।"

भजन ने भुन्नू की बात पर ध्यान नहीं दिया। वह तो जूही के बारे में सोच रहा है। वह जूही के हर इशारे को समझता है। अभी जो जूही ने होंठ हिलाये थे, किसी ने वह नहीं देखा था, लेकिन भजन उसका मतलब समझ गया था। भजन ने साली की तरफ देख कर कहा, "गौर-निताई कहाँ हैं? चलो, उन दोनों को देख आऊँ।"

साली के होंठों पर बिजली की तरह खुशी की हँसी चमक गयी। शायद उसने सोच लिया कि अब जीजा जी रुक जायेंगे। लेकिन भजन की तरफ देख कर उसे यह पूछने की हिम्मत नहीं पड़ी। भजन का लाल चेहरा उसे धधकता अंगारा जैसा लगा।

भजन पलट कर साली के साथ सीढ़ी से ऊपर चला गया। ऊपर एक कमरे में भजन के दोनों बेटे गौर और निताई सो रहे हैं। गौर गोरा है और निताई जरा साँवला। दोनों बच्चे अगल-बगल सो रहे हैं। गौर बड़ा लड़का है। वह बाप की तरह गोरा है। उसे बाप की शक्ल-सूरत मिली है। लोग कहते हैं कि बाप की शक्ल-सूरत वाला लड़का सुखी नहीं होता। निताई माँ पर गया है। उसकी शक्ल जूही से मिलती है। माँ की शक्ल-सूरत का लड़का। इसे तो सुखी होना चाहिए। भजन ने निताई की तरफ देखा — मानो बच्ची जूही सो रही है!

सो रहे बेटों की तरफ देख कर भजन के सीने के अन्दर न जाने कैसा दर्द होने लगा। भजन ने सोचा कि आखिर मैं एक नामर्द बाप का बेटा हूँ। एक ऐसे नामर्द बाप का ऐसा बेटा, जिसका कोई भविष्य नहीं है। इसलिए इन बच्चों का भविष्य क्या होगा? भजन ने सोचा कि मैं तो स्वयं अभिशप्त हूँ, अभिशप्त है मेरा [illegible]। क्या यही अभिशाप इन बच्चों को विरासत में मिलेगा? क्या इस अभिशाप से इन्हें मुक्ति नहीं मिल सकती?

भजन ने बच्चों के बदन पर हाथ फेरा। [illegible] ली। भजन के फेफड़ों से भी एक लम्बी उसास निकलने को हुई, [illegible]

उसको दवा कर कमरे के वाहर आ गया। वाप को देख लेने पर वच्चे डर जाते, रोने लगते।

सो रहे वच्चों पर जिस तरह भजन ने हाथ फेरा, उसे देख कर उसकी साली का दिल मसीस उठा। फिर भी वह कुछ कहने से घवड़ायी और लालटेन लिये भजन के साथ चली।

अव भजन किसी तरफ देखे विना सीधे मकान के वाहर आ गया।

भुन्नू गाड़ी के पास खड़ा है। भजन ने उससे कहा, "वह जी नहीं जायेंगी सारथी। इस वार उनका हरण नहीं हो सका, क्योंकि वे सौरी में हैं। अभी मैं ही तेरे साथ चलूंगा।"

भुन्नू ने सारथी का मतलव साथी समझ लिया। उसने कहा, "आपको तो साथी मिल गया, लेकिन मेरे राजा-रानी की जिंदगी दो साल कम हो गयी। ऐसा मशक्कत दोनों ने कभी नहीं किया। मगर कोई अफसोस नहीं है।"

यह तो भुन्नू की ऊपरी वात हुई। भजन से वह चिढ़ा हुआ है, क्योंकि भजन उसके राजा-रानी का मजाक उड़ाता है। इसलिए भुन्नू ने मन ही मन कहा — साला! इसी को कहता है जोरू के भाई की खुशामद करना!

भुन्नू को अपने ऊपर भी गुस्सा आने लगा।

भजन और भुन्नू दोनों ऊपर कोचवान की सीट को वाँट कर वैठ गये। गाड़ी घटर-घटर चलने लगी।

सामने अँधेरा है। रात भी मजे की हो चुकी है। आसमान में तारे ऐसे चमक रहे हैं जैसे किसी की आँखें ओढ़नी के पीछे से मुस्करा रही हों। जुगनू उड़ रहे हैं और उनकी रोशनियां जल-वुझ रही हैं।

भुन्नू कोचवान और लाट साहव भजन अगल-वगल वैठे हैं। दोनों के वदन सटे हुए हैं, लेकिन कोई वोल नहीं रहा है।

दरवाजे पर खड़ी सास, साली और सलहज आश्चर्य से भजन का रंग-ढंग देख रही हैं। उन सव ने भजन जैसा आदमी कभी नहीं देखा। उधर सौरी में पड़ी जूही सोचने लगी — चलो, वे तो आ गये! आश्चर्य है, वे आज ही आये। ठीक समय पर आये।···आज शाम से जूही भजन के वारे में सोचने लगी थी। वह उस वेरहम आदमी के वारे में सोचने लगी थी जिसमें कूट-कूट कर रहम भरा है। इसलिए जूही अव अपने आंसुओं को रोक नहीं सकी।

दो दिन वाद। रात के एक वजा है। चारों तरफ खामोशी है। अँधेरा है। श्रीमती काफे के सामने वाली सड़क एकदम खाली है। एक मरियल छुट्टा घोड़ा गाड़ियों के अड्डे के आसपास गिरे चनों को चुन-चुन कर खा रहा है।

हलकी-हलकी ठंड पड़ रही है। थोड़ी दूर पर लैम्प-पोस्ट में मिट्टी के तेल की

बत्ती टिमटिमा रही है। उसकी चिमनी कालिख और कोहरे की वजह से धुंधली पड़ गयी है।

श्रीमती काफे के पीछे भी बत्ती जल रही है। इतनी रात को वहाँ बत्ती नहीं जलती, लेकिन आज जल रही है। उलटी करने के लिए बिस्सू बत्ती जला कर नाली के पास बैठ गया है। अब वह उठ नहीं पा रहा है। पहले वह उकड़ूँ बैठा था, अब पलथी मार कर बैठा है। उसका सिर चकराने लगा है। हाथ-पाँव ढीले पड़ रहे हैं। वह लुढ़कने को हुआ।

उलटी बंद नहीं हो रही है। बिस्सू ने घबड़ा कर आँखें बड़ी-बड़ी कर लीं। उलटी का रंग देख कर उसका होश गायब हो गया। उसने सोचा कि खून निकल रहा है। लेकिन वह खून नहीं, कत्थई रंग का गाढ़ा पानी है। उसकी बदबू जितनी बुरी है, उसका स्वाद भी उतना ही बुरा। अंतड़ियों से गले तक बुरी तरह जलन होने लगी। ट में से जो कुछ निकलने लगा, उसमें अल्कोहल की तीखी झार है। इस गंध से बिस्सू रिचित है। वह हैरत मे पड़ गया — अरे मेरे पेट में दारू कहाँ से आ गयी! रुक-क कर डरावनी और घिनौनी आवाज के साथ उलटी होने लगी। पता नहीं, पेट में या-क्या भरा है कि अब भल-भल निकलने लगा।

सिर नहीं उठाया जा रहा है। फिर भी बिस्सू ने खड़े होने की कोशिश की। किन उससे खड़ा नहीं हुआ गया। उस पर विचित्र नशा-सा छाने लगा। मानो उसने र सारी भाँग पी ली हो। उसे एकबारगी ऐसा लगा कि सिर गर्दन से अलग हो कर र जा गिरेगा। आँखों के आगे हर चीज घूमती हुई दिखाई पड़ी। हर चीज धुंधली गने लगी। बिस्सू को ऐसा लगा कि पेट में कोई जानवर घुसा हुआ है। वही जानवर लबली मचा कर पेट में से सब कुछ ऊपर फेंक रहा है। बिस्सू को लगा कि हृत्पिंड ौर फुप्फुस भी गले के रास्ते बाहर निकल आयेंगे।

बिस्सू की धँसी आँखों में भय छा गया। उसे लगा कि कोई बत्ती को मद्धिम ाये दे रहा है। चारों तरफ अँधेरा भर रहा है। जान बचाने के लिए बिस्सू ने भजन ो पुकारना चाहा। वह जोर से चिल्लाया — मालिक! मालिक! मुझे बचा लीजिए। ब ऐसी गलती कभी नहीं करूँगा।

सारा जोर लगा कर बिस्सू चिल्लाता रहा, लेकिन वह अपनी ही चिल्लाहट ही सुन सका। फिर भी वह चिल्लाता गया और उसके गले से सिर्फ घर्र-घर्र आवाज नकलती रही।

अधखुली टोंटी से जिस तरह पानी निकलता है, उसी तरह बिस्सू के अधखुले ोंठों के बीच से जहरीला तरल पदार्थ निकलने लगा। बिस्सू जमीन पर लेट गया। सके मुँह से निकले तरल पदार्थ से उसके शरीर का आधा हिस्सा गीला होने लगा। सने अपना भद्दा मुँह जमीन पर टिका दिया। मुँह से भल-भल के निकल मीन को और गंदी करने लगी।

बिस्सू अपनी आँखों के आगे देखने लगा — बहुत बड़े गोल

भरा सालन, उसमें गोश्त की कितनी बड़ी-बड़ी बोटियां, दूसरे कटोरे में दाल और बड़ी-सी थाली में पानी से गीला भात। सालन और दाल में जरा खट्टापन है। बाज़ार वाले होटल के रसोइये ने बिस्सू को वह सब खाने के लिए दिया है। बिस्सू ने ही वह सब खाने के लिए मांगा था। इसी लिए उस रसोइये ने उसे वह सब दिया। खाते समय एक बार बिस्सू को लगा कि सब कुछ सड़ गया है। लेकिन खाने की चीज देखने पर सड़ने-गलने की बात उसके दिमाग में नहीं आती। उसकी चटोरी जीभ वह सब नहीं मानती। बस, खाने की चीज हो और खाने को मिले। बिस्सू ने देखा सिर्फ खाना! भात, दाल और गोश्त!

नाक में क्या रेंग रहा है? बिस्सू को अब भी होश है। उसने देखने या टटोलने की कोशिश की। लेकिन वह कुछ भी नहीं कर सका। बस, आँखों के आगे अँधेरा छाता रहा। क्या किसी ने बत्ती की लौ कम कर दी?

छछूंदर बिस्सू की नाक सूंघ रहा है। अब वह निशाचर जीव छू-छू करता निडर डोलने लगा। उसके नुकीले लाल होंठ कांप रहे हैं। फिर बिस्सू के बदन पर से चूहे दौड़ने लगे। लेकिन कभी इसी बिस्सू के मारे यहां एक भी चूहा या छछूंदर टिक नहीं पाता था।

बिस्सू में भय की चेतना भी धीरे-धीरे सुन्न पड़ने लगी। अब उसमें नयी चेतना जाग रही है। वह जीना चाह रहा है। पता नहीं, वह कैसे समझ गया कि मैं मर गया हूँ। फिर तो जीने की इच्छा उसे अंदर ही अंदर कोंचने लगी।

माँ का चेहरा याद पड़ रहा है। बिस्सू को अपने बाप की भी याद आने लगी। अब उसकी आंखों के आगे उसके बचपन के दृश्य घूमने लगे। बचपन के कितने ही दृश्य उसने देखे। गंगा के उस पार मगरा के पास एक गांव में वह रहता था। मोची टोले का लड़का विश्वनाथ। हारू मोची का बड़ा बेटा। रंग आबनूसी। डील-डौल भालू जैसा। उसी उम्र में वह कितना बड़ा लगता था। मानो काले पत्थर का बना बाघ विश्वनाथ। अब इस बेटे से क्या काम करायेगा हारू? क्या वह अपने बेटे को ढोलकिया बनायेगा? हाँ, बेटा ढोल बजायेगा। हारू ने यही सोच लिया। लेकिन यह क्या हो गया? बेटा जरा चलने-फिरने लगा नहीं कि घर से भाग खड़ा हुआ। असल में उसे भरपेट खाना नहीं मिलता था। वह खाने के लिए लपकता था तो माँ उसे पकड़ कर पीटती थी, नहीं तो बाप दौड़ा लेता था। उसे मां भी पीटती थी और बाप भी पीटता था। इसलिए बाबा विश्वनाथ कस्बे के बाजार में भीख मांगता फिरने लगा। खाने को कोई चीज मिल जाती तो वह चट मुंह में रख लेता। इसके लिए वह पीटा जाता, लेकिन उसकी आदत नहीं छूटती। वह घर में यही करता था और अब बाहर भी यही करने लगा। जब वह घर में था, चारों तरफ चौकस निगाह रखता था। वह छिप कर देखा करता था कि माँ ने चूल्हे पर क्या चढ़ाया है। माँ उसे भरपेट खाने को नहीं देती थी, इसलिए उसे चोरी करना पड़ता था। इसी तरह उसका नाम पड़ गया बिस्सू राक्षस, लोग उसका विश्वनाथ नाम भूल गये। उसके बाद उसके माँ-बा

फल बसे, लेकिन वह जिंदा रहा। फिर अनेक घाटों का पानी पीने के बाद वह यहाँ पहुँचा। क्या नाम है इसका ? बिस्सू ने दुकान का नाम याद करना चाहा। लेकिन वह दुकान का नाम भी तो नहीं जानता। बस, होटल है, होटल। मालिक का होटल। मालिक भजन को वह जानता है। सिर्फ भजन को ही वह पहचानता है। भजन नहीं, लाट साहब भजन।

बिस्सू को नींद आने लगी। अब उलटी बंद हो चली है। उसने सोचा कि क्या मैं ठीक हो जाऊँगा ? शायद ऐसा ही है। शायद इस बार वह बच गया।

मालिक ने कल क्या कहा था ? बिस्सू ने याद करना चाहा। कल मालिक ने, लाट साहब भजन ने कहा था — बिस्सू ! जिसके पेट में भूख है, वही तेरे जैसा है। पैदा होने के बाद से कभी तुझे भरपेट खाने को नहीं मिला, इसलिए भूख तेरी आदत बन गयी है। एक दिन यह आदत छूट जायेगी।

फिर मालिक ने यह भी कहा था कि जिसके पेट मे भूख है, उसके लिए भगवान् भी नहीं है। जात-पांत और देश-धरम की बात उसके लिए बेमानी है। उसमें इनसानियत तक नही रहती।

पता नहीं, मालिक ने क्या-क्या कहा था ! मालिक की सब बातें बिस्सू समझ भी तो नहीं पाता। मालिक की ज्यादातर बातें समझ में भी नहीं आती। असल में मालिक शराब पीता है न !

अचानक बिस्सू की काली चमड़ी सिकुड़ने लगी। उसके हाथ-पांव ऐंठने लगे। उसे ऐसा लगा कि पेट के अंदर जो कुछ है, सब एक साथ लोंदा बन कर बाहर निकल रहा है। सिर के अंदर सुइयाँ चुभने लगी। आँखें फट कर बाहर निकलने को हुईं।

— नही ! नहीं ! इस बार बचा लो ! मेरी यह आदत छूट जायेगी। मैं दूसरी तरह का आदमी बन जाऊँगा। एकदम दूसरा आदमी। भला आदमी। एक ही जनम में दूसरा जनम ले लूँगा। फिर आदमी की तरह रहूँगा। अब भी कितना काम बाकी है। आदमी बन कर कितना काम करना है — ब्याह करना है ! घर बसाना है !

— माँ आयी है ! माँ ! माँ ! मैं जिंदा रहना चाहता हूँ ! अरे उड़िया महाराज, अब मैं तुमसे कभी खाने को नहीं मागूँगा ! माँ की कसम मालिक ! लाट साहब ! एक बार आप अपना पांव इस भुक्खड़, राक्षस, हरामजादा, सुअर और महा लालची बिस्सू के माथे से छुआ दीजिए ! इस बार मुझे बचा लीजिए !

बिस्सू के गले से अस्वाभाविक आँ-आँ की आवाज निकलते-निकलते अचानक रुक गयी। उसके मुँह और नाक से तेजी से कत्थई रंग का बदबूदार विषैला पानी जैसा कुछ निकल कर जमीन पर फैल गया।

इतनी देर बाद हवा का एक झोंका आया। ठंडी हवा का झोंका। रात खतम हो चली है। पूरब क्षितिज पर आसमान का फीका किनारा दिखाई पड़ने लगा। कोई डाउन मेल ट्रेन स्टेशन पर रुकी। मुसाफिर उतरने लगे। मुसाफिर उतरते ही गये। लेकिन यहाँ से कोई ट्रेन मे नही चढ़ा। स्टेशन से शोरगुल सुनाई पड़ने लगा।

भरा सालन, उसमें गोश्त की कितनी बड़ी-बड़ी बोटियाँ, दूसरे कटोरे में दाल और बड़ी-सी थाली में पानी से गीला भात। सालन और दाल में जरा खट्टापन है। बाजार वाले होटल के रसोइये ने बिस्सू को वह सब खाने के लिए दिया है। बिस्सू ने ही वह सब खाने के लिए माँगा था। इसी लिए उस रसोइये ने उसे वह सब दिया। खाते समय एक बार बिस्सू को लगा कि सब कुछ सड़ गया है। लेकिन खाने की चीज देखने पर सड़ने-गलने की बात उसके दिमाग में नहीं आती। उसकी चटोरी जीभ वह सब नहीं मानती। बस, खाने की चीज हो और खाने को मिले। बिस्सू ने देखा सिर्फ खाना! भात, दाल और गोश्त!

नाक में क्या रेंग रहा है? बिस्सू को अब भी होश है। उसने देखने या टटोलने की कोशिश की। लेकिन वह कुछ भी नहीं कर सका। बस, आँखों के आगे अँधेरा छाता रहा। क्या किसी ने बत्ती की लौ कम कर दी?

छछूंदर बिस्सू की नाक सूंघ रहा है। अब वह निशाचर जीव छूं-छूं करता निडर डोलने लगा। उसके नुकीले लाल होंठ कांप रहे हैं। फिर बिस्सू के वदन पर से चूहे दौड़ने लगे। लेकिन कभी इसी बिस्सू के मारे यहाँ एक भी चूहा या छछूंदर टिक नहीं पाता था।

बिस्सू में भय की चेतना भी धीरे-धीरे सुन्न पड़ने लगी। अब उसमें नयी चेतना जाग रही है। वह जीना चाह रहा है। पता नहीं, वह कैसे समझ गया कि मैं मर गया हूँ। फिर तो जीने की इच्छा उसे अंदर ही अंदर कोंचने लगी।

माँ का चेहरा याद पड़ रहा है। बिस्सू को अपने बाप की भी याद आने लगी। अब उसकी आँखों के आगे उसके बचपन के दृश्य घूमने लगे। बचपन के कितने ही दृश्य उसने देखे। गंगा के उस पार मगरा के पास एक गांव में वह रहता था। मोची टोले का लड़का विश्वनाथ। हारू मोची का बड़ा बेटा। रंग आबनूसी। डील-डौल भालू जैसा। उसी उम्र में वह कितना बड़ा लगता था। मानो काले पत्थर का बना बार्व विश्वनाथ। अब इस बेटे से क्या काम करायेगा हारू? क्या वह अपने बेटे को ढोलकिया बनायेगा? हाँ, बेटा ढोल बजायेगा। हारू ने यही सोच लिया। लेकिन यह क्या हो गया? बेटा जरा चलने-फिरने लगा नहीं कि घर से भाग खड़ा हुआ। असल में उसे भरपेट खाना नहीं मिलता था। वह खाने के लिए लपकता था तो माँ उसे पकड़ कर पीटती थी, नहीं तो बाप दौड़ा लेता था। उसे माँ भी पीटती थी और बाप भी पीटता था। इसलिए बाबा विश्वनाथ कस्बे के बाजार में भीख माँगता फिरने लगा। खाने को कोई चीज मिल जाती तो वह चट मुँह में रख लेता। इसके लिए वह पीट जाता, लेकिन उसकी आदत नहीं छूटती। वह घर में यही करता था और अब बाह भी यही करने लगा। जब वह घर में था, चारों तरफ चौकस निगाह रखता था। व छिप कर देखा करता था कि माँ ने चूल्हे पर क्या चढ़ाया है। माँ उसे भरपेट खा को नहीं देती थी, इसलिए उसे चोरी करना पड़ता था। इसी तरह उसका नाम प गया बिस्सू राक्षस, लोग उसका विश्वनाथ नाम भूल गये। उसके बाद उसके

चल बसे, लेकिन वह जिंदा रहा। फिर अनेक घाटों का पानी पीने के बाद वह यहाँ पहुँचा। क्या नाम है इसका? बिस्सू ने दुकान का नाम याद करना चाहा। लेकिन वह दुकान का नाम भी तो नहीं जानता। बस, होटल है, होटल। मालिक का होटल। मालिक भजन को वह जानता है। सिर्फ भजन को ही वह पहचानता है। भजन नहीं, लाट साहब भजन।

बिस्सू को नींद आने लगी। अब उलटी बंद हो चली है। उसने सोचा कि क्या मैं ठीक हो जाऊँगा? शायद ऐसा ही है। शायद इस बार वह बच गया।

मालिक ने कल क्या कहा था? बिस्सू ने याद करना चाहा। कल मालिक ने, लाट साहब भजन ने कहा था — बिस्सू! जिसके पेट में भूख है, वही तेरे जैसा है। पैदा होने के बाद से कभी तुझे भरपेट खाने को नहीं मिला, इसलिए भूख तेरी आदत बन गयी है। एक दिन यह आदत छूट जायेगी।

फिर मालिक ने यह भी कहा था कि जिसके पेट में भूख है, उसके लिए भगवान् भी नहीं है। जात-पाँत और देश-धरम की बात उसके लिए बेमानी है। उसमें इनसानियत तक नहीं रहती।

पता नहीं, मालिक ने क्या-क्या कहा था! मालिक की सब बातें बिस्सू समझ भी तो नहीं पाता। मालिक की ज्यादातर बातें समझ मे भी नहीं आतीं। असल मे मालिक शराब पीता है न!

अचानक बिस्सू की काली चमड़ी सिकुड़ने लगी। उसके हाथ-पाँव ऐंठने लगे। उसे ऐसा लगा कि पेट के अंदर जो कुछ है, सब एक साथ लोंदा बन कर बाहर निकल रहा है। सिर के अंदर सुइयाँ चुभने लगी। आँखें फट कर बाहर निकलने को हुईं।

— नहीं! नहीं! इस बार बचा लो! मेरी यह आदत छूट जायेगी। मैं दूसरी तरह का आदमी बन जाऊँगा। एकदम दूसरा आदमी। भला आदमी। एक ही जनम में दूसरा जनम ले लूँगा। फिर आदमी की तरह रहूँगा। अब भी कितना काम बाकी है। आदमी बन कर कितना काम करना है — ब्याह करना है! घर बसाना है!

— माँ आयी है! माँ! माँ! मैं जिंदा रहना चाहता हूँ! अरे उड़िया महाराज, अब मैं तुमसे कभी खाने को नहीं मागूंगा! माँ की कसम मालिक! लाट साहब! एक बार आप अपना पाँव इस भुक्खड़, राक्षस, हरामजादा, सुअर और महा लालची बिस्सू के माथे से छुआ दीजिए! इस बार मुझे बचा लीजिए!

बिस्सू के गले से अस्वाभाविक आँ-आँ की आवाज निकलते-निकलते अचानक रुक गयी। उसके मुँह और नाक से तेजी से कत्थई रंग का बदबूदार विषैला पानी जैसा कुछ निकल कर जमीन पर फैल गया।

इतनी देर बाद हवा का एक झोंका आया। ठंडी हवा का झोंका। रात खतम हो चली है। पूरब क्षितिज पर आसमान का फीका किनारा दिखाई पड़ने लगा। कोई डाउन मेल ट्रेन स्टेशन पर रुकी। मुसाफिर उतरने लगे। मुसाफिर उतरते ही गये। लेकिन यहाँ से कोई ट्रेन में नहीं चढ़ा। स्टेशन से शोरगुल सुनाई पड़ने लगा।

ओस गिर रही है। रात के तीसरे पहर से स्टेशन के शेड पर, सड़क के किनारे और पीपल के पत्तों पर ओस जमने लगी है। वही पानी की बूंद बन कर पत्तों से टपक रही है। श्रीमती काफे के बहुत बड़े साइनबोर्ड पर जमी ओस बूंद-बूंद टपकने लगी।

रथीन के साथ और दो लड़के सड़क पर निकल पड़े हैं। वे दीवारों पर, पेड़ों पर कोई कागज चिपकाने लगे। छोटे-छोटे कागज, जिन पर कार्बन रख कर हाथ से कुछ लिखा गया है। अंधेरा छंटते ही लोगों की निगाह उन कागजों पर पड़ी। उन पर एकदम नयी बात लिखी है। इस इलाके के लोगों को ऐसी भाषा में ऐसे इश्तिहार पढ़ने को कभी नहीं मिले। इश्तिहार में लिखा है —

"लार्ड आरविन ने जिस ढंग का शासन भारतीयों को सौंपना चाहा है, वह धोखा है। लार्ड आरविन मुर्दाबाद ! सर्वहारा की क्रांति भारत में पूर्ण स्वतंत्रता लायेगी। हथियार का मुकाबला करने के लिए हथियार ले कर खड़े हो जाइए। ब्रिटिश साम्राज्यवाद का नाश हो।

वंदे मातरम् !"

श्रीमती काफे के पीछे के कमरे में बत्ती जल रही है। उस कमरे की हवा जेल की कोठरी की हवा की तरह भारी हो गयी है। गूंगे की सपाट तीखी निगाह की तरह कमरा सूना लग रहा है। कंडी, कोयला, पानी के घड़े, चूल्हा, मकड़ी के जाले वगैरह सब जानदार लग रहे हैं, लेकिन सब खामोश और सहमे हुए हैं। बिस्सू ने किस तरह जिंदा रहना चाहा, उसके यही सब तो गूंगे गवाह हैं।

सवेरे पुलिसवाले उन इश्तिहारों को उखाड़ कर फेंकने लगे, जिनको रथीन और उसके साथियों ने चिपकाया था। पुलिसवाले कागज के उन टुकड़ों पर पानी छिड़क कर उनको बांस की खपच्ची से उखाड़ने लगे। जो कागज आसानी से नहीं निकला, उसको बुरी तरह से नोचा गया। पुलिस के वही अफसर टहल रहे हैं, जिन्होंने कल श्रीमती काफे की तलाशी ली थी।

उधर बिस्सू का शव देखने के लिए श्रीमती काफे में भीड़ जुट गयी। डाक्टर आये हैं। उन्होंने शव का परीक्षण कर बताया कि इसने जहरीला खाना खा लिया था। इसका आमाशय ही गल गया है। यह भी एक तरह का कालरा है।

बाजार वाले होटल का उड़िया रसोइया भी आया है। वह अपनी धुन में कमर की दाद खुजला रहा है और मुंह बाये सब की बातें सुन रहा है। उसे देखने से ऐसा लगा कि वह कुछ भी नहीं समझ सका है। फिर भी वह अपने मन में यही सोचने लगा कि दान-पुण्य सारा बेकार चला गया। कम्बख्त मर ही गया। जैसे ही उसने सोचा कि बिस्सू मर गया है, वह डर गया। यह मौत बड़ी बुरी होती है। यह अपमृत्यु है। इससे आत्मा मुक्त नहीं होती। यह मौत स्वाभाविक नहीं है। यह सोचते ही उड़िया महाराज के रोंगटे खड़े हो गये। फिर तो बिस्सू भूत बन कर मुझको पकड़ेगा — उसने

सोचा। उसने डर के मारे बिस्सू के शव की तरफ से आँखें हटा ली। उसने एक बार कमरे में बगल-बगल और ऊपर-नीचे देख लिया। फिर वह वहाँ से खिसक गया।

आसपास के दुकानदार आपस में कहने लगे कि साला भुक्खड़ तो था ही, जरूर कहीं से कुछ चुरा कर खा लिया होगा। यह सुन कर कोई-कोई हँसने लगा।

हीरेन को बड़ा पश्चात्ताप होने लगा। कई दिन पहले तक वह बिस्सू से चिढ़ा हुआ था। बिस्सू उसकी निगाह में भांड़ जैसा था। उसकी बात पर कभी किसी को विश्वास नहीं होता था। एकदम उजबक और पेटू था। लेकिन अब हीरेन के मन में दया आ गयी। बिस्सू भी तो इसी देश का भूखा-नंगा निरक्षर वासी था।

रथीन और सुनिर्मल आये। प्रियनाथ भी आये हैं। रथीन और सुनिर्मल उनको प्रिय भैया कहते हैं। प्रियनाथ नारायण के मित्र और उन्हीं की उम्र के हैं। कई दिन हुए वे जेल से छूटे हैं। उनके विचार और नारायण के विचार में सूक्ष्म अंतर है। गांधी जी के विचार से प्रियनाथ का विरोध है। इस इलाके में उनका चलना-फिरना नियंत्रित है। वे स्टेशन नहीं छोड़ सकते। याने, पुलिस को इत्तिला दिये बिना वे कहीं बाहर नहीं जा सकते। इसके लिए उनको यहाँ की पुलिस से अनुमति लेनी पड़ती है। मजदूरों की बस्ती में वे जा नहीं सकते।

इन तीनों ने और कई अन्य लड़कों से मिल कर बिस्सू का शव बाहर निकाला। इससे चारों तरफ दुर्गंध फैल गयी।

बिस्सू देख रहा है। आश्चर्य से वह सब कुछ देख रहा है। उसका मुँह खुला हुआ है। चेहरा जरा ज्यादा नुकीला हो गया है। दाँत दिखाई पड़ रहे हैं। गर्दन टेढ़ी हो गयी है। होंठों और आँखों पर मक्खियाँ बैठी हुई हैं।

हीरेन ने मन ही मन कहा —

अन्तकाले च मामेव स्वयम्मुक्ता कलेवरम्।

लेकिन बिस्सू का क्या कोई भगवान् था? उसने तो सिर्फ जिन्दा रहना चाहा था।

म्युनिसिपैलिटी की तरफ से दो लोगों ने आ कर कमरा साफ करना शुरू कर दिया।

इधर भजन सोच रहा है कि बिस्सू ने ऐसा क्या खा लिया कि उसकी जान चली गयी। उस कमरे में तो कोई ऐसी चीज नहीं थी। हाँ, पावरोटी के कई टुकड़े थे और थोड़ी सी बची घुंघनी थी। लेकिन इनमें से कोई भी चीज जहरीली नहीं हो सकती। फिर क्या बिस्सू ने कहीं से कोई चीज चुरा कर खायी थी?

थोड़ी देर यह सब सोचने के बाद भजन ने दूसरी तरफ ध्यान दिया। एक आदमी मरा है, लेकिन कोई रो नहीं रहा है। भजन को बिस्सू के घरबार का पता नहीं है। भजन यह भी नहीं जानता कि उसका कौन है और कौन नहीं है। हाँ, इतना पता है कि उसने शादी नहीं की थी। उसके माँ-बाप थे। लेकिन अब वे हैं या नहीं, यह भी पता नहीं है।

भजन ने बाहर खड़े लोगों की तरफ देखा। कई लोग हँस रहे हैं और बाकी चुपचाप खड़े हैं। उनके चेहरे पर शोक या विषाद की कोई रेखा तक नहीं है। बिस्सू जब जिंदा था, तब लोग उसका उठना-बैठना, चलना-फिरना और बात करने का ढंग देख कर हँसते थे। अब वह मर चुका है। फिर भी लोग उसे देख कर हँस रहे हैं।

किसी ने दबी आवाज में कहा — इस दुकान को अभिशाप लगा है।

भजन चौंक पड़ा। अभिशाप ? उसने कमरे को अच्छी तरह देख लिया। अभिशाप नहीं, श्रीमती काफे विषाद से भर उठा है। दीवार पर लगे चित्रों की ओर भजन का ध्यान गया। वह रहे देशबंधु चित्तरंजन दास। हमेशा के लिए उन्होंने आँखें बंद कर ली हैं। दूसरी तरफ प्रौढ़ रवीन्द्रनाथ ठाकुर सामने देख रहे हैं। तलवार लिये सिराजुद्दौला खिड़की से न जाने क्या देख रहे हैं। सलीब पर चढ़े ईसा मसीह की मूर्ति जूडास के विश्वासघात की दारुण परिणति जैसी लग रही है। रैफेल के माँ-बेटे का सार्वजनीन रूप भी विराजमान है। इनके अलावा एक विशाल लैंडस्केप भी है। बूढ़े बरगद के पाँवों के पास से लाल सड़क टेढ़ी-मेढ़ी हो कर न जाने कहाँ चली गयी है। लेकिन वह सड़क वहाँ तक दिखाई पड़ रही है जहाँ धरती का किनारा आसमान को छू रहा है।

मानो उसी सड़क से भजन का मन घर से रूठे बाउल की तरह निकल पड़ा। बंगाल का लोकगायक बाउल बावरा ही तो होता है। घर में उसका मन लगता ही नहीं। उसी तरह भजन भी इस समय निकल पड़ना चाहता है। उसे दूर, बहुत दूर जाना है। वह इस संसार के बाहर जाना चाहता है। क्या बिस्सू सचमुच श्रीमती काफे के अभिशाप से मरा है ? भजन ने मन ही मन कहा — नहीं ! बिस्सू इस संसार के अभिशाप से मरा है। इस संसार का उसे शाप लगा है।

बिस्सू की मिट्टी ले कर लोग चले गये। जो लोग नहीं गये, बाहर खड़े रहे। उनमें से किसी ने बिस्सू का शव ले जा[illegible] के लिए कहा — "छी ! छी ! इन लोगों को जात-कुजात का भी ख्याल [illegible] मि[illegible] नहीं कौन लोग ढो रहे हैं ?"

तरह के हैं, लेकिन हीरेन ने सिर्फ एक को देखा ! रमिया ने लंहगे की तरह साड़ी पहन रखी है। उस साड़ी का घेरा आगे-पीछे बल खा रहा है। मझोला कद। गठा हुआ बदन। रमिया के अंग-अंग में कसाव है। रंग सांवला। नाक-नक्श में कोई खास बात नहीं है। घूंघट खिसक चुका है, धूल भरे बाल बिखरे हैं।

पुलिस के नौजवान अफसर घूम-फिर कर सब को देख रहे हैं। उन्होंने मन ही मन सोचा कि ये लोग भी अजीब हैं। इनका कुछ भी समझ में नहीं आता। प्रियनाथ बाबू कंधे पर अर्थी लिये कहाँ गये ? श्मशान घाट तो उस इलाके में नहीं है, जहाँ वे जा सकते हैं। अब वे श्मशान जाते समय मजदूरों की बस्ती में जहर फैलायेंगे तो क्या होगा ? मजदूरों की बस्ती तो श्मशान जाने के रास्ते में ही पड़ती है। पुलिस अफसर से रहा नहीं गया। वे श्मशान घाट की तरफ चले।

इधर एक बंगाली सिपाही खपची से इश्तिहार उखाड़ते-उखाड़ते मन ही मन पढ़ रहा है — मारविन मुर्दाबाद !···सर्वहारा क्रांति।···ब्रिटिश साम्राज्यवाद।··· वंदे मातरम् ! फिर अचानक उस सिपाही की निगाह श्रीमती काफे की तरफ उठ गयी। उसने सुना है कि ये सब कागज वहीं छिपा कर रखे जाते हैं।

कचौड़ी वाला चिल्ला रहा है — कचौड़ी चाहिए""कचौड़ी-सब्जी। गरमागरम कचौड़ी।—लेकिन बिस्सू की जीभ से लार टपकना हमेशा के लिए बंद हो चुका है !

भजन अपने मकान के सामने आ कर खड़ा हुआ। यही उसकी पुरानी दुकान थी। उसी के सामने वह खड़ा हुआ। यहीं से शुरुआत है। बाँस-बल्लियों से बनाया कमरा टेढ़ा हो चुका है। खपचियों के टट्टर में दीमक लग जाने से बड़े-बड़े छेद हो गये हैं। लकड़ी का बोर्ड अभी तक है। उसकी लिखावट धुंधली पड़ गयी है। सिर्फ बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा 'चाय' अभी तक पढ़ा जा सकता है। दरवाजे पर न जाने किसने ईंट के टुकड़े से लिख दिया है — १ नं० श्रीमती काफे ! उसके नीचे लिखा है — लाट साहब भजन ··· लाट का पुछल्ला···लाट की दुम !

विशेषण देख कर भजन मुस्कराया। मुस्करा कर वह मकान के अंदर चला गया। मकान बड़ा सूना लगा। पहले, याने शादी से पहले यह मकान ऐसा सूना नहीं लगता था। फिर शादी के बाद तो बाल-बच्चे हुए, लेकिन अब ऐसा लगता है।

बकुल माँ खाना बना रही हैं। हालदार बाबू बाहर वाले बरामदे में बैठे हैं। अब उनमें पहले का सा दम-खम नहीं है। वे इसी तरह दिन भर बैठे रहते हैं। रात में देर तक यहीं बैठे रहना उनका काम है।

भजन का गला सूखा हुआ है। कमरे में घुस कर उसने छोटी अलमारी खोली, फिर बोतल हाथ में ले कर देखा कि वह खाली है। खाली कैसे हो गयी ? भजन के दिमाग में मानो आग लग गयी। उसने आग उगलती आँखों से एक बार हालदार बाबू,

याने बाप के कमरे की तरफ देखा। उसे समझते देर न लगी कि किसने बोतल खाली कर रखी है !

फिर भजन ने बोतल को दीवार पर दे मारा। झनझना कर बोतल टूटी और काँच के टुकड़े चारों तरफ बिखर गये। फिर भजन चिल्लाया, "आज से कोई मेरे कमरे में न घुसे और न किसी चीज में हाथ लगाये। इसका अंजाम अच्छा नहीं होगा।"

यह कह कर भजन धड़धड़ाता हुआ मकान से निकल गया।

हालदार बाबू जरा भी नहीं हिले और न उन्होंने गर्दन टेढ़ी की। हाँ, बोतल टूटने की आवाज से वे जरा चौंक पड़े थे। उनकी नाक के दोनों बगल शिकनें जरा गहरी हो गयी थीं। दोनों आँखें जरा बड़ी-बड़ी हो गयी थीं। बस, और कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई। वे बैठे-बैठे बार-बार लार निगलते रहे।

बकुल माँ कमरे में जा कर बोतल का एक-एक टुकड़ा शीशा उठाने लगीं। इसमें आश्चर्य करने की कोई बात नहीं है और न कुछ पूछने की जरूरत है। यह कोई नयी बात नहीं है।

लेकिन अब बरदाश्त नहीं होता। बकुल माँ के धीरज का बाँध मानो टूट चुका। वे तो सचमुच भजन की माँ नहीं हैं। फिर वे क्यों इतना गुस्सा बरदाश्त करेंगी ? इस घर में कोई उनके मान-सम्मान का ख्याल नहीं करता। फिर वे क्यों यहाँ आती हैं ? यहाँ उनके आने की क्या जरूरत है ? हालदार बाबू के कमरे की तरफ देख कर बकुल माँ का मन अफसोस से भर गया। उन्होंने मन ही मन हालदार बाबू के लिए कहा — आपके लिए, सिर्फ आपके लिए आज मेरी यह दुर्दशा है। लड़के मुझे छोड़ चुके हैं। लेकिन आप किसके पास रहेंगे ? यही तो मैं सोचती हूँ। जिंदगी भर आप ऐसा काम करते रहे कि आज इस घर से निकल पड़ने के लिए भी आपके पास दो कौड़ी नहीं है। फिर वैसा साहस भी आपमें नहीं है। कैसे रहेगा वैसा साहस ? मेरी सहेली का शाप लगा है न !

बकुल माँ रुक गयीं। यह सब सोचने से अब क्या होगा ? हालदार बाबू कभी वैसा नहीं कर सके। वे कभी सब कुछ छोड़-छाड़ कर खुले आसमान के नीचे खड़े नहीं हो सकते।

भजन की शादी के बाद कुछ दिनों के लिए बकुल माँ का मन न जाने कैसा हो गया था। प्रायः रोज ही वे कहीं न कहीं कीर्तन सुनने चली जाती थीं। अपने घर में भी वे कीर्तन कराती थीं। कीर्तनिया के अलावा कई अच्छे ब्राह्मणों को वे प्रतिदिन भोजन कराती थीं। उनका स्वभाव भी न जाने कैसा कंगाल सा हो गया था। उनमें रूप था। लेकिन वे विधवा थीं। विधवा हो कर भी वे चोरी-छिपे अपने को सजाने लगी थीं।

फिर बकुल माँ का मन अपने आप उस सबसे मुकर गया था। उन्हें लज्जा और अपमान का अनुभव हुआ था। अपने को धिक्कार कर उन्होंने वह सब बंद कर दिया था। फिर उन्होंने गाना शुरू किया। अपनी छाती को हलका करने का वह एक बहाना

था। उन्होंने किसी हद तक लाज-शरम को तिलांजलि दे दी। क्या होगा पाप के इस बोझ को ढोने से ? फिर बकुल माँ दिल खोल कर हँसने लगी। वे जोर-जोर से गाने लगी। गुनगुनाने लगी। खुल कर लोगों से बात करने लगी। सामने कौन है और कौन नहीं है, उन्होंने इसकी परवाह भी नहीं की। लोगों ने उनको गलत समझ लिया। उन्होंने सोचा, *समझा करें ! आज लोग एक तरह से सोचेंगे तो कल दूसरी तरह से।* इसलिए उन्होंने गीत की एक कड़ी गुनगुनायी — देह के पिंजड़े में मनुआँ, अब तुझे ना बाँधूंगी।

बकुल माँ हालदार बाबू के सामने निस्संकोच हो कर जाने लगी। बोलना-चालना, हँसना-गाना, किसी बात मे संकोच नहीं रहा।

फिर भी मनुआँ देह का पिंजड़ा छोड कर असीम में खो नहीं गया। बकुल माँ भी अपने को पूरी तरह उन्मुक्त नहीं कर सकीं। वे भी तो अपने को असीम में नहीं ले जा सकीं। उनकी हँसी की गूँज भी तो कभी-कभी रुलाई जैसी सुनाई पड़ती है। पता नहीं, यह सब क्या है ! बकुल माँ ने मन ही मन कहा — पता नहीं, क्यों ऐसा होता है ? अगर पता ही रहता तो क्यों ऐसा होता ?

बोतल के टुकडे उठाते-उठाते बकुल माँ ने जोर-जोर से सिर हिलाया। उनके मन मे पता नहीं किसने कहा कि यह सारा झमेला उसी मुए श्रीमती काफे की वजह से है। नाम भी कैसा है श्रीमती काफे ! उसी के कारण इस घर मे अशांति शुरू हुई है। वह तो मानो इनसान को पागल बनाने का एक अड्डा है, हथकंडा है !

भजन कलकत्ते से लौट रहा है। अलीपुर सेंट्रल जेल मे वह नारायण भैया से मिलने गया था। फिर स्यालदा स्टेशन आते समय उसने कई कुल्हड़ देशी शराब गटक ली।

फिर जेब से पैसा निकाल कर भजन टिकटघर से ट्रेन का टिकट खरीदने के लिए आगे बढ़ा तो किसी पर पाँव पड़ गया। उसने नीचे देखे बिना ही कहा, "बाप रे ! कौन है ? राधे, रास्ता छोड़ दे ! मुझे मथुरा नगरी जाना है, वहाँ राजपाट सँभालना है।"

पास खड़े दो लोग हँस पडे। वे समझ गये कि यह शराबी है और नशे में चूर है। इसलिए ड्रामे का डायलाग झाड़ रहा है।

अब भजन ने नीचे झुक कर ठीक से देखा, पाँवों के पास एक लड़का लेटा हुआ है। मरियल सा वह लड़का हाँफ रहा है। अरे, यह तो राधा नहीं है कि श्रीकृष्ण को रोकने के लिए रास्ते में लेट गयी है। भजन ने गौर किया — वाह ! वाह ! साँवली सूरत वाला कृष्ण भगवान् है। लेकिन लगा कि यह कृष्ण भगवान् कई दिनों से भूखा है। शरीर धूल से सन गया है। उस पर मैल के धब्बे जम गये हैं। सींक जैसी काठी। कोमल गालों की चमड़ी सिकुड गयी है। आँखें धँसी हुई हैं।

सब कुछ देख लेने के बाद भजन ने उस लड़के से पूछा, "धूल मे क्यों लोट रहे हो मेरे बाप ? घर में नहीं रह सकते ?"

याने बाप के कमरे की तरफ देखा। उसे समझते देर न लगी कि किसने बोतल खाली कर रखी है !

फिर भजन ने बोतल को दीवार पर दे मारा। झनझना कर बोतल टूटी और काँच के टुकड़े चारों तरफ बिखर गये। फिर भजन चिल्लाया, "आज से कोई मेरे कमरे में न घुसे और न किसी चीज में हाथ लगाये। इसका अंजाम अच्छा नहीं होगा।"

यह कह कर भजन धड़धड़ाता हुआ मकान से निकल गया।

हालदार बाबू जरा भी नहीं हिले और न उन्होंने गर्दन टेढ़ी की। हाँ, बोतल टूटने की आवाज से वे जरा चौंक पड़े थे। उनकी नाक के दोनों बगल शिकनें जरा गहरी हो गयी थीं। दोनों आँखें जरा बड़ी-बड़ी हो गयी थीं। बस, और कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई। वे बैठे-बैठे बार-बार लार निगलते रहे।

बकुल माँ कमरे में जा कर बोतल का एक-एक टुकड़ा शीशा उठाने लगीं। इसमें आश्चर्य करने की कोई बात नहीं है और न कुछ पूछने की जरूरत है। यह कोई नयी बात नहीं है।

लेकिन अब बरदाश्त नहीं होता। बकुल माँ के धीरज का बाँध मानो टूट चुका। वे तो सचमुच भजन की माँ नहीं हैं। फिर वे क्यों इतना गुस्सा बरदाश्त करेंगी? इस घर मे कोई उनके मान-सम्मान का ख्याल नहीं करता। फिर वे क्यों यहाँ आती हैं? यहाँ उनके आने की क्या जरूरत है? हालदार बाबू के कमरे की तरफ देख कर बकुल माँ का मन अफसोस से भर गया। उन्होंने मन ही मन हालदार बाबू के लिए कहा — आपके लिए, सिर्फ आपके लिए आज मेरी यह दुर्दशा है। लड़के मुझे भी छोड़ चुके हैं। लेकिन आप किसके पास रहेंगे? यही तो मैं सोचती हूँ। जिंदगी भर आप ऐसा काम करते रहे कि आज इस घर से निकल पड़ने के लिए भी आपके पास दो कौड़ी नहीं है। फिर वैसा साहस भी आपमें नहीं है। कैसे रहेगा वैसा साहस? मेरी सहेली का शाप लगा है न!

बकुल माँ रुक गयीं। यह सब सोचने से अब क्या होगा? हालदार बाबू कभी वैसा नहीं कर सके। वे कभी सब कुछ छोड़-छाड़ कर खुले आसमान के नीचे खड़े नहीं हो सकते।

भजन की शादी के बाद कुछ दिनों के लिए बकुल माँ का मन न जाने कैसा हो गया था। प्रायः रोज ही वे कहीं न कहीं कीर्तन सुनने चली जाती थीं। अपने घर में भी वे कीर्तन कराती थीं। कीर्तनिया के अलावा कई अच्छे ब्राह्मणों को वे प्रतिदिन भोजन कराती थीं। उनका स्वभाव भी न जाने कैसा कंगाल सा हो गया था। उनमें रूप था। लेकिन वे विधवा थीं। विधवा हो कर भी वे चोरी-छिपे अपने को सजाने लगी थीं।

फिर बकुल माँ का मन अपने आप उस सबसे मुकर गया था। उन्हें लज्जा और अपमान का अनुभव हुआ था। अपने को धिक्कार कर उन्होंने वह सब बंद कर दिया था। फिर उन्होंने गाना शुरू किया। अपनी छाती को हलका करने का वह एक बहाना

था। उन्होंने किसी हद तक लाज-शरम को तिलांजलि दे दी। क्या होगा पाप के इस बोझ को ढोने से ? फिर बकुल माँ दिल खोल कर हँसने लगीं। वे जोर-जोर से गाने लगी। गुनगुनाने लगी। खुल कर लोगो से बात करने लगी। सामने कौन है और कौन नही है, उन्होने इसकी परवाह भी नहीं की। लोगों ने उनको गलत समझ लिया। उन्होंने सोचा, समझा करें ! आज लोग एक तरह से सोचेंगे तो कल दूसरी तरह से। इसलिए उन्होंने गीत की एक कड़ी गुनगुनायी — देह के पिंजड़े में मनुआं, अब तुझे ना बाँधूंगी।

बकुल माँ हालदार बाबू के सामने निस्संकोच हो कर जाने लगी। बोलना-चालना, हँसना-गाना, किसी बात में संकोच नही रहा।

फिर भी मनुआं देह का पिंजड़ा छोड़ कर असीम में खो नही गया। बकुल माँ भी अपने को पूरी तरह उन्मुक्त नही कर सकीं। वे भी तो अपने को असीम में नहीं ले जा सकी। उनकी हँसी की गूंज भी तो कभी-कभी रुलाई जैसी सुनाई पड़ती है। पता नही, यह सब क्या है ! बकुल माँ ने मन ही मन कहा — पता नही, क्यो ऐसा होता है ? अगर पता ही रहता तो क्यों ऐसा होता ?

बोतल के टुकड़े उठाते-उठाते बकुल माँ ने जोर-जोर से सिर हिलाया। उनके मन मे पता नही किसने कहा कि यह सारा झमेला उसी मुए श्रीमती काफे की वजह से है। नाम भी कैसा है श्रीमती काफे ! उसी के कारण इस घर मे अशांति शुरू हुई है। वह तो मानो इनसान को पागल बनाने का एक अड्डा है, हथकंडा है !

भजन कलकत्ते से लौट रहा है। अलीपुर सेंट्रल जेल में वह नारायण भैया से मिलने गया था। फिर स्यालदा स्टेशन आते समय उसने कई कुल्हड़ देशी शराब गटक ली।

फिर जेब से पैसा निकाल कर भजन टिकटघर से ट्रेन का टिकट खरीदने के लिए आगे बढ़ा तो किसी पर पाँव पड़ गया। उसने नीचे देखे बिना ही कहा, "बाप रे ! कौन है ? राधे, रास्ता छोड़ दे ! मुझे मथुरा नगरी जाना है, वहाँ राजपाट सँभालना है।"

पास खड़े दो लोग हँस पड़े। वे समझ गये कि यह शराबी है और नशे में चूर है। इसलिए ड्रामे का डायलाग झाड़ रहा है।

अब भजन ने नीचे झुक कर ठीक से देखा, पाँवो के पास एक लड़का लेटा हुआ है। मरियल सा वह लड़का हाँफ रहा है। अरे , यह तो राधा नही है कि श्रीकृष्ण को रोकने के लिए रास्ते में लेट गयी है। भजन ने गौर किया — वाह ! वाह ! साँवली मूरत वाला कृष्ण भगवान् है। लेकिन लगा कि यह कृष्ण भगवान् कई दिनो से भूखा है। शरीर धूल से सन गया है। उस पर मैल के धब्बे जम गये हैं। सींक जैसी काठी। कोमल गालों की चमड़ी सिकुड़ गयी है। आँखें धँसी हुई हैं।

सब कुछ देख लेने के बाद भजन ने उस लड़के से पूछा, "धूल मे क्यो लोट रहे हो मेरे बाप ? घर में नही रह सकते ?"

बच्चे के मुंह से मानो आवाज नहीं निकल रही है। मानो उसमें सोचने-समझने की भी शक्ति नहीं रह गयी है। उसने किसी तरह बुदबुदा कर कहा, "बाबू जी।"

"अबे, बाबू कह कर काबू में कर लेगा क्या? इस कलकत्ते में मेरा घरबार नहीं है। खैर, तेरा घर कहां है?"

"चटगांव।"

भजन उस लड़के पर झुक गया और बोला, "बाप रे! बड़ी खतरनाक जगह है। मां-बाप हैं?

बैठने की कोशिश करते हुए उस लड़के ने क्या जवाब दिया, भजन समझ नहीं सका। उसने सिर्फ यह देखा कि लड़के की आंखों में आंसू भर आये हैं। भजन ने सोचा कि चटगांव से इतनी दूर कलकत्ते के रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म पर इतना छोटा लड़का पड़ा है तो इसके मां-बाप जरूर नहीं होंगे। फिर भजन ने कहा, "फिर क्यों रो रहा है? नखरे की रुलाई बंद कर और आंसू पोंछ ले! चाय बना सकेगा? मीट चाप?"

"जी हां"

इस पर मुंह बना कर भजन ने कहा, "हां, सब बना लेगा! हर बात में जी हां! लाट साहब भजन पीटेगा तो बरदाश्त कर लेगा?"

लड़के के मुंह से निकला, "बाबू जी।"

"समझ नहीं सका? मेरा नाम है भजन। लाट साहब भजन। सिरीमती काफे का प्रोप्राइटर। समझ गया न? तेरा क्या नाम है?"

"जी, चरण।"

"चरण! किसके चरण मेरे बाप?"

लड़का इसका कोई जवाब न दे सका, हांफने लगा।

भजन बोला, "फिर दो ही टिकट ले रहा हूं मेरे बाप! एक साला तो खा के मर गया, अब तुम कैसे मरोगे यह तो सिरीमती ही जानती है।"

फिर भजन ने खोमचे वाले को हांक लगायी, "अबे, ए खोमचा! इधर आ, मेरे बाप को कुछ खिला दे।"

शराबी देख कर खोमचा वाला सहम गया। फिर उसने एक दोना चरण की ओर बढ़ा दिया।

भजन चरण को घर ले आया। घर में खाना खिला कर वह उसी रात चरण को श्रीमती काफे में ले गया। श्रीमती काफे की बत्ती जलाते ही भजन एकबारगी चरण को भूल गया। उसे बिस्सू की याद आ गयी। परसों रात भी बिस्सू इस कमरे में था। लेकिन आज वह नहीं है। आज ब्लीचिंग पाउडर की तेज बू आ रही है। मानो वही बू बताने लगी कि बिस्सू मर गया है।

चरण मुंह बाये कमरे को देखने लगा। चूल्हा, कंडी, कोयला और पानी के घड़े। शराबी बाबू कई बार बता चुका है कि इस कमरे में एक आदमी मरा है। लेकिन कैसे, यह शराबी बाबू को भी पता नहीं। शक है कि खाने की वजह से वह आदमी मरा है।

फिर भी पूरा मामला साफ नहीं है।

भजन ने चरण को सामने वाला कमरा दिखा दिया और उससे कहा, "तू इसी कमरे में सोयेगा। तड़के उठ कर चूल्हा जलाना और होटल साफ करना पड़ेगा। समझ गया न? अब बता, जिंदगी में कितनी बार चोरी की है?"

"जी?"

चरण सकपका गया। फिर भी इतनी देर में वह समझ गया है कि यह शराबी बाबू दयालु है।

भजन बोला, "मैं पूछ रहा हूँ कि चोरी-ओरी करने की तो आदत नहीं है?"

संकोच के साथ चरण मुस्कराया।

भजन बोला, "मुस्करा रहा है? गर्दन पर रद्दा पड़ेगा तो मुस्कराना भूल जायेगा। हाँ, चोरी करेगा तो बिस्नू की तरह चल बसेगा। इतना बता दिया। अब सो जा।"

इतना कह कर भजन निकल गया।

दरवाजा बंद कर चरण कमरे के बीचोबीच आ कर खड़ा हुआ। उसने एक-एक कर टेबुल, कुर्सी, तस्वीर और बत्ती वगैरह हर चीज देख ली। बत्ती के शेड पर होटल का नाम लिखा हुआ है। उसको भी चरण ने हिज्जे कर पढ़ लिया — श्रीमती काफे। फिर उसकी निगाह आईने पर पड़ी। उस आईने में उसे अपनी शक्ल ... पड़ी।

चरण के बाल घुँघराले हैं। आँखें छोटी-छोटी, नाक चिपटी और होंठ ... की तरह। पूर्वोत्तर सीमा-प्रांत की छाप उसके चेहरे पर है। नाटा, लेकिन मजबूत शरीर। इस समय चरण दुबला-पतला और मरियल है, लेकिन उसका बदन देखने से लगता ... कि खाना मिलेगा तो हट्टा-कट्टा बनेगा। उम्र सोलह-सत्रह से अधिक नहीं है। मसें भीगे हैं। चेहरा लड़कियों का सा कोमल।

नये आश्रय में आ कर भी चरण बार-बार यही सोचता रहा कि कल ही ... यह आश्रय छिन न जाय। उस हालत में फिर सड़क पर निकलना पड़ेगा! और ... जान राह भटकना होगा। हो सकता है, फिर नया आश्रय मिलने से पहले ही रास्ते ... काम तमाम हो जाय। जिंदगी की शुरुआत से चरण का चलना शुरू हुआ है। जिंदगी के आखिर तक उसे चलना ही पड़ेगा। शायद यही भाग्य है। अगर स्याल... स्टेशन पर और दो दिन उस हालत मे पड़ा रहता तो शायद न बचता। फिर ... तक आना संभव न होता। सड़क पर कितने ही लोग मरे पड़े रहते हैं। आईने में ... अक्स भी चरण को एक मुर्दे का ही लगने लगा — नंग-धड़ंग और धूल से ... रिस लाश! वहाँ से गुजरने वाले लोग थू-थू कर रहे हैं और नाक-मुँह पर कपड़ा ... रहे हैं।

चरण की आँखों के आगे उसका पिछला जीवन झलकने लगा। उसे बचपन की और माँ-बाप की याद आयी। बचपन में वह इरावती के शस्य-श्यामल

पर खेला करता था। सिर पर आकाश का असीम विस्तार होता था। समुद्र की तेज लोनी हवा पेड़-पौधों और खेतों में खड़ी फसल को झकझोर कर मन को बेचैन कर देता था। उन दिनों चरण की जिंदगी हवा के झोंके के संग आसमान में उड़ने वाले पक्षी की खुशी की तरह थी। फिर भरपेट खाना और नवेले बछड़े की तरह आँखों में खुशी भर कर उछल-कूद मचाना ही उसका एकमात्र काम था।

लेकिन यह सब तब तक चलता रहा जब तक न चरण दस साल का हो गया। जब वह छोटा था, तब उसके जीवन में सब कुछ रहते हुए भी कुछ नहीं था। उसकी माँ नहीं थी। सौतेली माँ थी। माँ या सौतेली माँ न कह कर उसे एक ऐसी औरत कहना चाहिए जिसकी उम्र कम थी और शरीर मोटा था। उसकी तुलना में चरण का बाप बूढ़ा था। इसलिए उस औरत का जबर्दस्त नखरा था। दुधमुँही बच्ची की तरह वह फफक-फफक कर रोती थी और आये दिन चरण के बाप से कुछ न कुछ ऐंठती थी। उसी के बाद वह हँसने लगती थी। अब भी वह हँसी याद आती है तो चरण का मन घिनाने लगता है। उसी उम्र में उस औरत के दाँत पान खाते-खाते घिस कर लाल पड़ गये थे। जब-तब वह बीड़ी भी फूँकती थी। छोटी-छोटी काली आँखों में काजल लगाती थी। माथे पर काली बिंदी के नीचे सिंदूर की बिंदी रहती थी। पाँवों में वह कड़े पहनती थी और हाथों में ढेर सारी चूड़ियाँ। फिर रात-दिन पड़े-पड़े सोने की उसकी आदत थी।

चरण के बाप ने परचून की छोटी-सी दुकान रखी थी। उसकी पूँजी भी थोड़ी-सी थी। फिर भी चरण का बाप पालतू बंदर की तरह रात-दिन उस औरत के आगे-पीछे नाचता-फिरता था। वह औरत जो कुछ माँगती थी, फौरन उसे वह सब मिल जाता था। फिर भी उसका माँगना बंद नहीं होता था। चरण का बाप भी हमेशा उसके आगे हाथ जोड़े रहता था। उसी उम्र में कभी-कभी चरण का मन करता था कि बाप को घसीट कर बुरी तरह पीट दूं। चरण को अपनी माँ याद आती थी। वह कभी ऐसा नहीं करती थी। बाप भी उसके आगे इस तरह गुलाम बना नहीं फिरता था।

यही सब देख कर चरण का मन घर में नहीं लगता था। वह बाहर खेतों में, मैदान में और नदी के किनारे घूमा करता था। फिर भी कभी-कभी उसे सौतेली माँ के चंगुल में फँसना पड़ता था और वह औरत उससे हाथ-पांव दबवाती थी। उस समय उस औरत के बदन पर कपड़ा बहुत कम रहता था। वह जब चरण को सजा देती थी तब सिर्फ उसकी पिटाई करके ही नहीं मानती थी, बल्कि जो मन में आता था वही करती थी। एक दिन उसने थूक कर चरण को वह थूक चाटने के लिए मजबूर किया था।

भरी बरसात में इरावती कगारों तक लबालब भर जाती थी, लेकिन उस नदी से ज्यादा पानी चरण की आँखों में था। जिस दिन बाप उसे पीटता था, उस दिन वह खेत, मैदान और नाला पार कर बहुत दूर निकल जाता था और कभी न घर लौटने

का इरादा करता था। लेकिन ज्यों ही दूर से श्मशान दिखाई पड़ने लगता था, वह भाग आता था।

चरण का दिन तो किसी तरह कट जाता था, लेकिन रात उसके लिए नरक से ज्यादा तकलीफ़देह बन कर आती थी। उस समय उसकी सौतेली माँ उसके बाप से अपनी माँगें पूरी करवाती थी। चरण को सोया हुआ समझ कर उसकी सौतेली माँ खुल कर अपना जादू दिखाने लगती थी। चरण ने अपने गाँव-देहात में कई औरत-मर्दों का नग्न रूप देखा था, लेकिन वैसा बीभत्स नंगापन उसे कभी देखने को नहीं मिला। चरण की बचकानी आँखों में भी वह रूप बड़ा घिनौना था। लेकिन उसका बाप उस औरत की उसी शक्ल-सूरत पर लट्टू था।

उसके बाद वैसी ही एक रात को चरण के सिर पर गाज गिरी। उसकी सौतेली माँ ने उसके बाप से कहा कि लड़के को अब घर में बैठा कर रखने की जरूरत नहीं है। याने, चरण को घर से निकाल दिया जाय। फिर उस नरक में एक-एक पाप उबलने लगता है। बाप ने माँ की सलाह मान ली।

डर, रुलाई और पसीने के कारण चरण की वह रात कैसे गुजरी थी, वह आज तक उसे याद है। दूसरे दिन उसका बाप उसे ले कर गाँव से बहुत दूर एक बाजार में गया और वहाँ एक दुकान पर उसे काम में लगा कर लौटने लगा था। उस समय भी चरण ने बाप से कुछ नहीं कहा था। इनसान कितना नीचे गिर सकता है, यह देख कर भी वह रो न सका था। मानो उसे विश्वास ही नहीं हो रहा था कि यह शख्स मेरा बाप है।

उसके बाद नौकर का काम करते-करते चरण एक दुकान से दूसरी दुकान, एक तहसील से दूसरी तहसील और फिर एक जिले के एक शहर से दूसरे जिले के दूसरे शहर में पहुँचता रहा। इसी तरह चरण रंगून चला गया। फिर रंगून से वह सीधे कलकत्ते आया। अपने गाँव से कलकत्ता आने तक उसकी जो जिंदगी कटी थी, वह पूरी की पूरी बीभत्स घटनाओं से भरी थी। उसने खौफ़नाक और खतरनाक औरत-मर्द देखे, उनकी विचित्र भाषाएँ सुनीं और उनके विचित्रतर पेशे देखे। इसी तरह चरण ने अनेक दुर्गम घाटियाँ, बियावान जंगल और अँधेरे दर्रे पार किये।

चरण ने यह भी देखा कि मनुष्य कितना अद्भुत है और उसका जीवन कितना विचित्र। उसका रंग-ढंग भी कैसा-कैसा है। लेकिन उस सब के पीछे जो रहस्य है, वह है धन। धन का ही एक रूप है सोना। चरण ने सोना देखा है। पागल जानवरों की तरह लोग इस संसार की गहरी अँधेरी गुफ़ाओं में सिर्फ़ सोने की तलाश में मारा-मारा फिरते हैं। हँसी-प्यार, खून-कतल, सब का कारण सिर्फ़ यही सोना है। खून के बदले इनसान को सोना मिल जाय तो वह भी उसके लिए सस्ता है।

लेकिन जो सज्जन चरण को कलकत्ता ला रहे थे, वे देवता थे। उनका कोई नहीं था। वे किसी तरह की कमाई भी नहीं करते थे। जब वे कलकत्ता आने लगे थे, तभी चरण ने उन्हें पकड़ा था कि मुझे भी इस मुल्क से ले चलिए। उस सज्जन ने कहा

था — बहुत अच्छा। अगर तुम्हारे मालिक तुम्हें छोड़ दें तो मेरे साथ चलो। जो लोग अपना भाग्य बदलने दूसरे के मुल्क में आते हैं, वे निर्दयी होते हैं। भले ही किसी को फूटी कौड़ी मिलती हो, लेकिन उसी के लिए उसे बेरहम होना पड़ता है।

उसके बाद जहाज पर उस सज्जन ने समुद्र की तरफ देखते हुए कहा था — चरण ! हम-तुम सब अलग-अलग माँ के गर्भ से पैदा हुए हैं। लेकिन इसी तरह हम एक-दूसरे से परिचित होते रहते हैं। अपरिचय की बाधा हमें रोक नहीं सकती। वह देखो समुद्र और आकाश। दोनों की सीमा नहीं है। वे हमारे लिए दूर, अनजाने और असीम हैं। लेकिन हम उनको भी जीत लेंगे। तुम भी उसी असीम की तलाश करो।

चरण उस सज्जन की एक भी बात ठीक से नहीं समझ सका था। सिर्फ उसकी आंखों से आँसू की धाराएँ बह चली थीं। जिंदगी में उसे इतना प्यार कभी नहीं मिला था।

लेकिन वे सज्जन अचानक चल बसे ! डेक पर बातचीत करके वे केबिन में जा कर लेट गये। उन्होंने चरण से कहा — बेटा, जरा सीना सहला दो।

सीना क्या, हड्डियों का ढांचा था। थोड़ा सहलाते ही वे सो गये। लेकिन फिर कभी वे नहीं उठे। कलकत्ते की पुलिस ने पूछताछ के लिए चरण को कई दिन रोक रखा, उसके बाद कलकत्ते के अपरिचित बंदरगाह में छोड़ दिया। फिर चरण बंदरगाह से स्यालदा रेलवे स्टेशन पहुँचा और उसके बाद वहीं नया मालिक लाट साहब भजन मिल गया। मालिक ने स्वयं अपना यह नाम बताया था — लाट साहब भजन। चरण को यह नाम बड़ा विचित्र लगा था। फिर यह होटल। इसका भी नाम कितना विचित्र है — श्रीमती काफे।

फिर चरण को याद आया कि परसों इस कमरे में एक आदमी मरा था। इसी कमरे में, जिसमें वह इस समय है। लेकिन जो आदमी मरा था, वह कहां का रहने वाला था, देखने में कैसा था, उसके कौन-कौन थे, यह सब कुछ भी चरण नहीं जानता। चरण यह भी नहीं जानता कि उसकी उम्र क्या थी, उसके भी माँ-बाप थे या नहीं और क्या उसे भी घर से दूर कर दिया गया था। चरण सिर्फ इतना ही जान सका है कि वह मरा है। लेकिन चरण को डर नहीं लगा। मौत और मुर्दे की बात पर आदमी बहुत डरता है। लेकिन चरण में वैसा डर नहीं है। मौत ने कभी उसका पीछा नहीं छोड़ा। लेकिन मौत कभी घात लगा कर उसे अपने गाल में नहीं ले सकी। परसों एक आदमी यहां मरा और आज चरण जिंदा रहने की ख्वाहिश लिये यहीं खड़ा है। आश्चर्य है ! जिंदगी और मौत पास-पास खड़ी हैं।

चरण को फिर जहाज के उस सज्जन की याद आयी। उन्होंने कहा था — वह देखो असीम समुद्र और अनंत आकाश। उन असीम अपरिचितों को हम जीत लेंगे। तुम भी असीम की तलाश करो चरण !

लेकिन वह असीम क्या है ? क्या है उस असीम में ? चरण कुछ भी नहीं समझ पाता। वह जमीन पर लेट गया। अपनी धोती का एक छोर बिछा कर वह लेटा और बहुत जल्दी सो गया।

रात्रि के बाद दिन और दिन के बाद रात्रि। चक्रवत् समय का रूप बदलता गया, माने काल की गति अव्याहत रही।

पुलिस के हंगामे के बाद श्रीमती काफे का कारोबार बहुत कम हो गया था, लेकिन अब स्थिति में बहुत सुधार हो चुका है। सवेरे और शाम को भीड़-भाड़ होने लगी। उधर भजन भी दिनों दिन न जाने कैसा उद्भ्रांत-सा हो चला। जैसे उसके पीने की आदत बढ़ी है, वैसे उसका पागलपन भी बढ़ा है। कभी-कभी उसका चेहरा विकृत हो जाता है और वह घंटों पेट दबा कर पड़ा रहता है। उसके शरीर में रोग प्रवेश कर चुका है। लेकिन वह कभी यह बात खुल कर किसी से नहीं कहता। उसने चरण के आगे आत्मसमर्पण कर दिया। एक तरह से दुकान का सारा भार चरण पर आ गया। यहाँ तक कि रुपये-पैसे का लेन-देन भी वही करने लगा।

आजकल अक्सर शाम को प्रियनाथ से कृपाल और उसके साथियों की बहस छिड़ जाती है। लेकिन इसे सही माने में बहस नहीं कहा जा सकता। सब मिल कर प्रियनाथ को व्यंग्यबाणों से जर्जरित करते हैं। प्रियनाथ का मजाक उड़ाया जाता है और हँसी का फ़ुहारा फूट पड़ता है। प्रियनाथ एकदम अकेला पड़ गया है। हालाँकि हीरेन प्रियनाथ का मजाक नहीं उड़ाता। वह दिमाग ठंडा रख कर बहस करता है। लेकिन अंत तक होता यह है कि वह भी प्रियनाथ को बुरा-भला कहने लगता है।

देश की राजनीति भी ऐसा मोड़ लेने लगी कि राजनीतिक कार्यकर्ताओं की आपसी जबानी लड़ाई काफी हद तक कम हो गयी। सरकार और कांग्रेस के बीच समझौता होने की आशा क्षीण हो चली। गांधी जी ने 'यंग इंडिया' में घोषणा की कि अगर सरकार मेरी ग्यारह सूत्री माँगें स्वीकार कर लेगी तो जन-आंदोलन की जरूरत नहीं पड़ेगी। लेकिन सरकार ग्यारह माँगों में से एक भी मानने को तैयार नहीं हुई। इसलिए सभी में उत्तेजना है और सभी कुछ होने की प्रतीक्षा करने लगे। देश भर में बेचैनी फैल गयी। समाचार पत्र उग्र विचार वाले राजनीतिक कार्यकर्ताओं को बार-बार गांधी जी के आदर्श की याद दिलाने लगे। आतंकवादियों को भी चेतावनी दी जाने लगी।

एक दिन कृपाल ने प्रियनाथ को साफ़-साफ़ बता दिया कि तुम श्रीमती काफे में आते हो, इसलिए पुलिस की नजर इधर पड़ रही है। अब तुम्हें यहाँ नहीं आना चाहिए। इसका जवाब भजन ने दिया कि जिसका दिल चाहेगा वही यहाँ आयेगा और जिसका नहीं चाहेगा, वह नहीं आयेगा। सब को लगा कि भजन प्रियनाथ की तरफ़दारी कर रहा है।

कृपाल ने सोचा कि यह भी खूब रहा! जिसका भला चाहा, वही बुरा बन गया। मैंने तो भजन की दुकानदारी का ख्याल कर के ऐसा कहा और भजन ने [illegible] चुप करा दिया। फिर हीरेन भी इस तरह प्रियनाथ को भगाना नहीं चाहता। [illegible] गरीब घर का है। हीरेन ने कई बार उसकी आर्थिक सहायता की है। हीरेन [illegible] को भी मानता है कि कुछ भी हो, हम सभी कांग्रेस के सदस्य हैं। [illegible]

कोई मतभेद है तो विचार-विमर्श के द्वारा उसे दूर किया जाना चाहिए ।

रात के आठ बजे के बाद जब बहुत से लोग चले गये, तब बंगाली आया । बंगाली और भी कई दिन आया है । आते ही वह श्रीमती कॉफे के सामने बरामदे में धम से बैठ जाता है । फिर थोड़ी देर भजन से बक-बक कर के वह चल देता है ।

बंगाली आज भी आया । आज वह नशे में चूर है । बरामदे के सामने खड़े हो कर उसने गाना शुरू कर दिया । थोड़ी देर गा लेने के बाद वह धम से बरामदे में बैठ गया ।

भजन ने पूछा, "क्या हुआ ?"

दीवार से टेक लगाते हुए बंगाली ने कहा, "क्या बताऊँ देवता, तुमने सब चौपट कर दिया । तुम बाबू लोग बड़े विचित्र हो । पहले सड़क के किनारे तुम्हारी छप्‍ वाली दुकान थी और वहाँ भी चाय पीने जाता था । वहाँ चाय पी कर मजा आता था उस समय तुम हमारे आदमी थे, लेकिन अब पराये हो गये हो ।"

यह बात भजन को चुभ गयी । उसने पूछा, "ऐसा क्यों कह रहे हो बंगाली ?

"क्यों न कहूँ ? जिस दिन घर में रोटी नहीं मिलती थी, उस दिन तुम्हारे यह दो पैसे की घुंघनी खा कर रह जाता था । लेकिन अब तुम्हारी दुकान की तरफ देख से डर लगता है ।"

भजन बोला, "शायद इसी लिए तू कभी मेरी दुकान के अंदर नहीं आता

आत्मीयता भरी भाषा में भजन की बात करते देख बंगाली शराबी की हँ हँसता रहा । वह बोला, "अंदर जा कर कहाँ बैठूंगा ? उस कुर्सी पर ? बाप रे ! स से गुजरते समय अगर बीवी देख लेगी तो वह मुझे पहचान नहीं पायेगी । बेटा भी लेगा तो वह भी साला मुझे पहचान नहीं पायेगा देवता ! सोचेगा कि पता नहीं लाट साहब का बेटा बैठा है ।"

यह सुन कर सब हँसने लगे । इस समय दुकान में प्रियनाथ, हीरेन, गोल चटर्जी और कई दूसरे लोग हैं । कृपाल नहीं है । वह इस समय सारदा चौधुरी बैठक में जमा होगा ।

भजन कुर्सी छोड़ कर आगे बढ़ा । उसने बंगाली को दोनों हाथों से पकड़ उठाया और कहा, "चल ! आज लाट साहब का बेटा बन कर ही बैठेगा ।"

बंगाली हो-हो कर के हँसने लगा और बोला, "क्या कर रहे हो देवता ? पर बैठूंगा तो गिर पड़ूंगा ! सच कहता हूँ । माँ की कसम !"

"अगर गिर पड़ेगा तो मालिश कर दूंगा ! लेकिन ऐसी झूठी बदनामी नहीं सुनने वाला ।"

इतना कह कर भजन ने बंगाली को खींच कर उठाया और उसे होटल के ले जा कर हीरेन के पास कुर्सी पर बैठा दिया । उसके बाद कहा, "अब बता कि लाट साहब भजन की दुकान पर दो पैसे की घुंघनी नहीं बिकती, या कोई खरीद

नहीं खाता ? हाँ, घुंघनी दोने में नहीं, चीनी मिट्टी की प्लेट में मिलेगी। क्या उससे तेरी जात चली जायेगी ?''

''जात जायेगी तो तुम्हारी दुकान की जायेगी देवता ! हम यह सब बला नहीं पालते।''

यह कह कर बंगाली कुर्सी छोड़ कर नीचे जमीन पर बैठ गया और बोला, ''लाओ, दो पैसे की घुंघनी दो देवता ! चख कर घर चलें। कुर्सी पर नहीं बैठ सकता।''

फिर हीरेन पर निगाह पड़ते ही बंगाली ने उसके पाँव छुए और कहा, ''गुस्सा मत करना बाबू साहब, शराबी-कबाबी आदमी हूँ। सोचा था, आपसे एक बात कहूँगा। अभी कहूँ ?''

हीरेन नियोगी को बुरा लगने लगा। लेकिन छुटकारा पाने का कोई उपाय नहीं है। उसने बेमन से कहा, ''कहो।''

ऐसा जवाब पा कर बंगाली का चेहरा गंभीर हो गया। उसकी लाल आँखों से खूँखारपन झलकने लगा। उसने कहा, ''उस दिन मीटिंग में आप लोगों ने कहा कि हम देश के लोगों को पढ़ना-लिखना सिखायेंगे और जात-कुजात का भेदभाव मिटा देंगे। उस दिन कलकत्ते से भी कोई बाबू आये थे और उन्होंने भी यही कहा।''

हीरेन ने कहा, ''शायद तुम्हें वह सब पसंद नहीं आया ?''

बंगाली बोला, ''पसंद क्यों नहीं आयेगा ? लेकिन एक बात है बाबू। हम आपके मंदिर में जाना नहीं चाहते। इसलिए जात-कुजात के भेदभाव को मिटाने का सवाल ही नहीं उठता। हम लोगों को सिर्फ भरपेट रोटी खा सकने का रास्ता बता दीजिए। बारहों महीने बीवी-बच्चों को भूखों नहीं देख सकते। हर महीने सिर्फ चौदह रुपये तनख्वाह, क्या उसमें घट-बढ़ नहीं हो सकती ?''

हीरेन नाराज नहीं हुआ। लेकिन प्रियनाथ के सामने इस सवाल ने हीरेन को असमंजस में डाल दिया।

भजन ने कहा, ''कमबख्त मजा किरकिरा कर देता है। हीरेन, अब खिसक जाओ।''

हीरेन बोला, ''मैं नहीं खिसकूँगा।''

फिर हीरेन ने बंगाली से कहा, ''बंगाली, हम तो उसी के लिए स्वराज चाहते हैं। स्वराज सिर्फ हम लोगों के लिए नहीं, सबके लिए चाहिए। लेकिन उसकी मर्यादा बनाये रखनी होगी। भोजन बहुत बड़ी चीज है, यह मैं मानता हूँ। फिर भी स्वराज में क्या उसके अलावा और कुछ नहीं है ?''

बंगाली दूसरी तरफ देखता और सिर हिलाता रहा। धीरे-धीरे उसके जबड़े में कसाव आ गया। उसकी आँखें सिमट आयीं। उसके हाथों की मुट्ठियाँ कस गयीं। फिर वह बोला, ''है। वह भी आपसे बता रहा हूँ नियोगी बाबू। आप लोग उसका भी इंतजाम कीजिए। तो सुनिए ! हम लोगों के साथ लोटन काम करता है। वह पच्छिम का है। कुलियों की बस्ती में रहता है। हम लोगों का काम रास्ते का है, बाहर का है।

हाँ, तो हम दस जनों से कहा गया कि सबेरे पांच वजे तक यहाँ से ग्यारह मील दूर जाना पड़ेगा। साहब लोग तो बस कह कर छुट्टी पा गये। लेकिन एक ट्राली का भी इंतजाम नहीं किया गया। बताइए, हम लोग कैसे जायेंगे? काले साहब ने कहा कि पैदल जाना पड़ेगा। उस दिन उसी रास्ते में बाघ दिखाई पड़ा था। इधर हम लोगों को रात में ही रवाना होना था, नहीं तो सवेरे पाँच बजे तक कैसे पहुँचते? इसलिए डर के मारे लोटन ने कहा कि मैं उतने सवेरे नहीं जा सकता। फिर आप विश्वास नहीं करेंगे नियोगी बाबू, लोटन की बात सुन कर गोरे साहब ने लोटन के चूतड़ पर लात जमा दी और काला साहब उसके बाल पकड़ कर उसे थप्पड़ और घूंसा मारने लगा।"

इतना कह कर बंगाली उठ खड़ा हुआ। उसे देख कर लगा कि वह इसी वक्त अपने दुश्मन पर कातिलाना हमला कर के उसके टुकड़े-टुकड़े कर डालेगा। उसकी आँखें शोले जैसी लाल दिखाई पढ़ने लगीं। फिर उसने स्वर में भरपूर कड़वापन भर कर कहा, "मेरे तो मन में आया बाबू, घन की एक-एक चोट दे कर सफेद और काले कुत्तों के उन पिल्लों को खतम करके लाइन के किनारे डाल दूं! लेकिन मुझसे नहीं हो सका।"

अंतिम वाक्य बंगाली ने बहुत धीरे-धीरे कहा। उसकी गुर्राहट भरी तेज आवाज एकदम धीमी पड़ गयी। मानो विफल आक्रोश की भाप उसके गले में भर आयी। उसी भाप ने उसकी आँखों को गीला कर दिया। फिर उसने कहा, "वह सब तो हुआ। उसके बाद हरेक की तनखवाह से एक-एक रुपया काट लिया गया। इसी लिए हम कह रहे हैं बाबू साहब, हम लोगों को छूना न चाहो तो मत छूओ, क-ख-ग पढ़ाने की भी बात मत करो, लेकिन हमारे पेट और पीठ पर जो मार पड़ रही है, वह बरदाश्त नहीं होती। बोलो, और कितने दिन यह सब बरदाश्त करेंगे? इसका कोई इंतजाम करो।"

यह कहते-कहते बंगाली का गला भर आया। फिर वह एकाएक बाहर जाने लगा।

भजन ने बुलाया, "अरे बंगाली, सुन भइया!"

लेकिन बंगाली ने नहीं सुना। मानो असह बेचैनी उसे खदेड़ ले चली। वह खुद भी नहीं समझ सका कि ऐसा क्यों हुआ। वह क्यों एकाएक भागा जा रहा है। उसका मन नहीं चाह रहा है, फिर भी वह भाग रहा है। जाड़े की कोहरा भरी रात में दूर तक चली गयी सड़क धुंधली लग रही है। बंगाली की आँखों में वह सड़क अँधेरी और कांपती हुई सी लगी। न जाने कैसा नमकीन पानी का स्वाद उसके होंठों के रास्ते मुँह में पहुँच कर मुँह के स्वाद को नमकीन बनाने लगा।

श्रीमती काफे खामोश है। भजन बरामदे में आ कर खड़ा हो गया। हीं बदन से खिसक कर चादर का छोर नीचे लटक रहा है। उसकी आँखें बहुत दूर खो गयी हैं। स्टेशन के ओवरब्रिज के पार, टीन शेड के नीचे शायद तारों भरे मान के एक टुकड़े पर उसकी निगाह टिकी हुई है। प्रियनाथ की आँखें आग रहीं। बंगाली की आँखों की तरह उसकी भी आंखें धक-धक जलने लगीं। गोलो बेवकूफ बन जाने की तरह चुपचाप बैठे रहे। दुकान में अब भी तीन गाह

उनकी भी हालत चटर्जी बाबू की तरह है। सबको आश्चर्य हो रहा है। सब मन ही मन दुखी हैं।

सड़क से जाते-जाते पुलिस के वही छोकरे अफसर सहसा रुक गये। उसने हथ-घड़ी की तरफ देख कर श्रीमती काफे की तरफ देखा। फिर काफे में पहुँच कर उन्होंने मुस्करा कर कहा, "क्या सोच रहे हैं प्रियनाथ बाबू ?"

मानो ध्यान भंग हुआ, इस तरह चौंक कर प्रियनाथ ने पुलिस अफसर की तरफ देखा। प्रियनाथ की आँखें देख कर पुलिस अफसर जरा घबड़ा गये। प्रियनाथ ने उनसे पूछा, "क्या कह रहे हैं ?"

स्वर में अंतरंगता भर कर पुलिस अफसर ने कहा, "नहीं, कुछ नहीं। नौ बज कर दस मिनट हो गये हैं। मैंने सोचा कि शायद आपको याद नहीं है।"

प्रियनाथ ने दीवारघड़ी की तरफ देखा। नौ बज चुका है। पेंडुलम के साथ नरकंकाल का मुंड झूल रहा है।

कई दिन हुए, शाम के छः बजे से रात के नौ बजे तक प्रियनाथ के घर से बाहर रहने की भी आदत बढ़ी है। प्रियनाथ बिना कुछ कहे उठा।

पुलिस अफसर ने एक बार सबकी तरफ निगाह डाल कर कहा, "नमस्कार हीरेन बाबू।"

हीरेन ने जमीन से चादर का छोर उठा कर कहा, "नमस्कार।"

पुलिस अफसर न जाने क्यों अपने को बेवकूफ महसूस करने लगे। मानो वे ऐसी जगह आ गये हैं, जहाँ उनको नहीं आना चाहिए था। अब भी वे युवक ही हैं। आई० ए० पास करके पुलिस की नौकरी में आये हैं। तरक्की भी कर चुके हैं। अब भी बहुत कुछ करने का सपना देखते हैं। उनके मन में कविता है। कवि और कविता में वे बहुत रुचि रखते हैं। उन्हें संगीत का भी शौक है। अक्सर वे गाने-बजाने का आयोजन करते हैं। भले ही वह आयोजन एकदम घरेलू बन कर रह जाता हो। फिर भी वे पुलिस अफसर हैं, और उसके कर्तव्य को निभाते भी हैं। न जाने कितने लोग उनसे डरते हैं और उनकी इज्जत करते हैं। बहुत से लोग उनकी मेहरबानी भी चाहते हैं। जब वे सड़क पर निकलते हैं, न जाने कितने लोग उनको देख कर सलाम करते हैं।

फिर भी इस श्रीमती काफे में वे पुलिस अफसर की हैसियत से कभी सिर ऊँचा कर के खड़े नहीं हो सके। इस इलाके में यही एक ऐसी जगह है, जहाँ आने से पहले उनको एक बार सोचना पड़ता है। पुलिस अफसर की वर्दी वाली बेखटक चाल यहीं रुक जाती है। यहाँ उनको कोई सलाम नहीं देता, बल्कि उसके बदले'''। सोचने की कोशिश करने पर उन्हें नपुंसकता भरा क्रोध आता है और अफसोस के मारे उनके सीने की गहराई में तकलीफ होने लगती है।

एकबारगी भजन की ओर पूरी उपेक्षा से देख कर पुलिस अफसर सीधे काफे से निकल गये।

हीरेन बरामदे में आ कर भजन के सामने खड़ा हुआ। हीरेन प्रियनाथ से कुछ

कहना चाहता है, लेकिन उसे उसका मौका नहीं मिला। उसने मन में ही सोचा कि अगर मैं कृपाल होता तो शायद कुछ भी न कहता। लेकिन बंगाली का यह दर्द तो मेरा अपना भी है। क्या मैं अपने देशवासियों के इस दारुण दुख और अपमान की बात नहीं जानता? हीरेन प्रियनाथ से यही कहना चाहता है कि जब तक शासक का हृदय-परिवर्तन नहीं होता, तब तक देशवासियों को प्रतीक्षा करनी ही पड़ेगी। कम से कम इस शासक के विदा होने की घड़ी का इंतजार तो करना ही है।

"भजन!"

हीरेन ने बुलाया।

पलट कर भजन ने कहा, "बस करो हीरेन, अब मुझसे कुछ मत कहना।"

इतना कह कर भजन अपनी कुर्सी पर जा कर बैठ गया।

हीरेन ने एक बार आश्चर्य से भजन की तरफ देखा। उसने यह भी देखा कि उधर दरवाजे के पास श्रीमती काफे का बावरची चरण खड़ा है। चरण हीरेन को देख रहा है। हीरेन के बेवकूफ बनने की सी स्थिति चरण की आंखों से छिपी न रही।

भजन से कुछ कहने की कोशिश करके मैंने ही गलती की — हीरेन ने सोचा फिर वह सड़क पर आ गया। एक बार नसीराम घोष के यहां भी जाना है। लेकिन हीरेन का मन विषाद से भर गया। अपना दिग्भ्रमित मन उसे बोझिल लगने लगा। यह सही है कि बंगाली के दुख का अंत नहीं है।

हीरेन के लिए सबसे आश्चर्यजनक है भजन का यह श्रीमती काफे। यह काफे भी तो एक तरह का कारखाना है! हीरेन को जीवन के सारे अनुभव यहीं मिले हैं। यहीं उसकी रमिया से पहली मुलाकात हुई है। रमिया! लंबी सांस छोड़ कर हीरेन आगे बढ़ गया।

मुहल्ले-टोले का ही कोई लड़का काफे के सामने चक्कर लगा रहा था, अब मौका देख कर सर्र से काफे के अंदर चला आया। वह इस तरह काफे में घुसा कि मानो यह कोई बदनाम जगह हो। अंदर कदम रखते ही उसने एक बार डरते हुए भजन की तरफ देखा, फिर हाथ के इशारे से चरण को बुलाया। चरण ऐसे लड़कों को जानता है। ये सब लड़के पियक्कड़ भजन से डरते हैं। कहीं बिगड़ कर भजन कुछ कह न दे।

इधर तीन लड़के अंदर बैठे हैं। ये आपस में भजन के ही बारे में बात कर रहे है। इसलिए इनकी आवाज बहुत धीमी है। ये तीनों लड़के ब्राह्मण हैं। यहां खाना खा कर ये मुहल्ले में जा कर गप हांकते हैं। कहते हैं कि आज हम बहुत-सी ऐसी चीजें खा आये जो नहीं खाना चाहिए। फिर... फिर लाट साहब भजन भी यार मजेदार आदमी है। मैंने मीट का थोड़ा-सा शोरबा मांगा तो भगवान कसम, उसने शोरबे के साथ इतनी बड़ी बोटी उठा कर दे दी। अब साला, यहां बैठ कर किसी दिन माल न खाया तो यह जिंदगी ही बेकार हो जायेगी।

लेकिन इन लड़कों में ऐसी हिम्मत नहीं है। तीनों खा चुके और पैसा देना है। एक ने धीरे से कहा, "भगवान कसम, साला बिगड़ा हुआ है।"

दूसरे ने कहा, "तू जा कर पैसा क्यों नहीं दे आता ?"

"कहीं मेरा बखिया उधेड़ने लगा, तो ?"

फिर भजन के हाथ से पैसा भेज कर तीनो बाहर निकले।

रात भीगने लगी है। चरण ने अपने लिए चूल्हे पर भात की हाँड़ी चढ़ा दी। लेकिन पिछवाड़े के इस एकांत कमरे मे वह ज्यादा देर रह नही सकता। वह बार-बार बीच का छोटा-सा कमरा पार कर सामने वाले कमरे के दरवाजे तक आ जाता है। लेकिन वह एकदम सामने नहीं आता। वह डरता है कि कही भजन डाँट न दे। दरवाजे के पास खड़े हो कर चरण गर्दन आगे कर देता है। उस समय उसे देखने पर ऐसा लगता है कि अंधकार का कोई प्राणी प्रकाश की ओर देख रहा है। दरवाजे के पीछे से उसका साँवला चेहरा दिखाई पड़ता है। उतनी ही देर मे वह सामने वाली सड़क देख लेता है।

कभी-कभी पीछे वाले टट्टर पर फट-फट आवाज होने लगती है। चरण समझ जाता है कि बाजार की बड़े-बडे कानो वाली कुतिया टट्टर के पास आ कर दुम हिला रही है। टट्टर से उसकी दुम टकराने के कारण फट-फट आवाज हो रही है। वह कुतिया इसी तरह चरण को बुलाती है। किसी-किसी दिन यमराज के भेजे दूत के समान कुट्टी पगला भी पिछवाड़े के दरवाजे के पास आ कर खड़ा हो जाता है। वह बहुत रात को आता है। उस समय भजन नही रहता। कुट्टी पगला आ कर चरण से पूछता है — अबे साले, क्या कर रहा है ?

चरण चौंक कर कोयला तोड़ने वाला लोहे का हथौड़ा उठा लेता है। कुट्टी पगला से चरण न जाने क्यो डरता है। कभी-कभी कुट्टी पगला भी शायद चरण को डराने के लिए कहता है — आयें ? आ जाये तेरे कमरे मे ?

फिर वह पगला भयानक दाँत निकाल कर कहता है — हाय ! हाय ! तू मेरी राँड़ है रे !

थोड़ी देर बाद आँखें तरेर कर कहता है — खोल दरवाजा ! आज तेरे पास सोऊँगा।

चरण भी उस समय एक छोकरी की तरह घबड़ा कर प्रतिरोध करने के लिए तैयार हो जाता है। वह चिल्ला कर कहता है — आ जा ! इसी हथौड़ी से तेरी खोपड़ी कुचल दूँगा।

इस पर कुट्टी को बड़ा मजा आता है। वह हँस कर कहता है — हाँ, हाँ, मेरी खोपड़ी कुचल दे मेरी जान ! ला, अब कुछ दे दे, मैं चला जाऊँ।

चरण कुट्टी को बचा-खुचा चॉप-कटलेट दे देता है। वही पा कर कुट्टी पगला शांत हो कर चला जाता है। चरण रेस्तोराँ का बचा खाना कभी चख कर भी नही देखता। उसे वह सब अच्छा नही लगता।

रात बढ़ने लगी। चरण चूल्हे पर से भात की हाँड़ी उतार कर बैठा रहा। आज भजन अभी तक नहीं गया। वह कब जायेगा, इसका भी ठिकाना नहीं है। ठीक उसी समय बंगाली फिर आया। उसकी लाल-लाल आँखों में लज्जा और संकोच की हँसी है। कुछ देर पहले यहाँ से अकड़ कर चले जाने के कारण वह शर्मिंदा है। इस जाड़े में भी उसके नीले कुर्ते का सीना खुला है। उसने कहा, "लाओ देवता, घुंघनी खिलाओ!"

भजन ने सिर उठा कर कहा, "आ गया न! यही सोच रहा था कि बाबू साहब कहाँ चले गये? बोल, कहाँ मरने गया था?"

हँसते हुए बंगाली ने कहा, "बदनाम टोले में।"

"बदनाम टोले में! वहाँ क्या है?"

"अरे, हम लोगों का नब्बा था न, उसी की बहू छः महीने पहले घर छोड़ कर चली गयी। अब तो वह बेसवा बन गयी है।"

"क्यों? नब्बा को क्या हो गया है?"

थोड़ा खीझ कर बंगाली ने जवाब दिया, "तुम भी बाबू बड़े भुलक्कड़ हो! पिछले साल नब्बा मर गया न? फिर तुम लोगों का वही तिलक ठाकुर नब्बा की बहू को काम दिलाने के बहाने फुसला कर ले गया। कुछ दिन उसके साथ मौज उड़ाने के बाद बाबा जी ने अब उसे यही काम दिया है। अभी उस बेचारी को उमर ही क्या है! हाँ, तो उसी के पास थोड़ी देर के लिए चला गया था। उसने बहुत कुछ खिलाया — समोसा, खस्ता और मिठाई। उसने कहा भी — जेठ! कभी-कभी चले आना।"

बंगाली ने देखा कि लाट साहब भजन मन लगा कर मेरी बातें सुन रहा है और मन ही मन न जाने क्या कह रहा है।

सड़क एकदम खाली हो चुकी है। जाड़े की रात। स्टेशन के चबूतरे पर कई लोग अपने को ढांक-ढूंक कर सो रहे हैं। आसमान कोहरे के पीछे छिप गया है। केवल सुकवा तारा पूरब कोने में बहुत ऊपर चमक रहा है। भुन्नू की गाड़ी अब भी खड़ी है। लेकिन भुन्नू नहीं है। न जाने कहाँ से टहलता हुआ वह श्रीमती काफे के बरामदे में आ गया।

बंगाली अपने आप बड़बड़ा रहा है, "हमीं लोग तो नब्बा की शादी कराने गये थे और उस लड़की को तारकेश्वर के पास के गाँव से ले आये। उस समय वह बहुत छोटी थी। और अब? पहले पहल उस छोकरी पर बड़ा गुस्सा आया था। लेकिन आज गुस्सा नहीं आया। कभी-कभी सोचता हूँ देवता, कहीं मेरा भाग्य भी नब्बा के भाग्य जैसा न बन जाय।"

अब यह सब सोचा नहीं जा सकता। भजन यह सब सोच नहीं सकता। उसे लगता है कि मानो मैं किसी जाल में फँस गया हूँ। लगता है कि शिक्षा-दीक्षा और शक्ति-प्रतिष्ठा आदि सब कुछ ले कर न जाने किस अतल गहराई में समाता जा रहा हूँ। भजन को यह सब सोच कर डर लगता है। नहीं, अब उसमें उतना विश्वास नहीं है। उसका अपना मत या पथ भी नहीं है। उसके चारों तरफ केवल विभीषिका है।

उसे भैया की बात याद आने लगी। भैया का चेहरा कितना निर्भय और शांत है। लेकिन क्यों और किसके लिए इतना निर्भय बना जाय?

भजन ने सोचा, मैं तो शांत नहीं रह सकता। मेरे लिए गौर, निताइ, जूही, अंदर से खोखला श्रीमती काफे, पिता, उधार-कर्ज, भय-वेदना और सुख-दुख सभी कुछ हैं। इस सब से मैं छुटकारा नही पा सकता। यह जो हाहा-होही और नशा करना, इससे मैं कभी ऊपर नही उठ सकता। मैं तो सब कुछ को पकड़ रखने के लिए परेशान रहता हूँ। यही मेरी परेशानी है, यही मेरे डर और सोच-विचार का कारण है। लेकिन यह जमाना गुस्सैल, डरावना और फरेबी है। पता नही, इस तरह और कितने दिन जिंदा रहूँगा? शायद मुझे हार माननी पड़ेगी, इस जमाने के आगे नालायक साबित होना पड़ेगा।

यह निराशा कितनी असहनीय है। यह अवसाद कितना भयानक है। फिर भी नब्बा की बहू मर नही गयी। छी-छी, पता नही, वह क्यों नही मरी? अगर वह गले में फाँसी लगा लेती तो उसकी इज्जत बनी रहती। लेकिन आज? भजन फिर सोचता है कि इसमें आज और कल क्या है, ऐसा हमेशा होता आया है। जैसे भी हो, इनसान सिर्फ जिंदा रहना चाहता है। हो सकता है कि कभी यही बंगाली जिंदा रहने के लिए मारा-मारा फिरे। आज उसने अपने अफसर काले साहब या गोरे साहब को नही मारा, लेकिन कल मार सकता है। किसी साहब पर घन चला कर या उसे गला दबा कर खतम करने पर उसे जेल की रोटी तोड़नी पड़ेगी या फाँसी के तख्ते पर चढ़ना पड़ेगा।

लेकिन मैं? भजन सोचता रहा। मैं तो बस पड़ा रहूँगा। उसने सिर उठा कर भारी आवाज मे कविता की कुछ पंक्तियाँ पढ़ी —

यह निद्रा, यह काल-निद्रा टूटेगी,
दिशाओं में अभयवाणी ध्वनित होगी।
वक्त के संग हादसा खत्म होगा —
मानव है, मानवता जिंदा रहेगी।

जमा नही। भजन ने फिर सोचा।

बंगाली ने कहा, "देवता, यह तुमने फिर क्या शुरू कर दिया?"

"कुछ नहीं।"

यह कह कर भजन शराब की बोतल ले आया। फिर उसने मुन्नू को बुलाया, "आ जाओ, दूर क्यों बैठे हो प्यारे?"

इसके बाद तीनों ने चुपचाप शराब पी। शराब पीने के बाद तीनो उठे। मुन्नू गाड़ी ले कर चला गया। बंगाली अपने डेरे की तरफ न जा कर दूसरी तरफ चलने लगा। भजन घर की ओर चला।

ठंडी रात। घुप्प अंधेरा। भजन चला जा रहा है। मानो वह बहुत झुक गया है। एक दिन वह श्मशान से इसी तरह लौटा था।

इधर चरण निपट अकेला रह गया। उसे नींद नही आती। पिछवाड़े के कमरे

में जा कर उसने चूहेदानी को देख लिया। चूहे बहुत परेशान करने लगे हैं। छूं-छूं करते छछूंदर को उसने खदेड़ दिया। बड़े-बड़े कानों वाली कुतिया आयी। चरण ने उससे भी एक-दो बातें कीं। फिर वह अपना बिस्तर बिछा कर लेट गया। उसके चौड़े सीने को फाड़ कर लंबी साँस निकली। अँधेरे में उसकी आँखें चमकने लगीं। वह अपने को बड़ा अकेला महसूस करने लगा।

दीवारघड़ी के पेंडुलम के साथ नरकंकाल का मुंड झूल रहा है। मानो दांत निकाल कर विस्सू सिर हिला रहा है। टक्-टक्-टक्।

खट्-खट्-खट्। रात के गश्ती पुलिस वाले चले जा रहे हैं। साइकिल पर बैठे वही पुलिस अफसर जा रहे हैं। अभी उनको नौजवान ही कहा जा सकता है। उन्होंने अँधेरे में डूबे श्रीमती काफे को एक बार देख लिया। श्रीमती काफे के लिए उनकी आँखों में घोर संदेह है।

शाम हो गयी है। चॉप-कटलेट तलते-तलते चरण अचानक चौंक पड़ा। उसने देखा कि दरवाजे से रथीन आ रहा है। उसके कंधे पर कोई है। अंदर आ कर रथीन ने बीच वाले कमरे की बेंच पर उसे लिटा दिया। जिसको लिटाया गया, वह सुनिर्मल है। रिवाल्वर चलाने की प्रैक्टिस करते समय उसके हाथ में गोली लगी है। गोली रथीन ने चलायी थी। सुनिर्मल निशाना बता रहा था, लेकिन उसे हाथ हटाने का मौका नहीं मिला।

सुनिर्मल के हाथ में लत्ता बँधा है और वह लाल हो चुका है। खून निकलना बंद नहीं हो रहा है। सुनिर्मल दांत भींच कर चुपचाप पड़ा है। तकलीफ के मारे उसका चेहरा काला पड़ गया है। आँखों के कोनों में पानी भर आया है। फिर भी वह खामोश है। यहाँ तक कि साँस भी वह धीरे-धीरे छोड़ रहा है।

रथीन ने चरण से कहा, "भजन भैया को बुला दो। किसी को पता न चले।"

चरण रथीन को जानता है। कई बार रथीन उसके पास ढेर-ढेर कागज-पत्तर छोड़ गया है। एक दिन एक सूटकेस छोड़ गया था। फिर एक दिन पौ फटने से पहले ही उसने चरण से मैदे की लेई बनवायी थी। उस लेई से दीवारों पर पोस्टर चिपकाये गये थे।

भजन आया। सब कुछ देख कर वह चौंक पड़ा।

"यह क्या हो गया है?"

भजन ने पूछा।

रथीन ने सब कुछ बताया।

सुन कर भजन ने असहाय की तरह कहा, "तो यहाँ क्यों आया है? अभी पकड़ा जायेगा कि नहीं?"

"लेकिन कहाँ जायें?"

रथीन को भजन से ज्यादा असहाय लगा।

भजन हँसा। बोला, "अपना यार भी खूब पहचान लिया है! चल, फिर सब एक साथ जेल जायें।"

इतने मे प्रियनाथ भी आ गया। उसने कहा, "मुझे मोंटू से सब पता चल गया है। रथीन, तुम एक काम करो। संतोष मौसी के पास चले जाओ। उनको सब कुछ बता दो। तुम अभी अपने साथ हरेन डाक्टर को ले आओ। भजन, तुम कुछ रुपये दो।"

भजन बोला, "माफ करो भैया! अभी दिया जला है। माल का पूरा दाम भी अभी तक नहीं मिला।"

इतना कहते ही भजन को लगा कि सुनिर्मल की दर्दभरी आँखें मेरी तरफ देख रही हैं। इसलिए न जाने क्या सोच कर भजन ने कहा, "बेमौत मत मरना। मरना हो तो किसी को मार कर मरना। ले। जो कुछ है, ले जा।"

भजन ने ड्रायर से सारे पैसे निकाल कर रथीन के हाथ पर रख दिये। रथीन चला गया। प्रियनाथ ने सुनिर्मल का सिर अपनी गोद में रख लिया। उसने चरण से कहा, "इस कमरे की बत्ती बुझा कर जाओ, अपना काम करो।"

प्रियनाथ ने भजन को आवाज दी, "भजन।"

भजन प्रियनाथ की उम्र का है। भजन पास आया तो प्रियनाथ ने पूछा, "आज तुम नशा नहीं करोगे?"

इस सवाल पर भजन को जरा आश्चर्य हुआ। उसने प्रियनाथ की तरफ देखा। फिर कहा, "वही करने जा रहा था, लेकिन बाधा पड गयी। अब पैसा भी नही है, मन भी नही कर रहा है।"

प्रियनाथ बोला, "ऐसा होता है भाई। लेकिन ऐसा कुछ करो जिसके लिए मन करे। इस दुकान को तो जिंदा रखो।"

जाते-जाते भजन रुक गया। उसने पूछा, "प्रियनाथ, छोकरा बच जायेगा न? आखिर मेरे पास आया है।"

प्रियनाथ ने मुस्करा कर कहा, "हाँ, हाँ, बच जायेगा।"

जिंदगी में शायद आज पहली बार भजन ने इच्छा न रहते हुए भी नशा किया। फिर घंटे भर बाद दुकान में रोज की तरह चहल-पहल शुरू हो गयी। कृपाल के साथ अपने चेलों को लिये आज सारदा चौधरी भी आये। सारदा चौधरी कांग्रेस के मेम्बर बने हैं। यह सब कृपाल की चालाकी है। अब चौधरी कांग्रेस की तरफ से खड़े होंगे।

हीरेन थोड़ा अलग बैठा है। मानो उसे कोई नही पूछ रहा है। फिर भी उसे यह सब मजाक-सा लग रहा है।

आठ बज गये। पुलिस अफसर एक बार श्रीमती काके के सामने से गश्त लगा चुके। भजन की आँखों से यह छिपा न रहा। उसने शराब तो पी है, लेकिन आज उसका नशा नहीं जमा।

बंगाली आया है। वह बरामदे में बैठा है। वह प्रियनाथ का इंतजार कर रहा है। प्रियनाथ ने उससे आने के लिए कहा था। लेकिन उसे पता नहीं कि प्रियनाथ पीछे वाले कमरे में बैठा है।

सुनिर्मल का ड्रेसिंग हो गया है। डाक्टर उसे सोने की दवा दे कर कई मिनट पहले जा चुके हैं।

प्रियनाथ ने पूछा, "रथीन, रेल मजदूरों के बारे में कार्बन कापी वाले इश्तिहार लिख गये हैं न ?"

रथीन बोला, "नहीं, अभी तक नहीं लिखे गये।"

प्रियनाथ को पता है कि वे इश्तिहार नहीं लिखे गये हैं। उसका चेहरा गंभीर दिखाई पड़ा। उसने कहा, "तुम्हारी चाँदमारी से वह ज्यादा जरूरी काम था रथीन।"

गुस्से के कारण रथीन का चेहरा तमतमा गया। उसे और भी कई दिन प्रियनाथ भैया से ऐसी बात सुनने को मिली है। इस कारण रथीन को गुस्सा आया, घृणा भी हुई और संदेह उसके मन में झाँकने लगा। प्रियनाथ नारायण का साथी है। प्रियनाथ ज्यादातर समय बाहर-बाहर न जाने कहाँ घूमता रहता है। अब नारायण नहीं है तो प्रियनाथ नेता बन बैठा है। आजकल उसके मुँह से एक नयी बात सुनाई पड़ने लगी है कि समाजवाद सबसे अच्छा है। वह अक्सर किसान-मजदूरों के आंदोलन की बात करने लगता है। लेकिन इस सबके लिए रथीन के मन में कोई सवाल नहीं है। वह चाहता है कि समिति जिंदा रहे। लेकिन प्रियनाथ को इसकी परवाह नहीं है कि समिति रहे या खत्म हो जाय।

रथीन ने कहा, "मैं कह रहा हूँ कि यह काम भी जरूरी था।"

इस जवाब से प्रियनाथ थोड़ा दुखी हुआ। उसने पूछा "क्यों ?"

रथीन का चौड़ा जबरा कठोर दिखाई पड़ा। उसने घूंसा तानने की तरह हाथ हिला कर दबी आवाज में कहा, "रेलवे के यूरोपियन यार्ड मैनेजर को हम गोली मारेंगे।"

"वह गलत होगा।"

प्रियनाथ के मुँह से सिर्फ इतना ही निकला। उसने बहुत कुछ कहना चाहा, लेकिन क्या कहना चाहिए, वही उससे गड़बड़ा गया।

रथीन ने पूछा, "क्यों गलत होगा ? क्या समाजवाद में दुश्मन को नहीं मारा जाता ?"

"जरूर मारा जाता है। लेकिन इस तरह नहीं।"

फिर किस तरह, उसकी भी धारणा प्रियनाथ के दिमाग में साफ नहीं है। वह सिर्फ इतना जानता है कि समाजवादी आंदोलन में जनता जब पूरी तरह संगठित हो जाती है, तभी दुश्मन पर हमला किया जाता है। याने, सर्वहारा क्रांति के माध्यम से जनता संगठित हो जायेगी तो मजदूर साहबों को मारेंगे।

प्रियनाथ को जवाब मिल गया तो उसने कहा, "पहले मजदूरों को साथ लिया जाता है।"

रथीन को लगा कि फिर तो सब चौपट हो जायेगा। उसके मन मे संदेह और ज्यादा गहराया। उसने सोचा कि प्रियनाथ भैया कायरों की तरह बात कर रहे हैं। शायद अब ये शांतिपूर्ण आंदोलन के रास्ते चलने लगेंगे। रथीन ने स्वर में कड़वापन घोल कर प्रियनाथ की हँसी उड़ाने के लहजे में कहा, "नारायण भैया होते तो शायद आप ऐसी बात न करते।"

प्रियनाथ ने कहा, "करता, हजार बार करता रथीन। यही मेरा विश्वास है।"

रथीन ने तीव्र दृष्टि डाल कर प्रियनाथ को देखा। रथीन के जेब में लोडेड रिवाल्वर है। उसके मन मे गुस्सा है। इसलिए वह कुछ भी समझना नहीं चाहता। समाजवाद भी उसे एक तरह का समझौतावाद लगा। श्रमिक आंदोलन के बारे में उसकी धारणा धुंधली है। उस धुंधलेपन के एहसास के बीच उसे सुनिर्मल का खून से तर हाथ बार-बार याद आने लगा। रथीन को अपने क्रांतिकारी जीवन में इस लज्जा और इस व्यथा को छिपाने के लिए कही जगह नही मिली। बचपन से उसकी आस्था क्रांति में है। उस आस्था को उसने बड़े जतन से पाला है। अब उस पर वह दुर्बोध आदर्श का आघात बरदाश्त नही कर सका। उसने प्रियनाथ से सिर्फ इतना ही कहा, "अब आप मुझसे कुछ मत कहिए।"

प्रियनाथ रथीन की मानसिक स्थिति को समझ गया। वह समझ गया कि रथीन बेचैन होने लगा है और उसे गुस्सा आ रहा है। यह गुस्सा अप्रिय घटना का कारण भी बन सकता है। फिर भी यह गुस्सा अस्वाभाविक नही है, अनुचित नहीं है। प्रियनाथ भी तो अपने मन की बात को साफ-साफ नही कह पा रहा है। वह कह नहीं पा रहा है कि मेरा रास्ता लंबा है, वह धैर्य और कष्ट का है। प्रियनाथ को भी अपने में असह बेचैनी का अनुभव होने लगा। अपने को ठीक से व्यक्त न कर पाने के कारण यह बेचैनी है। दूसरी तरफ रथीन जोश मे आ कर कुछ भी कर सकता है। अगर उसने कुछ नही किया तो उसे शांति नहीं मिलेगी।

शांत स्वर में प्रियनाथ ने कहा, "मैं कुछ नहीं कहूँगा, सिर्फ यह अनुरोध करूँगा कि यार्ड मैनेजर को अभी मत मारो। उससे नुकसान होने की आशंका है।"

रथीन ने जरा तेज आवाज मे कहा, "आपकी नीति के अनुसार शायद वैसी आशंका है।"

इतना कह कर रथीन चला गया। उसने समझ लिया कि यार्ड मैनेजर को मारने का इरादा छोड़ना ही पडेगा। जब प्रियनाथ भैया ने इसकी राय नहीं दी तब समिति के सदस्यों के मन मे सदेह पैदा होना स्वाभाविक है। फिर सुनिर्मल भी घायल हो चुका है।

प्रियनाथ बहुत देर चुपचाप बैठा रहा। वह रथीन पर नाराज नहीं हो पा रहा है। लेकिन एक तरह के अपमान से उसका हृदय जला जा रहा है। रथीन के चेहरे पर

न जाने कैसी घृणा थी, अविश्वास और संदेह थे। अपने को अच्छी तरह देख लेने के लिए प्रियनाथ ने मानो मन की गहराई में डुबकी लगायी। उसने सोचा — क्या मेरे चरित्र में कोई मलिनता आयी है? क्या मेरा विश्वास निष्कलंक नहीं है?

यह सब सोचते हुए अचानक प्रियनाथ के मन में क्रोध धधक उठा। उसकी दोनों आँखें मानो धक्-धक् जलने लगीं। मन में आया कि रथीन को उतनी बातें कहने का मौका न दे कर एक ही घूंसे से उसे खामोश कर देना चाहिए था। उसके जेब से रिवाल्वर निकाल लेना और उसके दोनों हाथों को मरोड़ देना चाहिए था।

चरण को आवाज लगाता हुआ भजन आ गया। उसने प्रियनाथ से पूछा, "सब ठीक-ठाक है न? भगवान की कसम, आयोडीन की तेज बू बाहर आ रही थी। मैंने सोचा कि अब तुम सबको अंदर करवा दोगे।"

प्रियनाथ का मन शांत हो गया। इतना गुस्सा करने के लिए अब उसी का मन उसे धिक्कारने लगा। इससे वह परेशान हो उठा। उसने सोचा कि रथीन सचमुच कुछ कर न बैठे। मुझे इसी वक्त उसके पास जाना चाहिए। उसे समझाना चाहिए। वह तो भूलने लगा है कि खूनी क्रांति का यह पौधा हमीं ने लगाया है। सचमुच यह सब सोचने पर मैं भी अपने पर काबू नहीं रख सकता। मन करता है कि अभी चल कर यार्ड मैनेजर को खत्म कर आऊँ।

थोड़ी देर बाद प्रियनाथ बोला, "भजन, अब मैं जा रहा हूँ। आज सुनिर्मल ठीक है। लेकिन बहुत होशियार रहना है। कहीं पकड़ा गया तो जबर्दस्त झमेला हो जायेगा।"

भजन बोला, "उधर बंगाली तुम्हारा इंतजार कर रहा है।"

"आज उससे बात करना संभव नहीं है। तुम उससे मेरे घर आने के लिए कह देना। सुनिर्मल रहा। शायद रथीन रात को फिर आयेगा। तुम चरण को जरा होशियार कर देना।"

इतना कह कर प्रियनाथ श्रीमती काफे के पिछवाड़े की नाली पार कर कूड़े के ढेर के ऊपर से अँधेरे में गायब हो गया।

बाहर के कमरे में भीड़ कम हो गयी है। कृपाल अपने चेलों के साथ जा चुका है। हीरेन अकेला बैठा है। कल तहसील कांग्रेस के मेम्बरों की बैठक होने की बात है। नवीन गांगुली वहाँ आयेंगे। वही अध्यक्ष हैं। वहाँ हीरेन को बहुत कुछ कहना है। उसी के बारे में वह सोच रहा है। लेकिन उसकी तीखी निगाह से यह बात छिपी न रही कि अंदर के कमरे में जरूर कुछ हुआ है। उसने उसके बारे में थोड़ा अनुमान भी लगा लिया है। इसलिए उसे इस कस्बे में किसी तरह की गड़बड़ी की भी आशंका है। वह इतना तो समझ गया है कि रथीन वगैरह को ले कर कोई बात हुई है।

सिर्फ यही नहीं, और भी अनेक बातें हीरेन के मन में उमड़ने-घुमड़ने लगीं। बंगाली के बैठे रहने का ढंग देख कर भी हीरेन समझ गया कि बंगाली जरूर किसी खास कारण से आया है। लेकिन बंगाली ने कुछ नहीं बताया। वह बतायेगा भी नहीं।

जिससे देश का भला हो, अगर रथीन वगैरह वैसा कुछ करें तो ठीक है। लेकिन अकारण कोई बवाल या खून-खराबा नहीं होना चाहिए। रमिया की हँसी भी दिनों दिन खतरनाक होती जा रही है। डोम का एक नौजवान लड़का अक्सर उसके पीछे घूमा करता है। आखिर यह सब कुछ क्यों हो रहा है?

गोलोक चटर्जी बैठे हैं। अभी थोड़ी देर पहले उन्होंने किसी ठग की कहानी छेड़ी थी। उसी कहानी के कारण सारदा चौधरी को उठ जाना पड़ा था।

बंगाली श्रीमती काफे के सामने वाले बरामदे में ही सो गया है। अंदर एक आदमी बैठे-बैठे मांस को हड्डी चबा रहा है। एकांत पा कर वह मौज से आँखें बंद कर कर्र-कर्र करता हड्डी चबाता जा रहा है। थोड़ी देर बाद उसे मानो एकाएक पता चला कि हड्डी में जरा भी मांस नहीं है। इस पर वह मानो हैरान हो गया। चबाते-चबाते वह थक चुका है। इसलिए उसने निराशा की लंबी साँस छोड़ी।

भजन सुनिर्मल की ओर देख रहा है। सुनिर्मल गर्दन टेढ़ी कर निढाल पड़ा सो रहा है। उसके हाथ में पट्टी बँधी है। और वह हाथ कपड़े के टुकड़े से गले से लटकाया गया है। उसके चेहरे पर तकलीफ की छाप है। साँस चल रही है न? हाँ, चल रही है। भजन कुछ कहने गया, लेकिन वह मुँह न खोल सका। अचानक उसका दम फूल आया। उसका चेहरा लाल दिखाई पड़ा। पेट में भयानक दर्द होने लगा है। यह दर्द ऐसे ही एकाएक उठता है और उस समय भजन होश-हवाश खो बैठता है। दर्द बहुत तेज और बरदाश्त के बाहर होता है। भजन ने सोचा कि अब घर चलना चाहिए। लेकिन थोड़ी देर पहले वह कोई कविता मन ही मन गुनगुनाने लगा था। तभी दर्द उठा। भजन ने चरण से कहा, "चरण, मैं जा रहा हूँ। आज रात तू मत सोना, उसका ख्याल रखना।"

भजन ने सोचा कि खतरा हो सकता है। कहीं कल सवेरे पुलिस दुकान पर न आ धमके। लेकिन सुनिर्मल को भी तो भगाया नहीं जा सकता। अगर श्रीमती काफे को तिलांजलि देनी पड़े तो कोई बात नहीं, यह हाय-हाय तो नहीं रहेगा! फिर कुछ सोचने और करने का मौका मिल जायेगा।

आधी रात का सन्नाटा। चरण जाग रहा है। कमरे में अँधेरा है। बत्ती जान-बूझ कर बुझा दी गयी है। कहीं कुट्टी पगला न आ जाय। लेकिन उस पगले के लिए क्यों जागते रहना? वह चरण का कौन है? कोई भी नहीं। फिर भी उसके लिए जागने को मन कर रहा है। लेकिन वह तो सुनिर्मल के लिए जाग रहा है। हो सकता है कि वह सुनिर्मल से प्यार करने लगा है। सुनिर्मल बड़ा प्यारा लड़का है। चरण ने दो-चार बार धीरे से सुनिर्मल के बदन पर हाथ फेरा।

चरण ने सोचा कि सुनिर्मल जैसे लड़के बड़े खतरनाक हैं, लेकिन और पवित्र भी। इनके माँ-बाप और घरबार हैं। ये सब पढ़े-लिखे हैं। कुछ

ऐसे लड़कों के आगे मैं तुच्छ हूँ। क्या इन लड़कों ने कभी अपनी जिंदगी में कोई गंदगी देखी है ? क्या इनको मेरी तरह अभिशप्त जीवन जीना पड़ा है ? नहीं। इनका भाग्य अलग है। इसलिए इनका काम भी अलग है। ये कितने बड़े-बड़े काम करते हैं, स्वराज करते हैं और जेल जाते हैं। इनके मुकाबले में मैं कितना छोटा हूँ, कितने ओछे घर में मेरा जन्म हुआ है। मेरी सौतेली माँ कितनी बदसूरत है और बाप कितना बेरहम।

लेकिन सिर्फ इतना ही नहीं, चरण की रात अकेले कटती है। उसे नींद नहीं आती। लेकिन आज उसे साथी मिल गया है। अकेलापन अब उससे बरदाश्त नहीं होता। सुनिर्मल ने उसका अकेलापन दूर किया है। सुनिर्मल वैसा ही है, जैसा चरण चाहता है। इधर चरण को अकेलापन ज्यादा खलने लगा था, इसलिए वह मन ही मन चाह रहा था कि कोई मिल जाय। कोई ऐसा मिल जाय जो अच्छा लगे और जिससे प्यार किया जा सके। आज उसे वैसा ही कोई मिल गया है सुनिर्मल। जाड़ा खूब पड़ने लगा है। फिर भी चरण ने अपनी कथरी सुनिर्मल को दे दी। कथरी गंदी है, फिर भी दे दी। सुनिर्मल को चरण सब कुछ दे सकता है। सवाल है सिर्फ मन भाने का। अगर मन भा गया तो सब कुछ देना आसान हो जाता है — चाहे वह एक को देना पड़े या अनेक को।

सवेरे भजन ज्यों ही दुकान पर पहुँचा, सुनिर्मल के पिता जी आ धमके। रात र भजन ठीक से सो नहीं सका था। आँखें धँस गयी हैं। आँखों के चारों तरफ स्याह घेरा बन गया है। चेहरा बीमार का-सा लग रहा है। उसके साथ जूही भी रात भर जागती रही। रात भर अँधेरे में वह रोती रही और भजन के आराम के लिए उसकी सेवा करती रही। वह बहुत कोशिश करती रही कि भजन थोड़ी देर के लिए सो जाय। भजन को इसका एहसास था। इसलिए वह अपने को अपराधी महसूस करने लगा था और चुपचाप पड़ा था। बीमारी की तकलीफ बढ़ गयी थी, और उसी के साथ और एक तकलीफ थी। दुकान के बारे में उसके मन में चिंता थी। सुनिर्मल तो ठीक हो सकता है, लेकिन दुकान चौपट हो जाने पर घर का खर्च चलाना मुकिल हो जायेगा।

सुनिर्मल के पिता हाँफने लगे। लगा कि वे रात भर सो नहीं सके थे, परेशान थे। इस समय वे बुरी तरह डरे हुए लगे। वे जानते हैं कि उनके बेटे ने तबाही का रास्ता अख्तियार किया है। इसलिए आते ही वे भजन का हाथ पकड़ कर मानो रो पड़े, "मेरा बेटा कहाँ है भैया ?"

"आपका बेटा !"

भजन ने हैरान होने का नाटक किया।

"हाँ, मेरा बेटा, जिसको तुम्हारे भैया नारायण बरबादी के रास्ते ले गया है। सुनिर्मल मेरा इकलौता बेटा है। भगवान तुम्हारा भला करेगा बेटा, बोलो वह कहाँ है ?"

भजन बोला, "यह तो अच्छी परेशानी हुई ! मैं कैसे जानूं कि आपका बेटा कहाँ है ? क्या उन लोगों से मेरा कोई सरोकार है ?"

अब सुनिर्मल के पिता को देख कर लगा कि वे रो देंगे। वे बोले, "बेटा, मुझसे मत छिपा। मैं जानता हूँ कि तू उन्हीं लोगों का आदमी है। यह तो अच्छी बात है। इसी तरह तू अपने को छिपाये रख। लेकिन मेरा बेटा कहाँ है, यह तो बता। कल दोपहर को वह निकला था, अभी तक नहीं लौटा। कल का आधा दिन गुजरा और रात गुजर गयी। बस इतना बता दे बेटा, वह कहाँ है। उसे मैं कभी इस दुकान पर आने से नहीं रोकूंगा।"

सुनिर्मल को इस दुकान पर आने से नहीं रोकूंगा ! तू उन्हीं लोगों का आदमी है ! यह सब क्या कह रहे हैं ये सज्जन ? मानो भजन को बड़ा आश्चर्य हुआ। मानो उसे हँसी आ गयी। फिर भी उसके सीने में कहीं टीस होने लगी। भजन ने सोचा, अच्छा ! लोग मुझे ऐसा समझते हैं ? लाट साहब भजन और शराबी भजन को भी लोग ऐसा समझ सकते हैं ! फिर भी भजन को बहाना बनाना पड़ा। उसने कहा, "देखिए चाचा जी, कल सुनिर्मल मेरे पास आया था।"

"फिर क्या हुआ ?"

सुनिर्मल के पिता बेचैन हो उठे।

"उसने मुझसे कहा कि कालेज के किसी दोस्त के साथ कई दिन के लिए बाहर जा रहा हूँ। शायद वह कहीं घूमने गया हो।"

"यह कैसी बात हुई ? कालेज से तो सुनिर्मल का नाम कट चुका है। फिर उसका दोस्त कहाँ से आ गया ?"

भजन ने सोचा कि यह तो अच्छी मुसीबत हो गयी ! फिर भी उसने कहा, "यह सब मैं नहीं जानता। उसने मुझसे यही बताया। ठीक है, आप जाइए। मैं पता लगाता हूँ। आप पुलिस-उलिस में रिपोर्ट मत कीजियेगा। कहीं कोई बखेड़ा न हो जाय। आप निश्चिंत हो कर घर जाइए।"

"सच कह रहे हो बेटा ?"

"जी हाँ, सच कह रहा हूँ।"

लगा कि सुनिर्मल के पिता कुछ आश्वस्त हुए। फिर भी जाते-जाते वे रुक गये और धीमी आवाज में बोले, "चाहे कोई भी कुछ कहे, लेकिन मैं जानता हूँ कि मेरा बेटा बुरा नहीं है। मैं तो अपने मुहल्ले के छोकरों को देख रहा हूँ। अगर मेरा बेटा वैसा होता तो मैं फाँसी लगा कर मर जाता। फिर भी बड़ा डर लगता है, समझ गये न ? रात भर नहीं आया। अपना बेटा है, समझ गये न ?"

सुनिर्मल के पिता का गला रुँध आया। उन्होंने हँसने की कोशिश की। लेकिन उनके होंठ सिकुड़ कर रह गये। फिर धीरे-धीरे बोले, "अच्छा बेटा. मैं बे[illegible] हो कर जा रहा हूँ।"

६

आखिर सुनिर्मल के पिता चले गये। भजन ने मुड़ कर देखा कि चरण दाँत निपोड़ कर हँस रहा है।

भजन खिसिया गया। बोला, "क्यों इतना हँस रहा है? मेरी जान साँसत में पड़ी है और तुझे हँसी आ रही है?"

यह कह कर भजन आगे बढ़ा तो चरण थप्पड़ खाने के लिए सँभल कर खड़ा हो गया। लेकिन उससे कुछ कहे बिना भजन अंदर चला गया। वहाँ सुनिर्मल लेटा हुआ है। वह भी मुस्कराने लगा है। भजन ने उसके चेहरे की तरफ देखा। उसका चेहरा सूखा हुआ पीला लगा।

सुनिर्मल बोला, "मैं तो घबड़ा रहा था कि पिता जी कहीं अंदर न चले आयें। आपने भी भजन भैया, उनको खूब पट्टी पढ़ायी!"

"मैंने तेरे लिए उनको थोड़े पट्टी पढ़ायी? मैंने तो वह सब अपनी दुकान के लिए किया। बुढ़वा अंदर आ जाता तो चिल्लाने लगता और लोगों को सब कुछ पता चल जाता। फिर तो मेरे लिए मुसीबत खड़ी हो जाती। पुलिस तुझे पकड़ ले जाती और इधर मेरा दिवाला निकलता। लेकिन अब यह सब ठाठ-बाट कब तक चलायेगा?"

अंतिम वाक्य कह लेने के बाद भजन ने कमर पर हाथ रख कर फिल्मी हीरो की मुद्रा में गर्दन टेढ़ी कर ली।

सुनिर्मल बोला, "मैंने तो रथीन से कहा था कि मुझे संतोष मौसी के घर ले चलो।"

"फिर वहीं क्यों नहीं गया? क्यों मुझसे इस तरह झूठ कहलवाया? अब वह बुढ़वा फिर यहाँ आये बिना थोड़े मानेगा? कहता क्या है कि मैं उन्हीं लोगों का आदमी हूँ।"

थोड़ा रुक कर भजन फिर बोला, "खैर, मेरा इससे कुछ नहीं बिगड़ता। इस मुल्क के लोगों के पास कोई काम-धंधा तो नहीं है, इसलिए जिसको देखो वही तिल का ताड़ बनाता है।"

यह कह कर भजन रसोईघर में चला गया। वहाँ उसने देखा कि भट्ठी के पास बड़े प्लेट में डबल अंडे का आमलेट पावरोटी और मक्खन रखा है। क्या बात है? उसने चरण को बुलाया, "चरण!"

चरण को पुकारे जाने का इंतजार था। इसलिए वह भजन के पीछे हाथ बाँधे खड़ा हो गया। उसके चेहरे पर ऐसा भाव है कि चोरी करने जा कर पकड़ा गया हो। फिर भी उसके होंठों पर हँसी बरकरार है। उसने कहाँ, "जी हाँ।"

"जी हाँ के बच्चे, इधर आओ।"

भजन ने आँखें तरेर कर चरण की ओर देखा। उसने सोचा कि क्या यह हरामजादा भी चुरा कर खाता है? उसने पूछा, "इस समय सवेरे तो कोई गाहक नहीं है, फिर यह खाना किसके लिए परोसा गया है?"

"जी!"

मुस्करा कर चरण रुक गया। मानो वह शरमा भी गया। लेकिन वह भजन के हाथ की पहुँच के बाहर ही रहा।

"जी के बाद क्या है, बोल हरामजादा!"

भजन बिगड़ गया।

चरण ने सुनिर्मल की ओर इशारा किया और कहा, "उस बाबू के लिए।"

"क्या फरमाया!"

भजन की आँखें सिकुड़ गयी। फिर उसने कहा, "अपने बाबू के लिए तो जान निकली जा रही है। लेकिन मैं पूछ रहा हूँ कि इसका दाम कौन देगा?"

चरण बोला, "बाबू जी की तबीयत ठीक नहीं है।"

भजन ने डाँट लगायी, "बस कर! बाबू जी के लिए मरा जा रहा है।"

सबसे ज्यादा आश्चर्य सुनिर्मल को हुआ। उसे कुछ भी पता नहीं था। उसने पूछा, "क्या मेरे लिए नाश्ता बनाया है? लेकिन मैंने तो —"

भजन सुनिर्मल पर भी बिगड़ गया। उसने मुँह बना कर कहा, "छोड़ो! अब तुम्हें सफाई देने की जरूरत नहीं है। एक साला था जिसने खुद खा कर मुझे तबाह किया। अब यह साला दूसरों को खिला कर मुझे तबाह करने पर तुला हुआ है।"

फिर चरण की तरफ देख कर भजन ने कहा, "अब रुक क्यों गये? खिलाओ अपने बाबू जी को। कल तुम्हारे बाबू जी ने बहुत खून बहाया है, रोटी और अंडे के साथ थोड़ा दूध भी देना। फायदा करेगा।"

चरण समझ गया कि मुँह बना कर कहने के बावजूद यही भजन का असली निर्देश है। लाट साहब भजन सचमुच रहमदिल है। चरण झटपट दूध गरम करने लगा।

भजन ने चरण की तरफ देख कर कहा, "ठहर जा, मैं तुझे दुरुस्त करूँगा। अब यह कारोबार बंद करके तुझे यहाँ से भगाऊँगा। खैर, अभी झोला ले कर चल, बाजार हो आऊँ।"

यह कर भजन सामने वाले कमरे में चला गया। चरण ने मुस्करा कर सुनिर्मल की ओर देखा। सुनिर्मल भी मुस्कराने लगा। असल में दोनों भजन के मिजाज से परिचित हो चुके हैं।

नया साल शुरू हुआ है। अंग्रेजी नये वर्ष के शुरू में जनवरी के दूसरे हफ्ते नारायण को अचानक रिहा कर दिया गया।

किसी को कोई खबर दिये बिना नारायण एक दिन शाम को आ पहुँचे। वे अभी-अभी ट्रेन से उतरे हैं। स्टेशन के बाहर बने ऊँचे चबूतरे पर खड़े हो कर उन्होंने आश्चर्य से श्रीमती काफे की तरफ देखा। उनके पीछे रेलवे के दो कुली सिर पर बक्सा-बिस्तर लिये खड़े हैं।

नारायण सीढ़ी के सामने आ कर खड़े हुए। श्रीमती काफे के पीछे सूरज डूब रहा है। पीली धूप नारायण के चेहरे पर पड़ रही है। उनके चेहरे पर आश्चर्य का भाव है। होंठों पर मुस्कराहट है। मन में थोड़ा संकोच है। लगा कि कहीं थोड़ा दर्द भी है। लेकिन इस सब से ज्यादा उनके चेहरे पर जो भाव स्पष्ट है, वह है मुक्ति का उल्लास। उनकी भूखी निगाह लालची शिशु की जबान की तरह हर चीज का स्वाद लेने लगी। सब कुछ उसी तरह है, सिर्फ श्रीमती काफे के अलावा। नारायण ने एक-एक कर हर चीज को देखा। लाल धूलभरी सड़क उसी तरह है। घोड़ागाड़ियों का अड्डा भी अपनी जगह पर है। कतार में दुकानें भी हैं। पश्चिम से आयी वह सड़क जो एकाएक मुड कर गंगा की तरफ चली गयी है, वह भी उसी तरह है। उसके मोड़ पर पीपल का वह नंगा पेड़ भी है। उसके नीचे बैठने वाला मोची भी है। दुकानदार भी सभी जाने-पहचाने हैं। दक्खिन की ओर जाने वाली वह सड़क भी पहले की तरह है। उस सड़क के दोनों किनारे पेड़ों की कतारें हैं। उन्हीं पेड़ों के पीछे उधर कहीं एक इक-मंजिला मकान छिपा हुआ है। मकान बहुत बड़ा नहीं है। उसमें कई कमरे हैं, चबूतरा है, कुइयां है, पिछवाड़े दरवाजा है, चहारदीवारी के पास अमरूद का पेड़ है और वहीं से टोला शुरू होता है, जहां तमाम पड़ोसी हैं।

अब नारायण की आँखें भर आयीं। उन्हें अपनी माँ याद आयीं। माँ और वकुल माँ, पिता जी, भजन, उसकी बीवी और बच्चे। न जाने कैसा सूनापन नारायण के सीने में भर गया। उनके मन में आया कि उस धूल भरी सड़क को दोनों बाँहों में जकड़ लें और उसी सड़क की गोद में मुँह छिपाये रहूँ। उनका सारा शरीर रोमांचित हो ।। वे किसी तरह आँसुओं को रोक नहीं सके।

सड़क पर शाम की भीड़ है। ट्रेन आयी तो उसकी भी भीड़ है। सड़क से आने-जाने वाले कई लोग नारायण को देख कर रुक गये। आश्चर्य से कई दुकानदार नारायण को देखने लगे। भुन्नू और एक-दो दूसरे कोचवान चिल्ला कर पुकारने जा कर भी रुक गये। मुसाफिर मालदार है, इसमें शक नहीं; लेकिन यह कोई वैसा भी नहीं लगता। फिर सब को लगा कि शक्ल जानी-पहचानी है, लेकिन हिम्मत कर के कोई कुछ कह नहीं सका।

अचानक कुट्टी पगला चिल्ला पड़ा, "अरे, नरायन ठाकुर आया है, नरायन ठाकुर !"

कुट्टी पगला ने आगे बढ़ कर नारायण का हाथ पकड़ लिया। फिर दूसरे हाथ से उसने नारायण की ठुड्डी पकड़ कर कहा, "अब कहाँ जाओगे मदनगोपाल ? अब तो मथुरा नहीं जाओगे ?"

फिर पगले ने गा कर कहा, "रथ के निचिया लेटी रहूँगी, प्राण दे दूँगी सखी राह में।"

अब देखते-देखते हल्ला मच गया — नारायण भैया आये हैं। नारायण ठाकुर आया है। अरे, बड़े ठाकुर आये हैं।

नारायण भैया, याने लाट साहब भजन के बड़े भाई। अरे, वही जो साहब को मार कर जेल गये थे। हाँ-हाँ, वही तो नक्कू हालदार के बड़े लड़के हैं। पाँच साल बाद लौटे हैं। पाँच नही यार, दस साल बाद! अरे नहीं चौदह साल बाद। मानो राम वनवास से लौटा है। लेकिन उनकी तो फाँसी होने की बात थी? थी तो, लेकिन नही दे सकी साली सरकार! अरे, देखो न! बदन से सूरज की किरण जैसी छटा निकल रही है!

हाँ, सूरज की किरण जैसी छटा ही है। लेकिन नारायण बहुत दुबले हो गये हैं। उनका चेहरा ज्यादा गोरा लग रहा है। मानो किसी लोकगीतकार बाउल का चिकना पवित्र चेहरा हो। फिर नारायण की निगाह सब की ओर गयी। आश्चर्य है, कोई भी नारायण को भूला नही है। सब उनकी तरफ ऐसे देख रहे हैं जैसे उनका कोई खोया हुआ प्रियजन मिल गया हो। दो-चार लोग नारायण की तरफ बढ़े। नारायण झटपट आँखें पोंछ कर सीढ़ी से उतरने लगे।

कुट्टी पगले ने नारायण का हाथ जोर से पकड़ लिया। कहा, "अब कहाँ जाओगे ठाकुर? अगर जाना है तो इकन्नी देते जाओ। नहीं तो नही जाने दूँगा।"

नहीं जाने दूँगा! नारायण हँसने लगे। यह कुट्टी पगला उसी तरह है, जरा भी नही बदला। इसके लिए नारायण वही पुराना नरायन है। नारायण ने जेब से इकन्नी निकाल कर कुट्टी के हाथ पर रख दी। फिर वे स्टेशन के सामने वाले चबूतरे की सीढ़ी से उतर कर श्रीमती काफे मे चले गये।

हीरेन और कृपाल न जाने किस विषय पर बात कर रहे थे, नारायण को देख कर चौंक उठे। वे कुर्सी छोड़ कर खड़े हो गये। हीरेन ने आगे बढ़ कर नारायण को बाँहों मे जकड़ लिया। कृपाल ने नारायण का हाथ पकड़ा। होटल में जो लोग खा-पी रहे थे, उनमें से जो नारायण को जानते हैं, कुर्सी छोड़ कर उनके पास आये। वे सब नारायण से बात करना चाहते हैं। बाहर से भी कई लोग होटल के अंदर चले आये।

अंदर वाले दरवाजे के पास खड़े हो कर चरण आश्चर्य से नारायण को देखने लगा। नारायण को पहचानने में चरण से देर नही हुई। नारायण की शक्ल-सूरत के बारे में चरण ने अनेक बार सुना था, उससे भी ज्यादा सुना था उनका नाम। चरण ने इस शख्स के बारे में विचित्र धारणा बना ली थी। उसके मन में इस शख्स को देखने की बड़ी इच्छा थी। वह इनके चरण छूना चाहता था। लेकिन वह कुछ भी नहीं कर सका, चुपचाप खड़ा रहा। वह उस रूप को निहारने लगा। उस रूप को निहारने से ही उसका मन विभोर होने लगा।

सिर्फ भजन किसी तरफ नही देख रहा है। तीसरे पहर ही उसने शराब पी ली थी। अब नशा जम गया है। टेबुल पर सिर रख कर वह बेखबर बैठा है। उसे पता ही नही चला कि कौन आया है। वह कुछ सोच भी नही पा रहा है।

भजन पर नारायण की निगाह पड़ी। नारायण समझ गये कि भजन शराब के नशे में चूर है। जेल मे रहते समय ही नारायण को भजन के बारे में तरह-तरह की

खबर मिलती थी। उनको यह मालूम हो गया था कि भजन शराबी हो गया है। वह रोज शराब पीने लगा है। तीक्ष्ण बुद्धि और साहस में वह इस इलाके में अपना सानी नहीं रखता था। लेकिन न जाने क्यों वह शराब पीने लगा है! यह सब सोच कर नारायण का मन दुखी हो गया। उन्हें बड़ी तकलीफ होने लगी। सीने में न जाने कैसा असहनीय दर्द होने लगा। नारायण को भजन बड़ा प्रिय है। भजन का स्वभाव बड़ा जिद्दी है, इसलिए वह नारायण का बड़ा दुलारा है। लेकिन क्यों, क्यों भजन ऐसा हो गया?

नारायण ने भजन के सिर पर हाथ रखा, फिर धीरे से पुकारा, "भजन! ओ भजन!"

सब खामोश हैं। धीरे-धीरे लोग आते जा रहे हैं। रास्ते से गुजरने वाले सभी जान-पहचान के लोग दुकान में आने लगे। श्रीमती काफे मानो शहर का होटल नहीं, पंसारी की दुकान हो। पंसारी की दुकान की तरह यहाँ भी भीड़ इकट्ठी होने लगी। कस्बे का लड़का जेल से छूट कर आया है। इसलिए सभी देखने आये हैं। अब सब लोग दोनों भाइयों का तमाशा देखने लगे। कुछ लोग तो यही देखने के लिए रुके रहे कि शराबी भजन शराब के नशे में क्या करता है। दोनों कुली अभी तक खड़े हैं। किसी ने उनके सिर से सामान उतार लिया था, फिर भी वे दोनों खड़े रहे।

नारायण ने फिर पुकारा, "भजन! अरे भोजू!"

टेबुल पर मुंह रगड़ते हुए भारी लड़खड़ाती आवाज में भजन ने कहा, "यह भरी पुकार बहुत सुन चुका हूँ भाई, अब अपने राम इस चक्कर में नहीं पड़ने वाला!"

खड़े लोगों में से दो-चार मुँह दाब कर मुस्कराये। अन्य लोगों ने उनकी तरफ देख कर भौंहें सिकोड़ लीं।

चरण की जबान हिल कर भी सुस्त पड़ गयी। उसके मन में आया कि चिल्ला कर भजन बाबू को सचेत कर दूं।

नारायण ने भजन के सिर पर हाथ रख कर थोड़ा हिलाया और पुकारा, "भजन! अरे भजन! मैं आया हूँ।"

भजन ने अपनी गुड़हल जैसी लाल आँखें खोलीं, फिर हँस कर कहा, "कौन आ गयी तुम मेरे अँधेरे हृदय में दीपक जलाने?"

फिर कई चेहरों पर दबी मुस्कराहट झलक गयी। भीड़ बढ़ने लगी। भीड़ देख कर भी बहुत से लोग भीड़ बढ़ाने चले आये। उन लोगों ने पूछा — क्या हुआ है? उनको जवाब मिला—अरे, कुछ नहीं! कुछ नहीं हुआ। नारायण भैया लौट आये हैं।

नारायण ने मुस्करा कर भजन से कहा, "मैं नारायण हूँ, तेरा भैया।"

अब भजन आँखें फाड़ कर देखने लगा। फिर वह इस तरह चौंक पड़ा, मानो सामने भूत खड़ा हो। उसने जल्दी-जल्दी दोनों हाथों से चेहरा ढक कर कहा, "भैया

आप ? आप आ गये ? आप मेरे श्रीमती काफे में आये ? लेकिन, लेकिन मैंने शराब पी है।"

यह सुन कर भी कुछ लोग हँसे। नारायण ने भजन का हाथ पकड़ लिया। भजन के मुँह से यह सुन कर कि मैंने शराब पी है, नारायण के सीने मे असहनीय दर्द होने लगा। उन्होंने पूछा, "लेकिन क्यों ? क्यों शराब पी ?"

भजन के मुँह से फिर निकला, "भैया, आप सचमुच आ गये ? लेकिन मैं, मैं तो शराबी बन गया हूँ।"

इतना कह लेने के बाद भजन का चेहरा मानो और ज्यादा लाल हो गया। नारायण का चेहरा भी लाल हो उठा। लेकिन दोनों ही चुप रहे। दोनो ने महसूस किया कि गले में बहुत कुछ उमड़-घुमड़ रहा है, लेकिन जबान पर कोई बात नहीं आ रही है। बहुत दिनों, बहुत बरसों बाद दोनों भाई बाहर मिल सके। बाहर, याने जेल के बाहर, खुले आसमान के नीचे और तमाम लोगों के बीच। भाई-भाई के रिश्ते से बढ़ कर दोनों में दोस्ती का रिश्ता है। लेकिन दोनों के मुँह से कोई बात नही निकल रही है। मानो दोनो ही दोनो मे किसी बात की कमी पा रहे हैं और उसी कमी की पीड़ा के कारण वे चुप हैं।

नारायण आये हैं, यह खबर इसी बीच चारो तरफ फैल चुकी है। यही खबर सुन कर प्रियनाथ आया है। रथीन आया है। और भी कई लड़के आये हैं।

तभी आये नौजवान पुलिस अफसर। उनके आने में कुछ देर हो गयी है। वे नारायण को अपने 'स्टेशन' में 'रिसीव' करने आये हैं। यहाँ 'स्टेशन' का मतलब पुलिस स्टेशन याने थाने से और 'रिसीव' का मतलब पुलिस अफसर का अपना परिचय देने से है। सरकार की तरफ से नारायण पर अब भी जो पाबंदियाँ लगी हैं, पुलिस अफसर उन्हीं का दोबारा बयान करने आये हैं। मजे की बात है कि जेल से छूटते समय ही नारायण ने उन पाबंदियों वाला आर्डर पढ़ कर उस पर दस्तखत किया था। यहाँ श्रीमती काफे में इतनी भीड़ देख कर पुलिस अफसर घबड़ा गये। यहाँ इतनी भीड़ क्यों ? क्या जेल से निकलते ही नारायण बाबू मीटिंग करने लगे ? लेकिन उनके लिए तो मीटिंग करना मना है!

पुलिस अफसर को देखते ही लोगों के चेहरे का भाव बदल गया। बहुत से लोग इधर-उधर होने याने खिसकने लगे। जो लोग खड़े रहे, वे दोनो बगल सिमट गये ताकि पुलिस अफसर अंदर आ सके।

अंदर आते ही पुलिस अफसर ने टोपी उतारी। नारायण को पहचानने में उन्होंने कोई गलती नहीं की। उन्होंने नारायण से कहा, "आपके लिए मीटिंग करना मना है।"

नारायण आश्चर्य मे पड़ गये। वहाँ जितने लोग मौजूद थे, सबको आश्चर्य हुआ। मीटिंग कहाँ हो रही है ? नारायण ने पूछा, "आपने मीटिंग कहाँ देखी ? हम तो एक-दूसरे से मिल रहे हैं।"

"अच्छा ! अच्छा !"

पुलिस अफसर मानो बेवकूफ बन गये। उन्होंने आश्चर्य से भीड़ का मुआइना किया। यह भी कैसी बात हुई ? इतने लोग मिलने आये हैं ? ये सभी, राह चलने वाले, दुकानदार और गाड़ीवान ?

इतने में भजन को मानो होश आया। उसने पुलिस अफसर के लिए कहा, "साहब ने इसे मीटिंग समझ लिया है तो फिर मीटिंग ही हो। चाय पीने की मीटिंग। भाइयो, सब अंदर चले आओ। आ जाओ दुकान के अंदर।"

फिर भजन ने हांक लगायी, "चरण, सब को चाय पिला। कोई छूटने न पाये। भाइयो, सब चले आओ।"

बहुत-से लोग अंदर आये, लेकिन कुछ लोग डर के मारे चले गये। खैर, ज्यादातर लोग अंदर आये। जिनको जगह नहीं मिली, वे बरामदे में खड़े रहे।

पुलिस अफसर ने हँसने की कोशिश की और कहा, "बुरा मत मानिए। मैंने कुछ और समझ लिया था। अच्छा, मैं चला नारायण बाबू। फिर आप रविवार को थाने पर आ रहे हैं ?"

इतना कह कर नमस्कार करने के अंदाज के साथ पुलिस अफसर बाहर चले गये। उनके सीने में जलन होने लगी। उन्हें लगा कि ये सारे लोग एक नंबर के शैतान हैं। अब ये सब शैतान मन ही मन हँस रहे होंगे। लेकिन सब दिन एक समान नहीं बीतेंगे। खास कर उस शराबी लाट साहब भजन की बात तो ऐसी लगती है जैसे साँप डस रहा हो। क्या उसे कभी चंगुल में नहीं फँसाया जा सकता ?

फिर नारायण को प्रणाम करने की बारी आयी। पहले रथीन आया, फिर सुनिर्मल। सुनिर्मल के हाथ का घाव ठीक हो चुका है। और भी बहुत से लड़के नारायण को प्रणाम करने लगे। नारायण सब को गले से लगा रहे हैं। प्रियनाथ से वे बड़ी गर्मजोशी से गले मिले। एक तरह की लज्जा और आनंद से नारायण भर उठे। फिर भी उनके सीने के अंदर बेचैनी बनी रही। न जाने उनके सीने में कैसी कसक महसूस होने लगी। भजन का रंग-ढंग देख कर वे डर गये हैं।

अंत में चरण ने आगे बढ़ कर नारायण को प्रणाम किया। नारायण ने चरण को अपने पास खींच कर उससे पूछा, "तुम कौन हो भाई ?"

चरण का सारा बदन रोमांचित हो उठा। अभी तक उससे किसी ने नहीं पूछा कि तुम कौन हो भाई ? यह संबोधन सुन कर चरण को उसी तरह रुलाई आ गयी, जिस तरह कोई बच्चा सोते-सोते रो उठता है। ऐसा संबोधन सुनने के लिए वह मन ही मन तैयार नहीं था। फिर ऐसी बात इतने बड़े आदमी के मुँह से सुनने को मिली ! मासूम बच्चे की तरह चरण के होंठ कांप उठे। फिर उसने धीरे से कहा, "चरण।"

भजन ने नारायण भैया से कहा, "यह चरण है, श्रीमती काफे का हेड बावरची।"

भय और उत्कंठा के मारे चरण सहम गया। हेड बावरची सुन कर नारायण

का व्यवहार कहीं बदल न जाय, कहो उनकी आवाज में तब्दीली न आ जाय। लेकिन वैसा कुछ नहीं हुआ, बल्कि नारायण ने बड़े प्रेम से चरण को अपनी ओर खींचा और मुस्करा कर कहा, "तुम हेड बावरची हो? लेकिन चरण नाम तो उससे कहीं अच्छा है। तुम क्या कहते हो चरण?"

लेकिन चरण के लिए आँसुओं को रोकना मुश्किल हो चला। वह झटपट वहाँ से भाग गया। फिर रसोईघर में जा कर उसने थोड़ी देर रो लिया तो उसकी जान में जान आयी। मैं चरण हूँ, चरण बावरची। इतना प्यार मुझसे बरदाश्त नहीं होता। ऐसी प्यारभरी बातें मैं सुन नहीं सकता।

उधर नारायण को लोग घेरे रहे। इसकी यह बात तो उसकी वह बात। जान-पहचान के तमाम लोगों के तमाम प्रश्न और कुशल क्षेम पूछना। एक बार नारायण ने कहा, "क्या तुम सब लोग यहीं दुकान में मिलोगे?"

आधुनिक सारथी भुन्नू कोचवान मुँह बाये दूर खड़ा है। वह अपने नरायन ठाकुर को देख रहा है। भुन्नू का दिल कह रहा है कि हाँ, यह तो देवता ही लगता है। सब को प्रणाम और नमस्कार करते देख कर भुन्नू भी दूर खड़ा माथे से हाथ लगाने लगा। एक तो उसने ताड़ी पी रखी है, फिर वह स्वभाव से अड़ियल भी है। इसलिए वह संकोच में पड़ा हुआ है। नारायन बाबू तो लाट साहब नहीं हैं। इसलिए भुन्नू नरायन बाबू के सामने आने में घबड़ा रहा है।

बंगाली अभी तक नहीं आया। अगर वह आ जाता तो हो-हल्ला ज्यादा होता। नारायण गर्दन घुमा-घुमा कर श्रीमती काफे को अच्छी तरह देखने लगे। उन्हें लगा कि मानो मैंने ही इस होटल को अपने हाथों से सजाया-सँवारा है। कुछ भी हो, यह होटल नारायण के मन के मुताबिक है। सिर्फ उसे दीवार घड़ी के पेंडुलम में कंकाल की खोपड़ी देख कर बुरा लगा। इस सुंदर परिवेश में खोपड़ी नहीं जँचती। इससे सुंदरता मारी जाती है। इसलिए उस घड़ी की टिक-टिक में नारायण को ऐसा लगा कि कोई चिल्ला-चिल्ला कर मौत की कहानी सुना रहा हो।

सूरज डूब चुका है। हेमंत की संध्या गुलाबी ठंडक लिये न जाने कब घिर आयी है। सड़क पर बत्तीवाला बत्ती जलाने लगा। अब देर नहीं की जा सकती। घर से भी बुलावा आया है कि नारायण दुकान में ज्यादा देर न लगायें। नारायण घर की तरफ चले। वहाँ भी सबसे मिलना है। सिर्फ पिता जी के पास जा कर खड़े होने में उनको बुरा लगता है।

बहुत रात हो गयी है। भजन घर लौटा। नारायण सोये नहीं हैं। वे भजन का ही इंतजार कर रहे हैं। उन्होंने भजन को बुला लिया और उसके साथ अपने कमरे में जा कर दरवाजा बंद कर दिया। फिर उन्होंने कहा, "भजन!"

"कहिए।"

"तुमसे दो-चार जरूरी बातें किये बिना मुझे अच्छा नहीं लग रहा है। बैठो।"

भजन ने फिर कहा, "कहिए।"

यह कह कर भजन बैठा।

अब नारायण ने ही थोड़ा आगा-पीछा किया। उन्होंने भजन की तरफ देखा। भजन मानो नारायण से ज्यादा बूढ़ा गया है। उसके चेहरे पर बुढ़ापे की शिकन दिखाई पड़ने लगी है।

नारायण ने कहा, "भजन, तुम कई बच्चों के बाप बन गये हो। फिर भी तुमसे पूछ रहा हूँ कि क्या तुम्हें अपनी पत्नी पसंद नहीं आयी?"

इस सवाल से भजन का चेहरा लाल हो गया। शर्म से नहीं, दर्द से उसका चेहरा लाल दिखाई पड़ा। वह समझ गया कि भैया को चैन नहीं मिल रहा है। वह बोला, "मेरे लिए उससे अच्छी लड़की आपको इस इलाके में कहाँ मिलती? बल्कि मैं ही उसे उसकी कीमत नहीं दे सका।"

नारायण ने फिर भजन की ओर गौर से देखा। नहीं, भजन झूठ नहीं कह रहा है। यह उसकी अकपट स्वीकारोक्ति है। फिर, फिर क्यों ऐसा हुआ? नारायण ने पूछा, "क्या पिता जी के कारण तुम्हें यह घर अच्छा नहीं लगता?"

इस सवाल से भजन की छाती मानो छलनी होने लगी। मानो उसके गले में आवाज फँस गयी। फिर भी किसी तरह उसने कहा, "कभी-कभी पिता जी पर बड़ा गुस्सा आता है। लेकिन भैया, पिता जी के लिए मुझे बड़ी तकलीफ होती है। उनको उस तरह बैठे रहते देख कर मेरा मन मसोस उठता है। उस समय वे एकदम बच्चे लगते हैं।"

इतना कह कर भजन चुप हो गया। नारायण भी चुप रहे। थोड़ी देर किसी की जबान पर कोई बात नहीं आयी। शायद दोनों ने ही पिता जी की स्थिति के बारे में एक बार सोच लिया। उसके बाद नारायण ने कहा, "क्या तुम बकुल माँ से नाराज हो?"

भजन को हँसी आयी। उसने सोचा कि भैया मेरे बारे में न जाने क्या-क्या सोच रहे हैं। फिर उसने कहा, "नहीं तो। बकुल माँ से क्यों नाराजगी होगी?"

"तो क्या तुम्हें मुझ पर गुस्सा है?"

नारायण का स्वर मानो भर आया।

चौंक पड़ा भजन। उसके मुँह से निकला, "क्यों भैया?"

"मैं तो तुम्हारे लिए, बहू और बच्चों के लिए कुछ भी नहीं कर पाता।"

"आप तो देश का काम कर रहे हैं। आपके लिए अलग काम है। उसके लिए मैं क्यों गुस्सा करूँगा?" भजन का चेहरा विकृत हो उठा। शायद पीड़ा के कारण ऐसा हुआ। फिर उसने कहा, "छी छी, मेरे मन में ऐसी बात कभी नहीं आयी।"

नारायण ने भजन का हाथ पकड़ लिया। आतंकवादी नारायण की आँखें छलछला आयीं। उसने कहा, "फिर ऐसा क्यों हुआ भजन?"

भजन थूक निगलने लगा । न जाने गले में क्या फँसता जा रहा है । सारा जोर लगा कर भी वह धीरे-धीरे बोल सका, "पता नहीं । मुझे भी पता नहीं भैया कि क्यों ऐसा हुआ । मैं स्वयं नहीं समझ सका तो आपको क्या समझाऊँगा ? विश्वास कीजिए, शायद मैं खतम हो चुका हूँ । मैंने अपने जीवन में पता नहीं क्या-क्या सोचा, लेकिन अब देखता हूँ कि एक शराबी बन गया हूँ ।"

आवाज भर आयी, फिर भी भजन ने कहा, "अब मुझसे कुछ मत कहिए भैया ।"

लेकिन नारायण से कुछ कहे बिना नहीं रहा गया । उन्होंने कहा, "भजन, तुम मुझसे ज्यादा पढ़-लिखे हो । तुमने कई इम्तहान पास किये हैं । मैं तो वह भी नहीं कर सका ।"

भजन को असह्य कष्ट हुआ । मानो उसने अपने को धिक्कारते हुए कहा, "छी छी, ऐसी बात मत कहिए भैया । मैं तो खुद ही भूल गया हूँ कि मैं पढ़ा-लिखा हूँ । भैया, मेरे कई बच्चे हो गये हैं । अपने बारे मे सोचता हूँ तो डर लगता है, इसलिए मैं अपने बारे में सोचता ही नहीं । भैया, मैं बंगाली और भुन्नू कोचवान के साथ बैठ कर शराब पीता हूँ । किसी भले आदमी के साथ मैं बात भी नहीं करता । अब मुझमें मान-अपमान का बोध भी नहीं है । मैं हार चुका हूँ भैया ।"

"किससे हार चुके हो ?"

"सभी से और सब कुछ से । मैं भगवान को दोष नहीं देता । मैं ही अपना रास्ता नहीं पहचान सका । अब मैं व्यापार कर रहा हूँ, लेकिन इसमें भी हार गया हूँ । मुझे लगता है कि अब मैं सबके लिए बोझ बन गया हूँ ।"

"बस करो भजन, ऐसी बात मत कहो ।" भजन को चुप कराने के बाद नारायण स्वयं भी देर तक चुप रहे ।

भजन सिर झुकाये बैठा रहा । उसका मन बेचैन हो उठा है । उसने कभी यह सोचा भी नहीं था कि कभी किसी के सामने ऐसी बातें कहनी पड़ेंगी । यह सोचने के लिए उसे मौका ही नहीं मिला । फिर भी, अगर कभी ऐसी संभावना हुई तो वह कन्नी काट गया ।

नारायण ने कहा, "भजन, इस तरह आत्मविश्वास खोने से काम नहीं चलेगा । लेकिन मैं भी नहीं समझ पाता कि क्यों ऐसा होता है । फिर भी एक बात है, सिर ऊँचा किये खड़ा न होने पर सब गड़बड़ हो जायेगा । तुम पर बहुत बड़ा उत्तरदायित्व आ गया है, इसको तो तुम भूल नहीं सकते ।"

ठीक उसी वक्त बाहर से बच्चे के रोने की आवाज सुनाई पड़ी तो नारायण चौंक पड़े । उन्होंने जल्दी से कहा, "जाओ भजन, वह तुम्हारा इंतजार कर रही है । जा कर खाना खा लो ।"

भजन उठ कर जाने लगा । कमरे का दरवाजा खोल कर बाहर निकलते ही भजन चौंक पड़ा । उसने देखा कि सामने खिड़की के पास जूही खड़ी है । [illegible] में

आधा चाँद निकल आया है। उसकी धुँधली रोशनी में भजन ने देखा कि जूही के गाल पर आँसू की बूँदें चमक रही हैं। शायद जूही ने दो भाइयों की बातें सुन ली हों।

नारायण अपने कमरे में बैठे रहे। वे हाथ पर गाल टिका कर भजन के बारे में सोचने लगे।

सवेरे नारायण अपने कमरे में बैठे हैं। थोड़ी देर पहले भजन के दोनों बेटे गौर और निताई आ कर ताऊ जी से जान-पहचान कर गये हैं। नारायण ने एक बार सोचा कि पिता जी के पास जा कर बैठा जाय। कल रात को बकुल माँ आयी थीं। शायद वे अभी फिर आयेंगी। और भी बहुत-से लोग आ सकते हैं। अभी पास-पड़ोस के गुरुजन आयेंगे, तमाम लड़के भी आयेंगे।

लेकिन इस समय नारायण को एक बात ज्यादा सताने लगी। वे अपनी रोटी के बारे में सोचने लगे। इस तरह भजन पर बोझ बन कर कब तक रहा जा सकता है? हालाँकि एक बात है, नारायण को अपनी रोटी के बारे में सोचने की जरूरत नहीं है। बहुत से लोग उनके रहने-खाने का इंतजाम करने के लिए आग्रही हैं। लेकिन इस घर में रह कर तो वैसा संभव नहीं है। इसके अलावा नारायण का अपना काम भी तो यहाँ रह कर ज्यादा दिन नहीं चल सकता।

इतने में एक लड़के ने आ कर नारायण को प्रणाम किया। लगभग बारह साल का लड़का। नारायण को उस लड़के का चेहरा जाना-पहचाना लगा। फिर भी वे याद न कर सके कि उस लड़के को उन्होंने कहाँ देखा है और वह किसका बेटा है। बड़ी-बड़ी आँखें, सुघड़ भौंहें, खड़ी नाक और उजला साँवला रंग, फिर वह नाक-नक्श बड़ा परिचित लगा। नारायण ने उस लड़के से पूछा, "तुम्हारा नाम क्या है बेटा?"

"नवीन भट्टाचार्य।"

इतना कह कर उस लड़के ने दरवाजे की तरफ देखा।

नारायण ने लड़के को अपने पास खींच लिया। वह लड़का आश्चर्य से नारायण की तरफ देखा।

फिर नारायण ने उस लड़के से पूछा, "तुम्हारा घर कहाँ है?"

"रानाघाट।"

"यहाँ कहाँ आये हो?"

"मामा के घर।"

"कहाँ है तुम्हारे मामा का घर?"

"उधर गंगा के किनारे।"

इतना परिचय मिल जाने के बाद भी नारायण उस लड़के को नहीं पहचान सके। उन्होंने पूछा, "तुम्हारे पिता जी का क्या नाम है?"

"श्री ननीमाधव भट्टाचार्य।"

इतना कह लेने के बाद फिर उस लड़के की बड़ी-बड़ी आँखों की पुतलियाँ दरवाजे की ओर घूम गयीं ।

अब नारायण ने भी दरवाजे की तरफ देखा । वहाँ उन्हें कत्थई पाड़वाली साड़ी का कुछ हिस्सा दिखाई पड़ा । लेकिन वह स्त्री दिखाई नहीं पड़ी । नारायण ने फिर उस लड़के की तरफ देखा । अब उस लड़के का डर काफी कम हो चुका है । उसकी आँखों से अपनापन झाँकने लगा है । मानो यह गौर से देखने लगा कि क्या यही वह आदमी है । फिर उसने अचानक कहा, "मेरी माँ आयी हैं।"

"तुम्हारी माँ ?" नारायण के मुँह से निकला ।

ठीक उसी वक्त कत्थई साड़ी अंदर आयी । आते ही उसने नारायण को प्रणाम किया । नारायण ने घबड़ा कर कहा, "अरे ! क्या कर रही हैं ? बैठिए ।"

नवीन की माँ बैठी । फिर उसने सिर झुकाये ही कहा, "मैं प्रमीला हूँ । मेरे पिता का नाम श्री नकुलेश्वर पाठक है।"

समझ गये, अब नारायण समझ गये । और कुछ कहने की जरूरत नहीं है । पाठक परिवार की वही बेटी । अब तो वह पूर्ण युवती है । लेकिन नारायण को वही बालिका याद आयी । क्रांतिकारी नारायण का दिल सहसा धड़क उठा । इसी लिए उस लड़के को, माने नवीन को देख कर उन्हें लगा था कि यह चेहरा जाना-पहचाना है । नवीन किशोर है, उस समय उसकी माँ किशोरी थी । लेकिन दोनों के नाक-नक्श एक-दम एक जैसे हैं ।

नारायण ने देखा कि उम्र के भार से प्रमीला के चेहरे पर संजीदगी आयी है । पहले की दुबली-पतली लड़की अब दोहरे बदन की हो गयी है । सिर पर घूँघट नहीं है । घने बालों का गुच्छा वैसा ही है, क्योंकि जूड़ा काफी बड़ा और अस्तव्यस्त लगा । रंग मानो पहले से ज्यादा गोरा हो गया है ।

पल भर में नारायण का मानो सब-कुछ उलट-पलट गया । तमाम बातें याद आने लगीं । लेकिन सब बेमतलब की बातें । जैसे, इस महिला ने अपने बचपन में तहसीलदार के बड़े बेटे से शादी करना चाहा था । माँ ने सुनकर मारा था ! दादी भी ऐसी तरह की हँसने-हँसाने वाली बात करती थीं । वे कहती थीं कि मेरी पोती मिट्टी की ऐसी मूर्ति बनाती है जो देखने में तहसीलदार के बड़े बेटे की तरह लगती है । इससे भी मजेदार बात यह थी कि नारायण जब किशोरावस्था पार करने लगे थे तब उनके मन में भी विचित्र गुदगुदी पैदा होने लगी थी । वह पागलपन किसी के सामने प्रकट नहीं किया जा सकता था । पागलपन के अलावा उस विचित्र अनुभूति को और क्या कहा जा सकता है ? उसी पागलपन के कारण किशोर नारायण बार-बार गंगा किनारे के उस टोले में चला जाता था । लेकिन वह क्या पागलपन ही था ? अगर वह पागलपन था तो उसकी याद गाँस की तरह आज भी छाती में क्यों चुभती रहती है ?

फेफड़ों में साँस जमते रहने से नारायण को अपनी छाती में भारीपन महसूस होने लगा । मन की गहराई में कोई चेहरा छिपा हुआ था । अचानक उन धुँधले दिनों

चेहरे पर से किसी ने परदा हटा दिया। साध नहीं है, इच्छा भी नहीं है, फिर भी बादल की तरह न जाने क्या परतों में छाती के अंदर जमता जा रहा है। माटी की इस दुनिया में शायद उसका कोई यथार्थ रूप नहीं है। हो भी तो नहीं सकता। किसी के मन के गहन में छिपे उस धुंधले पड़े चेहरे की जानकारी शायद उसी को नहीं है, जिसका वह चेहरा है।

नारायण चुपचाप बैठे रहे। अभी जो आयी है, वह भी चुप है। उसे देख कर लगता है कि वह सम्पन्न घर की बहू है। उसे कोई कष्ट नहीं है, कमी नहीं है। नवीन जैसा उसे बेटा मिला है। जरूर उसके पति योग्य हैं। शायद यह सब बताने में वह शरमा रही है। उसके चेहरे पर हँसी है, लेकिन होंठों पर संकोच। चाह कर भी वह चेहरा उठा नहीं पा रही है। फिर अचानक वह बोली, "दादी जी अब नहीं हैं।"

इतना कह कर प्रमीला ने फिर चेहरा झुका लिया। दादी की बात छेड़ते ही उसकी आँखों में आँसू की बड़ी-बड़ी बूंदें जम गयीं।

आश्चर्य है! पहले ही दादी की बात क्यों? लेकिन दादी के अलावा और कौन है? उन दिनों उन दोनों के बीच और तो कोई नहीं था। दादी ही तो उसके कैशोर की दूती थीं, राधा की दूतिका की तरह।

नारायण ने दुखी होकर पूछा, "कब उनका स्वर्गवास हुआ?"

आँसू पोंछ कर प्रमीला ने कहा, "तीन साल हो गये हैं।"

नारायण खामोश रहे।

प्रमीला फिर बोली, "दादी आपकी बात बहुत करती थीं।"

फिर आँखों में आँसू भर गये। दादी न जाने कितनी बातें करती थीं। वे सब बातें याद आने पर प्रमीला आँसुओं को नहीं रोक सकती। भले ही वे आँसू प्रमीला के लिए लज्जा के कारण बनें! आखिर प्रमीला ने कोई पाप तो नहीं किया? दादी ने कितने ही दिन अकारण इस आदमी के बारे में प्रमीला को बताया है। दादी भी न जाने क्यों इस आदमी को बहुत ज्यादा चाहती थीं। इसलिए इस आदमी ने भी न जाने कैसे प्रमीला के मन में अपनी जगह बना ली है। इससे ज्यादा प्रमीला भी कुछ नहीं जानती। विवाहित जीवन में यह सब उसे पाप लगा है। लेकिन वह पाप कहाँ है, यह जाने बिना उसे कैसे धोया जा सकता है? ये जो आँसू हैं, ये भी कहाँ से फूट पड़ते हैं प्रमीला को पता नहीं चलता। फिर भी जब समय होता है, ये आँसू निकल ही आते हैं। ये आँसू रोके नहीं जा सकते।

"रहने दो, अब वे सब बातें करने से क्या फायदा?"

कहने को तो नारायण ने कह दिया, लेकिन वे जानते हैं कि इससे भी कोई फायदा नहीं है। इसलिए थोड़ा हिल-डुल कर बैठने के बाद उन्होंने पूछा, "कब आयी ससुराल से?"

"एक महीना हो चुका है। ससुराल लौट जाने की बात थी, लेकिन नहीं गयी। शायद आपसे मुलाकात होने का संयोग था, इसलिए नहीं जा सकी।"

इतनी देर बाद नारायण दिल खोल कर हँसे। लेकिन इस हँसी से भी घुट दूर नहीं हुई।

प्रमीला बोली, "हँसने की बात नही है नारायण भैया, आपके लिए मेरे म मे बडी चिंता थी।"

नारायण ने फिर हँसना चाहा, लेकिन वे हँस न सके। प्रमीला भी कित भोली है। वैसा ही भोला उसका लड़का है। माँ-बेटे मे मानो कोई फर्क नही है।

किसी तरफ ध्यान दिये बिना प्रमीला अपनी बात करती गयी। वह बोल "इस दुनिया मे कोई भी सीधे ढंग से नही सोचता। हर कोई हर बात का उल मतलब निकालता है। इसलिए कभी मैं अपने मन की बात किसी से न कह सकी लेकिन नारायण भैया, आप तो उलटा मतलब नही निकालेंगे? मैं दिनरात आप लिए भगवान को पुकारती रहती हूँ, लेकिन किसी को पता चलने नहीं देती।"

दिनरात भगवान को पुकारने की बात कहने की क्या जरूरत थी? यह अपने अनजाने में नारायण जानते ही हैं। शायद इसी लिए उनकी साँस मानो रु लगी। उनके कठोर अटल प्राण भी प्रमीला से ऐसी बात सुनने के लिए क्षण भर पह तक तैयार नही थे। इसलिए मानो एकाएक सब कुछ गडबड़ा गया। नारायण के हृद में छिपे घाव को न जाने किसने अचानक कुरेद दिया। जिसने भी ऐसा किया, क वह नारायण के हृदय को दुनिया के सामने उघाड़ना चाहता है? लेकिन इस वक्त क कहा जाय? नारायण की जबान पर वह बात नही आयी।

प्रमीला ने आँसू भरी आँखो से नारायण की तरफ देखा, निस्संकोच हो क देखा और कहा, "सुना है कि जेल मे वे लोग बडा जुल्म करते हैं?"

नवीन के सिर को धीरे-धीरे सहलाते हुए नारायण ने कहा, "हाँ करते तो है शुरू-शुरू में किया था, लेकिन आखिर में वे हार मान चुके थे।"

फिर थोड़ा मुस्करा कर नारायण ने कहा, "वे सब सिर्फ जुल्म करना ही जान हैं। इनसान को तो देख रही हो। जो जितना कमजोर होता है, उस पर उतना जुल्म किया जाता है। इससे हमारा सिर भी ऊँचा होता है। फिर एक बात बता प्रमीला? मन में बुरी चिंता मत लाओ और न बार-बार भगवान को पुकार कर उन परेशान करो। मेरे सुख के लिए बार-बार उनसे कहोगी तो वे भी तुम्हारी बात अ सुनी कर देंगे। सिर्फ इतना कहो कि इस जिंदगी में मुझे हार न माननी पड़े। अ हार माननी पडी तो शतायु हो कर जिंदा रहना भी तो अभिशाप है।"

प्रमीला ने असहाय की तरह कहा, "यह सब मैं नही समझती। लेकिन अ हार मानेंगे, अगर यह बात भगवान भी आ कर कहता है तो मैं उस पर विश्वास न कर सकती। फिर तो कुछ भी नहीं रहेगा।"

यह सुन कर नारायण के रुद्ध हृदय का द्वार मानो खुल गया। वे बोले, "स मुच फिर तो कुछ भी नही रहेगा। खैर, हम हार नहीं मानेंगे। तुम सब की दिनर की प्रार्थना कभी बेकार नही जायेगी।"

मानो कुछ कहना चाह कर भी प्रमीला चुप रह गयी। उसने सिर्फ देखा कि नारायण भैया का चेहरा उज्ज्वल हो उठा है और वे स्वयं न जाने किस सपने में डूब गये हैं।

अब मौका पा कर नवीन ने माँ से पूछा, "पूछूँ माँ ?"

प्रमीला ने मुस्करा कर स्वीकृति दी।

नवीन ने कहा, "मामा जी !"

नारायण ने मुस्करा कर कहा, "बोलो बेटे।"

"क्या आपने साहब मारा है ?"

"क्या साहब मारने पर तुम खुश होगे ?"

नवीन ने गंभीर हो कर कहा, "जी हाँ। ये साहब मर जायेंगे तो मुझे खुशी होगी।"

"ऐसा क्यों ?"

"उन्हीं लोगों ने तो हमारे देश को गुलाम बना रखा है।"

नारायण ने फिर भी पूछा, "यह तुमने कैसे समझ लिया ?"

इस सवाल से नवीन थोड़ा असमंजस में पड़ गया। फिर भी उसने कहा, "फिर वे लोग हमारे देश में क्यों हैं ? क्यों वे हमारे देश के राजा बनेंगे ? मामा जी, मैं आपके पास रहूँगा।"

"सच ?" फिर एक बार प्रमीला की तरफ देख कर नारायण ने नवीन से पूछा, "लेकिन तुम्हारी माँ क्यों रहने देंगी ?"

"माँ ने ही कहा है। मैं आपकी तरह बन जाऊँगा तो माँ को कोई दुख नहीं रहेगा।"

नारायण हँसने लगे। उन्होंने नवीन को अपने पास खींच लिया।

प्रमीला बोली, "आप उसे आशीर्वाद दीजिए नारायण भैया। आपको सिर्फ एक बार देखने के लिए वह बेचैन हो उठा था। ऐसा पागल लड़का है कि कहीं से किसी को देख आयेगा तो कहेगा कि नारायण मामा को देख आया। हालांकि उसने कभी आपको नहीं देखा था।"

फिर हाथ बढ़ा कर नारायण के पाँव छूते हुए प्रमीला ने कहा, "नारायण भैया, मैं आपकी कोई नहीं हूँ। फिर भी अगर कभी-कभी चिट्ठी लिख कर सूचित कर दें कि आप कैसे हैं तो मुझे चिंतित होना नहीं पड़ेगा।"

नारायण के लिए ऐसा वादा करना संभव नहीं है। फिर भी उन्होंने कहा, "जब भी मौका मिलेगा, चिट्ठी लिखूंगा प्रमीला।"

नवीन भी प्रणाम करके चलने के लिए तैयार हो गया। लेकिन जाते-जाते भी प्रमीला रुक गयी। उसने कहा, "एक बात कह रही हूँ नारायण भैया, मेरे पास रुपये-पैसे या सोने-चाँदी की कमी नहीं है। मेरे पति भी और चार भले लोगों की तरह भले

हैं। फिर भी अगर आप एक बार मेरे घर में कदम नहीं रखेंगे तो मरते दम तक मुझे सब कुछ सूना लगेगा। आयेंगे न मेरे घर ?"

नारायण के मुंह से सहसा कोई बात नहीं निकली। ऐसा आग्रह करना प्रमीला को कहाँ तक शोभा देता है, यह तो अलग बात हुई, लेकिन उससे बड़ी बात यह है कि नारायण कैसे स्वीकृति दें। उनका जीवन तो खतरे से खाली नहीं है। हो सकता है कि कल ही उनके जीवन मे कोई नया अभिशाप प्रकट हो जाय, या वही अचानक मौत के मुंह में चले जायें। उस हालत में तो उनके लिए वादा निभाना संभव नही होगा। फिर वादा करके उसे न निभा पाने पर भी तो उनके जीवन में अफ़सोस रह जायेगा। उनको यह भी लगा कि प्रमीला के इस आग्रह को स्वीकार कर अगर मैं एक बार भी उसके घर न गया तो इस जीवन का बहुत सा हिस्सा बेकार चला जायेगा। उस व्यर्थता के बारे मे किसी से शिकायत भी नहीं की जा सकेगी। हाँ, आज प्रमीला न आती तो कोई बात न थी। लेकिन आज उसके आने के बाद 'नहीं जाऊँगा' कहने की निष्ठुरता नारायण कैसे कर सकते हैं ?

इसलिए नारायण ने कहा, "जाऊँगा, मौका आने पर जरूर जाऊँगा।"

"लेकिन वह मौका मेरे मरने से पहले आना चाहिए नारायण भैया।"

इतना कह कर प्रमीला नवीन का हाथ पकड़ कर कमरे से निकल गयी। कमरे से निकलते समय उसकी आँखों के आगे मानों सब कुछ धुंधला दिखाई पड़ा।

आँगन में जूही ने प्रमीला का रास्ता रोका। उसने प्रमीला और उसके बेटे के हाथ पकड़ कर कहा, "मुन्ना को बगैरह कुछ खिलाये आप नही ले जा सकती बहन।"

इतना कह कर जूही प्रमीला और उसके बेटे को रसोईघर की तरफ़ ले गयी। न जाने क्यों जूही की भी आँखें भर आयी। एक ही खारे समुद्र की अतल गहराई मे दोनो के हृदय डूबने लगे। आँसू की तरह दर्द, लज्जा और संकोच भी हैं। लेकिन दोनो स्त्रियों मे से किसी को वह सब छिपाने का मौका नही मिला। इसलिए खाना खाते हुए नवीन आश्चर्य से दोनो स्त्रियो को देखता रहा।

जब दोनो स्त्रियो के आँसू कुछ थमे, तब प्रमीला के ही चेहरे पर पहले पहल संकोच का आभास दिखाई पडा। जूही की दृष्टि मानो प्रमीला के मन के गहरे मे पैठ कर एक-एक चीज को देखना चाह रही हो। फिर जल्दी-जल्दी अपना संकोच हटा कर प्रमीला बोली, "देखो भाभी, तुमसे बहुत बड़ा झगडा है।"

जूही ने हँस कर कहा, "फिर लड लो न ननदी, मेरी जान तो बचे !"

गंभीर बनने की कोशिश करते हुए प्रमीला ने कहा, "मजाक नही। जैसा सुना है, वैसे यह घर कितने दिन चलेगा ? क्या तुमने भजन भैया की लगाम एकदम छोड दी है ?"

जूही ने फिर भी हँस कर कहा, "छोड़ना चाहने पर भी कहाँ छोड़ सकती हूँ ? रही सँभालने की बात, वह मेरे वश की नही है।"

यह कहते-कहते सहसा जूही का गला मानो भर आया।

एक क्षण चुप रहने के बाद प्रमीला ने कहा, "सब समझती हूँ बहन, फिर भी इतना बड़ा परिवार, यही सोचकर डर लगता है। वही जो श्रीमती काफी है, उसी का तो भरोसा है। फिर भी भजन भैया नहीं समझते। वे दूसरों के पीछे उसी को चौपट कर रहे हैं। इस दुनिया के मर्द न जाने किस बात के पीछे पागल हैं ? वे जरा भी नहीं समझते कि घर के अँधेरे कोने में हमारा क्या हाल हो रहा है। कम से कम उनको इतना तो समझना चाहिए।"

"नहीं, वे नहीं समझ सकते।" जूही का स्वर तेज हो गया। उसने कहा, "सुनती हूँ कि देश के उद्धार के लिए सब पागल हो गये हैं। पता नहीं औरतें कब अपने उद्धार के लिए कमर कसेंगी ?"

प्रमीला ने आश्चर्य से जूही को तरफ देखा और कहा, "भाभी, क्या तुम भजन भैया को — ?"

जूही ने प्रमीला को अपनी बात पूरी करने का मौका न दे कर जल्दी-जल्दी कहा, "नहीं ननदी, मैं उनको गलत नहीं समझती। तुमने मेरे अचेत पड़े मन को झक-झोर दिया, इसी लिए कहा। सब कुछ दे कर भी अगर तुम्हारे भैया का मन मिलता तो मैं अपने को कृतार्थ मानती। लेकिन मैं उनको भी दोष नहीं देती। वे अपने ही मन को ले कर परेशान हैं तो मेरे मन के बारे में क्या सोचेंगे ? मैं भी उनका बोझ बढ़ाना नहीं चाहती।"

"कैसा बोझ भाभी ?"

"यह भी मैं नहीं जानती।"

फिर थोड़ी देर दोनों औरतें चुप रहीं। उसके बाद अचानक जूही बोली, "हर जगह ऐसा ही गड़बड़झाला है ननदी, असली मुलजिम का पता नहीं चलता। नहीं तो — "

जूही को अपनी बात अधूरी छोड़कर चुप होते देख प्रमीला बोली, "रुक क्यों गयी ?"

मुस्करा कर जूही बोली, "नहीं तो आज तुम इस घर में इस तरह क्यों आती ? फिर उसी कमरे से —"

"बस-बस भाभी चुप हो जाओ।" भय और लज्जा के मारे प्रमीला अपने पर काबू न रख सकी। वह एकदम उठ खड़ी हुई और उसके बाद बहुत धीरे-धीरे दबी आवाज में बोली, "यह सब तुम क्या कह रही हो भाभी ? अब वह बात मुझे नहीं सुननी चाहिए।"

इतना कहते-कहते प्रमीला की आँखों में आँसू आ गये।

जूही की आँखें भी गीली हो गयीं। उसने मन ही मन कहा — क्यों नहीं सुननी चाहिए ? सच्चाई को अनदेखा करके जिंदगी भर जलते रहने से तो बेहतर मर जाना है। आखिर इस जिंदा रहने में क्या रखा है ?

कई दिन बाद नारायण भी रोज श्रीमती काफे मे जुटने वाली महफिल में शरीक होने लगे। हालांकि वे उस महफिल मे निश्चित समय तक ही रहते। उसी समय तक के लिए सरकारी आज्ञा है।

नारायण के कारण श्रीमती काफे की महफिल मे भी थोडा परिवर्तन आया है। इधर कुछ दिनों से प्रियनाथ और कृपाल वगैरह के बीच जो बहस चल रहा है, वह चरम पर पहुँच गयी। आये दिन वही बहस छिड़ी रहती। नारायण से बातचीत करने के लिए दो-चार वरिष्ठ कांग्रेसी कार्यकर्ता भी आने लगे। नारायण उनसे उम्र मे छोटे होते पर भी काम के मामले मे बहुत आगे बढे हुए हैं। यह तो कहना ही पडेगा कि इस इलाके मे स्वदेशी आंदोलन की शुरुआत नारायण के कारण हुई है। लेकिन नारायण अपना रास्ता बदल चुके हैं। आज उन्होने जिस रास्ते को और जिस आदर्श का स्वीकार किया है, वह गांधी जी का रास्ता या आदर्श नही है। वे गांधी जी के बताये रास्ते को छोड़ कर विपरीत दिशा मे चलने लगे हैं। यहाँ के कांग्रेसी कार्यकर्ताओं के लिए प्रियनाथ की उपेक्षा करना संभव है, लेकिन नारायण भी तो प्रियनाथ के आदर्श मे आस्था प्रकट करने लगे हैं। देशबंधु चित्तरंजन दास ने जिस ढंग से श्रमिकों के बारे में कहना चाहा था, वह कुछ और था। उसके मूल मे उनकी स्वाभाविक उदारता थी। याने, मजदूरों की भलाई के लिए मालिकों को समझाना पडेगा। लेकिन प्रियनाथ जिस तरह से बात करता है, उसके हिसाब से श्रमिक आंदोलन एकदम अहिंसात्मक नही है। बहुतों को ऐसी बात समझ मे नही आती। इसलिए वे ऐसी बातो से डरते हैं।

यहाँ एक बात बता देना जरूरी है। प्रियनाथ से भी नारायण का मतभेद होने लगा है। साम्यवाद की स्थापना के रास्ते मे आतंकवाद कैसे बाधक बन सकता है, दोनों इसी को अच्छी तरह समझना चाहते हैं। उनकी सारी बहस इसी को ले कर है। हालांकि प्रियनाथ सशस्त्र क्रांति को अस्वीकार करना नही चाहता। लेकिन उन दोनों का यह विवाद प्रकट नही है। उनकी बहस उनके आपस के लोगों तक सीमित है।

आज सवेरे भी वही बहस छिडी और सब ने उस पर फैसला करने का इरादा किया। इसके लिए श्रीमती काफे के पीछे वाले कमरे मे नारायण, प्रियनाथ, रथीन और सुनिर्मल की बैठक जमी। चरण को ले कर भजन बाजार गया है।

हीरेन बाहर बैठा हुआ है। उसे पता है कि पीछे वाले कमरे मे नारायण की बैठक चल रही है। कभी नारायण के कारण हीरेन पर देशोद्धार का नशा सवार हुआ था। उस समय नारायण की एक बात पर प्राण दे देना भी हीरेन के लिए असंभव नहीं था। लेकिन आदर्श को ले कर जो विरोध पैदा हुआ, उसमें नारायण और हीरेन का आपसी संबंध भी प्रभावित हुआ, और आज हालत यह है कि हीरेन को उस बैठक मे शामिल होने का अधिकार भी नही है। इसके लिए हीरेन के मन मे अफसोस है।

कृपाल भी कभी हीरेन की तरह राजनीति मे आया था। लेकिन आज कृपाल नारायण का सिर्फ मजाक ही नही उडाता, बल्कि उसकी आलोचना भी करता है। खैर, हीरेन ने अपना होश-हवास नही गँवाया। उसे नारायण के आदर्श मे आस्था नही है —

लेकिन वह नारायण के साहस का सम्मान करता है। वह नारायण की सहनशीलता की तारीफ करता है और व्यक्ति नारायण को इज्जत भी देता है।

नौजवान पुलिस अफसर तो अपना स्टेशन इलाका छोड़ कर और कहीं कदम रखना भी भूल गये हैं। उन्हें पूरा यकीन है कि श्रीमती काफे के अंदर दिनरात किसी गुप्त षड्यंत्र का रिहर्सल चल रहा है। जब तक नारायण नहीं आये थे तब तक डरने की कोई खास बात नहीं थी। लेकिन आजकल हर वक्त श्रीमती काफे में क्रांतिकारियों की बैठक होने लगी है। कहीं कोई बात हो जाय तो पुलिस अफसर के नाते उन्हीं को अधिकारियों के पास जवाबदेही करनी पड़ेगी। यहाँ की खुफिया पुलिस के आदमी भी कोई ऐसी खबर नहीं दे सके, जिसके आधार पर उच्चाधिकारी सर्च वारंट जारी करते।

लेकिन ऐसी बात पर ये पुलिस अफसर विश्वास नहीं करते। आये दिन यहाँ हाथ से लिखे इश्तिहार दीवारों और पेड़ों पर देखने को मिल रहे हैं। ये इश्तिहार कम खतरनाक नहीं हैं। यही सब ले कर पुलिस अफसर का गाना-बजाना भी बंद हो चुका है। नहीं तो पहले रोज उनके यहाँ संगीत की महफिल जमती थी। न जाने उनके मन में कैसा भय पैदा हो गया है। थाने पर पहरे का हिसाब-किताब भी उन्होंने बदल दिया है। अभी कई दिन पहले ड्यूटी में लापरवाही बरतने के आरोप में उन्होंने एक सिपाही पर जुर्माना किया।

बीच वाले कमरे में सभी लोग चुपचाप बैठे हैं। मानो आँधी उठने से पहले की खामोशी हो। प्रियनाथ की गोद पर कोई किताब खुली पड़ी है। उस किताब के पन्नों पर दो तस्वीरें दिखाई पड़ रही हैं। एक तस्वीर है चक्रधारी नारायण की और दूसरी एक दाढ़ीवाले चेहरे की। उस तस्वीर के चेहरे के सिर में बड़े-बड़े अस्तव्यस्त बाल हैं। देखने से किसी साधु-संत का चेहरा लगता है। लेकिन उसके बदन पर कोट है। नर-नारायण के चेहरे की तरह इस चेहरे पर हँसी की झलक नहीं है। यह चेहरा गंभीर है। लगता है कि यह किसी सोच में डूबा हुआ है। आँखों की दृष्टि में भी संजीदगी है। इस चित्र के नीचे लिखा है — ऋषि कार्ल मार्क्स।

थोड़ी देर पहले उस किताब का कोई हिस्सा पढ़ा गया है।

अब नारायण ने कहा, "प्रियनाथ, आतंकवाद कह कर तुम क्या समझाना चाहते हो, मैं समझ नहीं पाता। लेकिन उसमें हमारे मतवाद का विरोध कहाँ है ?"

प्रियनाथ ने आश्चर्य से कहा, "क्या तुम बता सकते हो कि हमारी समितियों के आंदोलन से श्रमिक क्रांति का कहीं कोई मेल है ? श्रमिक अभ्युत्थान एकदम अलग चीज है।"

फिर वही स्थिति आ गयी कि कोई समझना नहीं चाहता। रथीन की आँखों से गुस्सा झलकने लगा। नारायण भैया को समझाने की क्षमता प्रियनाथ में नहीं है और प्रियनाथ के लिए वैसा प्रयास करना भी व्यर्थ है, यही सोच कर रथीन को गुस्सा आ रहा है।

लेकिन नारायण ने कहा, "जरा समझा कर बताओ भाई।"

प्रियनाथ बोला, "जैसे शिव जी के बिना यज्ञ नहीं हो सकता, वैसे श्रमिक क्रांति के लिए तुम श्रमिकों को उससे अलग नही रख सकते।"

नारायण बोले, "श्रमिकों को कौन अलग रखना चाहता है ? तुम श्रमिको को हमारी समिति मे ले आओ। उनको भी हम हथियार चलाना सिखायेंगे।"

प्रियनाथ ने आश्चर्य से पूछा, "सब को हथियार चलाना सिखाओगे ? क्या सभी लड़ेंगे ?"

"जरूर ! सभी श्रमिक क्रांति मे हिस्सा लेंगे।"

अब नारायण के आश्चर्यचकित होने की बारी आयी। उन्होंने कहा, "फिर तो देश में सभी को क्रांतिकारी बनना पड़ेगा प्रियनाथ ! लेकिन मुझे विश्वास है कि हमारे आंदोलन के चलते श्रमिक अपने आप सरकार के खिलाफ सिर उठा कर खड़े हो जायेंगे। वे आगे बढ़ कर हमारे साथी बनेंगे !"

"ऐसा नहीं हो सकता नारायण। बता सकते हो, वे क्यों आगे बढ़ कर हमारे साथी बनेंगे ? अगर हम उनके जीवन के साथी नही बनते तो क्यों ऐसा होगा ?"

रथीन ने दोनों को टोक कर बीच मे कहा, "यार्ड मैनेजर का खून करके तो हम मजदूरों की तरफ से बदला ले सकते हैं।"

रथीन के ऐसा कहने पर प्रियनाथ बहुत ज्यादा उत्तेजित हो उठा। रथीन का अक्खड़पन उसके बरदाश्त के बाहर हो चला। उसने कहा, "क्या यार्ड मैनेजर हो कर दूसरा साहब नही आ सकता ?"

दृढ़ स्वर मे रथीन ने कहा, "हम उसे भी मौत के घाट उतारेंगे ?"

प्रियनाथ बोला, "मामला वही खत्म नही होगा। उसके बाद पुलिस और मिलिटरी का खुल्लमखुल्ला हस्तक्षेप होगा। उसके बारे में भी सोचो। तब क्या होगा ? तब तो तुम फिर छिप जाओगे। श्रमिकों की क्रांति कैसे होगी ?"

नारायण बोले, "प्रियनाथ, नाराज मत होना भाई। तुम जैसा कह रहे हो, उससे तो यही लगता है कि हमें अपनी समिति-ओमिति बंद करके यार्ड मे जा कर मजदूरो से सत्याग्रह कराना पड़ेगा। है न ऐसा ?"

प्रियनाथ बोला, "नही, ऐसा कभी नहीं, लेकिन मजदूरो को क्रांति के बारे मे बताना होगा ?"

नारायण निराश हो कर चुप हो रहे। क्रांति के बारे मे कैसे बताना होगा, यह उनको समझ मे साफ-साफ नही आया। फिर भी प्रियनाथ की बात को हँस कर सरासर टालने में भी न जाने उन्हें कैसा संकोच हुआ। उन्होंने पूछा, "श्रमिको को क्रांति के बारे मे कैसे बताओगे ?"

जरा देर चुप रहने के बाद प्रियनाथ बोला, "मेरी समझ से श्रमिकों से मिलना-जुलना पड़ेगा और उन्हें साम्यवाद की शिक्षा देनी होगी।"

इस पर नारायण ने अचानक पूछा, "क्या तुमसे पार्टी का सम्पर्क है ?"

प्रियनाथ ने जरा तेज आवाज मे कहा, "नही। अगर पार्टी से कोई सम्प

होता तो मैं इस बात को और भी साफ-साफ समझा पाता। मुझे भी और जानने-समझने की प्रतीक्षा है।"

"फिर तुम यह सब कैसे कह रहे हो ?"

"मैं उतना ही कह रहा हूँ जितना जान सका हूँ। फिर मेरा भी अपना विचार है।"

नारायण ने गौर किया कि प्रियनाथ बेचैन होता जा रहा है। उसमें उत्तेजना आने लगी है। लेकिन वह गुस्से में नहीं है। उसकी बेचैनी इस बात की है कि वह अपने विश्वास को प्रतिष्ठित नहीं कर पा रहा है। इस कारण उसे बड़ा कष्ट है। नारायण ने प्रियनाथ का हाथ अपने हाथ में ले कर कहा, "फिर भी भैया, मैं तुम्हारा बात नहीं समझ सका। हाँ, यह मैं स्वीकार कर रहा हूँ कि श्रमिक क्रांति ही हमारा लक्ष्य है। हम सभी सही रास्ते को पहचानने की कोशिश करेंगे। हम सोशलिज्म को प्रतिष्ठित करना चाहते हैं, लेकिन समिति और उसके दूसरे कामों को बंद करके नहीं। तुम पर हमें विश्वास है, लेकिन इस समय तुम्हारे लिए समिति में न रहना ही बेहतर है। वैचारिक बहस चलती रही तो हमारे अनेक महत्त्वपूर्ण काम अधूरे रह जायेंगे। इसलिए नाराज मत होना भैया।"

लगा कि किसी ने प्रियनाथ के चेहरे पर ढेर सारी स्याही उड़ेल दी। कुछ कहना चाह कर भी वह कह नहीं सका। नारायण से ऐसे मर्मांतक निर्देश की उसे उम्मीद नहीं थी। यों ही इधर कुछ दिनों से उसकी मानसिक स्थिति ठीक नहीं है। उसका आर्थिक कष्ट चरम पर पहुँच चुका है। घर लौटना भी उसके लिए घोर अपमानजनक है। अनेक बार प्रार्थनापत्र देन के बावजूद सरकार ने उसे किसी तरह का भत्ता देना स्वीकार नहीं किया। संतोष मौसी नाम को महिला कभी-कभी उसकी मदद कर देती हैं। यहाँ तक कि हीरेन भी उसकी सहायता करता है।

इस तरह की तमाम परेशानियों क बीच अपने प्रियतम मित्र नारायण से ऐसी बात सुनने के बाद सहसा प्रियनाथ के मुँह से कोई बात नही निकली। सिर्फ इतना ही नहीं, प्रियनाथ जैसा बलिष्ठ प्रकृति का व्यक्ति भा अपने आंसुओं को रोक नही सका। वह जाने लगा तो नारायण ने झट से उसका हाथ पकड़ लिया। नारायण भी खुद समझ गये हैं कि मैंने प्रियनाथ से कितनी बड़ी बात कह दी है। इस समिति को बनाने में प्रियनाथ ने भी कम मेहनत नही की। समिति के लड़के भी प्रियनाथ से कम प्यार नहीं करते। लेकिन नारायण को आशंका है कि प्रियनाथ के कारण समिति के सदस्यों के मन में संशय पैदा होगा और वे अपने मार्ग से डिगने लगेंगे।

प्रियनाथ की आंखों में आंसू देख कर नारायण का हृदय भी दर्द से भर उठा। लेकिन समिति के मामले में किसी तरह की कमजोरी प्रकट करना मौत के बराबर है। इसलिए उस मामले में किसी तरह की रियायत नहीं की जा सकती। फिर भी उन्होंने कहा, "कहाँ जा रहे हो प्रिय, बैठो। मेरी बात पर जरा सोच लो।"

रथीन के होंठों पर टेढ़ी हँसी झलकी। प्रियनाथ ने यह गौर किया। इसलिए

दूसरे ही क्षण वह सिर झटक कर खड़ा हो गया। आँसुओं के लिए अपने आपको धिक्कारते हुए उसने नारायण से कहा, "नारायण, आज का दिन हमारे लिए गुस्सा करने का नही है। आज हमने विचार-विमर्श करना चाहा था। इसी लिए कह रहा हूँ कि समिति का यह आदर्श ले कर हम ज्यादा दूर नही चल सकेंगे। हमारे देश की श्रमजीवी जनता ही हमारी समिति है। हमे उसी जनता पर भरोसा करना होगा। अगर तुम सचमुच श्रमिक क्रांति चाहते हो तो कभी न कभी तुम्हें मेरी बात पर विश्वास करना पडेगा।"

इतना कह कर एक पल भी रुके बिना प्रियनाथ आंधी की तरह निकल गया।

नारायण के मुँह से सिर्फ निकला, "विश्वास करता हूँ भाई, विश्वास करता हूँ।"

मानो पूरी बात कहे बिना नारायण रुक गये। फिर न जाने कैसे आश्चर्य में पड़ कर वे शून्य में देखते रहे। सब चुप रहे। किसी के मुँह से कोई आवाज नहीं निकली। थोड़ी देर बाद नारायण ने बहुत धीरे-धीरे अपने आपसे कहा, "जनता ही समिति है। प्रियनाथ ने विचित्र बात कही है। उसकी इस बात में मानो कोई परम सत्य छिपा हुआ है।"

फिर रथीन की तरफ देख कर नारायण ने कहा, "रथीन, परसों तुमने कहा था कि प्रियनाथ शायद डर गया है। लेकिन वैसी बात नही है। उसके समान हिम्मती हमारे इस जिले में कभी कोई नही था, और आज भी है कि नही, मैं नही जानता। उसे अपना दुश्मन मत समझना। आज हम श्रमिक क्रांति की सिर्फ बात कर रहे हैं, मुझे विश्वास है कि कभी हमे प्रियनाथ के ही रास्ते पर चलना पडेगा।"

सिर्फ इसी बात को ले कर नारायण से कृपाल वगैरह की रोज बहस होने लगी। नारायण ने उन सब से भी श्रमिक क्रांति की बात कही है। कहने को नारायण प्रियनाथ को चाहे जो कहे, प्रियनाथ के प्रति उनके मन मे अखंड विश्वास है। आज शाम की बैठक मे इस घटना से थोड़ा नयापन आ गया।

शंकर घोष आये हुए हैं। वे प्रौढ़ व्यक्ति तहसील कांग्रेस कमेटी के सदस्य है। वे कई दिनों से बराबर आ रहे हैं। शायद उनको यह विश्वास है कि मैं नारायण को अपने साथ ले सकूंगा। उन्होने रथीन जैसे जोशीले युवको से एक बार भी बात नही की। यहाँ तक कि उन्होने प्रियनाथ से भी कुछ नही कहा।

श्रीमती काफे मे रोज की तरह शाम को महफिल जमी है। लेकिन यह इनकार नहीं किया जा सकता कि गाहको की तादाद बहुत कम है। गोलाक चटर्जी ने आश्चर्यजनक ढंग से महफिल को जमा रखा है। राजनीतिक बहस मे जरा देर के लिए छुट्टी पा कर लोग जब थोड़ा दम लेते, तब चटर्जी बाबू मचलते बच्चो को परियो की कहानी सुनाने के अंदाज मे कहते, "हाँ भैया, तो उसके बाद क्या हुआ कि—'

चरण भी कभी-कभी भजन से कह देता है — दुकान तो चौपट होने लगी है। भजन भी उसे फौरन डाँटता है — यह हरामजादा मुझसे ज्यादा परेशान होने लगा है। क्या तुझे दोनों वक्त कम खाने को मिल रहा है, बोल ? चरण को दोनों वक्त खाने की कमी हर्गिज नहीं है और वह इन लोगों को चाहता भी है। लेकिन —। यह लेकिन भजन के भी मन में है। मन ही मन अपनी जिम्मेदारी का ख्याल करके भजन हँस देता है और अपने आप से कहता है कि शायद उन लोगों से मेरा प्रेम हो गया है। अगर मेरा सर्वनाश भी हो जाय तो मजेदार बात यह है कि शायद मैं उन लोगों के बिना जिंदा भी नहीं रह सकूंगा।

भजन की अनास्था निराधार है तो उसके विचार का भी कोई आधार नहीं है। उसी तरह उन लोगों को श्रीमती काफे में महफिल जमाने की छूट देने के पीछे भी कोई कारण नहीं है। भजन के किसी काम के पीछे कोई कारण होने का सवाल नहीं उठता। फिर भी भजन में व्यक्तित्व नहीं है, ऐसा नहीं कहा जा सकता। श्रीमती काफे में आने वाले सभी लोगों की तरह नारायण भी जानते हैं कि अगर कभी वैसा मौका आया तो भजन की उँगली के एक इशारे पर सब को चुपचाप यहाँ से खिसक जाना पड़ेगा। भजन भी उन लोगों से कड़ी बात कहता है, गाली-गलौज करता है, लेकिन कभी उनको भगा नहीं देता। फिर यह भी बड़ा मजेदार है कि भजन इन बातों पर जितना सोचता है, उस पर उतना ही नशा चढ़ता जाता है।

शंकर घोष ने कहा, "कुछ भी कहो नारायण, दलील तुम्हारी कच्ची है।"

लगा कि बहस काफी देर से छिड़ी हुई है। लेकिन आज की तरह नारायण ने कभी दलील पर दलील देते हुए अपने पक्ष के समर्थन की कोशिश नहीं की। अंत में उन्होंने कहा, "शंकर भैया, दलील ही क्या हर वक्त बड़ी होती है ?"

शंकर घोष हँसे। फिर वे बोले, "तुम्हीं तो कह रहे हो कि दलील के बिना किसी बात को सही साबित नहीं किया जा सकता। दलील ही तो तुम्हारे लिए बड़ी है।"

प्रियनाथ इस महफिल में आना नहीं भूला। वह बड़ी उत्सुकता से नारायण के चेहरे की तरफ देखने लगा। मानो नारायण कोई जवाब नहीं दे पायेंगे तो वह उनकी तरफ से जवाब देगा।

नारायण बोले, "शंकर भैया, जो सही है उसके पीछे तो हमेशा दलील है। लेकिन हर कोई उस दलील को पेश नहीं कर सकता। मैं झूठ नहीं कहूँगा, मैं अपनी दलील पेश नहीं कर सकता। लेकिन मजदूरों पर जो मेरा विश्वास है, उसे कोई हिला नहीं सकता। धरती पर ऋतुएँ बदलती हैं, लेकिन क्यों ? क्या हर कोई इसका जवाब दे सकता है ?"

शंकर घोष ने कहा, "अगर तुम जवाब नहीं दे सकते नारायण, तो तुम्हारे विश्वास की क्या कीमत है ?"

"फिलहाल कोई कीमत नहीं है। लेकिन मजदूर जब सजग हो जायेंगे, तब वे सारे बंधन को तोड़ कर मुक्त होना चाहेंगे।"

कृपाल ने हँस कर पूछा, "कैसा बंधन ? स्वराज आने पर क्या मजदूर मुक्त नही होंगे ?"

प्रियनाथ ने इसका जवाब दिया, "स्वराज की माँग समझौते के रास्ते से नही की जा सकती । मजदूर अपने तबके की मुक्ति चाहते हैं ।"

यह सुनते ही नारायण की आँखों के आगे मानो प्रकाश की रेखा झलमला गयी । तबका याने वर्ग की मुक्ति ! एक बार नारायण को लगा कि इस बात का कोई मतलब नहीं है, लेकिन दूसरे ही क्षण उन्होंने महसूस किया कि इसका बहुत बड़ा मतलब है । इस बात में बहुत बड़ा संकेत छिपा हुआ है ।

शंकर घोष फिर हँस कर बोले, "मैं तुम लोगो की बात समझ गया । तुम लोग भयानक दलदल के सामने खड़े हो । खून का नशा तुम लोगो को पागल बनाने लगा है । इसी रक्तपात के भय से गांधी जी इतना सावधान रहते हैं । मुट्ठी भर निरक्षर मूर्खों के पागलपन को तुम बहुत बड़ा मान रहे हो । उसका परिणाम दगा-हंगामे के अलावा और कुछ नही होगा ।"

अब नारायण अचानक अपने अग्निमय रूप मे प्रकट हुए । उनका चेहरा तमतमाने लगा । उनकी आंखो मे अद्भुत घृणा की आग जलने लगी । उनकी वह शक्ल देख कर उस समय भी कइयो का दिल धड़क उठा । उन्होने कहा, "अंग्रेज सरकार को आप लोग चाहे जितना समझाये, वह बेहिचक खून-खराबा करती रहेगी । क्या उसे आप लोग रोक सकेंगे शंकर भैया ? क्या आप लोग कभी उसे रोक सके हैं ? अब उस आदमखोर बाघ को दुरुस्त करने के लिए भाला उसके आरपार करना होगा । तभी उसकी मौत होगी ।"

हीरेन मानो सिहर उठा । उसने सिर तो उठाया, लेकिन उससे कुछ कहा नही गया । हालांकि शकर भैया की बात भी उसे सही नही लग रही है । शंकर भैया अपने वक्तव्य को सही ढंग से नही समझा पा रहे हैं । जब तक राष्ट्र अपना चरित्र निर्मल नही कर पाता, दुराचारो से मुक्त हो कर पवित्र नही हो जाता तब तक यह सवाल पैदा ही नही होता ।

ठीक उसी वक्त कुछ लोग आ कर श्रीमती काफे के बरामदे मे खड़े हुए । श्रीमती काफे के उस माहौल मे उनको 'लोग' कहने मे भी शायद बहुतों को एतराज होगा । उनको देख कर सभी को आश्चर्य हुआ । सभी ने सोचा कि शायद वे झाड़ूदार होगे और हीरेन से मिलने आये हैं ।

लेकिन वे झाड़ूदार भी नही लगते । झाड़ूदारो की तुलना मे वे कुछ अच्छे लगे । उनके काले-काले चेहरे पर श्रद्धा, भय लज्जा का मिला-जुला विचित्र भाव है । उनमे से दो बरामदे मे चढे और थोड़ा आगे बढ़ कर उन्होंने नारायण को नमस्कार किया ।

प्रियनाथ का चेहरा हंसी से झलमलाने लगा । रथीन ने जल्दी-जल्दी नारायण से कहा, "ये यहाँ के जूट मिल के मजदूर है । इन दोनों को पिछले साल जेल जाना

पड़ा था। इसका नाम है मनोहर और उसका नाम भागन। इन्होंने आपसे मिलना चाहा था नारायण भैया।"

नारायण ने हड़बड़ा कर कहा, "आइए, अंदर आ कर बैठिए।"

अतिथियों की शक्ल-सूरत देख कर शंकर घोष और कृपाल वगैरह बगैर हँसे नहीं रह सके। खास कर जिस तरह से नारायण ने उनका स्वागत किया उससे उनको यह सब बड़ा मजाक लगा।

नारायण हिंदी में बात नहीं कर सकते, लेकिन मनोहर और भागन बंगला समझते हैं। इसलिए नारायण की बात समझ करके भी वे हक्का-बक्का खड़े रहे। शायद ऐसा शिष्ट व्यवहार पाने के वे आदी नहीं हैं। फिर भी वे आगे कदम बढ़ाने के लिए तैयार हुए, लेकिन शंकर घोष और कृपाल के चेहरे पर विकट नीरव हँसी देख कर वे घबड़ा गये।

इतनी देर बाद भजन ने सिर उठाया। बरामदे में खड़ी मनहूस शक्लों को देख कर वह पहले कुछ समझ नहीं पाया। फिर उसने सिकुड़ी भौंहों के नीचे से लाल-लाल आँखें फैला कर पूछा, "क्या चाहिए?"

यहाँ आ कर मनोहर और भागन भी कम असमंजस में नहीं पड़े। इसी असमंजस की हँसी उनके चेहरे पर है। इससे वे बड़े बेवकूफ लगने लगे। अब तो वे मानो डर भी गये। क्या किया जाय और क्या कहा जाय, उनकी समझ में नहीं आया।

नारायण ने जल्दी-जल्दी भजन से कहा, "ये मुझसे मिलने आये हैं भजन। ये मजदूर हैं।"

भजन जोर से हँसा, फिर बोला, "सीधे श्रीमती क़ाफे में पहुँच गये मेरे बाप। जब पहुँच ही गये तब खड़े क्यों हो? असली मालिक का तो हुक्म हो चुका है।"

इतना कह कर भजन ने आगे बढ़ कर मनोहर का हाथ पकड़ लिया। इससे मनोहर और भागन के चेहरे पर हँसी तो खिली, लेकिन उस हँसी के पीछे से भय ही झांकने लगा। दोनों एक दूसरे का मुँह देखने लगे। लाट साहब भजन को वे भी जानते हैं। लेकिन वह जानना ही काफी नहीं है। एक तो बाबू हैं, फिर शराबी। ऐसे आदमी का भला क्या एतबार!

तभी रथीन बोला, "अंदर आ जाओ भागन।"

मनोहर और भागन ने अब जरा हिम्मत की। वे अंदर आ कर नारायण की कुर्सी के पास जमीन पर बैठने लगे। तभी भजन ने दोनों का हाथ पकड़ कर कहा, "नहीं-नहीं। यह क्या कर रहे हो? आज तुम लोग नीचे बैठोगे तो श्रीमती काफे की इज्जत को बट्टा लगेगा मेरे बाप। बैठो, कुर्सी पर बैठो।"

भजन की बात सुन कर कृपाल ठहाका रोक न सका। सब को लगा कि भजन सरासर 'कैरिकेचर' कर रहा है, और उसका उद्देश्य अति सज्जनता का स्वांग भरना है।

लेकिन भजन ने कृपाल को झिड़की लगायी, "बस करो। दाँत निपोड़ कर हँसने की जरूरत नहीं है। मैं कभी स्वराजियों में जात-कुजात नहीं देखता। भुन्नू

कोचवान मेरा सारथी है और बंगाली मेरा यार, मैं भला जेल से लौटे इन स्वराजियों को कैसे जमीन पर बैठा सकता हूं ?"

इसके बाद भजन ने उन मजदूरों से कहा, "आज तुम लोग मेरे मेहमान हो। इसलिए कुर्सी पर बैठना ही पड़ेगा।"

मनोहर ने हाथ जोड़ कर मुस्कराते हुए कहा, "बाबू, हम लोगों को कुर्सी मे बैठना नही आता।"

"नही आता तो आज सीख जाओगे मेरे बाप।" इतना कह कर भजन ने जबर्दस्ती दोनों को कुर्सियों पर बैठा दिया।

प्रियनाथ या नारायण कोई भी भजन की इस आतरिकता का अंदाजा नही लगा सका। लेकिन इतना तो सबकी समझ में आया कि जब तक वे दोनो कुर्सी पर नहीं बैठेंगे, भजन नही मानेगा।

मजबूरन मनोहर और भागन कुर्सी पर बैठे। दोनों ने डरते-डरते किसी तरह कुर्सी का सहारा लिया, लेकिन उनके हाथ-पांव ऐंठे रहे। संकोच और संदेह के कारण वे आराम से नही बैठ सके। उनको अपनी जिंदगी मे कभी ऐसी मुसीबत मे नही पड़ना पड़ा।

मनोहर और भागन के साथ जो मजदूर आये है, वे बाहर दुकान के कोने मे खड़े हो कर इस विचित्र दृश्य को देखने लगे। अभी तक उनके भी चेहरे पर अपने दोनो साथियो के लिए भय का भाव था, लेकिन इस समय उनके होंठों मे दबी हँसी है। एक दूसरे की तरफ देख कर आँखों के इशारे से उन लोगों ने न जाने आपस मे क्या बात कर ली। अपने साथियों के सम्मान से उन्हे गर्व का अनुभव हुआ।

सिर्फ यही नहीं, एक-दो करके दूसरे लोग भी आते गये। उनमे आसपस के दुकानदार, गाड़ीवान और रेलवे के कुली भी हैं। क्या मामला है, ठीक से समझ मे नहीं आता। लेकिन इसमें किसी को संदेह नही रहा कि जरूर कोई मजेदार बात हुई है। खास कर लाट साहब भजन मौजूद है तो ऐसा होना ही चाहिए।

शाम के इस जमघट के कारण श्रीमती काफे मानो विचित्र नाटक का रंगमंच बन गया। सड़क पर दर्शको की भीड़ लग गयी।

नारायण बेचैन होने लगे। कही यह सब कुछ उन सीधे-सादे लोगों को ले कर निष्ठुर मजाक न बन जाय। प्रियनाथ को भी बुरा लगने लगा। क्या वे मनुष्य कहलाने वाले जीव दस भले लोगों के साथ बैठ सकते हैं ?

शंकर घोष सोचने लगे कि स्वराज आंदोलन को ले कर यह अच्छा घटिया किस्म का खिलवाड़ होने लगा। हीरेन मानो उनीदी आँखो से उन दोनो मजदूरो को देखता रहा। ये वही भूखे भारतवासी हैं, जो अभाव और अत्याचार के मारे आज कारखाने के जानवर बने हैं। एक दिन इन्हीं को फिर लहलहाते खेतो मे वापस ले जाना होगा, जहाँ इनको सारे अनाचारों से मुक्ति मिल जायेगी। ये निष्पाप और धार्मिक बन जायेंगे।

सब की खामोशी के बीच भजन ने हांक लगायी, "चरण।"

"जी हाँ।"

मुँह लटकाये चरण सामने आ कर खड़ा हो गया। मानो उसे पहले से पता चल गया है कि मालिक से कैसा हुक्म मिलेगा।

"इनके लिए चाय ले आ।"

चरण हिलने को हुआ तो भजन ने फिर कहा, "चॉप और कटलेट भी ले आ।"

भागन उम्र में बड़ा है। उसने घबड़ा कर मनोहर की तरफ देख कर भजन से कहा, "माफ कीजिए बाबू जी, वह सब खाना हमारे लिए मना है।"

कृपाल से रहा नहीं गया। वह बोला, "हाँ, हिंदू कुलतिलक ठहरे न!"

प्रियनाथ का मन न जाने क्यों बड़ा उदास हो गया।

नारायण ने भजन से कहा, "जबर्दस्ती मत करो भजन। अगर खाना न चाहें तो न खायें।"

इस पर भजन चुप हो गया।

नारायण ने भागन से पूछा, "आप लोग कहाँ रहते हैं?"

भागन ने हाथ जोड़ कर कहा, "काला बाबू की बस्ती में। कितने ही दिनों से आपके दर्शन करने की इच्छा थी, मगर टाइम नहीं मिलता था।"

कृपाल धीरे-धीरे कुछ कहने लगा और शंकर घोष हँसते हुए सिर हिलाने लगे।

मनोहर ने नारायण से कहा, "बाबू, आप तो देवता हैं।"

नारायण का चेहरा लज्जा से लाल हो गया। वे बोले, "अरे, अरे! यह सब आप क्या कह रहे हैं? मैं भी आप लोगों की तरह एक इनसान हूँ।"

भागन बोला, "आपके ऐसा कहने से हम तो नहीं मानेंगे बाबू। हमने सुना है कि आप गाँधी बाबा के साथ जेल में थे। स्वराज और मजदूरों के बारे में वे क्या कहते हैं, वही हमें भी बताइए।"

अब कृपाल के साथ शंकर घोष भी हँसे, लेकिन हीरेन हँस न सका।

नारायण असमंजस में पड़ गये। वे समझ नहीं पाये कि इन सीधे-सादे मजदूरों को कैसे समझाया जाय। लज्जा और क्षोभ के कारण उनका चेहरा काला पड़ गया। लेकिन दूसरे ही क्षण उन्होंने सिर उठा कर कहा, "किसने आप लोगों से ऐसा कहा है? जिसने भी कहा हो, झूठ कहा है। मैं गाँधी जी के साथ जेल में नहीं था। मैंने तो उनको कभी देखा भी नहीं।"

लेकिन मनोहर और भागन नारायण की बात पर विश्वास न कर सके। उन्होंने सोचा कि यह भी बाबू की विनम्रता है। उन्होंने हँस कर एक दूसरे को देखा, याने बड़े लोगों की यही आदत है।

प्रियनाथ और रथीन भी न जाने कैसी बेचैनी महसूस करने लगे।

मनोहर ने उसी तरह, जिस तरह कोई देवता के आगे विनती करता है, हाथ जोड़ कर नारायण से कहा, "कुछ भी हो बाबू जी, हम मजदूर लोग भी स्वराज चाहते

हैं। हमारे मालिक ने हम दोनों की नौकरी छीन ली है और हमें लाइन से निकाल बाहर किया है। अब हम भूखों मर रहे हैं। दूसरी तरफ यह भी देखिए कि कारखाने में साले साहब लोगों का जुल्म बढ़ गया है। इस साल तो विलायती कंपनी हमें मार डालने पर उतारू हो गयी है। हम लोग इसका जवाब देना चाहते हैं।"

इतना कह लेने के बाद सीधे-सादे मनोहर का चेहरा भी बड़ा भयानक लगने लगा।

भागन की आवाज में भी कड़वापन आ गया। उसने कहा, "हाँ बाबू जी, इसका जवाब देना चाहिए। मालिक हम लोगों को जानवर समझता है। हमारी औरतों और बच्चों को भी मारा-पीटा जाता है।"

यह सुन कर नारायण के प्राणों में भी मानो आग लग गयी। हाँ! जवाब देना ही पड़ेगा। विलायती कंपनी इस देश के लोगों को जानवर समझती है। औरत-बच्चे भी उसके चंगुल से छुटकारा नहीं पाते। इसका जवाब देना ही पड़ेगा। लेकिन कैसे? इसके लिए आग जलानी पड़ेगी। इस देश के हर गोरी चमड़ी वाले को पकड़ कर उस आग में झोंकना पड़ेगा। इस देश के कोने-कोने में अंग्रेजों की कब्रगाह बनानी पड़ेगी।

भागन के ऊबड़-खाबड़ बालों भरे चेहरे की चमड़ी तनने लगा। धँसी हुई आँखें बड़ी-बड़ी करके उसने बहुत धीरे-धीरे कहा, "बाबू जी, ये मजदूर लोग बड़े बेवकूफ हैं। ये लोग सिर्फ मार खाना जानते हैं। मगर बाबू जी, आप हमारा साथ दीजिए, हम लड़ेंगे।"

"आप लोग लड़ेंगे?"

नारायण ने किसी तरह अपनी उत्तेजना को दबा कर कहा। नयी आशा से उनकी आँखें चमकने लगीं। उन्होंने आवेश में आ कर कहा, "मैं जरूर आप लोगों का साथ दूँगा। मैं आप लोगों के साथ रह कर लड़ूँगा, और तब तक लड़ता रहूँगा जब तक इस देश में एक भी अंग्रेज रहेगा।"

प्रियनाथ सवेरे का सारा अपमान भूल गया। उसका चेहरा खुशी से चमकने लगा।

शंकर घोष को यह सब बुरा लग रहा है। उनको ऐसा लगा कि यहाँ कुछ लोग बैठ कर षड्यंत्र रच रहे हैं। गुंडई करने का बहुत बड़ा षड्यंत्र। कुछ मूर्खों और पागलों से पता नहीं नारायण कैसे इस तरह की बातें कर रहे हैं। शंकर घोष की समझ में नहीं आया कि नारायण को क्या हो गया है।

हीरेन को भी कम आश्चर्य नहीं हो रहा है। उसने कल ही इस मनोहर को शराब पीते और गाली बकते देखा है। पता नहीं, मनोहर वगैरह लड़ाई का क्या मतलब समझते हैं!

सिर्फ कृपाल हँस रहा है। भजन की तो दिमाग खराब होने की हालत हो गयी। ये दोनों अधनंगे मजदूर कहते क्या हैं? ये लड़ेंगे? क्या इनमें वैसा विश्वास या साहस है? भजन का तो नशा ही उखड़ने लगा। ये मजदूर कैसे लड़ेंगे? पिस्तौल चलायेंगे या तोप दागेंगे?

तभी दुकान के बाहर खड़े लोगों में फुसफुस होने लगी। फिर एक-एक कर सब खिसकने लगे। देखते-देखते दुकान के सामने जुटी भीड़ छँट गयी। सिर्फ एक आदमी दुकान में झांक कर बुलाने लगा, "ए भागन बुड्ढा, जल्दी चल।"

सड़क पर वही जवान पुलिस अफसर खड़े हैं और आग उगलती आँखों से सब को घूर रहे हैं।

ठीक उसी वक्त वह तमाशा हो गया। स्टेशन के चबूतरे से मस्ती भरी लड़खड़ाती आवाज में किसी का गाना सुनाई पड़ा। वह गा क्या रहा है, चिल्ला रहा है। सब ने उधर देखा। बंगाली गा रहा है —

ऊपरवाले ने बनायी क्या शराब,
ऊपरवाले ने बनाया क्या कबाब!
ऊपरवाले का करिश्मा लाजवाब —
पी शराब ऐ मेरे राम, खा कबाब!

सड़क से आते-जाते लोग वह गाना सुन कर हँसने लगे। लेकिन श्रीमती काफे के अंदर किसी को मजा नहीं आया। यहाँ तो खलने वाली खामोशी छा गयी।

थोडी देर बाद शंकर घोष मुस्करा कर बोले, "लो, सारी दुनिया जीत कर और एक मजदूर आ रहे हैं। नारायण, देख लो तुम्हारे मजदूरों का हाल।"

इस मजाक का विरोध किस भाषा में किया जाय, नारायण समझ नहीं पाये। प्रियनाथ भी उसी तरह असमंजस पड़ गया। दोनों के चेहरे मायूस दिखाई पड़े। शर्म के मारे वे सिर झुकाये बैठे रहे।

भागन और मनोहर भी उठे। उनके सभी साथी चले गये हैं। उन सब को भी कम बुरा नहीं लगा। खास कर उस पुलिस अफसर के आ धमकने से सब गड़बड़ा गया। दोनों ने नारायण के आगे सिर झुकाया। फिर भागन ने कहा, "आज हम जा रहे हैं बाबू जी, फिर आयेंगे।"

प्यालियों में उन दोनों की चाय पड़ी रही।

शंकर घोष ने नारायण से कहा, "तुम्हारे ये दोनों क्रांतिकारी मजदूर भी ऐसे ही हैं, दो पैसे की कमाई करेंगे और एक आने की शराब पीयेंगे। क्या क्रांति का मतलब पागलपन है? क्या तुम इन्हीं लोगों को ले कर क्रांति करोगे? इनको ले कर तुम चाहे जो कर लो, लेकिन स्वदेशी आंदोलन के लिए ये मुसीबत हैं। क्या तुम इन पर विश्वास करते हो?"

गजब हो गया। नारायण ने सिर ऊँचा करके कहा, "करता हूँ शंकर भैया! चाहे कुछ न समझ सकूं, लेकिन इतना तो समझता हूँ कि जो लोग हमेशा पड़े-पड़े मार खाते हैं, वे कभी न कभी बिना मारे नहीं छोड़ेंगे। आज भी यही समझ सका कि ये चाहे जितनी शराब पियें, हम इनको रास्ता दिखायें या न दिखायें, ये अपना बदला ले कर रहेंगे। अगर ऐसा नहीं हुआ तो यही समझूंगा कि इस दुनिया में सब कुछ झूठा है।"

"वह बदला लेना क्या तुम्हारी क्रांति है ?"

"यह तो नही जानता, लेकिन औरत-बच्चों के साथ कोई जिंदगी भर मार नहीं खा सकता।"

इतना कह कर नारायण ने घड़ी की तरफ देखा। घड़ी पौने नौ बजाने वली है। यह देख कर नारायण उठे। उनकी आँखों में दर्द और गुस्से की धूपछाँह है। न जाने उनका मन किस अतल में खो गया। पता नही उनका मन क्या ढूँढने लगा है। लेकिन हाँ, वह बहुत बड़ी चीज है। उसके नाम का अता-पता नहीं, लेकिन वही परम सत्य है।

नारायण ने फिर घड़ी की तरफ देखा। घड़ी पर रखी नारायण की मूर्ति को भी उन्होंने देखा। फिर उन्होंने मन ही मन कहा — मिलेगा, वह परम सत्य मुझे जरूर मिलेगा। *अभी वह बादल के पीछे छिपा हुआ है तो क्या हुआ, जल्दी ही उसकी* प्रसन्न छटा सारे आसमान में छिटकने लगेगी। अंतर्यामी ही जानता है कि उन भूखे शराबी इनसानों और उस बंगाली के दिल में कैसी असह वेदना छिपी हुई है! हे भगवान! आज अपमान से उनके सिर झुके हुए हैं, लेकिन दारुण आक्रोश उनके सीने में घुमड रहा है। आज जो सिर पिशाच के पाँवों से रौंदा जा रहा है, वह ऊपर उठना चाहता है। इसी लिए तो उसकी नस-नस फटा जा रही है। बोलो वीर, बोलो चिर उन्नत मेरा सिर!

बंगाली ने आ कर नारायण के पाँवों मे माथा टेका और कहा, "चल दिये देवता? मेरा गाना नही सुनोगे? माँ की कसम, सुनते जाओ।"

फिर एक बार लोग हँस पडे। लेकिन नारायण ने हिम्मत नहीं हारी। उन्होंने कहा, "गाना तो सुनूँगा, लेकिन यह तो बताओ कि आज घर मे चूल्हा जला था या नही?"

शराब की खुमारी भरी आँखों से नारायण को देख कर बंगाली ने कहा, "लगता है कि आज देवता नाराज हैं, नही तो औरत-बच्चों को बात छेड़ कर क्या कोई इस गुलाबी नशे में खलल डालता है? तो सुनो! रेल कंपनी मे नौकरी करता हूँ और मेरे घर में चूल्हा नहीं जला, यह कोई सुनेगा तो हँसेगा न? असल में मेरा चूल्हा ही मिट्टी मे मिल चुका है, जलेगा कैसे?"

इतना कहने के बाद बंगाली दिल खोल कर हँसने लगा। हाँ, लोग इसे हँसी ही कहेंगे। लेकिन नारायण को लगा कि कोई गला फाड़ कर रो रहा है। वे सड़क पर आ गये। समय हो चुका है, घर लौटना पडेगा। फिलहाल घर ही लौटना है, लेकिन जल्दी ही उनको घर छोडना पडेगा। बुलावा आ गया है। इस बार उन्हे पूर्वी बंगाल मे ढाका जाना पडेगा।

एक-दो दिन में कांग्रेस वर्किंग कमेटी की बैठक होगी। इस बार गाँधी जी कोई न कोई फैसला करेंगे। किये बिना कोई उपाय भी तो नहीं है। देश के लोग कुछ न कुछ करना चाहते हैं। सारा देश बेचैन हो उठा है। भागन, मनोहर और बंगाली के

हजारों लोग बेचैन हैं। ऐसे लोगों को चाहे कोई शराबी कहे या मूर्ख, अनपढ़ कहे या लकीर के फकीर, लेकिन अब ये चुपचाप नहीं रहना चाहते — रहेंगे भी नहीं।

प्रियनाथ भी उठा। बंगाली से वह बात करना चाहता है, लेकिन नहीं हो सका। शंकर घोष और कृपाल भी चलने के लिए तैयार हो गये। हँसते हुए शंकर घोष बोले, "यह सब भी एक पागलपन है।"

कृपाल बोला, "सिर्फ पागलपन नहीं, कांग्रेस में यह एलिमेंट जहर की तरह काम करने लगा है।"

शंकर घोष बोले, "देखो, इस बार वर्किंग कमेटी क्या फैसला करती है। गांधी जी हैं, इसलिए हम ऐसे एलिमेंट से नहीं डरते।"

हीरेन बैठा रहा। वह सोचने लगा कि डर की बात नहीं, लेकिन इस बार भी गांधी जी की इच्छा अधूरी न रह जाय। देश के लिए जो लोग अपने प्राण देना चाहते हैं, अगर वे स्वस्थ मन से एक न हों तो विफलता स्वाभाविक है। वह विफलता बड़ी तकलीफदेह होगी। ऐसी विफलता पहले भी आयी है। इक्कीस साल की संघर्षपूर्ण विफलता के कारण ही नारायण दूसरे रास्ते पर चल पड़े। लेकिन हीरेन अपने रास्ते पर अडिग है। उसे गांधी जी के दर्शन और आदर्श में विश्वास है।

"भजन !"

हीरेन की पुकार पर भजन ने सिर उठाया। भजन का दिमाग न जाने क्यों काम नहीं कर रहा है। अभी यहाँ जो बातें हुईं, वे भजन के दिमाग में कील की तरह धँसने लगीं। उसका दराज भी लगभग खाली पड़ा हुआ है। उसमें दो-चार फुटकर सिक्के लक्ष्मी के वाहन उल्लू की तरह मुँह छिपाये पड़े हैं। उधार खाने वाले गाहकों में से भी कोई पैसा देने नहीं आया। भजन ने ऐसे एक गाहक को स्टेशन के चबूतरे के सामने से मुँह छिपा कर जाते भी देखा। लेकिन भजन ने कुछ नहीं कहा।

भजन ने सिर उठाया। उसकी आँखों में बेचैनी है। मानो उसकी आँखें धधक रही हैं। उसने कहा, "बोलो।"

लेकिन भजन के रंग-ढंग से हीरेन का उत्साह जाता रहा। फिर भी उसने कहा, "मैं कह रहा हूँ कि नारायण भैया ने अभी जो कुछ कहा, वह सही नहीं है।"

"क्यों ?"

"नारायण भैया ने जैसा कहा, उससे मजदूरों का कोई भला नहीं होगा। एक तरफ इन निरक्षर लोगों को साक्षर बनाना पड़ेगा और दूसरी तरफ इनको सत्याग्रह का सच्चा सिपाही बनाना होगा। इनके हृदय में अहिंसा को संदेश बैठा देना होगी, तभी इनका कल्याण हो सकेगा।"

भजन की दोनों आँखें सिकुड़ गयीं। उसने मुँह बना कर कहा, "देख हीरेन, मैं तुझसे ज्यादा पढ़ा-लिखा हूँ न ?"

इस जवाबी सवाल से हीरेन को बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने कहा, "अरे तुम तो ज्यादा पढ़े-लिखे हो ही।"

"फिर साले, तुम्हीं मुझको समझाने लगे हो ?"

साला संबोधन से शर्म के मारे हीरेन के दोनों कान लाल हो गये, फिर भी उसने पूछा, "क्यों ?"

भजन ने कहा, "क्यों क्या ? अब तुम उन मजदूरों को पढ़ाओगे-लिखाओगे और सत्याग्रह करना सिखाओगे, लेकिन अभी तो वे अंग्रेजों की पिटाई से मरे जा रहे हैं। उसका क्या होगा ? तोप-बन्दूक का मुकाबला सत्याग्रह से करोगे ?"

इतना कह कर भजन जोर-जोर से हँसने लगा। फिर उसने कहा, "मुझसे ज्यादा तुम लोगों का दिमाग खराब है।"

भजन की बातों से हीरेन निराश हो गया। बेमतलब वह भजन को समझाने चला तो उसे उसका नतीजा मिल गया। उसने मन ही मन सोचा, इसी लिए लोग शराबी से कतराता है। फिर हीरेन उठ कर सड़क पर चला गया।

सड़क पर जा कर भी हीरेन सोचता रहा कि भजन जैसे लोगों को समझाने की कोशिश करना बेकार है। वे कभी नहीं समझेंगे। अंग्रेज कितनी बंदूकें और कितनी तोपें चलायेंगे ? निडर सत्याग्रही तो बंदूक और तोप से भी भारी पड़ता है। दुश्मन भी तो इनसान है। वह कब तक बंदूक और तोप चलाता रहेगा ? क्या भगवान की आवाज उसे अपने हृदय में सुनाई नहीं पड़ेगी ? क्या भगवान उसके बंदूक और तोप चलाते हाथों को जकड़ नहीं लेगा ? क्या उस दुश्मन इनसान के हृदय में प्रेम नहीं जागेगा ?

लेकिन भजन वगैरह यह सब कभी नहीं समझेंगे। वे सिर्फ खून के बदले खून जानते हैं। उसका परिणाम तो बस शून्य ही है। इसलिए इनसान को समझना होगा। झाड़ूदारों की बस्ती के लोग भी अब समझदार हो चले हैं। वे सब भी इस बात को मानने लगे हैं। इस लिए प्रियनाथ की तरह हीरेन भी इस बात पर विश्वास करता है कि भूखे अनपढ़ जाहिल देशवासियों में से ही नेता पैदा होंगे। रमिया भी तो उन्हीं लोगों में से है। रमिया भी झाड़ूदारिन है। वह भी एक अंध विश्वासी नट की बेटी है। लेकिन आज उसके सीधे-सादे चेहरे पर बुद्धि की चमक है। अब जल्दी ही उसका तीसरा नेत्र भी खुल जायेगा। तब वह सही माने में सत्याग्रही बन जायेगी।

फिर भी हाय, रमिया की आँखों में विचित्र सपने का जो आवेश है, उसकी माया से हीरेन अपने को बचा नहीं पाता। वह अपने मन में इसका अनुभव करता है। शायद रमिया को भी इसका पता नहीं है कि उसमें तीव्र अग्नि की ज्वाला छिपी हुई है। लेकिन उसके चलने-फिरने में और उसकी हँसी में उस आग की तपिश का पता चलता है। उस तपिश से उसकी बस्ती और इस कस्बे की सड़कें अछूती नहीं रहती।

हीरेन ने लंबी साँस छोड़ी। परसों ही उसके हरिजन बस्ती में जाने की बात है। उसे न्योता दिया गया है। सब मिल कर खायेंगे-पीयेंगे और उसके बाद जुलूस निकालेंगे। उस जुलूस के आगे हीरेन रहेगा। शायद वह देख कर बहुत लोग हँसेंगे। हीरेन को पता है कि शायद कृपाल वगैरह भी हँसेंगे। वे सब इसको कोई महत्व नहीं देते, बल्कि इसकी हँसी उड़ाते हैं। उड़ायें इसकी हँसी, लेकिन हीरेन इन निरक्षर मनुष्यों के मनुष्यत्व

और कष्ट से अपने को अलग नहीं कर सकता। वह अस्पृश्य के हृदय का स्पर्श करना चाहता है।

फिर प्रत्यक्ष संग्राम का समय भी तो आ रहा है। कांग्रेस वर्किंग कमेटी की बैठक एक-दो दिन में शुरू होने जा रही है। भविष्य को देखने के लिए ही मानो हीरेन ने आसमान की तरफ देखा। आसमान दिखाई नहीं पड़ा। तारे नहीं दिखाई पड़े। अंधेरा और उसके संग कोहरा ही आँखों के सामने है। पता नहीं, हीरेन का भविष्य कैसा है ? पता नहीं, उसके जीवन में क्या है ? पता नहीं, उसके रास्ते में क्या है ? फिर भी उसने चलना शुरू किया।

विचित्र आवाज कर के कुट्टी पगला हँस रहा है। स्टेशन के चबूतरे पर और एक घुमक्कड़ अधेर औरत है। कुट्टी घूम-फिर कर बेमतलब उसी को गाली दे रहा है।

श्रीमती काफे लगभग खाली है ! गोलोक चटर्जी बैठे-बैठे ऊँघ रहे हैं।

भजन ने आवाज लगायी, "बंगाली।"

बंगाली ने लटके हुए सिर को थोड़ी देर बाद उठाया और कहा, "लाट साहब, एक बात कहूँ ?"

"बता, क्या कहना चाहता है ?"

"क्या तुम्हारी घरवाली तुम्हें गाली देती है ?"

भजन ने मुस्करा कर कहा, "अगर देती तो अफसोस किस बात का रहता ? वह तो कुछ भी नहीं कहती। बता, ऐसा क्यों पूछ रहा है ?"

"मेरी घरवाली मुझे बहुत गरियाती है देवता ! हर वक्त कहती रहती है कि घर छोड़ कर चली जाऊँगी। ठीक है, मैं ही घर नहीं जाऊँगा, वही अकेली रहे। कैसा रहेगा देवता ?"

चरण हलकी आवाज में खिलखिला कर हँस पड़ा। बंगाली की बात सुन कर उसे अनायास हँसी आ गयी।

भजन ने चरण को डाँट लगायी, "हरामजादा हँसने लगा। हँसने की कौन सी बात हुई ?"

चरण वहाँ से खिसक गया।

बंगाली ने फिर कहा, "मुझसे सभी नाराज रहते हैं। आज नरायन भैया ने भी मुझ पर गुस्सा किया। प्राननाथ भैया एक भी बात नहीं बोले। मैं इस दुनिया के लिए बोझ बन गया हूँ देवता।"

प्रियनाथ को बंगाली प्राननाथ कहता है। प्रियनाथ नाम उसे याद नहीं रहता।

भजन बोला, "अरे, तू तो दर्शन बघारने लगा बंगाली। नारायण भैया को तूने कभी गुस्सा करते देखा है ? लगता है, तेरा पेट खाली है और ऊपर से ताड़ी पी ली है। खायेगा कुछ ?"

इस जाड़े में भी बंगाली की नीली कमीज के बटन खुले हुए हैं। बटन खुले क्या हैं, हैं ही नहीं। हड्डियों का ढाँचा सा उसका सीना दिखाई पड़ा। उस सीने को देख कर

अंदाजा लगाया जा सकता है कि उसका पेट पीछे से सट चुका है। एकदम सवेरे बासी भात खा कर वह घर से निकला है। खाने की बात सुन कर मानो उसकी अँतड़ियों से मधुर रस की धारा उसकी आँखों से बह चली। उसने धीरे से कहा, "खाऊँगा देवता। सोचा था, बेसवाओं के टोले में नव्वा की बहू के पास जाऊँगा। लेकिन वह कुछ खिलाती है तो उसका दिया खाना गले से उतरना नहीं चाहता। बड़ा बुरा लगता है।"

मुन्नू भी आ गया। मानो उसे खाने की चीजों की गंध मिल जाती है। अभी तक वह कहाँ था पता नहीं। उसकी गाड़ी अड्डे में खड़ी रहती है और उसी में उसके मरियल घोड़े राजा-रानी जुते रहते हैं। किसी-किसी दिन मुन्नू नहीं आता। वह टहलता हुआ घर चला जाता है। उसके दोनों घोड़े राजा-रानी भी घर के सामने पहुँच कर नाक से विचित्र आवाज निकालते हैं और जमीन पर पाँव ठोंकते हैं। इसका मतलब है कि हम भी घर आ गये हैं और हमें घर में रख लो। कभी-कभी मुन्नू लापता रहता है तो मनिया उन घोड़ों को घर के अंदर ले जाती है।

भजन ने कहा, "आ गये मेरे बाप, मेरे सारथी! अब उन निरीह जीवों, याने राजा-रानी को छोड़ कर कहीं भाग मत जाना। इस तरह और कितने दिन चलाओगे मेरे बाप?"

मुन्नू हँसा या मुँह बिड़ाया समझ में नहीं आया। हुँकारी भर कर वह बंगाली के पास जा कर बैठ गया। फिर रात होने लगी। तीनों ने मिल कर आखिरी बार नशा किया। चरण मन में गुस्सा लिये बीच वाले कमरे में जमीन पर पाँव फैलाये बैठा रहा। गुस्से के मारे उसके मन में तमाम बातें भीड़ करने लगीं। फिर वह अपने आप से बातें करने लगा।

चलते समय बंगाली बोला, "देवता, सुना है कि गांधी जी फिर लड़ाई शुरू करेंगे?"

भजन ने कहा, "लड़ाई या महायुद्ध, यह तो नहीं जानता। लेकिन कुछ हो सकता है। यह क्यों पूछ रहे हो?"

"नहीं, यही जानना चाहता हूँ कि हमारी रोजी-रोटी का —"

"तू साला मूर्ख है! रोजी-रोटी से बढ़ कर स्वराज है। यह तो नहीं समझेगा, रोजी-रोटी की बात करने लगा है।"

श्रीमती काके के सामने से साइकिल से गुजरते समय नौजवान पुलिस अफसर ने एक बार तीनों को देख लिया। अपनी धुन में साइकिल के हैंडिल पर टहोका देते हुए गजल का सुर गुनगुनाना बंद हो गया। इस बंगाली का यहाँ आना बंद किये बिना काम नहीं चलेगा। फिर किसी बहाने उस कोचवान का लाइसेंस खत्म करना होगा। फिर मेरी सलाह के मुताबिक ऊपर वाले अधिकारी अगर श्रीमती काके को किसी तरह बंद करवा दें तो सारा झमेला खत्म हो।

फिर पुलिस अफसर ने दूसरी बात सोची — झमेला कहाँ खत्म होने वाला है? दो-चार दिन में पता चल जायेगा कि कैसा झमेला शुरू होगा। कांग्रेस वर्किंग

कमेटी की बैठक में गांधी जी जैसा निर्णय लेंगे, उसी पर वह निर्भर करेगा। हो सकता है कि फिर दंगा-हंगामा शुरू हो जाय। गांधी जी ! गांधी जी की याद आते ही पुलिस अफसर के घर से आयी पत्नी की चिट्ठी याद आती है। उस चिट्ठी में उलाहना भरे प्यार की तमाम बातें रहती हैं। वे बातें याद आती हैं — आपकी नौकरी बहुत बुरी है। सिर्फ इनसान को मारना-पीटना और जेल भेजना आपका काम है। इसलिए पैंट-कोट और हैट में आपकी शक्ल याद आने पर डर लगता है। मेरी सहेलियां इस पर मजाक करती हैं। मैंने आपके लिए रूमाल में फूल काढ़ा है और उसके नीचे कढ़ाई करके लिखा है — प्यार ! कब तक आप आ रहे हैं ?

पुलिस अफसर को लगा कि साइकिल की चेन ढीली हो गयी है और साइकिल आगे नहीं बढ़ रही है। उन्हें घर की भी याद आयी। पता नहीं कब तक घर जाना संभव होगा। जैसा झमेला चल रहा है, उससे तो लगता है कि अभी साल भर छुट्टी की बात करना संभव नहीं है।

दूसरे दिन रात्रि का शेष प्रहर। मीठी-मीठी हवा चल रही है। जाड़ा कम हो चला है। वसंत आने वाला है। आकाश में चांद का टुकड़ा दिखाई पड़ रहा है। मानो वह ओस से भीगा हुआ है।

भजन के सोने के कमरे के दरवाजे पर दस्तक हुई।

"भोजू ! भजन !"

आवाज मिलते ही जूही हड़बड़ा कर उठ बैठी। जेठ जी बुला रहे हैं। क्या पुलिस आयी है ?

जूही ने भजन को जगाया, "सुनिए ! उठिए ! आपको जेठ जी बुला रहे हैं।"

जेठ जी का मतलब है नारायण।

भजन ने उठ कर झटपट दरवाजा खोल दिया। जूही उसके पीछे जा खड़ी हो गयी।

सामने नारायण खड़े हैं। उनके कंधे से कपड़े का झोला लटक रहा है। पश्चिम आकाश में ढलते चांद की फीकी रोशनी उनके चेहरे पर पड़ी है। भजन के चेहरे पर भी चांदनी का उजेला है। लेकिन जूही का चेहरा आड़ में होने से वह अंधेरे में छिपा हुआ है। इसलिए उसने घूंघट काढ़ने की जरूरत नहीं समझी।

नारायण के चेहरे पर वही हंसी है। निर्मल और भरपूर। उसमें दर्द भी है और माधुर्य भी। पितृत्व भी है और बंधुत्व भी। नारायण ने कहा, "भाई भजन, मैं तो जा रहा हूं।"

भरपूर नींद से उठ आने के कारण भजन मानो नारायण भैया की बात समझ नहीं सका। वह सिर्फ सूनी निगाह से देखता रहा। फिर थोड़ी देर बाद उसने कहा, "जा रहे हैं ? लेकिन रात में तो आपने नहीं बताया ?"

नारायण बोले, "हाँ, उस समय नही बताया, इसलिए अभी बताने चला आया।"

इतना कह कर नारायण ने अँधेरे में खड़ी जूही की तरफ देखा और कहा, "बहू, इस घर की कोई जिम्मेदारी मैं नही ले सका। इसलिए तुम मुझ पर नाराज मत होना। अब मैं अपना यह रास्ता छोड़ नहीं सकता।"

जूही कुछ बोल न सकी। जेठ से बात करना मना है। यह मनाही सामाजिक बंधन की है। फिर भी जूही के मन में आया कि चिल्ला कर कहे — आप ऐसी बात न कहें। हम नहीं चाहते कि आप अपने रास्ते से डिग जायँ। आपका रास्ता बड़ा पवित्र है।

फिर जूही का सिर अँधेरे से चाँद की रोशनी में आया। सिर पर आँचल नहीं है; गर्दन के पास अस्तव्यस्त जूड़ा अटका हुआ है। उसने नारायण के पाँवों में अपना सिर नवाया।

नारायण थोड़ा हिले। पल भर के लिए मानो उनकी आँखों के आगे धुँधलका छा गया। वे बोले, "बस, बस, उठो बहू। मैं सिर्फ इतना ही कहूँगा कि तुम इस घर की लड़की की तरह हो, जरा अपने पर ख्याल रखना। गौर-निताई का जिम्मा तुम्हीं पर है। फिर पिता जी हैं।"

इतना कह कर नारायण रुके। भजन आँखें बंद किये जबड़ा भीचे चुपचाप खड़ा है। जूही के गाल आँसुओं से तर होने लगे। नारायण ने फिर मुस्करा कर कहा, "जब तक पिता जी जिंदा हैं, उनकी देखभाल तुम्ही को करनी पड़ेगी। फिर तुम और भजन, एक-दूसरे को समझ कर चलना। पता नहीं बहू, बेहया बन कर कैसे इतना जिम्मा तुम पर सौंप रहा हूँ, लेकिन भजन के लिए मेरे मन मे चिंता बनी ही रहेगी।"

फिर थोड़ी देर चुप रहने के बाद नारायण ने कहा, "भोंदू!"

भजन ने न आँखें खोली और न मुँह खोला। सिर्फ उसके गले से आवाज निकली, "ऊँह?"

नारायण ने कहा, "इस वक्त पिता जी को नही बुलाया। लेकिन एक बात है भजन, तू अपनी जिंदगी में चाहे जो कर, लेकिन अपनी जिंदगी को तुच्छ मत समझना।"

उसके बाद नारायण ने भजन का हाथ छुआ। शायद उसका हाथ अपने हाथ में लेना चाह कर भी वे ले न सके। वे आँगन में चले गये। कुएँ के पास से आगे बढ़ कर उन्होंने पीछे वाला दरवाजा खोला। दरवाजा खोलने की मामूली आवाज से भजन चौंक पड़ा। उसने जल्दी से दरवाजे के पास जा कर नारायण से पूछा, "अभी कहाँ जायेंगे भैया?"

भजन की बेचैनी से नारायण को बड़ा कष्ट हुआ। इस कष्ट ने उनको मानो चौंका दिया। उन्होंने कहा, "अगर यह बताना होता तो पहले ही बता देता भजन। अच्छा, मैं जा रहा हूँ, दरवाजा बंद कर ले।"

इस समय नारायण को और एक जने की बात याद आयी। उसके पास रुपये की और सोने-चाँदी की कमी नही है। उसके पति भी दस भले लोगों की तरह भले हैं।

नवीन जैसा उसका बेटा है। नारायण को उस प्रमीला की बात याद आयी। प्रमीला ने नारायण से कहा है — आप मेरे घर जरूर आइयेगा। ऐसा न हो कि उससे पहले मैं मर जाऊँ।

बाहर अँधेरा फीका पड़ चुका है। उसी धुँधलके में नारायण बाहर निकल गये। जूही भजन के पास आ कर खड़ी हो गयी। उसने भी खुले दरवाजे के रास्ते से बाहर देखा। थोड़ी देर बाद उसका ध्यान भजन की तरफ गया। भजन उसी तरह आँखें बंद किये खड़ा है। सिर्फ उसके चेहरे पर गूँगी व्यथा छायी हुई है।

जूही ने कहा, "कमरे में चलिए। बाहर ठंड पड़ रही है।"

भजन ने उदास स्वर में कहा, "चलो।"

चलो कह कर भी भजन खड़ा रहा। दरवाजा बंद करने जा कर जूही भी रुलाई रोक न सकी। इन आँसुओं का मतलब उसकी समझ में नहीं आया।

भजन दिन भर शराब पीता रहा। जेठ की असह गरमी में लोग प्यास के मारे जिस तरह पानी पीते हैं, उसी तरह उसने शराब पी। अब शाम को वह चलने-फिरने लायक नहीं रहा तो टेबुल पर सिर रख कर बैठ गया। चरण ने उससे कई बार घर जाने के लिए कहा। लेकिन हर बार चरण को डाँट खा कर पीछे हटना पड़ा। एक-दो बार भजन का सिर टेबुल से लुढ़कने को हुआ तो उसने उसे ठीक कर दिया।

ठीक उसी वक्त हीरेन आया। वह बड़ा गंभीर किस्म का है। फिर भी इस समय उसकी आंखों में उत्तेजना भरी हुई है। इस समय वह झाड़ूदारों की बस्ती में जा रहा है। इसके बारे में वह भजन को बता चुका है। फिर भी दोबारा बताने के लिए वह आया है। लेकिन यहाँ आ कर उसने देखा कि भजन पूरी तरह शराब में डूबा हुआ है।

हीरेन को गुस्सा नहीं आया। वह मुस्कराया। यह प्यार भरी मुस्कराहट है। फिर हीरेन अपने रास्ते चला। इस समय उसे ऐसा लगने लगा कि मानो वह किसी बहुत बड़ी सभा में जा रहा है या किसी लड़ाई को जीतने। उसे मन ही मन बड़ी खुशी हो रही है।

सड़क पर तमाम लोग आ-जा रहे हैं। सब इसी देश के और इसी कस्बे के हैं। उनके तरह-तरह के धंधे हैं और उन्हीं के पीछे यह भागदौड़ है। मानो कोई किसी को नहीं पहचानता। लेकिन सब एक-दूसरे को जानते हैं। अगर नहीं भी जानते तो वे जान सकते हैं। हीरेन सब को पहचानता है। वह उनके नाम नहीं जानता, बहुतों की शक्ल भी नहीं पहचानता, फिर भी जानता है। उसने सब से प्यार किया है। हर देशवासी उसका प्यारा है। वह अपने देशवासियों के लिए अपनी जान दे सकता है। मानो वह अपनी जान को मुट्ठी में ले फूँक मार कर उड़ा सकता है। आज वह ऐसा हर अद्भुत काम कर सकता है।

हीरेन झाड़्दारों की बस्ती में जा रहा है। वहाँ तमाम लोग हैं। उन तमाम लोगों के साथ रमिया भी है। आज सवेरे भी रमिया आयी थी। वह बता गयी है कि सारे आयोजन का भार उसी पर है। उसने आगे बढ़ कर यह भार लिया है। एक दिन वह इस देश का भार भी सँभालेगी। हीरेन उसी की सर्जना के पीछे-पीछे उसी का हाथ पकड़ कर आगे बढ़ेगा। अपने मन के आगे इस बात को स्वीकार करते उसे जरा भी लज्जा या संकोच का अनुभव नहीं होता। गंगा के किनारे से काफी चढ़ाई चढ़ने के बाद मैदान है। उस विशाल मैदान के छोर पर वह बस्ती है। पूरब से पच्छिम तक खपरैल से छाये कच्चे घरों की कतार दूर से दिखाई पड़ती है। बाँस की फट्टियों के ढाँचे पर गंगा की मिट्टी पोत कर दीवारें बनायी गयी हैं। समय के साथ उनका रंग जरा काला पड़ गया है। वहाँ कुछ आदमियों की शक्लें भी दिखाई पड़ रही हैं।

शाम हो चली है। हीरेन बस्ती के सामने पहुँच कर रुक गया। उसे देख कर दो तीन कुत्ते एक साथ भूँकने लगे। इन कुत्तों ने हीरेन को कई बार देखा है, फिर भी ये कभी उसे पहचान नहीं पाते। अभी वही हुआ।

झोंपड़ों के आसपास सुअर के कई बच्चे भागदौड़ कर रहे हैं। पीपल के पेड़ के नीचे पतले बाँस की छीजन बिखरी पड़ी है।

हीरेन को देख कर लगभग सभी लोग बाहर आ गये। चारों तरफ शोर मच गया, "आ गये बाबू जी, आ गये। चलिए बाबू जी, अंदर चलिए।"

अंदर का मतलब अंदर के आँगन में। बस्ती के बीच खुली जगह पंचायती आँगन है। लेकिन हीरेन रुक गया। उसे लगा कि कमोबेश सभी लड़खड़ाने लगे हैं। मदिरा की दुनिया में सभी बादशाह-वजीर बन चुके हैं। सब के मुँह से उसी की बू आ रही है।

तभी अंदर के आँगन में जाने वाली गली के सामने रमिया आ गयी। उसने कहा, "बाबू जी।"

हीरेन के घुटन भरे प्राणों को मानो खुली हवा मिली। उसमें हिम्मत लौट आयी। उसने देखा कि रमिया हँस रही है। उसके चेहरे पर उछाव और आँखों में चमक है। चमकती आँखों में हलकी लाली है। निगाह में चमचमाते तेज चाकू का पैनापन है। उसने साफ सफेद मोटी साड़ी में चुनट डाल कर लहँगे की तरह पहन रखी है। उसका पल्ला छाती पर से ला कर कमर में लपेटा गया है। बदन पर सस्ती नीली छींट का कुर्ता है। उसमें पीली बिंदियाँ तारों की तरह चमक रही हैं। बालों में तेल लगा कर कंघी करके जूड़ा बनाया गया है। तेल के कारण बाल चमक रहे हैं। चेहरे पर भी चमक है।

रमिया ने हीरेन का स्वागत किया, "आइए बाबू जी।"

फिर एक साथ कई आवाजें आयीं, "आइए बाबू जी।"

झाड़्दार बस्ती का मुखिया सब से आगे है। हीरेन उसके साथ अंदरवाले आँगन में गया।

आंगन को गोबर से लीपा गया है। चारों तरफ साफ-सफाई की गयी है। आंगन के बीच में केले के पत्तों पर खाना रख कर उसे पत्तलों से ढांका गया है। सिर्फ हीरेन के लिए आसन बिछाया गया है।

घरों से औरतें, मर्द और बच्चे निकल आये। जो लोग आंगन में बैठे थे, वे खिसक कर बैठे। सब आपस में बोल रहे हैं, हँस रहे हैं। हँसी की गूंज से लगा कि कोई उत्सव होने जा रहा है।

नंगे काले ढेर सारे बच्चे आँखें गोल-गोल किये एक बार खाने की तरफ तो दूसरी बार हीरेन की तरफ देखने लगे। शायद वे बच्चे सोच रहे हों कि इतना सारा खाना यह अजीब आदमी क्या अकेले खा पायेगा ?

इंतजाम के लिए रमिया इधर-उधर आ-जा रही है। वह ढिबरी खोज रही है, जलानी पड़ेगी न। अंधेरे में यह महोत्सव कैसे हो सकता है ! रमिया के पीछे वही नौजवान झाड़ूदार भी चक्कर काट रहा है। रमिया भी बीच-बीच में खिलखिला कर हँसती जा रही है। वह हँसी तीखी भी है और मीठी भी। उसमें भय भी छिपा हुआ है और सुख भी।

कुछ औरतें एक जगह बैठ गयी हैं। मर्द गोल बना कर बैठे हैं। बच्चे इधर-उधर छिटके हुए हैं। लेकिन कितने आश्चर्य की बात है ! सभी की आँखें धुंधली हैं। सभी मानो झूम रहे हैं। सभी आपस में न जाने क्या-क्या बक रहे हैं। कई नौजवान कह रहे हैं कि यह बाबू जी गांधी जी के चेले हैं। बाबू जी को परमात्मा का हुक्म हुआ है कि अछूतों को गले लगाओ। बाबू जी ब्राह्मण हैं, असली ब्राह्मण !

हीरेन को ले कर लोगों में जबर्दस्त वादविवाद छिड़ गया। इससे हल्ला-सा हो‌ने लगा। इतने में एक सुअर आंगन में चला आया तो दो-चार लोग उसे भगाने लगे।

इधर हीरेन आसन पर बैठ गया। बस्ती का मुखिया उसके पास बैठा। इधर-उधर कई बत्तियां जला दी गयीं। लेकिन कुछ समय पहले हीरेन के मन में जो खुशी थी, वह धीरे-धीरे कम होने लगी। रमिया उसके पास आ कर बैठी और बेमतलब हँसने लगी। मानो उसे हँसने का रोग लग गया हो। इस बीच उस नौजवान झाड़ूदार ने कई बार उसका हाथ पकड़ कर खींचा।

हीरेन ने बहुत कुछ कहने का इरादा किया था, लेकिन वह किससे क्या कहेगा ? किसी को देख कर ऐसा नहीं लगा कि उसकी हालत सुनने लायक हो।

मुखिया ने हाथ उठा कर सब को चुप कराया। उसने खाने की चीजों पर पड़े पत्तल हटाये। लगभग सभी चीजें दुकान से खरीदी हुई हैं। सिर्फ मोटी-मोटी रोटियां यहाँ बनायी गयी हैं। इसके अलावा हरी मिर्च, प्याज और मिर्च का अचार हैं। एक कोने में कुछ भात भी हैं।

हाथ जोड़ कर मुखिया ने हीरेन से कहा, "बाबू जी, आप हमारी गलती माफ करें। मेहरबानी करके भोजन कीजिए।"

हीरेन ने सब की तरफ देखा। आंखों में बेचैनी लिये सब उसी को देख रहे हैं।

उनकी आँखों को देख कर ऐसा लगा कि कोई अनहोनी होने जा रही है। नहीं, हीरेन को जरा भी घृणा नहीं लगी। फिर भी आनंद से अधिक वेदना का बोझ बढ़ता जा रहा है। हीरेन की आँखों के आगे एक चेहरा साफ दिखाई पड़ने लगा। वह चेहरा गांधी जी का है। वह चेहरा उदास, दुखी और चिंता में डूबा हुआ है। हीरेन को गौतम बुद्ध का चेहरा भी याद आया। गौतम बुद्ध संसार भर के मानवों को मुक्ति देने वाले हैं। उनके चेहरे में करुणा है, लेकिन वह चेहरा हँसता हुआ है।

चारों तरफ काले-काले चेहरे धून से सने लग रहे हैं। उनकी आँखों में चमक नहीं है। उन आँखों की दृष्टि मानो धुँधली पड़ गयी है। ढिबरियों की रोशनी में वे लोग बड़े विचित्र लग रहे हैं। अधनंगे आधे इनसान जैसे!

हीरेन ने मुखिया के कंधे पर हाथ रख कर कहा, "प्राऊँगा भाई। गांधी जी ने आप लोगों को नमस्कार किया है, इसलिए मैं भी कर रहा हूँ। दरिद्र नारायणों के चरणों में मेरा प्रणाम।"

फिर दोनों हाथ माथे से लगा कर हीरेन ने कहा, "आओ भाई, हम लोग एक साथ खायें।"

हीरेन ने खाने के लिए हाथ बढ़ाया, लेकिन और सभी लोग संकोच करने लगे। सभी सहमे हुए बैठे रहे। सब एक दूसरे का मुँह देखने लगे।

"अरे, आओ भाई।" हीरेन ने कहा।

अब सब लोग जरा आगे खिसके। मुखिया ने कहा, "चलो, सब बाबू जी के साथ खाना शुरू करो।"

इतना कह कर मुखिया ने रोटी में हाथ लगाया तो सब के हाथ आगे बढ़े। खाना शुरू हो गया, हड़बड़ी होने लगी और सब खाने की चीजों तक पहुँचने के लिए धक्कमधक्का करने लगे।

सभी हँस रहे हैं, सभी बोल रहे हैं।

हीरेन के पास बैठी रमिया खिलखिला कर हँसने लगी। उसका सारा बदन थर-थर काँप उठा। हीरेन ने देखा कि रमिया की आँखें जलने लगी हैं। रमिया की आँखें लाल-लाल हो गयी हैं। छाती पर से उसका आँचल सरक चुका है और उसके बाल खुल गये हैं। मधुर किलकारी भर कर वह हँस रही है।

डर और दुख के मारे हीरेन मानो अवश हो चला। उसने असहाय हो कर देखा कि आँगन भर में मानो हंगामा शुरू हो गया है। उसे उस समय बड़ा आश्चर्य हुआ, जब उसने देखा कि वहाँ अचानक कई कुल्हड़ आ गये हैं। फिर तो सभी निडर हो कर पीने लगे। औरतें भी पीने लगीं। पी-पी कर सब बदहवास होने लगे।

तभी एक अधेड़ आदमी खड़ा हुआ। उसने आँखें लाल किये हीरेन की तरफ देख कर कहा, "बाबू जी, भगवान आपका भला करे। गांधी बाबा के पास आप हमारी अपील ले जाइए। आप गांधी बाबा से कहिए कि हमारे मिनसिपिल्टी के कमिश्नर बाबू चूतिया हैं। साला चूतिया की औलाद, चूतियापंथी की बात करता है।"

उस आदमी ने ज्यों ही यह कहा, बहुत से औरत-मर्द चिल्लाये, "हाँ जी, ऊ लोग डाकू हैं। हमारी तनखाह काट लेते हैं। हमारा जाँगर पेरा जाता है, लेकिन पैसा नहीं मिलता। कोई कानून नहीं है।"

हीरेन होश-हवास जवाब देने लगा। हंगामा खड़े होते देख वह मानो गूंगा बन गया। पता नहीं, इन लोगों ने अचानक यह कैसा प्रसंग छेड़ दिया। दूसरे ही क्षण हीरेन को लगा कि यह प्रसंग छेड़ा जाना अस्वाभाविक नहीं है। लेकिन ये लोग इतने उग्र क्यों हो चले? ये गाली-गलौज क्यों कर रहे हैं?

मुखिया की तरफ हीरेन ने सवालिया आँखों से देखा। मुखिया ने खड़े हो कर जोर से सब को डांटा, "ऐ, सब चुप हो जाओ। तुम लोगों को शरम नहीं आती? खाने-पीने के वक्त चिल्लाने लगे?"

किसी ने कहा, "गलती हो गयी मुखिया। हम तो बाबू जी से अपील कर रहे हैं।"

इतने में कोई जोर-जोर से रोने लगा। पता नहीं, किस बात पर औरतों में भी झगड़ा शुरू हो गया।

रमिया ने चिल्ला कर कहा, "चुप हो जा!"

सब चुप हो गये।

हीरेन ने देखा कि रमिया के कपड़े अस्तव्यस्त हो गये हैं। उसकी आँखें आग उगलने लगी हैं। मानो शेरनी की तरह वह छलाँग लगाने के लिए तैयार खड़ी है।

रमिया की वह मूर्ति देख कर हीरेन अपनी सुरक्षा के बारे में थोड़ा आश्वस्त हुआ, लेकिन उसका हृदय अपमान की आग से जलने लगा। जरूरत पड़ने पर एक नट की लड़की कितनी खतरनाक बन सकती है! रमिया के इस रूप से हीरेन का आज पहली बार परिचय हुआ। लेकिन हीरेन ने उसमें खूंखारपन नहीं देखना चाहा। यह तो रूप नहीं अपरूप है। यह तो बीभत्स और भयानक है।

तभी वह नौजवान झाड़ूदार पता नहीं कहाँ से आ गया। उसने खामोशी को तोड़ते हुए कहा, "बाबू जी, आप हुक्म कीजिए, मैं रमिया से शादी करूंगा।"

शादी!

हीरेन अचंभे में पड़ गया।

लेकिन उस नौजवान के रमिया से शादी करने के प्रस्ताव पर किसी ने उसका समर्थन किया और किसी ने विरोध। लेकिन हंगामा खड़ा हो गया।

हीरेन के सिर पर मानो गाज गिरी। उसके मुंह से किसी तरह आवाज नहीं निकल रही है। लेकिन आश्चर्य है, रमिया फिर भी हँसती जा रही है! शायद शादी की बात सुन कर उसे हँसी आ गयी है।

एक आदमी लड़खड़ाता हुआ हीरेन के पास आया। उसके हाथ में ताड़ी का कुल्हड़ है। वह हीरेन के सामने बैठ गया। फिर बोला, "बाबू जी, आप भी पीजिए। इन लोगों की बात छोड़िए।"

उसके बाद और एक आदमी आया, फिर और एक। हीरेन डर गया। वह यहाँ कहाँ आ फंसा है ? ये लोग कौन हैं ? ये तो सीधे-सादे साड़्‌दार नहीं हैं ! फिर क्रोध, भय और आशंका से भर कर हीरेन ने कहा, "यह सब तुम लोग क्या कह रहे हो ?"

लेकिन उन लोगों में होश-हवास कहाँ है ? किसी ने आँखें बंद किये सिर हिला कर कहा, "हाँ बाबू जी, हम लोग यही कहते हैं। यही हमारी जात की आदत है महाराज ! राजा हो या परधान, सब हमारे साथ पीते हैं।"

फिर एक आदमी ताड़ी का कुल्हड़ हीरेन के मुँह के पास ले गया। ठीक उसी वक्त रमिया शेरनी की तरह उस आदमी पर झपट पड़ी। पागल की तरह रमिया उसे मुक्के और थप्पड़ मारने लगी। साथ ही साथ वह गालियाँ बकती रही, "कमीना ! सुअर का बच्चा ! बाबू जी को तू बेइज्जत करता है ?"

लेकिन ताड़ी के नशे में उस आदमी ने उस मार की परवाह नहीं की। उसने कुल्हड़ की ताड़ी हीरेन पर उड़ेल दी।

अपनी जान बचाने के लिए हीरेन बदन की सारी ताकत लगा कर उठ खड़ा हुआ। लेकिन किसी ने उस पर ध्यान नहीं दिया। हीरेन हाँफता हुआ बस्ती के अंदर से बाहर निकला। अपमान और पश्चात्ताप के कारण वह पागल की तरह मैदान से चलने लगा। आँसुओं को रोकना उसके लिए मुश्किल हो गया और उसकी आँखों से आँसू बह चले। सामने अँधेरा है और आँसुओं के कारण उसकी दृष्टि धुंधली हो चली है। उसे अपने देवता की मूर्ति याद आयी। उसने मन ही मन देवता से पूछा — यह तुमने क्या किया ? ऐसा क्यों हुआ ? मुझे मरना पड़ेगा, अपनी जान देनी पड़ेगी। हे भगवान, मुझे मौत दो !

पीछे से एक आवाज आने लगी, "बाबू जी ! बाबू जी !"

नहीं ! अब कभी उस पुकार का जवाब नहीं दिया जा सकता। रमिया को यह मुँह कभी नहीं दिखाया जा सकता। मैं अक्षम, दुर्बल, डरपोक, भिखमंगा और अपमानित हूँ। फिर भी हे भगवान्, मैंने बुरा नहीं चाहा, मैंने पाप करना भी नहीं चाहा। फिर भी कहाँ मुझसे गलती हो गयी, यह तो मैं समझ नहीं पा रहा हूँ।

"बाबू जी ! बाबू जी !"

प्राणपण से चिल्लाती हुई रमिया दौड़ी आ रही है। उसके कपड़े अस्तव्यस्त हो चुके हैं। आँसुओं के कारण उसे दिखाई नहीं पड रही है।

"नहीं, नहीं ! पुकारो मत !"

हीरेन भी जी-जान से दौड़ता जा रहा है। उसे बार-बार रुलाई आ रही है। वह मन ही मन कहने लगा — मौत ! तू मुझे क्यों नहीं बुलाती ? मैं तेरे पास आना चाहता हूँ !

"बाबू जी ! बाबू जी !"

दौड़ती हुई आ कर रमिया हीरेन के पाँवों के पास गिर पड़ी। उसने दोनों

हाथों से हीरेन के पाँव पकड़ लिये। वह उन पाँवों पर मुँह रख कर बार-बार कहने लगी, "बाबू जी ! हमार बाबू जी !"

रुकना पड़ा तो हीरेन ने दोनों हाथों से मुँह ढँक लिया। उसे रुलाई आने लगी।

अँधेरा मैदान। दूर से गंगा दिखाई पड़ रही है। आसमान में तारे चमक रहे हैं।

"बाबू जी !"

निस्संकोच और निर्भय रमिया मानो लतर की तरह हीरेन से लिपटती उठ खड़ी हुई। फिर वह जोर-जोर से रोने लगी।

"बाबू जी, मुझसे गलती हो गयी है, मुझे गाली दीजिए, पीटिए। बाबू जी, मुझे अपने साथ ले चलिए। मैं यहाँ नहीं रहूँगी। नहीं रहूँगी।"

हीरेन के सीने के अंदर कँपकँपी होने लगी। रमिया के उष्ण आलिंगन और निश्वास ने हीरेन के अंग-अंग को मानो जला डाला। हीरेन ने डर के मारे आँखें झुका लीं। उसे आश्चर्य भी कम नहीं हुआ। उस अँधेरे में भी उसने देखा कि उसके चेहरे के सामने रमिया के होंठ हैं, आँसुओं से गीली आँखें हैं और उसका सारा शरीर है।

एक क्षण के लिए हीरेन सिहर उठा। यही तो मौत है ! मौत गले से लग गयी है। लेकिन यह मौत इतनी भयानक है ! मुझे तो ऐसी मौत नहीं चाहिए। नहीं, नहीं, मैं मरना नहीं चाहता। मैं मर नहीं सकता।

हीरेन ने दोनों हाथों से जोर लगा कर अपने को छुड़ा लिया।

"छोड़ दो रमिया, छोड़ दो ! मुझे जाने दो ! मुझे छुटकारा पाने दो !"

अपने को छुड़ा कर हीरेन फिर दौड़ने लगा।

रमिया जोर से रो पड़ी, "बाबू जी !"

फिर रमिया उठ न सकी, वहीं जमीन पर मुँह रख कर रोने लगी। रुलाई के हर झोंके के साथ उसका सारा शरीर हिलने लगा।

थोड़ी देर बाद उस अँधेरे में वहाँ एक जवान शक्ल आ कर खड़ी हुई। यह वही नौजवान झाड़ूदार है। घुटनों के बल बैठ कर उसने रमिया को खींच कर उठाया। रमिया ने विरोध नहीं किया। उस नौजवान का सहारा ले कर वह उठ खड़ी हुई। बिना कुछ कहे वह नौजवान धीरे-धीरे रमिया को बस्ती की तरफ ले चला। सिर्फ एक बार उसने पीछे मुड़ कर देखा। खूँखार जानवर की आँखों की तरह उसकी आँखें जल उठीं।

कूड़े के ढेर पर से चल कर हीरेन ने नाली पार की। फिर वह पीछे के दरवाजे से श्रीमती काफे में घुसा। सामने से वह यहाँ नहीं आ सका। लोगों को अपनी शक्ल दिखाने में उसे शरम आयी।

चूल्हे के पास बैठा चाय बनाते-बनाते चरण चौंक पड़ा। गरम पानी छलक

गया। चरण को इतना अचंभा हुआ कि उसके मुँह से आवाज तक नहीं निकली। हीरेन के बाल अस्तव्यस्त हैं। कुर्ते के बटन खुले हुए हैं। उसे देख कर लगा कि आँधी-पानी में फँसा कोई पंछी हो। उसके बदन से ताड़ी की खटास भरी बू आ रही है। कमरे में आते ही उसने पागल की तरह चरण से कहा, "जरा भजन को बुला देना।"

चरण झटपट भजन को बुला लाया। भजन भी शराब के नशे में लड़खड़ा रहा है। आते ही उसने हीरेन से कहा, "कहो मेरे यार, क्या तुम भी टेररिस्ट पार्टी में शामिल हो गये?"

लेकिन अपनी बात खत्म कर हीरेन की तरफ देखते ही भजन घबड़ा गया। उसने आँखें बड़ी-बड़ी करके पूछा, "क्या हो गया है मेरे यार?"

लज्जा, अपमान और घृणा — हीरेन ने किसी बात की परवाह नहीं की। वह भजन के दोनों हाथ पकड़ कर बच्चों की तरह जोर-जोर से रो पड़ा। वह भजन को खींच कर बीच वाले कमरे में ले गया। हाँ, भजन ही एक ऐसा आदमी है, जिसके पास इस तरह रोया जा सकता है। कृपाल या शंकर घोष, किसी पर भी हीरेन इतना भरोसा नहीं कर सकता।

भजन ने बेचैन हो कर पूछा, "अरे, क्या हुआ, क्यों नहीं बता रहे हो? कहीं मारे-पीटे तो नहीं गये?"

हीरेन ने कहा, "नहीं-नहीं।"

"फिर?"

हीरेन ने भजन के सवाल का जवाब दिये बिना पूछा, "भजन, शराब पीने पर क्या होता है?"

"यह सब क्यों पूछ रहे हो?"

हीरेन ने पूछा, "क्या सीने में जलन होती है? होश-हवास जाता रहता है?"

भजन ने हैरान हो कर कहा, "होश-हवास जाता रहता है या नहीं, यह तो नहीं जानता; लेकिन सीने में जलन होती है और उसके बाद नशा होता है। लेकिन यह सब क्यों पूछ रहे हो?"

हीरेन ने बेचैन हो कर कहा, "कुछ नहीं। मुझे शराब दो, अभी दो। मैं पीऊँगा।"

"तुम तो मुझे झमेले में डालोगे।"

"नहीं भजन, थोड़ी सी शराब दो।"

भजन ने भूरी आँखों की तीखी निगाह से हीरेन को ऊपर से नीचे तक देखा। हीरेन उस निगाह से काँप गया।

"रुको, दे रहा हूँ।"

भजन ने अपनी खुली बोतल से गिलास में शराब उड़ेली।

हीरेन एक क्षण के लिए सहम गया। फिर वह मुँह को विकृत करके एक

बार में पूरी शराब पी गया। उसके बाद दोनों हाथों से सिर पकड़ कर वह वहीं बैठ गया।

भजन ने सिर्फ कहा, "भैया हीरेन, तुमने तो गजब कर दिया।"

बाहर कनस्तर पीटने की आवाज हुई। उन दिनों उस इलाके में कनस्तर पीटना मुनादी करने का अच्छा साधन था। कृपाल अपना झुंड ले कर निकल पड़ा है। बहुत से लड़के एक साथ चिल्लाने लगे, "वोट फॉर सारदा चौधरी।"

इधर कई खद्दरधारी गोलोक चटर्जी से बतियाने लगे हैं।

तभी वह नौजवान पुलिस अफसर भागे-भागे आये। उनके चेहरे से हैरानी टपक रही है। वे आश्चर्य से श्रीमती काफे की तरफ देखने लगे। उनकी समझ से श्रीमती काफे ही वह जगह है जहाँ दुनिया भर के खतरनाक लोग इकट्ठा होते हैं। पता नहीं, इस समय भी वहाँ ऐसे कितने लोग हैं। उन लोगों का काम है अंग्रेजी शासन को उखाड़ फेंकने के लिए तमाम खुराफात करना। लेकिन वह कहाँ है ? खुराफातियों का सरताज ? क्या वह फिर भाग निकला ? लेकिन कहाँ गया ? याने, नारायण कहाँ गये ? आज की भीड़ में नारायण नहीं दिखाई पड़ रहे हैं। आज प्रियनाथ, रथीन और सुनिर्मल वगैरह भी नहीं आये। इसका मतलब यही है कि पंछी उड़ गया है !

रात ग्यारह बजे के बाद हीरेन श्रीमती काफे की पीछे वाली कोठरी से निकला। भजन के कहने पर उसे घर पहुँचाने के लिए भुन्नू ने अपनी गाड़ी में बिठा लिया। इस समय जो हालत भुन्नू की है, वही राजा-रानी की भी। राजा-रानी उसकी गाड़ी में जुते घोड़ों के नाम हैं। राजा-रानी धीरे-धीरे चलने लगे। देर रात उन दोनों घोड़ों में दौड़ने की ताकत नहीं है।

इधर हैरान और मन ही मन चिढ़ा हुआ भुन्नू सोचने लगा कि इन साले बाबू लोगों को पता नहीं क्या हो गया है ! दिन भर किताब पढ़ेंगे, सूत कातेंगे और चाय की दुकान में बैठे रहेंगे। फिर कभी-कभी बेमतलब शराब की दुकान पर हंगामा करेंगे। हौली या कलवरिया तो शराब बेचने के लिए है, लेकिन ये बाबू लोग कहेंगे कि शराब बेचना बंद करो। फिर इसी बात को ले कर जेल भी जायेंगे। जवांमर्द बनते हैं ! बाप का पैसा है न ? अरे, बाप का पैसा है तो ब्याह-शादी करके घर बसा, बाल-बच्चे पैदा कर ! यह सब तो इन बाबुओं से नहीं होगा, फालतू कामों में अपनी जिंदगी गुजार देंगे।

फालतू कामों में ही जिंदगी गुजार दी ! गाड़ी के अंदर दीवार से सिर टिकाये बैठा हीरेन यही सब सोचने लगा। फिर क्या मैं यहीं चूक गया ? अब शरम के मारे हीरेन का बुरा हाल होने लगा। पता नहीं, उसे क्या सूझा और उसने शराब पी ली। बिना सोचे-समझे दुस्साहस करने चला तो उसकी सजा मिल गयी। अब वह महसूस करने लगा कि झाड़ूदारों का चरित्र वह समझ नहीं सका। वह रमिया जैसी नौजवान औरत का स्वभाव भी नहीं समझ सका। क्या वह अब भी समझ सका है ?

कुछ भी हो, विश्वास खो देना संभव नहीं है। हीरेन सिर उठा कर बैठा। नहीं,

नौजवान पुलिस अफसर साहब के साथ लगे रहे तो दूसरे इलाकों के अफसर जलने लगे। नौजवान पुलिस अफसर साहब को समझाते रहे, "सर! यह बहुत बड़ा अड्डा है। कहने को तो यह काफे है, लेकिन यहां तमाम राजनीतिक कार्यकर्ता इकट्ठा होते हैं। अगर आप बुरा न माने सर, तो मैं आप से यही अनुरोध करूँगा कि आप इस रेस्तोरां को बंद करवा दीजिए।"

पाइप को दांतों में पकड़ कर साहब ने बाहर निगाह दौड़ायी। सड़क पर बहुत लोग इकट्ठा हो गये हैं। स्टेशन का चबूतरा भी लोगों से भर गया है। स्टेशन की छत पर रेलवे कर्मचारियों की भीड़ है। असिस्टेंट स्टेशन मास्टर, टिकट कलक्टर वगैरह स्टाफ के तमाम लोग। लेकिन साहब को बाहर की तरफ देखते देख कर बहुतों ने मुंह फेर लिया, इधर-उधर देखा, या मुड़ कर अपने रास्ते चलना शुरू किया।

लेकिन साहब का ध्यान उन लोगों की तरफ नहीं है वे नौजवान पुलिस अफसर की सलाह पर गौर कर रहे हैं। फिर उन्होंने फैसला किया कि पुलिस अफसर का सुझाव सही नहीं है। यह काफे रहना चाहिए। अगर यह राजनीतिक गतिविधि का केन्द्र है तो इससे पुलिस का काम आसान हो जायेगा। अब साहब काफे के पिछवाड़े गये।

पुलिसवाले भीड़ को हटाने लगे। वही कचौड़ी वाला चिल्ला रहा है। भुक्खड़ बिस्सू उसका रोज का गाहक था, लेकिन बेचारा खाने के पीछे मर गया। पुलिसवालों के साथ कुट्टी पगला भी लोगों को हटाने लगा, "भागो! अपने घर जाओ। नहीं तो साहब ससुराल भेज देंगे।"

न जाने कौन भीड़ में खड़ा जोर-जोर से अखबार पढ़ रहा है, "कांग्रेस वर्किंग कमेटी का फैसला। गांधी जी द्वारा फिर संघर्ष का आह्वान। सरकार बनाने के बारे में सुभाष बाबू का प्रस्ताव नामंजूर।"

किसी ने कहा, "अब कुछ होगा।"

श्रीमती काफे की तरफ इशारा करके किसी ने कहा, "उसी की शुरुआत है।"

एस० डी० ओ० साहब दल-बल के साथ बाहर निकले। तलाशी में कुछ नहीं मिला। लोग कहने लगे, "लाट साहब भजन कच्ची गोटी नहीं खेलता!"

फिर वही हुआ, लोगों को जिसकी उम्मीद थी। देश भर में हलचल मच गयी। इस इलाके में तो तलाशी लेने का सिलसिला शुरू हो गया।

भजन की दुकान में तीन महीने के अंदर और दो बार तलाशी हो गयी। श्रीमती काफे बदनाम हो गया। लोग उसके पास जाने से घबड़ाने लगे। न कोई गाहक आता है और न दुकानदारी होती है।

रोज स्टेशन की दीवारों और पेड़ों पर पोस्टर चिपकाये जाने लगे —

'सत्याग्रही तैयार हो जाओ!'

'हमें अपने देश का शासन करने का अधिकार है!'

'विलायती कपड़े पहनना छोड़ो!'

खड़ी हो रही हैं। भुन्नू अपने साथी कोचवानों से यही सब ले कर न जाने कितनी बातें करता रहता है। एक-एक घटना उनके लिए कहानी है।

लेकिन भुन्नू जैसे लोग कुछ नहीं कर सकते। कुछ करना भी नहीं है, फिर भी दर्शक बने रहना उनको बरदाश्त नहीं होता।

चटगांव में अस्त्रागार लूटे जाने की खबर पढ़ कर भजन को अपने भैया नारायण की याद आयी। शायद नारायण वहाँ नहीं हैं। फिर भी भजन को लगता है कि भैया ही वहाँ लड़ रहे हैं।

महाराष्ट्र के शोलापुर के मजदूरों की लड़ाई भी एक कहानी बन जाती है। वह कहानी सुनते समय बंगाली की आँखें आग उगलने लगतीं हैं। भजन यही सब कहानियाँ सुनाता है और बंगाली व भुन्नू सुनते हैं। लेकिन ये तीनों जब शराब पीने बैठते हैं, तब उनको लगता है कि बेहद थकावट के मारे सिर ऊपर नहीं किया जा रहा है। जोश और थकावट के दोनों खेल साथ-साथ चलते हैं और उसी के कारण वे किसी काम के लायक नहीं रहते।

चरण को भी पता नहीं क्या हो गया है। मानो उससे भात भी नहीं खाया जाता। वह शराब नहीं पीता। फिर भी वह शराबी जैसा बन गया है। वह भी सभा या जुलूस में जाना चाहता है। वह भी चाहता है कि पुलिस उसे पकड़ ले जाय। वह भी वंदे मातरम् का गगनभेदी नारा लगाना चाहता है।

यह सब सोचने पर चरण के रोंगटे खड़े होने लगते हैं। वंदे मातरम्! इसका क्या मतलब है? चरण इसका मतलब नहीं जानता। फिर भी वह श्रीमती काफे के पीछे रसोईघर में अकेले अँधेरे में बैठ कर अपनी धुन में बार-बार कहता रहता है वंदे मातरम्! वंदे मातरम्! मन की आँखों से वह देखता है कि उसके सामने पुलिसवाले खड़े हैं। वे पुलिसवाले उसे डाँट रहे हैं, गाली दे रहे हैं, धक्के मार रहे हैं और हार कर पीट रहे हैं। उनके आगे वही नौजवान पुलिस अफसर हैं। पुलिस अफसर आँखें तरेर रहे हैं, न जाने क्या बक रहे हैं और उनके गले की नस फूल रही है। फिर भी चरण वंदे मातरम् कहता जा रहा है!

यही सब सोचते-सोचते चरण अपने आपको भूलने लगता है। तभी उसे लगता है कि उस अंधेरी कोठरी में कोई भूत बैठा है। वह भूत न जाने क्या बड़बड़ा रहा है। लेकिन क्यों, चरण समझ नहीं पाता। तभी उसे लगता है कि वह भूत अब चिल्लायेगा और पागल खूँखार जानवर की तरह जो भी सामने रहेगा उसी पर झपट पड़ेगा। जो भी उसके रास्ते में अड़ंगा बनेगा, उसी को वह नोच कर टुकड़े-टुकड़े कर डालेगा।

रोज रात को जूही भजन की प्रतीक्षा करती है। जूही में विचित्र परिवर्तन आ गया है। वह अभाव या गरीबी की बात नहीं करती और न घर के बारे में कुछ कहती है। आज वह भजन के सामने नये रूप में खड़ी है। वह भजन को चाहती है। वह भजन

को पूरी तरह अपना बनाना चाहती है। मानो वह भजन के व्यक्तित्व को रौंद कर, उसका तिरस्कार कर अपने को प्रतिष्ठित करने के लिए उठ खड़ी हुई है। वह तीन बच्चों की माँ बन चुकी है। उसकी शादी के बाद आठ साल गुजर चुके हैं। हमेशा अपने हृदय के विरुद्ध उसने भजन के आगे आत्मसमर्पण किया है। कभी-कभी उसने विरोध भी किया, लेकिन उसमें तीव्रता कभी नहीं रही। अब अचानक उसके हृदय ने नया मोड़ लिया।

इतने दिनों बाद जूही अचानक पलट कर खड़ी हो गयी। अभी तक उसके हृदय की अपूर्णता में वेदना की मंद लय रही। पा कर भी कुछ न पाने की व्यथा को शांत करने का उपाय वह ढूंढती फिरी। लेकिन आज उसके अंतर में दीपक राग गूँज उठा है। यह बड़ा ही अद्भुत और बड़ा ही विचित्र है। अब जूही भजन के आगे अपने अधिकार को प्रतिष्ठित करने लगी। इससे उसका अंतर जल-भुन कर खाक होने लगा। फिर भी उसने यहाँ कोई भी हिस्सा खाली न रखने का फैसला कर लिया। हो सकता है कि इससे सब कुछ पूरा मिल जायेगा और उसकी किशोरावस्था का स्वप्न पूरा होगा। अगर ऐसा नहीं हुआ तो जूही अपने ही विद्रोह की आग में जल मरेगी।

यह सब सोचते हुए जूही के मन में कहीं थोड़ी लज्जा का अनुभव हुआ और उसे थोड़ा डर लगा। लेकिन आग की एक लपक से मानो वह सब जंजाल खाक हो गया। एक बार उसने यह भी सोचा कि मुझे सचमुच क्या चाहिए। लेकिन वह मानसिक द्वन्द्व भी गायब हो गया। वही तो चाहिए जो अभी तक नहीं मिला। जो नहीं मिला, वह मिले बिना कैसे कोई जिंदा रह सकता है? जूही के मन में आग जल उठी।

जूही के मन की आग से देश भर में जल उठी आग का कोई संबंध है या नहीं, कहा नहीं जा सकता। लेकिन जूही ने ऐसा सोचा है। उसने भी स्वदेशी आंदोलन में भाग लेने और जेल जाने की बात सोची है। लेकिन वहाँ तो भजन नहीं है। जब मौत ही बड़ी बात नहीं है तब जेल उसके आगे क्या है? लेकिन भजन अगर निश्चित हो कर जूही को जाने दे तो वह अपमान भी जूही बरदाश्त नहीं कर सकेगी।

फिर जूही भजन की घोर उपेक्षा करने लगी। यह उपेक्षा जूही के हर काम से प्रकट होती रही। उसका मौन भी भजन को अपमानजनक लगा। हर वक्त जूही की आँखों में विद्रूप की आग जलती रही और उसके होंठ मौन रहे। यह सब देख कर भजन को भी बड़ा आश्चर्य हुआ। कई बार ऐसा हुआ कि उसने कुछ पूछा और जवाब नहीं मिला। अगर मिला भी तो वह जवाब नहीं है। जूही का यह रूप भजन इधर कुछ दिनों से देख रहा है। भजन इसका आदी नहीं है, इसलिए चिढ़ गया। वह अपनी जिंदगी में कितना व्यर्थ है, इसका कुछ पता उसे रहने पर भी सिर झुकाना उसकी आदत नहीं है। फिर भी उसके सीने के अंदर कुछ हड्डियाँ मानो टेढ़ी-मेढ़ी हो गयी और रातदिन उसी का दर्द उसे सताने लगा।

यह सब होता रहा, लेकिन जूही या भजन, किसी ने किसी से कुछ नहीं कहा। कुछ दिनों तक खून जलाने का यह खेल चलता रहा, लेकिन हार-जीत किसी तरफ नहीं

हुई। सिर्फ इतना हुआ कि जिद्द के कारण भजन के नशा करने की मात्रा बढ़ गयी। वह आधी रात बिता कर घर लौटने लगा।

छोटा-सा कस्बा है, इसलिए स्वदेशी आंदोलन यहाँ धीरे-धीरे चलता रहता है। इस इलाके के आंदोलन की तुलना उस छोटी सी नदी से की जा सकती है, जिसमें कभी भयानक बाढ़ नहीं आती। लेकिन अचानक उसमें बाढ़ आयी। इस जिले के सब से बढ़े नेता नवीन गांगुली गिरफ्तार हो गये।

सवेरे ही हीरेन ने धारा १४४ का उल्लंघन कर छोटा सा जुलूस निकाला। वह जुलूस डायमंड हार्बर जायेगा। वहाँ पहुँचने में चाहे जितने दिन लग जायँ, वह जी० टी० रोड से कलकत्ता पहुँच कर वहाँ से दक्षिण में समुद्र तट पर जायेगा। वहाँ लोग नमक बना कर कानून तोड़ेंगे।

गरमी के कारण सवेरे स्कूल चल रहे हैं। आजकल यों ही स्कूलों में छात्र कम हैं।

सवेरे ही रथीन हाई स्कूल में हड़ताल करवा कर छात्रों को बाहर ले आया। उधर सुनिर्मल ने लड़कियों के स्कूल में हड़ताल करायी।

बाजार में सवेरे की चहलपहल शुरू होते ही दुकानें बंद होने लगीं।

फिर घंटे भर के अंदर न जाने कौन सा जादू चल गया कि पूरे इलाके में नये ढंग के उत्सव की चहलपहल शुरू हो गयी। तमाम लोग सड़क पर आ गये, हर मोड़ पर भीड़ लग गयी, फिर हँसी-मजाक, शोरगुल और हो-हल्ला शुरू हो गया।

जुलूस बना कर छात्र-छात्राएँ सड़क पर आ गये। कपड़े की दुकानों के सामने जा कर वे विलायती कपड़ों का बायकाट करने के लिए नारे लगाने लगे।

उधर से हीरेन का जुलूस चला आ रहा है। उसमें हो-हल्ला कम है। उस जुलूस में संतोष मौसी हैं। और भी कई महिलाएँ हैं। एक महिला हीरेन के साथ साथ चल रही हैं। वे परम सुंदरी और कम उम्र की विधवा हैं। वे हीरेन की भाभी हैं। ससुराल के सारे अनुशासन को तोड़ कर वे देवर के साथ निकल पड़ी हैं। अब वे विदेशी सरकार का अनुशासन तोड़ना चाहती हैं। घर का कानून तोड़ने के बाद अब वे बाहर का कानून तोड़ने लगी हैं। उनकी आँखों में रोशनी की भरपूर झिलमिलाहट है। बाहर सैकड़ों लोगों की निगाह के सामने पड़ कर वे शरमाने लगी हैं। उनके चेहरे पर उसी का रंग है। शर्म और खुशी के रंगों ने उनके सौंदर्य को कई गुना आकर्षक बना दिया है। उनकी आँखें एक जने से लुका-छिपा खेल रही हैं। वे बार-बार हीरेन की तरफ देख रही हैं। जब भी वे उसकी तरफ देखती हैं, उनके चेहरे पर लाली दौड़ जाती है। विचित्र आवेग से उनका हृदय भर उठता है। वे बहुत धीरे-धीरे नारा लगा रही है — वंदे मातरम्! साथ ही वे मन ही मन कहती जा रही है कि हे भगवान, मेरा यह रास्ता कभी न खत्म हो। मैं जिंदगी भर इसी तरह चलती रहूँ। मैं कभी लौटना नहीं चाहती। मैं कभी नहीं लौटूंगी।

हीरेन की बेचैन आँखें सड़क पर हर चेहरे की तरफ दौड़ रही हैं। क्या उसे देखना संभव है ! सड़क पर खड़े लोगों की भीड़ चीर कर क्या वह जुलूस की भीड़ में शामिल हो सकेगी ? क्या वह अचानक आयेगी और जुलूस की अगली कतार में शामिल हो जायेगी ?

झाड़ूदारों की बस्ती की उस घटना के बाद भी हीरेन प्रायः रोज भजन की दुकान पर आया है। हालांकि उसका आना पहले की तरह नियमित नहीं रहा, लेकिन रमिया कभी नहीं आयी।

नहीं, रमिया आयी है। वह दुकान से दूर ऐसी जगह खड़ी रही कि हीरेन न देख सके। लेकिन हीरेन ने उसे देखा है। फेफड़ों में साँस रोक कर हीरेन इस आशा से बैठा रहा है कि रमिया शायद आयेगी। शायद अभी उसकी मीठी आवाज सुनने को मिलेगी — नमस्ते बाबू जी ! हाँ-हाँ, रमिया को आना चाहिए। रमिया आयेगी तो हीरेन सहज हो सकेगा। झाड़ूदारों की बस्ती की उस घटना के बाद विचित्र अपमान-बोध तेज चाकू की तरह हर घड़ी हीरेन को कोंचे जा रहा है। इस कारण वह अंदर और बाहर से क्षत-विक्षत हो गया है। उसके शरीर की कमनीयता नष्ट हो चुकी है। देखते-देखते वह मानो बूढ़ा हो चला है।

फिर भी हीरेन चाहता है कि रमिया आये। हीरेन अपने रास्ते से नहीं हटेगा। वह उसके स्वागत में भी कमी नहीं करेगा। लेकिन रमिया नहीं आ सकी। वह डरती रही, शरमाती रही, यहाँ तक कि उसे नौकरी और आश्रय खोने की भी आशंका सताती रही। उसने उस नौजवान झाड़ूदार से प्यार किया है। किसी तरह की शादी रचाये बिना उससे मिलन हो चुका है। फिर भी एक बेचैनी हर घड़ी रमिया को सताती है। उसकी वह बेचैनी उसके बाबू जी के लिए है। वह अपने बाबू जी के पास पहले की तरह जाना चाहती है। वह मन-प्राण से बाबू जी को समझना और बाबू जी के लिए कुछ करना चाहती है। लेकिन सब कुछ अधर में धरा रह गया।

यह सच है कि रमिया कभी-कभी नशा करती है। वह भी अपने मर्द झाड़ूदार के लिए करना पड़ता है। रमिया किसी तरह और झाड़ूदारिनों की तरह नहीं हो सकी। थोड़ा ही सही, लेकिन औरों से उसका फर्क रह गया। यह फर्क सब के लिए साफ है। इसी लिए रमिया न इधर आ सकी और न उधर जा सकी। वह पूरी तरह किसी तरफ नहीं जा पायी। यह भी उसके लिए दुख का कारण है। इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि हीरेन ने उसमें नयी किस्म की भूख पैदा की है। लेकिन वह कैसी भूख है, किस चीज के लिए है, शायद रमिया भी नहीं जानती।

सचमुच रमिया भीड़ में छिप कर अपने बाबू जी को देख रही है। उसका मन कर रहा है कि मैं भी उस जुलूस में शामिल हो जाऊँ, लेकिन उसने इतना साहस नहीं किया। वह डर गयी। वह बाबू जी और बाबू जी के साथ के औरत-मर्दों के बारे में सोच कर डर गयी। जुलूस की औरतें एक झाड़ूदारिन को देख कर नाक सिकोड़ लेंगी

और हट जायेंगी, नहीं तो नफरत करेंगी। मर्द लोग हसेंगे। बाबू जी भी रूखेपन से मुंह फेर लेंगे।

यह सब सोचते-सोचते रमिया की आँखों में आंसू भर आये। उसकी आँखों के आगे सड़क और भीड़ धुंधली पड़ने लगीं। वह खुद नहीं समझ सकी कि वह क्यों रो रही है। वह सिर्फ इसलिए नहीं रो रही है कि उसने बाबू जी को खो दिया है। उसे लगा कि उसने और भी बहुत कुछ खोया है जो उसे कभी वापस नहीं मिलेगा। गहरी नाली साफ करने वाले झाड़ू में लगे बांस को बैसाखी की तरह बगल में दबा कर रमिया के मर्द ने रमिया से पूछा, "ये लोग नमक बनाने जा रहे हैं न ?"

तभी नारा लगा — वंदे मातरम् !

हीरेन वगैरह उत्तर से दक्षिण की तरफ बढ़े जा रहे हैं।

उधर रथीन और सुनिर्मल वगैरह कपड़े की और सिगरेट की दुकानों पर धरना दे रहे हैं। सड़क पर कई जगह विलायती कपड़ों की होली जल रही है। कुछ कपड़े दुकानदारों ने स्वेच्छा से दिये हैं तो कुछ उनसे छीन कर लाये गये हैं। कई लड़के घर से बहन, भाभी और मां के विलायती कपड़े के पेटीकोट, ब्लाउज और साड़ी लाये हैं। वे वही सब आग में फेंक रहे हैं। कई लड़के सड़क से कूड़ा-करकट उठा कर भी आग में झोंकने लगे। मानो आग ले कर खेलने में सब मशगुल हो गये। सब हंसने और चिल्लाने भी लगे — विलायती कपड़े जला दो ! विलायती माल फूंक दो !

बड़ी सड़क से पश्चिम की ओर मुड़ी सड़क तक छात्र-छात्राओं और लड़के-लड़कियों की भीड़ जमी है।

पास की गली से निकल कर वारवनिताएं भी सड़क पर आ गयी हैं। वे हंस रही हैं। उनमें से कोई-कोई चिल्ला रही है — वंदे मातरम्। वे भी अपने विलायती कपड़े सड़क पर जल रही आग में फेंकने लगीं। वारवनिताओं की भीड़ के पास मनचलों की भीड़ जुटी है। उस भीड़ में ज्यादातर लोग हंस रहे हैं या चुन-चुन कर भद्दी-भद्दी गालियां बक रहे हैं। लेकिन उनकी तरफ ध्यान देने वाला कोई नहीं है।

भजन बाजार के पास सड़क पर खड़ा है। वह बहरा तो नहीं, लेकिन गूंगा जरूर बन गया है। इसलिए वह जड़वत खड़ा है। मानों वह कुछ भी नहीं समझ पा रहा है कि क्या होने लगा है। फिर भी उसकी छाती में जलन सी होने लगी। उसकी आँखों के नीचे का काफी हिस्सा काला पड़ चुका है। उसका चेहरा लाल भभूका लग रहा है। माथे की नसें फूल आयी हैं।

भुन्नू अपनी गाड़ी में कोचवान की सीट पर बैठा है। उसका भारी-भरकम रोयेंदार बदन नंगा है। उसकी बड़ी-बड़ी मूंछों के सिरे नुकीले हैं। एक कोचवान के नाते उसे क्या करना चाहिए, वह समझ नहीं पा रहा है। लेकिन वह इतना समझ गया कि आज जरूर कुछ होने जा रहा है। हां-हां, जरूर कुछ होगा। शायद आज स्वराज ही हो जाय। स्वराज, याने थाने और बारिकें सब साफ ! फिर तो पुलिस वालों का जुल्म और पब्लिक से पैसा वसूलना भी बंद हो जायेगा।

दूसरी घोड़ागाड़ियों के कोचवान भुन्नू की गाड़ी के पास जमा हैं। वे भुन्नू से तरह-तरह की बातें पूछ रहे हैं, ताकि कोई नयी बात मालूम हो सके। असल में भुन्नू उस्ताद आदमी है, वह लाट साहब भजन के साथ शराब पीता है, उसे बहुत कुछ मालूम होना चाहिए।

लेकिन भुन्नू कुछ भी नहीं जानता। वह अपनी सीट से नीचे उतर आया। अफजल ने उससे पूछा, "क्या हम लोग गाड़ी लेके घर चले जायें?"

एक मिनट चुप रहने के बाद भुन्नू ने कहा, "नहीं! लेकिन आज शहर में हड़ताल है तो हमारी भी हड़ताल है। हम सवारी नहीं लेंगे।"

"सवारी?" एक बूढ़े कोचवान ने मुँह बना कर कहा, "लोगों को जान क्या फालतू है? लोग आज घर से क्यों निकलेंगे? इस हुज्जत में क्या कोई बाहर निकलता है?"

"हाँ-हाँ, कौन बाहर निकलेगा?"

एक कोचवान ने कहा, "यह साली हुज्जत भी कैसी है कि हमारी रोजी मारी गयी। आज न हमें दाना-पानी मिलेगा और न इन घोड़ों को। क्या हम लोगों को भूखो रहना पड़ेगा?"

मानो यह सवाल भुन्नू से किया गया। भुन्नू खामोश रहा। देने को उसे कोई जवाब नहीं मिला। सचमुच उसकी भी टेंट आज खाली है। अगर सवारी आ जाय तो क्या किया जायेगा? क्या उस हालत में हड़ताल जारी रखी जा सकेगी? कोचवान लोग क्या खायेंगे?

अब सभी कोचवान इस हड़ताल को और बाबू लोगों के इस पागलपन को गाली बकने लगे। इस पर भुन्नू ने बिगड़ कर कहा, "फिर तुम लोग क्या चाहते हो? सिपाहियों का जुल्म मंजूर है? क्या तुम लोग पुलिस वालों को मुफ्त में गाड़ी में बिठालोगे? आये दिन उनकी मुट्ठी गरम करते रहोगे?"

"नहीं, हम ऐसा नहीं चाहते।" सभी कोचवानों ने एक साथ कहा।

अब भुन्नू को कुछ कहने की ताकत मिली। उसने कहा, "फिर? फिर स्वराज के लिए सब को लड़ाई लड़नी पड़ेगी। हमने सुना है कि स्वराज आ जाने से हमारी तकलीफ दूर हो जायेगी।"

सभी कोचवान चुप हो गये। स्वराज और लड़ाई, इन दो शब्दों का वे मतलब नहीं समझते। फिर एक आशा भी है कि तकलीफ दूर हो जायेगी। इसलिए इसका जवाब किसी कोचवान के पास नहीं है। यहाँ तक कि भुन्नू के पास भी नहीं है।

नौकरी से निकाले गये मिल मजदूर भागन और मनोहर सड़क के एक किनारे खड़े हैं। उनके साथी नहीं हैं। इसलिए वे दोनों छुट्टे जानवरों की तरह सड़क पर घूम रहे हैं। उन्हें कुछ करना नहीं है, फिर उनके पेट में दाना भी तो नहीं पड़ा है।

सिविल पुलिस और रेलवे पुलिस एक साथ सड़क पर निकल आयी। जिन इलाकों में गड़बड़ी नहीं है, वहाँ को भी पुलिस आ गयी। तहसील सदर से दो गो

सर्जेंट भी आये।

वही नौजवान पुलिस अफसर सिपाहियों को पोजीशन में लाने लगे। स्टेशन के सामने तिराहे पर सिपाहियों ने पोजीशन लिया। गंगा के किनारे से पश्चिम को गयी सड़क इसी तिराहे पर मिलती है।

इधर जगह-जगह होली जल रही है। आग की लपटें उठ रही हैं। कई लोगों ने बदन से कपड़े उतार कर आग में फेंके। औरतें भी जलाने के लिए विलायती कपड़े देने लगीं। धीरे-धीरे एक पागलपन-सा सब पर छाने लगा। छात्र कपड़े की दुकानों में घुसने की कोशिश करने लगे। बिसातखाने की विलायती चीजों की तरफ उनकी निगाह गयी तो वे चिल्लाने लगे। कुछ लड़के सिगरेट की दुकान से कई पैकेट उठा लाये। सिगरेट के उन पैकटों को आग में फेंका गया। कुछ सिगरेटें सड़क पर बिखर गयीं। उनको उठाने के लिए गरीब तबके के कई आवारा लड़के सड़क पर मानो मुँह के बल गिर पड़े।

उधर सिगरेट वाला चिल्लाने और छाती पीटने लगा।

बिसातखाने के दरवाजे के पास सुतली से लटकते विलायती खिलौनों को खींच कर आग में फेंका गया।

दुकानदार हाथ जोड़ने और पाँव पड़ने लगा। उसकी चीख-पुकार नक्कारखाने में तूती की आवाज बन कर रह गयी।

उधर बदनाम टोले में जाने वाली गली के नुक्कड़ पर तमाम छँटे हुए बदमाश इकट्ठा हो गये। वे इस हड़कंप का फायदा उठा कर लूटपाट करना चाहते हैं।

भजन ने अचानक सिर उठाया। सिगरेट वाले को रोते-पीटते देख कर भजन की दोनों आँखों से चिनगारियाँ निकलने लगीं। उसे लगा कि लड़के गलत काम कर रहे हैं। यह महसूस होते ही वह बदहवास दौड़ कर वहाँ पहुँचा। उसने एक लड़के का हाथ पकड़ कर कहा, "क्या कर रहा है? तुझसे किसने कहा है कि दुकान से सामान लूट ले?"

सनकी लड़कों का झुंड सहम गया। लड़कों ने लाट साहब भजन की तरफ देखा। लाल भभूका चेहरा। शेर की आँखों की तरह भूरी आँखों से आग बरस रही है। यही नारायण भैया का भाई है। तुनकमिजाज और शराबी। इसी लिए लोग इसे लाट साहब कहते हैं। लड़कों को लगा कि भजन के रूप में जंगली शेर बिगड़ गया हो!

भजन ने जिस लड़के का हाथ पकड़ रखा है, वह डर के मारे रोने लगा। एक बड़े लड़के ने कहा, "विलायती माल है न!"

तेज आवाज में भजन ने कहा, "तेरे बाप का है? तू मत खरीद विलायती माल। किसने तुझसे कसम धरायी है कि खरीद? लेकिन एक गरीब का सामान क्यों बरबाद करेगा? अगर बरबाद करना है तो पैसा दे कर खरीद ले और तब कर।"

भजन ने उस लड़के का हाथ छोड़ दिया और सिगरेट वाले से कहा, "दुकान बंद कर लो। अभी तक सो रहे थे मेरे बाप?"

दुकानें बंद होने लगी। लड़के आश्चर्य से उसी तरफ देखते रहे। उनको सबसे ज्यादा आश्चर्य इस बात का होने लगा कि भजन भैया जैसे आदमी ने इस काम में क्यों बाधा डाली। वे तो भजन को अपना ही आदमी समझते हैं। यहाँ तक कि पुलिस वालों ने भजन भैया की दुकान पर छापा भी मारा है।

लेकिन किसी लड़के ने भजन भैया का विरोध नहीं किया। वैसा साहस भी किसी में नहीं है। एक-एक कर वे लड़के वहाँ से खिसकने लगे। भीड़ में से किसी लड़के ने कहा, "लाट साहब भजन, लाट की दुम !"

लाट साहब भजन ने सिर उठा कर देखा। एक क्षण के लिए उसकी आँखें धधक उठीं। लेकिन दूसरे ही क्षण वह दिल खोल कर हँसा। उसने मन ही मन कहा, लाट की दुम नहीं बेटा, घाट वाला हूँ। फिर भी न जाने क्यों भजन की छाती में कहीं दर्द होने लगा।

उधर रथीन और सुनिर्मल वगैरह बड़ी सड़क की तरफ बढ़े आ रहे हैं। उनके पीछे बहुत बड़ी भीड़ है। लेकिन बहुतों के कदम धीरे बढ़ने लगे। सब डरी हुई आँखों से सामने देख रहे हैं। सामने लाल चेहरे और लाल पगड़ियाँ हैं।

सुनिर्मल ने जितनी बार आँखें फेरीं, उसकी आँखें किसी और की आँखों से टकरायीं। छात्राओं की भीड़ में एक युवती है। वह बराबर सुनिर्मल को देखे जा रही है। क्यों? सुनिर्मल का चेहरा लाल हो गया, लेकिन मन घूम-फिर कर उसी युवती की ओर जाने लगा।

रथीन जोर से नारा लगा रहा है, "वंदे मातरम् !"

उत्तर की तरफ से हीरेन का जुलूस आ रहा है। उस जुलूस में शामिल लोग भी पुलिस वालों को देख रहे हैं। फिर भी वे आगे बढ़ते आ रहे हैं। उनको तो आगे बढ़ना ही है। अगर रास्ता नहीं मिला तो वे जिंदगी भर इंतजार करते रहेंगे। जब तक शरीर में प्राण रहेंगे, यह इंतजार चलता रहेगा। इसलिए उनको आगे बढ़ना है।

विधवा भाभी हीरेन के और करीब आने लगी। दोनों के बदन आपस में छूने लगे। भाभी मन ही मन हीरेन से कहने लगीं, वे हमारा क्या करेंगे? क्या हमें मार डालेंगे? मार डालें। फिर भी लला, मैं पीछे नहीं हटूँगी। लेकिन हे भगवान, अगर मरना हो तो मैं पहले मरूँ।

एकाएक माहौल बदलने लगा। लोग भयभीत होने लगे तो उनमें उत्तेजना भी बढ़ने लगी। चारों तरफ खड़े तमाशबीनों की चहल-पहल भी थम गयी। मानो साँस रोक कर सब धमाके का इंतजार करने लगे।

"वंदे मातरम् ! गांधी जी की जय ! स्वराज हमारा अधिकार है !"

चरण का दिल जोर-जोर से धड़कने लगा। वह समझ नहीं पाया कि क्या किया जाय। क्या सड़क पर चला जाय? क्या जोर-जोर से वंदे मातरम् का नारा लगाया जाय? श्रीमती काफे की इस कोठरी में चरण अकेला नहीं रह पा रहा है। इस कोठरी में तो दम घुटने लगता है। पता नहीं, मालिक अभी तक क्यों नहीं आ रहे हैं?

कोठरी के पीछे नाली के पास खड़ा कुट्टी पगला चरण को देख कर कहने लगा, "अबे साले, कहाँ घुसा बैठा है ? कल रात तूने बड़ा बेवकूफ बनाया। आज मैं कुछ लिये बिना नहीं मानूंगा ।"

चरण से कोई जवाब न पा कर कुट्टी पगला बोला, "अबे, साला नहीं, मेरी साली है। हरामजादी डर गयी है।"

यह कह कर कुट्टी पगला जोर-जोर से हँसने लगा।

स्टेशन के चबूतरे पर कुछ लोग सहमे हुए से खड़े हैं। उनको एक भिखारी लड़का अलग से परेशान कर रहा है, "बाबू, एक धेला। एक धेला दीजिए बाबू। एक धेला बाबू।"

पुलिस वालों की भीड़ देख कर आसपास के कुत्ते भूंकने लगे।

पहले एक गोरे सर्जेंट ने हीरेन को धक्का मारा, "गेट बैक ! डोंच यू नो हंड्रेड फर्टिफोर ? आई वार्न यू, गेट बैक !"

हीरेन की भाभी की आँखें जल उठीं। उन्होंने हीरेन का हाथ पकड़ लिया। हीरेन ने हाथ छुड़ा लिया। फिर उसने कहा, "वंदे मातरम् ।"

साथ ही सब ने आवाज लगायी, "वंदे मातरम् !"

पश्चिम दिशा से भी वहाँ एक रेला आया और सब चिल्लाये, "वंदे मातरम् !"

गोरा सर्जेंट जोर से चिल्लाया, "आई से गेट बैक !"

और भी जोर से नारा लगा, "वंदे मातरम् !"

पश्चिम दिशा से दूसरा रेला दूने जोर से आया। छात्र और नौजवान आगे बढ़ रहे हैं।

हीरेन ने फिर आगे बढ़ने की कोशिश की तो सर्जेंट ने धक्का मार कर उसे गिरा दिया।

भाभी होश-हवास खो कर सर्जेंट की तरफ झपटती हुई चिल्लायी, "खबरदार गोरा सुअर !"

हीरेन ने खड़े होने की कोशिश करते हुए भाभी से कहा, "भाभी, नाराज मत होइए। उससे कुछ मत कहिए।"

आँखों में आँसू भर कर भाभी तेज आवाज में बोलीं, "क्यों नहीं कहूँगी ? शैतान तुम्हें मारेगा ?"

तब तक रथीन और सुनिर्मल वगैरह की भीड़ पुलिस वालों पर उमड़ आयी। रथीन और सुनिर्मल के कुछ समझ सकने से पहले ही दोनों गोरे सर्जेंट उन पर झपटे। उसी के साथ लगभग पचास सिपाहियों की लाठियाँ भीड़ पर पड़ीं। विकट चीत्कार और हल्ला शुरू हो गया। पुलिस की लाठियाँ भी चलती रहीं।

पश्चिम की सड़क से ढेलेबाजी होने लगी। लड़के चिल्लाने लगे — रथीन भैया ! सुनिर्मल भैया ! वंदे मातरम् !

अब पुलिस वाले बदहवास हो कर लाठी चलाने लगे।

जो लोग भाग सके, भागने लगे। जो भीड़ में या पुलिसवालों के घेरे में फंस गये, आपस में गुत्थम-गुत्था करने लगे। भाभी हीरेन को बचाने के लिए उससे लिपट गयीं। जिंदगी में पहली बार उन पर लाठी पड़ी। जिंदगी में पहली बार वे हीरेन से लिपट सकीं। जिंदगी में पहली बार वे किसी पुरुष को बचाने के लिए ढाल बन गयीं और अपने शरीर पर मार बरदाश्त करने लगीं। फिर भी उन्होंने हीरेन को अपनी आड़ में छिपा रखा है। हीरेन भी भाभी को हटाने की कोशिश करने लगा। लेकिन भाभी किसी तरह नहीं हटीं।

हड़बड़ा कर कुछ लोग श्रीमती काफे में घुस गये। उसी नौजवान पुलिस अफसर के साथ सिपाही श्रीमती काफे के अंदर घुस कर लाठीचार्ज करने लगे। इससे किसी का सिर फटा और किसी का हाथ टूटा। चारों तरफ से चीखने-चिल्लाने की आवाज आने लगी।

श्रीमती काफे का सामने वाला शीशे का दरवाजा झनझना कर टूटा। उस हंगामे में मेज-कुर्सियां उलट-पलट गयीं। पुलिस की लाठी से दीवार में लगी तस्वीरें भी अछूती न रहीं। उनके फ्रेम और शीशे टूटे। फर्श पर तस्वीरें बिखर गयीं।

नौजवान पुलिस अफसर के पांवों के पास सी० आर० दास की तस्वीर गिरी। बरबस उनकी निगाह उस तस्वीर पर गयी। तस्वीर के नीचे लिखा है — तुम अपने साथ मृत्युहीन प्राण लाये थे, मर कर उसी का दान कर गये।

पुलिस अफसर को लगा कि काले कपड़े पर सफेद धागे से इन पंक्तियों की कढ़ाई उन्हीं की पत्नी ने की है। उन्हीं की पत्नी ने पत्र में लिखा है — पुलिस की वर्दी में आपको देख कर मुझे बड़ा डर लगता है।

अपने आप पर खीझ गये पुलिस अफसर — इस समय यह सब क्या सोचने लगे!

आज पहली बार वह पुलिस अफसर सिर ऊंचा किये श्रीमती काफे में घुसे हैं। न जाने उनको क्या सूझा, उन्होंने बेंत मार कर दीवारघड़ी का शीशा तोड़ दिया। फिर एक जख्मी आदमी को एक बेंत लगाने के बाद उन्होंने ठोकर मार कर भजन की कुर्सी गिरा दी। पता नहीं क्यों उस कुर्सी पर उन्हें बड़ा गुस्सा आया।

श्रीमती काफे के पीछे के दरवाजे से निकलने के लिए कुछ लोग रसोईघर में घुसे तो पुलिसवालों ने वहां जा कर भी लाठी चलायी। तमाम कप-प्लेटें चूर-चूर हो गये। पानी का घड़ा टूटा तो रसोईघर का कच्चा फर्श गीला हो गया।

दो लोगों के साथ कुट्टी पगला भी पीछे की नाली में गिर पड़ा। बदबूदार कीचड़ से उसका सारा बदन सन गया। फिर भी वह चरण को ढूंढ़ने की कोशिश करने लगा। पागल की बेचैनी पगली होती है। उसी बेचैनी से वह चारों तरफ देखने लगा — कहीं उस छोकरे पर भी तो लाठी नहीं पड़ी?

हां, पड़ी है। चरण की गर्दन पर और घुटने पर लाठी पड़ी है। वह रसोईघर के गीले फर्श पर मुंह के बल पड़ा है। वह उठने की कोशिश कर रहा है, लेकिन उठ

नहीं पा रहा है।

गाड़ियों में जुते घोड़े विदक कर हिनहिनाने लगे। कोचवान स्टेशन के चबूतरे पर पहुँच गये हैं। सिर्फ भुन्नू वहाँ नहीं है।

सुनिर्मल के सिर में लाठी लगी तो वह हलवाई की दुकान के पास नाली में गिर गया। भुन्नू ने लपक कर वेहोश सुनिर्मल को उठा लिया। वह सुनिर्मल को दोनों हाथों में लटका कर पश्चिम की सड़क से वाजार में चला गया।

भीड़ तितर-वितर हो गयी। पुलिसवाले लोगों को पकड़-पकड़ कर गाड़ियों में भरने लगे। औरत-मर्द, निर्दोष राहचलते और घायल, जो भी हाथ लगे पुलिसवालों ने सब को पकड़ लिया। हीरेन, उसकी भाभी, संतोष मौसी और रथीन वगैरह कितने ही लोग पकड़े गये। बदनाम टोले की दो औरतें भी पकड़ी गयीं। फिर भी पश्चिम दिशा से हमला बंद नहीं हुआ। अब भी उधर से पुलिसवालों पर पथराव हो रहा है। पता नहीं, कौन कहाँ से ढेले फेंक रहे हैं।

घायल हीरेन चिल्ला-चिल्ला कर लोगों को मना करने लगा, "ढेले मत चलाइए। किसी को चोट मत पहुँचाइए। यह रास्ता हमारा नहीं है।"

भाभी कहने लगीं, "पुलिसवालों ने लड़कों को बुरी तरह पीटा है। नौजवान लड़के क्यों बरदाश्त करेंगे ?"

हीरेन ने भाभी की तरफ देखा। शेरनी की आँखों की तरह भाभी की आँखें जल रही हैं। ब्लंडर ! बहुत बड़ी गलती हो गयी। सब कुछ चौपट हो गया। हीरेन रुलाई आ गयी। पश्चिम की सड़क से बुलेट की तरह ढेले बराबर आ रहे हैं।

अब पुलिसवाले उस सड़क पर दौड़े। वे छात्रों की भीड़ को खदेड़ कर गंगा के किनारे ले गये।

गोरे सर्जेंट के हुक्म पर कई सिपाही नारियल के सब से ऊँचे पेड़ पर चढ़ने की कोशिश करने लगे। पता नहीं किस दुस्साहसी ने ढूँढ़-ढूँढ़ कर उस पेड़ पर झंडा लगा दिया है। गरमी के जलते आसमान की पीठ पर वह झंडा फर-फर फहरा रहा है। कपड़े का वह झंडा भी मानो किस असीम शून्य में उड़ जाने के लिए वेचैन हो रहा है। उसी झंडे को नीचे उतारने का हुक्म हुआ। लेकिन कोई सिपाही उस पेड़ पर चढ़ नहीं पा रहा है। इससे गोरा सर्जेंट विगड़ने लगा। फिर पुलिसवालों ने किसी भी राहचलते को पकड़ कर उस पेड़ पर चढ़ाना चाहा, लेकिन कोई तैयार नहीं हुआ।

छब्बीस-सत्ताईस वर्ष की एक महिला भुन्नू के पास आ कर खड़ी हुई। सुनिर्मल की तरफ इशारा कर उस महिला ने भुन्नू से पूछा, "ये कौन हैं ? इनका घर कहाँ है ?"

वहाँ खड़ी छात्राओं ने कहा, "ये सुनिर्मल भैया हैं। हम इनको जानती हैं बहन जी। इनका घर यहाँ से दूर है।"

[illegible] ने इन्दु से कहा, "इसको मेरे घर पहुँचा दो। मेरा घर पास है।"

इन्दु ने कहा, "[illegible]।"

[illegible] दुकानें बंद पड़े हैं। सड़क भी खाली हो चुकी है। कोचवान इक्के-इक्के गाड़ी ले कर जा चुके हैं। सिर्फ इन्दु की गाड़ी खड़ी है और उसमें जुते घोड़े एक-दूसरे की गर्दन से नाक सटा कर शायद अपने असहाय मन की बातें कर रहे हैं।

भजन [illegible] के दरवाजे में जा कर खड़ा हुआ। इस समय उसके चेहरे की तरफ देखा नहीं जा सकता। लगता है कि दहकते अंगारे से उसका चेहरा बना हो। उसका चेहरा इतना भयानक बना हुआ है कि शायद इस दुनिया का कोई दुस्साहसी भी इस समय उसके सामने खड़े होने की हिम्मत नहीं करेगा।

थोड़ी देर भजन उसी तरह खड़ा रहा। उसके बाद उसने सामने वाले दरवाजे का एक पल्ला पकड़ा। उसका दहकता चेहरा मानो एकाएक ठंडा हो चला। [illegible] वेदना से वह चेहरा नीला पड़ गया और वह बड़ा भद्दा लगने लगा।

सामने वाले दरवाजे में लगे बड़े-बड़े शीशे टूट चुके हैं। गादर आर्मरा [illegible] वाक्य 'श्रीमती काले : कृपया अंदर आइए' भी कहीं नहीं लिखा है। अब उन टूटे दर-वाजे से जेठ की गरम हवा अंदर आ रही है। इधर-उधर कई कुर्सियां टूटी पड़ी हैं। दीवार में लगे चित्र अब जमीन पर पड़े हैं। पत्थर के एक टेबुल में दरार पड़ [illegible] लेकिन दीवार घड़ी अब भी टिक-टिक चल रही है। उसके टूटे शीशे [illegible] उसमें फँसा हुआ है।

भजन दुकान के अंदर गया। मानो कोई पागल बहुत दिनों के [illegible] खंडहर में घुस आया हो। भजन ने आवाज लगायी, "चरण!"

चरण का जवाब नहीं मिला। भजन ने सोचा कि [illegible] तभी भजन को एक बार बिस्सू की याद आयी।

भजन बीच वाले कमरे में गया। वहाँ चारों तरफ टूटे [illegible] के टुकड़े पड़े हैं। फिर रसोईघर में जा कर भजन ने देखा कि [illegible] लगाये गीले कच्चे फर्श के कीचड़ में बैठा है। चूल्हा जल रहा है। [illegible] रखी है। उबलते पानी के धक्के से उसका ढक्कन खट-खट [illegible] मानो उबलता पानी बड़ी तेजी से बाहर निकलना चाहता है

"चरण!"

भजन की तरफ देख कर चरण फूट-फूट कर [illegible]

"क्यों रे, मार पड़ी है? सब को पकड़ [illegible]

भजन ने देखा कि चरण का घुटना [illegible] भी फूला हुआ है। भजन समझ नहीं सका कि [illegible] से या पुलिस उसे पकड़ कर नहीं ले गयी, [illegible]

चरण को उठा कर भजन ने [illegible]

कहा, "रो मत हरामजादा। दुकान चली जायेगी तो तेरा हाथ पकड़ कर मुझे भी भीख माँगनी पड़ेगी। इसलिए दूसरे टाइम से दुकान चालू करनी है। मैं कुट्टी पगले से कह देता हूँ, वह दुकान साफ कर देगा। तेरे लिए डाक्टर से दवा लाता हूँ।"

यह कह कर भजन फिर सामने वाले कमरे में आ कर खड़ा हुआ। दो-तीन लड़के दुकान के सामने से दौड़ कर भागे। शायद वे लड़के छिप कर तमाशा देखने आये थे। स्टेशन के चबूतरे पर खड़े कुछ लोग अब भी श्रीमती काफे की तरफ देख रहे हैं।

भजन जमीन पर उकड़ूँ बैठा। टूटी कुर्सियों के नीचे से खींच-खींच कर वह तस्वीरों को निकालने लगा। रवीन्द्रनाथ ठाकुर की आँखों में अब भी गृहत्यागी बावरे की उदास गंभीर दृष्टि है। नौजवान नवाब सिराजुद्दौला की भौंहें वैसी ही टेढ़ी हैं। यीशु के भुवनमोहन रूप में कोई कमी नहीं आयी है। युवती धरती की गोद में मानव शिशु — रैफेल की कलाकृति उतनी ही पवित्र है। इनके अलावा चित्तरंजन दास और नरनारायण के चित्र हैं। लैंडस्केप की लाल-सफेद गायें अब भी हरी-हरी घास चर रही हैं।

यह सब देखते हुए भजन की दृष्टि धुँधली पड़ने लगी। तभी किसी बालक का कोमल स्वर सुनायी पड़ा, "पिता जी!"

भजन चौंक पड़ा। उसने पलट कर देखा। गौर के साथ जूही खड़ी है। डर और बेचैनी के मारे घबड़ा कर जूही श्रीमती काफे में चली आयी है। श्रीमती काफे की दशा देख कर वह विह्वल हो गयी।

जूही दुकान के अंदर आयी। उसने इधर-उधर ज्यादा नहीं देखा। उसके गले से मानो आवाज नहीं निकल रही है। फिर भी उसने भजन से कहा, "घर चलिए।"

भजन ने जूही की तरफ देखा। जूही के चेहरे पर वही कठोरता है। फिर भी खुद आये बिना वह नहीं रह सकी। लेकिन अब भी उसके चेहरे पर मन न मिलने की उदासीनता है।

जूही फिर भी खड़ी रही। आसपास के लोग कौतूहल रोक न सके। सहानुभूति जताने के बहाने कोई-कोई सामने सड़क पर आ कर खड़ा हो गया।

"आपको बुलाने आयी हूँ। चलिए।" जूही बोली।

भजन बोला, "समझ गया हूँ। मैं बाद में जाऊँगा। अभी तुम जाओ।"

यह कह कर भजन खड़ा हुआ।

जूही का दिल भर आया। आँसुओं को वह रोक न सकी। उसका गला रुँध चला। फिर भी उसने कहा, "आप घर चलिए।"

भजन ने जूही की तरफ देख कर कहा, "जूही!" फिर उसने मानो गलती सुधार कर कहा, "निताइ की माँ, तुम घर जाओ। यहाँ बहुत काम पड़ा है। उसको निपटाना है। उसी के बाद घर जाऊँगा।"

जूही ने आँखों में आँसू लिये भजन की तरफ देखा। भजन भी जूही को देख

रहा है। भजन की भी आँखें गीली होने लगी। उसने कहा, "तुम जाओ। मैं पकड़ा नही गया। मुझ पर मार नही पड़ी। मैं ठीक-ठाक हूँ। दुकान को ठीक किये बिना कैसे जा सकता हूँ?"

गौर माँ का दुलारा है। इसलिए गौर को लगा कि पिता जी बड़े बेरहम हैं। गौर को रुलाई आने लगी। इसलिए उसने दूसरी तरफ मुँह फेर लिया। जूही घूँघट काढ कर गौर का हाथ पकड़े बाहर निकल गयी। उसका बेचैन होना और रोना-तड़पना बेकार गया। पत्थर किसी तरह पिघलना नही जानता।

नारियल के पेड़ पर वही झंडा फहर रहा है। मानो वह झुकना नही जानता। मानो वह अजेय है। हवा के हर झोंके के संग वह ऐसे फरफरा रहा है, जैसे कोई नट-खट बच्चा हा-हा कर हँस रहा हो। पुलिसवाले उस झंडे को नहीं उतार सके।

सुनिर्मल होश मे आया। उसने आँखें खोली। आँखों के सामने एक चेहरा दिखाई पड़ा। वह चेहरा जाना-पहचाना लगा, मानो कही देखा है। आँखो में बुद्धि की चमक के साथ बेचैनी है। चेहरे पर घबड़ाहट है। वह चेहरा बड़ा सुंदर तो नही, लेकिन प्यारा है।

"यह किनका मकान है?" सुनिर्मल ने पूछा।

जवाब मिला, "मेरा।"

मेरा! सुनिर्मल ने सुना, स्वर कितना साफ और मधुर है।

सुनिर्मल ने पूछा, "पुलिस कहाँ है?"

"चली गयी है। बहुत से लोग पकडे गये हैं।"

"रथीन?"

"मैं तो उनको नहीं जानती। शायद पकडे गये हैं।"

"आप कौन हैं?"

अब उस चेहरे पर हँसी आयी। उस हँसी से बुद्धि की दीप्ति और हृदय की उदारता प्रकट हुई। फिर वह बोली, "सरसी राय। लड़कियों के स्कूल में पढाती हूँ।"

सुनिर्मल एक क्षण देखता रहा। फिर उसने आँखें बंद की। उसके हृदय के हर ताल पर मानो नया साज बजने लगा — सरसी राय! सरसी राय!

इसी के कई दिन बाद पुलिस ने सुनिर्मल को गिरफ्तार कर लिया।

देश भर मे आंदोलन की लहर तो कम नही हुई, लेकिन इस इलाके मे उसका जोर काफी कम हो गया। आम लोगो ने सोचा कि चलो, जान बची। आंधी कम हो चली है। ज्यादातर लोग गिरफ्तार हो चुके।

प्रियनाथ को घर की नजरबंदी से छुटकारा मिला है। याने, वह भाग निकला है।

इधर कई दिनों से यहाँ आंधी-पानी का जोर चल रहा है। दिन भर पानी

बरसता है और रात होते ही समुद्र की तरफ से तेज हवा चलने लगती है। कभी-कभी यह हवा इतनी तेज हो जाती है कि मानो इस पूरे इलाके को उखाड़ कर उत्तर तरफ फेंक देना चाहती है।

श्रीमती काफे की तोड़फोड़ के दाग अब भी बरकरार हैं। सामने वाले दरवाजे के शीशे को गोंद से कागज चिपका कर जोड़ा गया है। फिर उस पैवंद लगे शीशे को दरवाजे के पल्ले में लगाया गया है। उस शीशे पर की लिखावट में दरारें पड़ गयी हैं। टूटी कुर्सियाँ एक कोने में रख दी गयी हैं। तस्वीरों को फिर से मढ़ा गया है। उनको फिर पहले की तरह दीवार में लगाया गया है। घड़ी उसी तरह है। यहाँ तक कि उसमें फँसा शीशे का टुकड़ा अब भी अपनी जगह पर है।

भजन टेबुल पर सिर रखे बैठा है। उसे बैठा है नहीं, पड़ा है कहना चाहिए। बाहर तूफान का तांडव चालू है। आज शाम से एक भी गाहक नहीं आया। रोज नियमित आने वाला साथी बंगाली भी दिखाई नहीं पड़ा। भुन्नू ने गाड़ी नहीं निकाली।

थोड़ी देर पहले भी भजन ने बादल छाये काले आसमान की तरफ देख कर मदहोशी की हालत में जबर्दस्त बदला लेने की बात सोची है, लेकिन अब वह होश-हवास खो चुका है। दुकान का सारा माल ज्यों का त्यों पड़ा है। चरण बीच वाले कमरे में घुटनों में सिर दबाये बेंच पर बैठा है।

ठीक उसी वक्त पीछे के दरवाजे से नारायण आये। उनके कंधे से वही घुमक्कड़ी झोला लटक रहा है। एकाएक जल उठी आग की तरह चरण मानो चंगा हो कर खड़ा हो गया।

नारायण किसी तरफ देखे बिना सीधे सामने वाले कमरे में आ गये। उन्होंने भजन के सिर पर हाथ रख कर कहा, "भोजू! भजन! पुलिस पीछा कर रही है। अभी गंगा के उस पार है। मुझे इसी वक्त हाड़मुंडी पुल के पास पहुँचा दो।"

बदला लेने की बात धरी रह गयी। अब तो भजन का नशा ही चौपट होने लगा। एक तो यह तूफान, फिर हाड़मुंडी का पुल! सामान्य दिनों में दिन के समय भी लोग वहाँ जाने से डरते हैं।

भजन ने अपनी स्वाभाविक लड़खड़ाती आवाज में कहा, "भद्र पुरुष के भेस में तुम कौन हो राहजन? हाड़मुंडी के पुल के पास ले जा कर क्यों मेरी जान लेना चाहते हो?"

पुलिस पीछा कर रही है और भजन नशे की हालत में बड़बड़ा रहा है। घबड़ा कर, मानो निराश हो कर नारायण ने तेज आवाज में कहा, "भजन, मैं नारायण हूँ। जैसे भी हो, मुझे हाड़मुंडी के पुल तक पहुँचाने का इंतजाम करो। तेरी सुरक्षा का जिम्मा मुझ पर है।"

"मेरी सुरक्षा का जिम्मा?"

भजन ने पल भर में नशे को झटक दिया। उसने सिर उठा कर देखा तो नारायण भैया को पहचान लिया। उसकी लाल-लाल आँखें बड़ी-बड़ी हो गयीं। उसने

मुस्करा कर कहा, "अरे भैया आप ? भजन अपनी सुरक्षा का जिम्मा दूसरों को नहीं देता, बल्कि दूसरों का जिम्मा लेता है। बैठिए, मैं अभी आया।"

इतना कह कर भजन उसी वक्त उस आंधी-पानी में बाहर निकल गया। वह इस तरह गया, मानो इसके लिए तैयार बैठा था, बस समझने में एक मिनट की देर हुई।

आसमान में बिजली कौंधी। नारायण सहसा चौंके। फिर बिजली की टेढ़ी-मेढ़ी रेखा की तरह उनके माथे पर चिंता की रेखाएँ खिंच कर गायब हो गयीं। भजन को इस आंधी-पानी में भेज कर उनको चैन नहीं मिला। लेकिन वे स्वाभाविक ढंग से बाहर की तरफ देखते रहे। टूटे आइने में 'श्रीमती' लिखा हुआ है। नारायण ने उसमें प्रतिबिंब देखा। फिर वे गर्दन घुमा-घुमा कर श्रीमती काफे की हालत देखने लगे।

तभी चरण ने आ कर नारायण के पाँवों में माथा टेका।

नारायण ने चरण के सिर पर हाथ रख कर पूछा, "कैसे हो चरण ?"

"ठीक हूँ।"

"हमारे घर का हाल-चाल ठीक है न ?"

चरण ने जरा रुक कर कहा, "जी, ठीक है।"

फिर नारायण ने कुछ सोच कर पूछा, "तुम्हारे बाबू जी की दुकान कैसी चल रही है ?"

अब चरण को जवाब देने मे कुछ देर हुई। फिर उसने टूटे-फूटे सामान दिखा कर उस दिन की घटना के बारे मे बताया।

यह सब सुनते हुए नारायण सिर्फ भजन के बारे में सोचने लगें।

फिर चरण ने अचानक मानो घबड़ा कर नारायण से कहा, "बाबू जी बहुत ज्यादा शराब पीते हैं। आप उनको मना क्यो नही करते ?"

"क्यों भाई ?"

"नही तो बाबू जी जिंदा नही रहेंगे।"

चरण की आंखों में आँसू आ गये। नारायण साँस रोक कर बाहर आंधी-पानी की तरफ देखते रहे।

फिर थोड़ी देर बाद नारायण ने चरण से पूछा, "चरण, तुम अपनी जिंदगी में क्या चाहते हो ?"

चरण को लगा कि शायद देवता वर देंगे। लेकिन उसने बेवकूफ की तरह कहा, "पता नहीं।"

नारायण बोले, "पता न रहने से कैसे चलेगा भाई ? कुछ ऐसा चाहना जिससे तुम्हें मुक्ति मिले। मुक्ति की साधना ही जिंदगी है।"

उधर भजन भुन्नू के तवेले में पहुँच गया। उस दिन भुन्नू ने बहुत ज्यादा ताड़ी पी ली थी तो उसकी बीवी ने उसे घर में घुसने नहीं दिया था, इसलिए वह भी तवेले में गाड़ी के अंदर दरवाजा बंद कर आराम से सोने लगा। भजन जोर-जोर से भुन्नू को पुकारने लगा तो उस अँधेरे में घोड़े डर कर हिनहिनाने और पांव पटकने लगे। इससे भुन्नू की नशे से बोझिल नींद खुल गयी। वह गाड़ी का दरवाजा खोल कर बिगड़ गया, "यह तुम्हारे घर का दरवाजा नहीं है लाट साहब, आगे बढ़ो।"

भजन भी नशे में है। इसलिए उसने भी पियक्कड़ों की भाषा में कहा, "अरे भाई भुन्नू, मेरे सारथी, यही तो मेरा वृंदावन है। तुमको अभी चलना पड़ेगा।"

भुन्नू ने सोचा कि भजन शराब के नशे में आँय-बाँय बक रहा है। इसलिए भुन्नू ने कहा, "बहू को लाने जाओगे न लाट साहब, कल चले चलना, अभी घर जाओ। बहुत रात हो गयी है।"

"तुम्हारे दिमाग में बात नहीं घुसती।" यह कह कर भजन आगे बढ़ा। उसने भुन्नू के कंधे पर हाथ रख कर कहा, "बहू नहीं मेरे यार, महाभारत का नया पर्व शुरू होने वाला है। इसलिए अपने रथ में घोड़े जोतो, अभी हाड़मुंडी के पुल तक चलना है।"

"हाड़मुंडी का पुल ?

भुन्नू की नशे से बोझिल आंखें गोल-गोल हो गयीं। अँधेरे में घोड़ों की आंखें भी ऐसे चमकीं कि वे भी मानो हाड़मुंडी के पुल का नाम सुन कर डर गये हैं।

अब भुन्नू के मुंह से गाड़ीवान की भाषा निकली, "इस आंधी-पानी में हाड़-मुंडी के पुल चलोगे ? क्या तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है ?"

भजन ने भी जोश में आ कर मानो भाषण करने के अंदाज में कहा, "इस दुनिया में इस समय अगर किसी का दिमाग सही है तो बस मेरा। तुम्हें अभी हाड़मुंडी के पुल चलना है। अगर तुम नहीं चल सकते तो गाड़ी में घोड़े जोत दो, मैं खुद गाड़ी ले कर चला जाऊँगा।"

भुन्नू को लगा कि यह तो शराबी भजन नहीं बोल रहा है। भजन का स्वर संजीदा और साफ है। भजन ने भी शायद इसी वक्त अपनी जिंदगी की सबसे बड़ी हार का अपने मुंह से बयान किया, "देखो भुन्नू, भले ही मेरे पास पैसा न हो, होटल के पीछे वाले कमरे में खुद सामान बना कर काउंटर पर बाबू बन कर बैठा रहता हूँ और सामान न बिकने पर शराब पी कर सब कुछ भूल जाता हूँ, फिर भी मैं इनसान हूँ और इनसान होने के नाते कभी-कभी मेरा दिल जल उठता है। समझ सके कुछ ? आज मैं अपनी जान तक दे सकता हूँ, और यही समझ कर जाऊँगा। अभी भैया को हाड़मुंडी के पुल तक पहुँचाना है। पुलिस उनका पीछा कर रही है। इसलिए वे मेरे पास आये हैं। उनकी इस मुसीबत में मैं कैसे चुप रह सकता हूँ भुन्नू ? मुझे तो ऐसा लग रहा है कि भगवान मुझे वर देने आया है। इसलिए वक्त नहीं है, गाड़ी में घोड़े जोत दो।"

भजन ने अंतिम वाक्य आदेश के स्वर में कहा।

अब भुन्नू सारा मामला समझ गया। उसने बहुत धीरे से पूछा, "कौन ? नरायन ठाकुर ? अरे बाप रे !"

भुन्नू के स्वर मे श्रद्धा, भय और विस्मय घुल-मिल गये। नारायण नाम ही कुछ ऐसा है। इस नाम से हर कोई परिचित है। यह नाम किसी पुरुष का नही, पुरुषोत्तम का है। भुन्नू ने कहा, "तुमने अभी तक बताया क्यों नही भजन ठाकुर ? अगर जान देने की बात है तो मैं भी तुम्हारे साथ चलता हूँ।"

"चलो।"

भुन्नू गाड़ी से उतर आया। भुन्नू और भजन दोनों नशे में हैं। लेकिन दोनों ही पूरी तत्परता से अपने काम में लग गये। हालाँकि दोनो को अपने पाँवों के नीचे जमीन हिलती हुई महसूस होने लगी।

बाहर तूफान का पागलपन बढ़ गया है। रुक-रुक कर बादल गरज रहा है। धारासार में तनिक भी कमी के आसार नही हैं। घुप्प अँधेरे को बिजली की चमचमाती छुरी बार-बार चीर रही है।

टेंट से माचिस निकाल कर भुन्नू ने गाडी की बत्ती जलायी। फिर वह मानो जोश में आ कर दोनों घोड़ों से भिड़ गये। दोनों का बदन थपथपाया और कान पकड कर खीचे। गर्दन पर हौले-हौले रद्दा जमाया और जोर-जोर से चुमकारा। फिर भुन्नू ने दोनों घोड़ों को गाडी में जोता। अब लगा कि राजा-रानी में जान आ गयी है। बारिश के कारण आज राजा-रानी का दिन भर ऊँघते हुए बीता है। लेकिन अब वे दौड़ने के लिए तैयार हैं।

सब ठीक-ठाक कर भुन्नू गाड़ी ले कर निकलने लगा तो उसकी बीवी ढिबरी ले कर गलियारी मे आ कर खड़ी हो गयी। यह गलियारी अस्तबल को घर से जोड़ती है। इस तूफान की रात मे शराबी मर्द को अस्तबल में धकेल देने के बावजूद बेचारी औरत बिस्तर पर जागती रही। फिर इतनी रात को गाड़ी निकालने की आवाज सुन कर वह घबडायी हुई अस्तबल में चली आयी, हालाँकि बनावटी क्रोध से उसका चेहरा तमतमाया हुआ है।

भजन ने देखा कि भुन्नू सारथी की प्रेयसी सचमुच सुंदरी है। उस संकट की घड़ी मे, ढिबरी की उस रोशनी में भजन को भुन्नू कोचवान की बीबी कैनवस पर लियोनार्दो द विंची की जीती-जागती मोनालिसा लगी।

उस औरत ने निडर हो कर तेज आवाज मे अपने मर्द से पूछा, "अब क्या शराबी का दूसरा खेल शुरू हुआ ? इस तूफान मे कहाँ निकल रहा है ?"

भुन्नू ने जल्दी से लगाम खीच कर कहा, "लाट साहब ने बताया कि देवता आये हैं। मै उन्ही से दुआ लेने जा रहा हूँ। सच कहता हूँ।"

इतना कह कर भुन्नू ने आखिरी बार घोड़ों की पीठ थपथपायी और कोचवान की भाषा मे कहा, "सवारी आया है, मैं अपने काम पर जा रहा हूँ। बक-बक मत

कर। मुझे शराबी मत कह।" फिर भजन के लिए दूसरी आवाज में कहा, "चलिए भजन बाबू।"

फिर भुन्नू ने घोड़ों की पीठ पर आखिरी बार प्यार भरी धौल जमायी और गाड़ी बाहर निकलते ही गाड़ी तेज बारिश में मानो नहाने लगी। घोड़े कान हिला-हिला कर पानी झाड़ने लगे।

भुन्नू ने पलट कर अपनी बीबी से कहा, "अगर कोई पूछने आये तो बता देना कि मेरा शराबी मर्द कहीं रंडीखाने में पड़ा होगा। आज की रात है भी तो वैसी!"

भजन ने भुन्नू का कंधा ठोंक कर कहा, "बहुत सही कहा है यार!"

मुस्करा कर भुन्नू ने अस्तबल का टीन का दरवाजा बंद किया। फिर वह उछल कर गाड़ी में अपनी जगह पर बैठ गया। भजन भी गाड़ी में चढ़ गया। तभी किसी महासारथी के चाबुक फटकारने की तरह आसमान में बिजली चमक उठी।

फिर पलक झपकते में भुन्नू की घोड़ागाड़ी श्रीमती काफे के सामने पहुँच गयी। नारायण हालदार तैयार खड़े थे। वे गाड़ी में चढ़ कर बोले, "गाड़ी की बत्ती बुझा दो।"

घोड़ागाड़ी की हालत देख कर नारायण थोड़ा निराश हुए, लेकिन उन्होंने कुछ नहीं कहा।

भजन ने चरण को उसका काम समझा दिया, "मैं अभी आ जाऊँगा। लेकिन देर हो जाय तो दुकान बंद कर लेना।"

फिर भुन्नू के राजा-रानी दौड़ने लगे। अब नारायण को बड़ा आश्चर्य होने लगा। वे थोड़ा सँभल कर गाड़ी में बैठ गये। उनको विश्वास नहीं हुआ कि यह खटारा गाड़ी भी इतना तेज भाग सकती है। गाड़ी के पहियों और घोड़ों की टापों की आवाज से भयानक आंधी-पानी की आवाज भी दब गयी।

भुन्नू की तेज निगाह सामने अँधेरे में गड़ी है। आज की रात का हीरो मानो भजन या नारायण नहीं, बल्कि भुन्नू स्वयं है। उस घटाटोप अँधेरे में आंधी के थपेड़े के संग बारिश की तेज बौछारें मानो उत्तर को जाने वाली उस सड़क की गिट्टियाँ उखाड़ने लगीं। भुन्नू का चाबुक हवा में लहराता जा रहा है। मानो वह चाबुक घोड़ों को नहीं, बल्कि तूफान की पीठ पर पड़ना चाहती है। बिजली की चमक और कड़क से सारी जगती मानो सकपकायी हुई है। लेकिन भुन्नू के राजा-रानी का किसी तरफ ख्याल नहीं है। बिजली की हर चमक के साथ मानो उनकी आंखों की चमक भी तेज होने लगी। नारायण हालदार ने देखा कि भजन आराम से ऊँघ रहा है। नारायण ने एक बार कंधे से लटकते घुमक्कड़ी झोले को टटोल लिया। फिर उन्होंने भजन को पुकारा, "भोजू!"

कोई जवाब नहीं मिला।

थोड़ी देर के लिए आतंकवादी नेता नारायण के चेहरे की कठोरता गायब हो गयी और वे विचित्र व्यथा से भर उठे। शराबी भजन को नींद में डूबा समझ कर

उन्होंने उसका हाथ अपने हाथ में ले कर मन ही मन कहा — यह दुनिया इनसान को पता नहीं क्या बना देती है। इनसान भी अपने मन की जलन बरदाश्त नहीं कर पाता तो पता नहीं, क्या से क्या बन जाता है।

ठीक उसी वक्त मानो गाड़ी पर बिजली गिरी। बंद खिड़की के सद-संद से बिजली की चमक ने गाड़ी के अंदर घुस कर घुप्प अंधेरे को चीर कर धर दिया। आवेग को रोक न पाने के कारण नारायण के मुंह से निकला, "हे भगवान, तुम इनसान को रास्ता बताओ ! दूर करो यह अंधेरा और हटा दो पथ की सारी बाधाएं।"

लेकिन भजन सोया नहीं है। अंधेरे में उसकी बंद आंखों की पलकें भिगो कर *आंसू बह चले। लेकिन शायद इसका पता उसी को नहीं चला। आखिर भैया ने यह* बात किससे कही ? मुझसे या ईश्वर से ? फिर यह बात उन्होंने क्यों कही ?

नारायण ने यह बात क्यों कही, यह तो भजन समझ सका है। दुनिया का धर्म बड़ा विचित्र है। दुनिया के उसी धर्म के अनुसार इनसान को चलना पड़ता है। शायद भजन वैसा नहीं चल सका, इसलिए विफलता उसके हाथ लगी और अनास्था उसके जीवन में आ गयी। पीने की आदत भी उसकी विफलता के लिए जिम्मेदार है। शराब ने उसकी जिंदगी को बेढंगा बना दिया है। इसी लिए भैया ने उसे सावधान कर दिया।

उधर भुन्नू मानो पत्थर की मूर्ति बन गया है। सिर्फ उसका हाथ चाभी भरी मशीन की तरह चाबुक घुमा रहा है और वह अपनी धुन में बड़बड़ा रहा है, "हे बरम-देव, मेरे राजा-रानी को आसमान में उठा लो। ऐसी कृपा करो कि उनके पंख निकल आयें। हे बरमदेव, इस अंधेरे को मिटा दो, चारों तरफ अपनी बत्ती जला दो। लाट साहब ने कहा है कि आज जान देने का मौका आया है।"

ब्रह्मदेव ने मानो भुन्नू की बात सचमुच सुन ली। तूफान की काली रात में भी आसमान के पश्चिम किनारे विशाल टेढ़ी कटार की तरह रुपहली रेखा चमकने लगी। वर्षा की घनी बौछार का परदा चीर कर क्षितिज पर हलकी रोशनी फैल गयी। उसी रोशनी में हाड़मुंडी के डरावने पुल का ऊपरी हिस्सा दिखाई पड़ा। वह पुल डाकुओं और राहजनों का अड्डा है। आये दिन राहगीर वहां लुटे और मारे जाते हैं। बहुत दिनों तक उन राहगीरों का पता नहीं चलता। फिर सड़क के किनारे मैदान में उनकी खोप-ड़ियां और हड्डियां बिखरी हुई मिलती हैं। लोग समझ जाते हैं कि उन राहगीरों की लाशें वहां जमीन में गाड़ी गयी थीं और अब महीनों बाद सियार-कुत्तों ने उनके अव-शेषों को खोद निकाला है। इसलिए शाम होते ही कोई उस पुल की तरफ नहीं जाता। वहां अंधेरे का मतलब मौत का साया है।

हाड़मुंडी का वही पुल आ गया !

पुल दिखाई पड़ते ही भुन्नू संभल कर बैठ गया। उसकी रग-रग फौलाद जैसी कड़ी पड़ गयी। उसका चाबुक और भी जोर-जोर से हवा में सिसकारी भरने लगा और वह मंत्र जैसा रटता रहा, "बढ़े चलो राजा-रानी, बढ़े चलो !"

नारायण ने गाड़ी का दरवाजा खोल दिया। दरवाजा खुलते ही वे पानी की बौछार से भीग गये।

दूसरी तरफ का दरवाजा खोल कर भजन ने भी बाहर देखा। उसके भी हाथ-पाँव किसी भी स्थिति से निपटने के लिए तैयार हो गये।

कीचड़ छिटकाती गाड़ी पुल पर चढ़ने लगी।

दूर से मुरगा बोलने जैसी आवाज तीन बार सुनाई पड़ी। नारायण ने भी वैसी आवाज की।

फिर कुछ ही देर में दो लोग गाड़ी के सामने आ कर खड़े हुए। वर्षा की झर-झर के बीच सुनाई पड़ा, "नारायण भैया ?"

नारायण भैया ने जवाब दिया, "हाँ, आ गया।"

गाड़ी रुक गयी। नारायण के साथ भजन भी मानो उनके अंगरक्षक की तरह नीचे उतरा। भुन्नू भी नीचे उतरा। लेकिन उसकी निगाह हाड़मुंडी के पुल के एक छोर से दूसरे छोर तक दौड़ती रही। उसकी हरकत से ऐसा लगा कि मानो वह किसी दूसरी दुनिया में चला आया हो। मानो यह दुनिया उसके बरमदेव की है, जहाँ सिर्फ भय और विस्मय हैं।

नीचे उतर कर नारायण ने सब से पहले दोनों घोड़ों के बदन पर हाथ रखा और कहा, "जिंदगी में पहली बार आज मैंने जान लिया कि जानवर भी इनसान के लिए क्या नहीं कर सकता !"

फिर भुन्नू के कंधे पर हाथ रख कर नारायण ने पूछा, "बोलो भाई, तुम क्या चाहते हो ?"

भुन्नू ने निस्संकोच हो कर कहा, "एक कुल्हड़ ताड़ी।"

हाड़मुंडी के पुल पर उस बारिश में भी नारायण और उनके साथी अपनी हँसी रोक न सके। लेकिन सब से बड़बोला भजन नहीं हँसा।

नारायण ने भुन्नू से कहा, "यहाँ तो ताड़ी नहीं मिल सकती। फिर मेरे पास रुपया भी नहीं है। हाँ, कुछ सोना दे सकता हूँ।"

यह कह कर नारायण ने अपने घुमक्कड़ी झोले में हाथ डाला तो भुन्नू ने उनका हाथ पकड़ कर कहा, "नहीं बाबू !"

फिर जरा रुक कर भुन्नू ने कहा, "नरायन ठाकुर ! प्यास लगी है, इसलिए ताड़ी माँगी। अगर न हो तो कोई बात नहीं। लेकिन रुपया और सोना, वह तो बहुत मामूली चीज है ! आज तो मैं यहाँ अपनी जान देने के लिए तैयार हो कर आया था, वह तो आपने अपनी आँखों से देख लिया। इसलिए भुन्नू को और कुछ नहीं चाहिए।"

नारायण के साथ हाड़मुंडी का पुल भी मानो थोड़ी देर के लिए खामोश हो गया। उसके बाद नारायण के जाने का समय हो गया। उन्होंने उसी स्वर में भजन को पुकारा, "भजन !"

भजन ने स्वाभाविक स्वर में कहा, "आप तो पहुँच गये, अब हम लौट जायँ ?"

"हाँ भाई भजन, अब तुम लोग जाओ !"

फिर नारायण ने अपने साथियों से कहा, "इन लोगों को कुछ दूर छोड़ आओ।"

भुन्नू तब तक घोड़ों की लगाम पकड़ कर गाड़ी को मोड़ चुका। भजन ने नारायण से कहा, "हमे कहीं छोड़ आने की जरूरत नहीं है।"

फिर अपनी ही धुन में पागल की तरह भजन बड़बड़ाया, "भय के मूर्खतापूर्ण अंधकार को आज प्रकाश की तलवार से काटा है। अब तक जो कुछ नहीं देखा था, उसे अपनी कालकोठरी के बंद दरवाजे के पास देख लिया।···अच्छा, नारायण भैया, अब चला !···चलो भुन्नू, मेरे सारथी !"

हाड़मुंडी के पुल से लौट कर भजन और भुन्नू ने मिल कर शराब पी। फिर दोनों ने अपने-अपने घर को याद किया। सिर्फ चरण ने भजन से पूछा, "कोई परेशानी तो नहीं हुई ?"

भजन ने अपने ढंग से जवाब दिया, "जी नहीं हुजूर !"

फिर इस तूफान की रात भजन और भुन्नू ने खूब हो-हल्ला मचा कर अलग से तूफान खड़ा किया। उसके बाद भुन्नू जाने लगा तो भजन ने कहा, "भुन्नू, तेरा यह रथ और मेरा यह श्रीमती काफे, दोनों बराबर हैं। इन्हीं को तो ले कर हम जिंदा हैं। जिंदगी में बहुत से ऐसे मौके आते हैं जो किसी काम के नहीं होते, जैसे आज की रात का यह समय बीता। खैर, अब तू अपनी मोनालिसा के पास जा और मैं अपनी जूही के पास जाऊं।"

इतना कह कर भजन अपनी ही धुन मे बड़बड़ाता हुआ चला —

"द्वार खोलो हे नगरवासी,
रुद्र संन्यासी आया है।
रात तुम्हारी काली है, अंधड़ भरी खामोश है;
मैं तो बिजली कड़काऊंगा, मैं तो आग जलाऊंगा;
रात तुम्हारी दिन मे बदल जायेगी।
वह दिन तुम्हे प्रकाश का संदेश देगा।"

फिर मानो रुलाई भरी आवाज में भजन ने कहा —

"प्रिये, तुम्हारे वक्ष के उभार मे,
मौत का छिपा हाहाकार है।
लबों पर तुम्हारे कातिल की हँसी —
मेरे गर्म खून को पुकार है।"

"नही !" भजन ने धीरे से सिर हिलाया और कहा, "आजकल साली तुक भी नही बैठती और बंद भी पूरा नहीं होता !"

तूफान की रात में हाड़मुंडी के पुल तक जाने की घटना के ठीक सत्ताईस दिन बाद भुन्नू का राजा मर गया और दो महीने तीन दिन बाद रानी भी चल बसी। आगे-पीछे दोनों का वही हाल हुआ जो हर जानवर का होता है। बस्ती के बाहर गंगा के कछार में उनको ऐसी जगह डाल दिया गया, जहाँ लोग नहीं जाते। वहाँ अंतिम शय्या में पड़े-पड़े अपलक दृष्टि से वे आसमान की तरफ तब तक देखते रहे, जब तक न गिद्धों और सियार कुत्तों ने उनकी आँखें और अंतड़ियाँ निकाल लीं और उनकी ठठरियाँ भर बची रहीं। मजबूरन भुन्नू को घर का सामान बेच कर और एक जोड़ा घोड़ा खरीदना पड़ा।

फिर मंदी का दौर शुरू हुआ। यों तो देखने से नहीं लगता कि श्रीमती काफे पर विश्वव्यापी मंदी का कोई असर है। उसके नियमित गाहकों की तादाद इतनी बढ़ गयी है कि विश्वास नहीं होता। तरह-तरह के लोग आने लगे। आये दिन विचित्र घटनाएँ घटने लगीं। दुनिया भर की तमाम मजेदार खबरें श्रीमती काफे में मिल जाती हैं। किस मुहल्ले में और किस घर में क्या हुआ, उसकी चटपटी कहानी यहीं सुनने को मिलती है। हाँ, वैसी कहानी भला आदमी सुनना पसंद नहीं करेगा। इसलिए उस तरह की कहानियाँ भजन की गैर-मौजूदगी में सुनी-सुनायी जाती हैं। कई दिन तो भजन ने कई लोगों को गर्दन पकड़ कर दुकान के बाहर निकाल दिया।

मंदी फिर भी है। इसी के साथ भजन का शराब पीना जिस तरह बढ़ा है, उसी तरह उसका पागलपन भी। पहले तो वह फिर भी दो-चार अच्छी बातें कहता था, लेकिन आजकल वह सिर्फ हँसता है, कविता कहता है और गाना गाता है। कभी-कभी वह बिगड़ उठता है। बेमतलब वह नाराज होता है। कोई उसका कारण भी नहीं समझ पाता।

बंगाली कभी-कभी आता है। वह भजन से बार-बार एक ही बात कहता है, "अब जिंदा रहने को मन नहीं करता देवता। सोचता हूँ कि मैं साला पैदा ही क्यों हुआ और जिंदा भी क्यों हूँ!"

शायद भजन भी इस सवाल पर दूसरे ढंग से सोचता रहता है।

कभी-कभी भजन और मनोहर भी आते हैं। दोनों को दूसरी जगह की जूट मिल में नौकरी मिल गयी है। आने पर वे बहुत धीरे-धीरे नारायण की खबर पूछते हैं। मानो उनको अब भी कुछ होने की प्रतीक्षा है। कभी-कभी वे प्रियनाथ के बारे में भी पूछते हैं।

गोलोक चटर्जी अब भी उसी तरह आते हैं। लेकिन आजकल वे दूसरी तरह की कहानियाँ सुनाते हैं। वे अपने पुराने दोस्तों की बातें भूल नहीं पाते।

आजकल वह नौजवान पुलिस अफसर दिखाई नहीं पड़ते। उनका यहाँ से तबादला हो गया है। कुट्टी पगले का पागलपन बढ़ा है। अब भी वह कभी-कभी रेलवे स्टेशन पर यात्रियों के सामान ढोता है। कभी-कभी वह किसी यात्री को चकमा दे कर गंगा के किनारे ले जाता है और वहाँ उसे डरा-धमका कर उससे पैसा वसूलता है। इसके लिए

एक बार कुट्टी पगले को कई दिन हवालात की हवा भी खानी पड़ी। लेकिन चरण को उसके हाथ से छुटकारा नहीं मिलता। आसपास के दुकानदार और बाजार के लोग भी चरण से कुट्टी पगले से इस लगाव को देख कर हँसते हैं।

कृपाल, शंकर घोष, हीरेन, रथीन और मुनिर्मल वगैरह सब जेल में हैं। कई दिन पहले म्युनिसिपल इलेक्शन हो गया। स्वदेशी आंदोलन के चक्कर में सारदा चौधरी को भी जेल जाना पड़ा।

भजन के पिता महादेव हालदार ने श्रीमती काफे में हुई तोड़फोड़ की क्षतिपूर्ति के लिए मुकदमा करने की बात की। उन्होंने कहा कि मैं ही सारा इंतजाम करूँगा। लेकिन भजन ने कहा, "न्याय कौन करेगा ? इस सरकार के खिलाफ इसी सरकार की अदालत में भला न्याय किसको मिलेगा ? अब मैं उस चक्कर में नहीं पड़ता !"

एक आदमी किस तरह संवेदनहीन और गूँगा बन सकता है, हालदार बाबू उसके उदाहरण हैं। वे दिन भर घर के उस बरामदे में आरामकुर्सी पर बैठे रहते हैं। वे कुछ सोचते भी हैं या नहीं, यह भी पता नहीं चलता। लोग कहते हैं, नवहू हालदार पागल हो गया है। लेकिन आश्चर्य की बात है कि एक काम में उनसे भूल नहीं होती। भजन की अलमारी से शराब की बोतल चुराने की उनकी आदत पड़ गयी है।

पूही पहले से अधिक मोटी हो गयी है। अब दुश्चिंता ही उसकी नियति बन गयी है। वह दिनरात भजन के बारे में सोचती रहती है। अब वह भजन का प्यार पाने के लिए भिखारिन सी बन गयी है। चौबीसों घंटे वह बच्चों को डाँटती और पीटती है। इसके अलावा आजकल वह प्रायः सभी पर्वों पर उपवास करती है, व्रत रखती है। उसे एक लड़की भी हुई है।

बकुल माँ सिर्फ घूमती रहती हैं — आज काशी तो कल वृंदावन।

हाँ, मंदी ही तो है। यानी, अवसाद।

शाम को ही लड़खड़ाते हुए भजन ने एक नौजवान की कमीज पकड़ ली। वह नौजवान एकदम टीप-टाप बाबू है। महीन धोती, अद्धी का कुरता और ग्लैसकिड के जूते। सिर के बाल भी बड़े-बड़े। इस साज-सज्जा में वह युवक जरा विचित्र ही लगता है। लेकिन वह श्रीमती काफे का नियमित ग्राहक है।

भजन ने पूछा, "तू अंदू भट्टाचार्य का लड़का है न ?"

अपमान, लज्जा और इस अचानक हमले के कारण डर के मारे मानो वह रो पड़ा और बोला, "जी हाँ।"

"मैट्रिक में कितनी बार फेल हुआ है ?"

"जी, चार बार।" युवक की आँखों में आँसू आ गये।

"गंगा के किनारे औरतों के घाट पर तू ही बैठा रहता है ?"

बेचारा छैला बाबू एकदम चुप हो गया।

यह तमाशा देख कर कोई हँसने लगा तो किसी ने भजन से कहा, "अरे, जा दो।"

तूफान की रात में हाड़मुंडी के पुल तक जाने की घटना के ठीक सत्ताईस दिन बाद भुन्नू का राजा मर गया और दो महीने तीन दिन बाद रानी भी चल बसी। आगे-पीछे दोनों का वही हाल हुआ जो हर जानवर का होता है। बस्ती के बाहर गंगा के कछार में उनको ऐसी जगह डाल दिया गया, जहाँ लोग नहीं जाते। वहाँ अंतिम शय्या में पड़े-पड़े अपलक दृष्टि से वे आसमान की तरफ तब तक देखते रहे, जब तक न गिद्धों और सियार कुत्तों ने उनकी आँखें और अंतड़ियाँ निकाल लीं और उनकी ठठरियाँ भर बची रहीं। मजबूरन भुन्नू को घर का सामान बेच कर और एक जोड़ा घोड़ा खरीदना पड़ा।

फिर मंदी का दौर शुरू हुआ। यों तो देखने से नहीं लगता कि श्रीमती काफे पर विश्वव्यापी मंदी का कोई असर है। उसके नियमित गाहकों की तादाद इतनी बढ़ गयी है कि विश्वास नहीं होता। तरह-तरह के लोग आने लगे। आये दिन विचित्र घटनाएँ घटने लगीं। दुनिया भर की तमाम मजेदार खबरें श्रीमती काफे में मिल जाती हैं। किस मुहल्ले में और किस घर में क्या हुआ, उसकी चटपटी कहानी यहीं सुनने को मिलती है। हाँ, वैसी कहानी भला आदमी सुनना पसंद नहीं करेगा। इसलिए उस तरह की कहानियाँ भजन की गैर-मौजूदगी में सुनी-सुनायी जाती हैं। कई दिन तो भजन ने कई लोगों को गर्दन पकड़ कर दुकान के बाहर निकाल दिया।

मंदी फिर भी है। इसी के साथ भजन का शराब पीना जिस तरह बढ़ा है, उसी तरह उसका पागलपन भी। पहले तो वह फिर भी दो-चार अच्छी बातें कहता था, लेकिन आजकल वह सिर्फ हँसता है, कविता कहता है और गाना गाता है। कभी-कभी वह बिगड़ उठता है। बेमतलब वह नाराज होता है। कोई उसका कारण भी नहीं समझ पाता।

बंगाली कभी-कभी आता है। वह भजन से बार-बार एक ही बात कहता है, "अब जिंदा रहने को मन नहीं करता देवता। सोचता हूँ कि मैं साला पैदा ही क्यों हुआ और जिंदा भी क्यों हूँ!"

शायद भजन भी इस सवाल पर दूसरे ढंग से सोचता रहता है।

कभी-कभी भजन और मनोहर भी आते हैं। दोनों को दूसरी जगह की जूट मिल में नौकरी मिल गयी है। आने पर वे बहुत धीरे-धीरे नारायण की खबर पूछते हैं। मानो उनको अब भी कुछ होने की प्रतीक्षा है। कभी-कभी वे प्रियनाथ के बारे में भी पूछते हैं।

गोलोक चटर्जी अब भी उसी तरह आते हैं। लेकिन आजकल वे दूसरी तरह की कहानियाँ सुनाते हैं। वे अपने पुराने दोस्तों की बातें भूल नहीं पाते।

आजकल वह नौजवान पुलिस अफसर दिखाई नहीं पड़ते। उनका यहाँ से तबादला हो गया है। कुट्टी पगले का पागलपन बढ़ा है। अब भी वह कभी-कभी रेलवे स्टेशन पर यात्रियों के सामान ढोता है। कभी-कभी वह किसी यात्री को चकमा दे कर गंगा के किनारे ले जाता है और वहाँ उसे डरा-धमका कर उससे पैसा वसूलता है। इसके लिए

भजन ने उस युवक से कहा, "आज छोड़ दिया। फिर कभी श्रीमती काफे में मत आना, सीधे घर चला जा।"

उस युवक से भजन ने कभी कुछ नहीं कहा, लेकिन आज अचानक यह हमला क्यों हुआ, कोई नहीं समझ सका। शाम की महफिल पर ऐसी खामोशी छा गयी, जो सब को खलने लगी। और भी कई नौजवान वहाँ बैठे थे, जो देखते-देखते खिसक गये।

भजन ने कहा, "रुके क्यों नरसिंह, पढ़ो !"

नरसिंह भी गाहक है। वह कई माह पुरानी 'मासिक वसुमती' से एक लेख 'बंगाल की राजनीति' पढ़ने लगा — "बंगाल की राजनीति में आजकल भूत-पिशाचों का जो नाच शुरू हो गया है, जिस निरंकुशता और असहिष्णुता के लिए हम नौकरशाही को दोषी ठहराते हैं; वे सभी दोष आज स्वराज पार्टी के नेताओं में भी आ गये हैं। इसी लिए बंगाल कांग्रेस में ऐसी गुटबाजी है। फिर, राजनीति के क्षेत्र में नये लोग भी बुजुर्गों की तरह दूसरों को रास्ता बताने और यह समझाने लगे हैं कि सुख और शांति से बीतने वाला यह जीवन जीवन नहीं है। यह मृत्यु का लक्षण है। इस लिए वादविवाद ही जीवन है। अभी हाल में बंगला के पत्रकारों की सभा में आजादी के दीवाने एक नये लेखक ने संपादक मृणालकांति बाबू की जो कटु आलोचना की, उसे भुलाया नहीं जा सकता। भाग्य का ऐसा ही परिहास है कि डॉ० विधानचंद्र की भी ऐसी आलोचना हुई। उनको भी अपमानित होना पड़ा। इसलिए बंगालियों को यह सोचना है कि वे कहाँ पहुँच चुके हैं।"

स्टेशन के चबूतरे पर खड़े हो कर कुट्टी पगला जोर-जोर से हँसने लगा।

भजन ने हँस कर कहा, "समझ गये नरसिंह ?"

"क्या भैया ?"

"बंगाली कहाँ पहुँच चुके हैं।"

नरसिंह कुछ समझ नहीं सका। वह आश्चर्य से भजन को देखता रहा।

भजन बोला, "समझ नहीं सके ? कुट्टी पगला बंगालियों का रहनुमा है।"

थोड़ा रुक कर भजन फिर कहने लगा, "अंदू भट्टाचार्य का लड़का भी बंगाली है।"

भजन की बात सुन कर सब हँसने लगे।

मुस्करा कर भजन ने फिर कहा, "नरसिंह, मैं भी बंगाली हूँ। लेकिन नारायण भैया शायद बंगाली नहीं हैं। भेड़िये के मुँह के शिकार की तरह प्रियनाथ भागा हुआ है। क्या वह बंगाली नहीं है ? तुम अपने संपादक सतीश बाबू को यह सब लिख कर भेज दो।"

हँसते-हँसते सिर दुखने पर लोग जिस तरह चुप हो जाते हैं, उसी तरह सब चुप रहे। भजन भी मानो एकदम बदल गया। एकदम खामोश हो कर उसने टेबुल पर सिर टिका दिया।

बहुत रात हो गयी। भजन चला गया। चरण श्रीमती काफे के पीछे वाले कमरे में अकेला बंदी आत्मा की तरह छटपटाता रहा। खुले आसमान के नीचे यह कमरा पहाड़ की गुफा की तरह है। इसी अकेलेपन में धीरे-धीरे उसकी उम्र बढ़ गयी, लेकिन उसी को पता नहीं चला। अब उसका हृदय नवीन और विचित्र अनुभूति से भर उठा है। अद्भुत आकांक्षा का उन्माद उसके तन-बदन में छाने लगा। अब तक की सारी घटनाएँ सिनेमा की तस्वीरों की तरह नये-नये रूप में उसके मन की आँखों के आगे प्रकट होने लगीं। पता नहीं, अपने में चरण को क्या मिल गया कि उसी से उसका हृदय भर उठा। खुशी के मारे मानो वह अपने को भूलने लगा।

अब चरण को यह अकेलापन बरदाश्त नहीं होता। वह किसी और को चाहता है। मानो उसे और भी कुछ चाहिए। वह किसी से प्यार करके अपने को मानो मुक्त करना चाहता है। लेकिन उसे अपना जीवन अभिशप्त लगता है। कोई उसकी तरफ नहीं देखता। अपने को कहीं खो न पाने का जो दर्द उसे सताता है, उसे भी कोई नहीं समझता।

चरण अँधेरे में सड़क पर आ कर खड़ा हो गया। सड़क एकदम ऊबड़-खाबड़ हो गयी है। इसलिए उसकी मरम्मत हो रही है। डामर डाला गया है। पास ही पी० डब्लू० डी० के मजदूरों ने अड्डा जमाया है। उन्हीं के पास लाल बत्ती जल रही है।

नस-नस में मानो आग की धाराएँ उमड़ चलीं। अँधेरे में चरण की आँखें साँप के बदन की तरह चमकने लगीं। वह धीरे-धीरे दबे पाँव लाड़ू पंडित की गली में पहुँच गया। यही कस्बे का बदनाम इलाका है। इसी गली में वारवनिताएँ रहती हैं। चरण एक घर के आँगन में पहुँच गया। वहाँ पहुँच कर वह बेवकूफ की तरह चुपचाप खड़ा रहा।

एक झुंड औरतें आश्चर्य से चरण की तरफ देखती रहीं। चरण के अकेलेपन, दर्द, आनंद, प्रेम और सुख को मानो वे औरतें नहीं समझ सकीं, क्योंकि दूसरे ही क्षण वहाँ विद्रूपभरी तीखी हँसी गूँज उठी। चरण को तमाम भद्दे संबोधन सुनने को मिले। शिकारी बाज की तरह उन औरतों की तेज आँखें न जाने कैसी अठखेलियाँ करने लगीं।

चरण को लगा कि उसकी सौतेली माँ अनेक रूपों में उसके सामने खड़ी है। उस हँसी-मजाक के बीच चरण गूँगे और बहरे पागल की तरह खड़ा रहा।

एक लड़की ने कहा, "अरे, यह छोकरा तो बोलता ही नहीं। क्या कोई पसंद नहीं आयी?"

दूसरी लड़की ने कहा, "अरी, यह तो भजन ठाकुर की दुकान का नौकर है! अरी, ओ गुलाबो, होटल का खाना खाने के लिए तेरी जबान से तो लार टपकती रहती है। जा, इस छोकरे को ले जा, बढ़िया गोश्त खाने को मिलेगा।"

फिर तो सभी औरतें एक-दूसरे से भद्दा-भद्दा मजाक करने लगीं। भद्दे-भद्दे हाव-भाव से उस आँगन का माहौल ही मानो गंदा हो गया।

इसके बावजूद असह वेदना और खुशी से चरण के तन-बदन में मानो आग

लग गयी। वह मुँह बाये एक लड़की को देखता रहा। दोहरे बदन की उस लड़की का रंग जरा साफ है और उसकी आँखें शांत हैं।

वही लड़की आगे बढ़ आयी। उसने गर्दन टेढ़ी करके चरण से पूछा, "क्यों जी, मुझे पसंद आया?"

चरण ने गर्दन हिला दी। उस लड़की ने उसे हाथ पकड़ कर अपनी तरफ खींचा और कहा, "तो आओ न!"

लेकिन चरण ने उस लड़की से श्रीमती काफे के पीछे वाले कमरे में चलने के लिए कहा। यह सुन कर सभी औरतें हँसने लगीं।

फिर मकान मालकिन से इजाजत ले कर वह लड़की चरण के साथ श्रीमती काफे के पिछवाड़े के कमरे में आयी। लेकिन अब उसकी शांत आँखें चंचल हो उठीं। होंठों पर विद्रूप और उपेक्षा की कुटिल हँसी झलक उठी।

लेकिन चरण ने उस लड़की को इतने प्रेम से बैठाया कि मानो दरिद्र भक्त को भगवान मिल गया हो। चरण उसके लिए कुर्सी लाया। फिर उसने उसे प्लेटों में सजा कर चाप, कटलेट और मांस खाने को दिया। फिर उसके पास बैठ कर पूछा, "तुम्हारा नाम क्या है?"

लापरवाही से खाते हुए उस लड़की ने कहा, "कोई नाम-वाम नहीं है। हमारा सिर्फ एक ही नाम है बेसवा।"

यह कह कर वह लड़की खिलखिला कर हँस पड़ी। उसी हँसी ने मानो इस तंग कोठरी में मुक्ति की हवा बहा दी। चरण ने बातें शुरू कीं। उसने चाहा कि हृदय को उजाड़ कर अपनी व्यथा और अपने दुख की कहानी इस लड़की को सुनाऊँ। चरण को तो ऐसा लगा कि वह अभी उस लड़की की गोद में मुँह छिपा कर रो देगा।

लेकिन उस लड़की ने प्लेटें हटा कर तेज आवाज में कहा, "भैया, जल्दी अपना काम निपटा लो। मैं देर नहीं कर सकती।"

चरण को लगा कि सारी रोशनी बुझ गयी। कोई इंतजार नहीं, हँसने-रोने के लिए वक्त भी नहीं!

फिर उस दिन उस पाशविकता के बीच चरण के जीवन का नया अध्याय शुरू हुआ। एक बंगाली किशोर ने यौवन की देहली पर पहला कदम रखा।

उसके बाद उस लड़की ने बेशर्म की तरह अपने कपड़े ठीक किये। लेकिन चरण की बेचैनी में कमी नहीं आयी। उसने उस लड़की को ज्यादा ही पैसा दिया और उसके हाथ पकड़ कर उससे कहा, "फिर आना। आओगी न?"

आँचल में पैसा गठियाते हुए उस लड़की ने हँस कर कहा, "लेकिन पैसा ज्यादा लगेगा। इससे काम नहीं चलेगा।"

चरण ने कहा, "हाँ, हाँ, दूंगा। जो कुछ है, सब दूंगा।"

फिर वह लड़की चली गयी तो चरण दोनों हाथों से मुँह ढँक कर बैठ गया। वह शरमाने लगा, उसे नफरत आने लगी, मान-अपमान का सवाल भी उसके मन में

पैदा हुआ, फिर भी उसने बार-बार मन ही मन कहा — मेरे पास जो कुछ है, सब दूंगा; लेकिन तुम आना ।

अंत में चरण के मन मे ऐसी यंत्रणा होने लगी कि वह अपनी रुलाई को रोक न सका।

भजन को चरण की इन बातों का पता भी न चला ।

अब वह लड़की अक्सर आने लगी । धीरे-धीरे उसकी झल्लाहट कम हो गयी । मानो उसके मन की जलन कम होने लगी ।

चरण पर तो मानो नशा छा चुका है । यह नशा प्यार का है । प्यार करके उसने मुक्ति माँगी, लेकिन उसे मुक्ति नही मिली । वह तो नये बंधन मे पड़ गया । अब वह मन ही मन कहने लगा — मैं आग मे जल सकता हूँ, मर सकता हूँ, लेकिन तुम्हें नही छोड़ सकता ।

उस लड़की ने अपना नाम नही बताया । न बताये । चरण ने सोचा कि मैं ही उसे कोई नाम दूंगा । उसने सोचा कि जब कोई शादी करता है, तब उसे पहले-पहल कैसा लगता है ? उसने अपनी जिंदगी मे एक-दो शादियां देखी हैं । उसने वर-वधू और उनके तमाम रिश्तेदारों को हंसते हुए देखा है । उसने लोगों को गाते, ढोलक-ताशे बजते और शहनाई को गूंजते सुना है ।

लेकिन बाप की शादी बेटा नहीं देख सकता । इसलिए चरण बाप की शादी नही देख सका था । उसे पास के मकान में छिपा कर रखा गया था । फिर भी उसने शहनाई की गूंज सुनी थी । उसने यह भी सुना था कि जब उसके बाप ने उसकी माँ से शादी की थी तब अस्सी रुपये खर्च हुए थे । लेकिन जब बाप ने चरण की सौतेली माँ से शादी की, तब एक सौ चालीस रुपये खर्च हुए । बाजे भी बजे — ढोलक और शहनाई । लेकिन बडे आश्चर्य की बात है ! बचपन मे सुनी बाजे की वह आवाज आज भी मानो रुलाई की तरह चरण के कानों में गूंजती रहती है । चरण को आज भी याद है कि सो रही विष्णुप्रिया को सदा के लिए छोड़ कर जाते समय निमाई ने जो गाना गुनगुनाया था, उस दिन शहनाई मे वही सुर गूंजा था । उस सुर ने कहा था — प्यार का बंधन क्या तोड़ा जा सकता है ? जाना चाह कर भी मैं जा नही पाता । महामाया मेरा पीछा करती रहती है ।

चरण की मिलन-रात्रि का भी सुर गूंजा है । लेकिन चरण उस सुर का नाम नहीं जानता । लेकिन वह सुर बिदाई का नही है । उस सुर मे हर्ष और विषाद दोनों हैं । चरण मन ही मन सोचता है, भले ही वह वेश्या हो, भले ही पापी हो, फिर भी मेरे जीवन में वही पहली नारी है । तमाम बीभत्स दृश्य देख कर चरण के मन मे विचित्र प्रकार की विकृति घर कर चुकी है । अस्वाभाविक तृष्णा की तरह यह विकृति है । फिर यह वितृष्णा जैसी भी है । यह विकृति नारी-देह को ले कर है ।

लेकिन वह लड़की चरण की उस विकृति को न जाने कहाँ बहा ले गयी । ... का मन सहज होने लगा । उसकी अस्वाभाविक तृष्णा और वितृष्णा, दोनों का ...

गया। उसने देह से प्यार करना सीखा।

कभी-कभी वह लड़की चरण का मन भाँप न सकने के कारण बेमतलब विक‍ हाव-भाव करती है। चरण कुछ कह नहीं पाता, लेकिन मन ही मन उसे बड़ा कष्‍ होता है। वह अपने को अपमानित महसूस करता है। वह समझ नहीं पाता कि कैसे उस लड़की को समझाऊँ कि मुझे वैसे हाव-भाव की जरूरत नहीं है। उसका शरीर ह‍ कितना सुंदर है, कितना भरा-पूरा है; फिर भी उसमें न जाने कहाँ कैसा खालीपन ह‍ कि उसे ऐसा हाव-भाव करना पड़ता है!

चरण कभी-कभी सोचता है कि अब उससे कह दूं कि मैं तुम्हें छोड़ नहीं सकता मैं तुम्हें अपने पास रख लूंगा। सिर पर आँचल रख कर तुम मुझे गाली बकना, डांटन‍ और जो मन में आये सो करना, लेकिन अब उस बदनाम बस्ती में मत जाना।

लेकिन यह सब कहने से चरण डरता है। वह सोचता है कि यह सब कहूँग‍ तो शायद वह कभी नहीं आयेगी। फिर ऐसा भी तो हो सकता है कि एक दिन व‍ लड़की खुद कह दे कि मैं तुम्हें छोड़ कर कहीं नहीं जाऊँगी।

चरण को बर्मा से लौटते समय जहाज में मिले उस सज्जन की और नारायण की बात याद आयी। उसके मन में बैठा न जाने कौन बोल उठा — ऐसे देवता जैसे लोगों का तुझे स्नेह मिला, शराबी भजन जैसे दरियादिल मालिक ने तुझसे प्यार किया तुझ पर विश्वास किया और तूने अपने को एक वेश्या के हाथ बेच दिया।

इसके जवाब में चरण ने कहा — हे भगवान, विश्वास करो कि मैंने कोई पाप नहीं किया, मैंने उस लड़की से प्यार किया है। जहाज में मिले उस सज्जन के बारे में मैं सोचता हूँ। उनकी हड्डियों के ढांचे से निकल कर प्राण कहाँ चले गये? किस असीम की खोज में उनकी आत्मा भटक रही है? मैं और भी एक जने के बारे में सोचता हूँ वह हैं नारायण। उस तूफान की रात को वे भुन्नू की गाड़ी से न जाने कहाँ चले गये किस असीम की खोज में! शायद वे अपने दुश्मनों के चंगुल से निकल गये होंगे। मैं अपने मालिक लाट साहब भजन के बारे में भी सोचता हूँ। भले ही वे मुझे बात-बात पर थप्पड़ लगाया करें और भरपूर खाने-पहनने को दें, फिर भी मैं चाहता हूँ कि शराब पी-पी कर वे अपने को गला न डालें। श्रीमती काफे के बारे में भी मैं सोचता हूँ। उसकी दीवार में कहीं कोई धब्बा न लग जाय। उसका कौन-सा सामान गाहकों को पसंद आया और कौन-सा नहीं, ऐसी हर छोटी-मोटी बात पर मुझे ध्यान रखना पड़ता है ऐसा किये बिना मेरा खाना नहीं पचता।

मैं उस लड़की के बारे में भी सोचता हूँ। जब मैं सोचता हूँ कि शाम को उसकी कोठरी में कोई मर्द घुसा है तो घृणा और अपमान से मेरे रोंगटे खड़े हो जाते हैं। जब मैं सोचता हूँ कि किसी ने उसके शरीर को दबोच लिया है तो मेरे सारे बदन में मानो सुइयाँ चुभने लगती हैं और मैं मलेरिया के मरीज की तरह हाँफने लगता हूँ। मुझे बस यही एहसास होता है कि यह तो मैं बरदाश्त नहीं कर सकता। क्या जिंदगी का यह कानून किसी तरह नहीं बदल सकता? लेकिन मुझे अपने आगे सिर्फ अँधेरा ही नजर

आता है। लेकिन उस अँधेरे में भी देखने की कोशिश को तो सब कुछ साफ नजर आने लगा है। क्या इस जिंदगी का अँधेरा भी कभी साफ नहीं होगा ?

भजन थक कर चूर हो चुका है। ऐसी थकावट उसे कभी नहीं आयी।

एक दिन रमिया आयी।

"नमस्ते बाबू जी !"

रमिया शिष्टाचार नहीं भूली है। वह अब भी नमस्ते कहती है। अब भी भले लोगों से बातचीत करने में वह अपनी भाषा नहीं बोलती। अब भी उसके चेहरे पर और चाल-चलन में शालीनता और नम्रता है।

भजन अपनी दुनिया में खोया हुआ है। फिर भी उसने आँखें खोलीं। उसने अपने सामने रमिया को देखा।

रमिया के कपड़े-लत्ते पहले से ज्यादा गंदे हो चुके हैं। लगा कि अब वह नियम से बाल नहीं धोती। पहले से वह ज्यादा दुबरा गयी है। आँखें धँसी हुई हैं। गोद में काले बिलार जैसा कई माह का बच्चा है।

भजन ने कहा, "कौन ? रजकी रानी ?"

रमिया रजकी रानी का मतलब नहीं समझती। फिर भी उसने कहा, "जी हाँ।"

"तेरी गोद मे वह कौन है ?"

रमिया का चेहरा हँसी से झलमलाने लगा। वह हँसी लज्जा, वेदना, आनंद और गौरव का है। शायद यही हँसी हीरेन देखना चाहता था। लेकिन उस समय रमिया के पास यह हँसी कहाँ थी ? फिर उसने कहा, "मेरा बच्चा है बाबू जी !"

"अच्छा !" भजन ने आश्चर्य से कहा और पूछा, "लेकिन तेरी शादी कब हुई, पता भी नहीं चला ?"

बच्चे की तरफ देखते हुए रमिया ने कहा, "शादी नहीं हुई बाबू जी, सरपंच की राय से पंचायत को बीस रुपये दे दिये। एक मर्द मुझसे मुहब्बत करता था।"

शरमा कर रमिया ने मुँह फेर लिया।

मुहब्बत ! भजन को हीरेन का चेहरा याद आया। क्या इसी लिए उस दिन हीरेन उस तरह रोया था ? शराब पी थी ? फिर भजन ने बच्चे की तरफ देखा। स्नेह भरी आँखों से देखा। फिर उसने मुस्कराते हुए दराज से एक रुपया निकाल कर रमिया को दिया और कहा, "ले, तेरे बेटे की मुँह दिखाई।"

रमिया ने वह रुपया बच्चे की शिथिल मुट्ठी में देते हुए प्यार से कहा, "ले, लाट साहब ने दिया है। चूहा कहीं का ! मेरे कल्लू लाल !"

बच्चे को प्यार करने के बाद रमिया हँसने लगी। भजन भी हँसने लगा।

दोनों की हँसी की गूँज से श्रीमती काफे में बैठे लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ। वे लोग भी एक-दूसरे को देख कर मुस्कराने लगे।

फिर रमिया ने अचानक पूछा, "बाबू जी, वह बाबू जी कब जेल से छूटेंगे ?"

गया। उसने देह से प्यार करना सीखा।

कभी-कभी वह लड़की चरण का मन भांप न सकने के कारण वेमतलव विकट हाव-भाव करती है। चरण कुछ कह नहीं पाता, लेकिन मन ही मन उसे बड़ा कष्ट होता है। वह अपने को अपमानित महसूस करता है। वह समझ नहीं पाता कि कैसे उस लड़की को समझाऊँ कि मुझे वैसे हाव-भाव की जरूरत नहीं है। उसका शरीर ही कितना सुंदर है, कितना भरा-पूरा है; फिर भी उसमें न जाने कहाँ कैसा खालीपन है कि उसे ऐसा हाव-भाव करना पड़ता है !

चरण कभी-कभी सोचता है कि अव उससे कह दूं कि मैं तुम्हें छोड़ नहीं सकता। मैं तुम्हें अपने पास रख लूंगा। सिर पर आंचल रख कर तुम मुझे गाली वकना, डाँटना और जो मन में आये सो करना, लेकिन अव उस वदनाम बस्ती में मत जाना।

लेकिन यह सव कहने से चरण डरता है। वह सोचता है कि यह सब कहूँगा तो शायद वह कभी नहीं आयेगी। फिर ऐसा भी तो हो सकता है कि एक दिन वह लड़की खुद कह दे कि मैं तुम्हें छोड़ कर कहीं नहीं जाऊँगी।

चरण को वर्मा से लौटते समय जहाज में मिले उस सज्जन की और नारायण की वात याद आयी। उसके मन में बैठा न जाने कौन बोल उठा — ऐसे देवता जैसे लोगों का तुझे स्नेह मिला, शराबी भजन जैसे दरियादिल मालिक ने तुझसे प्यार किया, तुझ पर विश्वास किया और तूने अपने को एक वेश्या के हाथ वेच दिया।

इसके जवाव में चरण ने कहा — हे भगवान, विश्वास करो कि मैंने कोई पाप नहीं किया, मैंने उस लड़की से प्यार किया है। जहाज में मिले उस सज्जन के वारे में मैं सोचता हूँ। उनकी हड्डियों के ढांचे से निकल कर प्राण कहाँ चले गये ? किस असीम की खोज में उनकी आत्मा भटक रही है ? मैं और भी एक जने के बारे में सोचता हूँ। वह हैं नारायण। उस तूफान की रात को वे भुन्नू की गाड़ी से न जाने कहाँ चले गये, किस असीम की खोज में ! शायद वे अपने दुश्मनों के चंगुल से निकल गये होंगे। मैं अपने मालिक लाट साहव भजन के बारे में भी सोचता हूँ। भले ही वे मुझे बात-वात पर थप्पड़ लगाया करें और भरपूर खाने-पहनने को दें, फिर भी मैं चाहता हूँ कि शराव पी-पी कर वे अपने को गला न डालें। श्रीमती काफे के वारे में भी मैं सोचता हूँ। उसकी दीवार में कहीं कोई धब्बा न लग जाय। उसका कौन-सा सामान गाहकों को पसंद आया और कौन-सा नहीं, ऐसी हर छोटी-मोटी वात पर मुझे ध्यान रखना पड़ता है। ऐसा किये विना मेरा खाना नहीं पचता।

मैं उस लड़की के वारे में भी सोचता हूँ। जव मैं सोचता हूँ कि शाम को उसकी कोठरी में कोई मर्द घुसा है तो घृणा और अपमान से मेरे रोंगटे खड़े हो जाते हैं। जब मैं सोचता हूँ कि किसी ने उसके शरीर को दवोच लिया है तो मेरे सारे वदन में मानो सुइयाँ चुभने लगती हैं और मैं मलेरिया के मरीज की तरह हाँफने लगता हूँ। मुझे बस यही एहसास होता है कि यह तो मैं वरदाश्त नहीं कर सकता। क्या जिंदगी का यह कानून किसी तरह नहीं वदल सकता ? लेकिन मुझे अपने आगे सिर्फ अँधेरा ही नजर

आता है । लेकिन उस अँधेरे मे भी देखने की कोशिश की तो सब कुछ साफ़ नजर आने लगा है । क्या इस जिंदगी का अँधेरा भी कभी साफ नहीं होगा ?

भजन थक कर चूर हो चुका है । ऐसी थकावट उसे कभी नही आयी ।

एक दिन रमिया आयी ।

"नमस्ते बाबू जी !"

रमिया शिष्टाचार नहीं भूली है । वह अब भी नमस्ते कहती है । अब भी भले लोगों से बातचीत करने मे वह अपनी भाषा नहीं बोलती । अब भी उसके चेहरे पर और चाल-चलन में शालीनता और नम्रता है ।

भजन अपनी दुनिया में खोया हुआ है । फिर भी उसने आँखें खोली । उसने अपने सामने रमिया को देखा ।

रमिया के कपडे-लत्ते पहले से ज्यादा गंदे हो चुके हैं । लगा कि अब वह नियम से बाल नहीं धोती । पहले से वह ज्यादा दुबरा गयी है । आँखें धँसी हुई हैं । गोद मे काले बिलार जैसा कई माह का बच्चा है ।

भजन ने कहा, "कौन ? रजकी रामी ?"

रमिया रजकी रामी का मतलब नही समझती । फिर भी उसने कहा, "जी हाँ ।"

"तेरी गोद में वह कौन है ?"

रमिया का चेहरा हँसी से झलमलाने लगा । वह हँसी लज्जा, वेदना, आनंद और गौरव का है । शायद यही हँसी हीरेन देखना चाहता था । लेकिन उस समय रमिया के पास यह हँसी कहाँ थी ? फिर उसने कहा, "मेरा बच्चा है बाबू जी !"

"अच्छा !" भजन ने आश्चर्य से कहा और पूछा, "लेकिन तेरी शादी कब हुई, पता भी नहीं चला ?"

बच्चे की तरफ देखते हुए रमिया ने कहा, "शादी नही हुई बाबू जी, सरपंच की राय से पंचायत को बीस रुपये दे दिये । एक मर्द मुझसे मुहब्बत करता था ।"

शरमा कर रमिया ने मुँह फेर लिया ।

मुहब्बत ! भजन को हीरेन का चेहरा याद आया । क्या इसी लिए उस दिन हीरेन उस तरह रोया था ? शराब पी थी ? फिर भजन ने बच्चे की तरफ देखा । स्नेह भरी आँखों से देखा । फिर उसने मुस्कराते हुए दराज से एक रुपया निकाल कर रमिया को दिया और कहा, "ले, तेरे बेटे की मुँह दिखाई ।"

रमिया ने वह रुपया बच्चे की शिथिल मुट्ठी मे देते हुए प्यार से कहा, "ले, लाट साहब ने दिया है । चूहा कहीं का ! मेरे कल्लू लाल !"

बच्चे को प्यार करने के बाद रमिया हँसने लगी । भजन भी हँसने लगा ।

दोनों की हँसी की गूँज से श्रीमती काफे में बैठे लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ । वे लोग भी एक-दूसरे को देख कर मुस्कराने लगे ।

फिर रमिया ने अचानक पूछा, "बाबू जी, वह बाबू जी कब जेल से छूटेंगे ?"

"यह तो वता नहीं सकता ।"

रमिया की आँखें भर आयीं । वह देर तक उस जगह की तरफ देखती रही, जहाँ हीरेन वैठता था । आजकल रमिया सूत नहीं कातती । आजकल वह अक्सर नशा करती है और मर्द से मार खाती है । वह भी मर्द को मारती है । फिर दोनों एक-दूसरे से लिपट कर रोते हैं । लेकिन रमिया अपने हीरेन वावू जी को कभी भूल नहीं सकती । रमिया आज भी नहीं समझ पाती कि हीरेन वावू जी ने उससे क्या चाहा था । वह वावू जी को नहीं समझ सकी । उसके पास कोई ऐसी चीज नहीं है, जो वह वावू जी को नहीं दे सकती । आज भी वह आँखें वंद कर सोचती है तो उसे ऐसा लगता है कि वावू जी ने उसके अंतर की वंद कोठरी के दरवाजे पर वड़े जोर से दस्तक दी थी । लेकिन उसने दरवाजा नहीं खोला था ।

वच्चे को छाती से चिपका कर आंसू पोंछती हुई रमिया चली गयी ।

श्रीमती काफे के सामने से कभी-कभी सरसी पैदल जाती है । वह अकेले होती है । लोग उसकी तरफ देखते रहते हैं । वे सोचते हैं कि इस महिला में साहस है । इस इलाके में भले घर की कोई स्त्री सज-धज कर अकेले वाहर नहीं निकलती । इसलिए सरसी लोगों के मन में विस्मय भी पैदा करती है ।

सरसी जव भी इधर से जाती है, श्रीमती काफे की तरफ निगाह उठा कर देखती है और दीर्घ नि:श्वास छोड़ती है । अव भी उसे सुनिर्मल का पूरा परिचय नहीं मिला ।

हीरेन की भाभी कई दिन जेल में थीं । अव वे फिर अपने घर के जनानखाने में पहुँच गयी हैं । कभी-कभी वे वंद घोड़ागाड़ी से इधर से कहीं जाती हैं, तो गाड़ी की खिड़की एक वार खोल कर श्रीमती को देख लेती हैं । इस सड़क को भी देख लेती हैं । इसी सड़क पर उनके जीवन की सब से अद्भुत घटना घटी थी ।

टेवुल पर मुंह रगड़ते हुए भजन वड़वड़ाने लगा । लगा कि वह नशे में चूर है । कर्कश पर मीठी आवाज में उसने फारसी काव्य का एक छंद पढ़ा । लेकिन दूसरे ही क्षण उसके गले से ऐसी आवाज निकली कि मानो लोहे का दरवाजा चीख कर वंद हुआ । भजन भी खामोश हो गया ।

इस समय स्टेशन के सामने लोग कम रहते हैं । इसलिए यह इलाका उस मुसाफिर की तरह लगता है जो चैत की दुपहरिया में खिन्न उदास हो कर धीरे-धीरे लंवी सांस छोड़ता है । लेकिन भजन को लड़खड़ाती आवाज देर तक हवा में गूंजती रही । लगा कि उससे अरव के किसी मरुद्यान का कोई कुंज हिल उठा ।

दक्षिणी पवन में गरमी का आभास है । प्रखर सूर्य के कारण मेघ-मुक्त नीला आकाश कांच का शामियाना जैसा लग रहा है ।

स्टेशन के चवूतरे पर वैठा एक उत्तर भारतीय कुली कानों में उँगली डाल कर

गाने लगा है। पतली आवाज में उसका गाना ऐसा लग रहा है कि कोई स्त्री रोने लगी हो। इस गाने मे सुर-ताल-लय नाम की कोई चीज नही है। सिर्फ रुलाई जैसी एक आवाज अविराम निकल रही है। इस आवाज में चैत की दोपहरी की थकावट है। इसलिए दोनो घुलमिल रही हैं, और यही उस गीत का माधुर्य है। एक उत्तर भारतीय सिपाही ध्यान से उस गीत को सुन रहा है।

कुट्टी पगला उसी चबूतरे को धूल में इस तरह लेटा हुआ है कि मानो कोई राजा राजमहल मे पलंग पर लेटे हुए हों।

इस समय ट्रेनें कम आती हैं, इसलिए शोर-शराबा कम है। शेड के नीचे कई कुली, मुसाफिर और भिखमंगे सो रहे हैं।

यार्ड से लूज शंटिंग की धम-धम आवाज आ रही है। रुक-रुक कर कहीं से कोई वासंती चिड़िया विरह-गीत भी सुना रही है।

चरण भी ऊँध रहा है। आलू उबालने के लिए भट्टी पर देग चढ़ा कर वह घुटनों पर सिर रख कर बैठ गया तो अब ऊँघने लगा।

घड़ी ने टन-टन कर दो बजाये। भजन ने अपनी धुन में सिर उठा कर कहा, "कौन है ?"

लेकिन कहीं कोई नही है।

भजन के लिए यह घड़ी बड़ी प्यारी है। पहले वह कहता था — जब यह घड़ी बजती है तब ऐसा लगता है कि कोई रहस्यमयी हँस रही हो। मानो पानी के नीचे से गुणमयी की हँसी की गूंज उठ रही हो।

लाल-लाल भूरी आँखों से एक क्षण उस दीवार घड़ी को देख लेने के बाद भजन धीरे-धीरे खांसने की तरह हँसा और लड़खड़ाती आवाज में बोला —

"दुनिया के कितने कामों में
नूपुर तुम्हारे पाँवों के बजने लगे।
आँखें उठा कर देखूं, वह फुर्सत कहाँ ?
हर काम का आदमी बेहूदा है।"

फिर दिल खोल कर हँसते हुए भजन ने हलके स्वर मे कहा —

"फिर साकी, तू भर प्याला,
कर दे मुझको मतवाला।"

अचानक भजन रुक गया। उसे लगा कि कोई लड़की गर्दन टेढ़ी करके उसकी तरफ कनखियों से देखते हुए मुस्करा रही है। कौन है वह लड़की ? सांवला रंग, सिर में ढेर सारे बाल और मजबूत काठी। कौन है वह ? अरे, वह तो रोने लगी ! कई बच्चों को दोनों हाथों से सँभाले खड़ी है और रो रही है।

अरे ! वह तो जूही है। और ये बच्चे गौर, निताइ और...

उसके बाद और एक जने हैं भैया नारायण। अरे ! तमाम लोग हैं प्रियनाथ, बंगाली, हीरेन, रमिया और न जाने कौन-कौन ! अचानक भजन का दिमाग मानो

खराब होने लगा। उसने सोचा — यह सब क्या है ? ये लोग मुझे क्यों घेरे हुए हैं ? क्या ये सब पिछले जनम के लहनदार हैं ?

भजन अचानक चिल्लाया, "चरण !"

चरण चौंक कर दौड़ता हुआ आया। लेकिन किसने बुलाया ? भजन तो टेबुल में उसी तरह मुँह गाड़े पड़ा है। हाँ, भजन जिंदा है। उसकी छाती धड़क रही है।

अचानक चरण को बड़ा गुस्सा आया। आजकल अक्सर उसका मन यहाँ से चले जाने को करता है। खाना बनाने में उसका नाम हो गया है। इसलिए आसपास के कई होटल मालिकों ने उसे अधिक तनखाह पर बुलाया है।

लेकिन चरण कहीं नहीं गया। घर छोड़ कर जाते समय निमाइ को भी यही हालत हुई थी — जाने को मन करता है, लेकिन जा नहीं सकता। लेकिन निमाइ घर छोड़ कर गये थे और चैतन्य महाप्रभु बने थे। चरण वैसा कुछ नहीं कर सका। आखिर वह कैसे जाता ? उसे तो इस दुकान से प्यार है, मालिक भजन से प्यार है।

भजन ने फिर हाँक लगायी, "अरे हरामजादा !"

"जी, मैं तो यहीं हूँ।"

"कहाँ रहते हो लाट साहब के बच्चे ?"

इतना कह कर भजन ऐसे उठा कि मानो चरण को मार देगा। लेकिन धोती के छोर से जमीन पर मानो झाड़ू लगाता हुआ वह चरण के पास से बरामदे में चला गया। वहाँ पहुँच कर उसने हाँक लगायी, "ओ भुन्नू सारथी ! बुला रहा हूँ और तुम सुन नहीं रहे हो ?"

भजन के चिल्लाने से स्टेशन के चबूतरे पर सो रहे कुलियों और मुसाफिरों की नींद खुल गयी। नाराज चेहरा लिये इधर देख कर मन ही मन गाली देते हुए वे फिर ऊँघने लगे। कोचवानों में से भी कुछ ने इसी तरह मन ही मन गाली दी। बेजान घोड़ों ने कीचड़ भरी आँखें मिचकायीं, कान हिलाये और बदन की चमड़ी सिकोड़ कर अँगड़ाई सी ली।

भुन्नू नशे की खुमारी में गाड़ी के अंदर दोनों तरफ की सीटों के बीच पेट रख कर लेटा हुआ है। उसके दोनों नये घोड़े छोटे और ज्यादा रोयेंदार हैं। इनमें भी एक नर और दूसरी मादा है। भुन्नू ने इनके भी नाम राजा-रानी रखे हैं।

लेकिन इस भरी दुपहरिया में कोई सवारी नहीं है, इसलिए पैसा मिलने की भी कोई उम्मीद नहीं है। ऐसे मौके पर भजन का इस तरह बुलाना भुन्नू को बुरा लगा। उसने चिढ़ कर भारी आवाज में पूछा, "क्या कह रहे हैं ?"

भजन ने हाथ झटक कर कहा, "बस, बढ़ाये चलो !"

बढ़ाये चलो ! भुन्नू भजन को इतने दिनों से देख रहा है, लेकिन वह भजन की बातों का मतलब नहीं समझ पाता। यों तो भजन की बातों का मतलब कोई भी नहीं समझ सकता। बहुत से लोग नशा करते हैं, लेकिन उनकी बातें समझ में आती हैं। लेकिन भजन की बातें ऊपर वाला ही समझ पाता होगा। नरायन ठाकुर की भी बातें

भुन्नू समझ लेता है। बंगाली को तो भुन्नू अपना भाई मानता है। फिर भी बंगाली कभी-कभी भुन्नू के मन में न जाने कैसा गुस्सा पैदा कर देता है। वह गुस्सा किस पर होता है, यह भी भुन्नू नही समझ पाता।

स्वदेशी आंदोलन के चलते भुन्नू ने मुनिर्मल को नाली के पास से उठाया था। फिर नरायन ठाकुर को ले कर वही हाड़मुंडी के पुल तक गया था। जान जोखिम मे डाल कर उसने दोनों काम किये थे। उस समय भी उसमें गुस्सा आया था। लेकिन उस गुस्से का एक मतलब था। वह गुस्सा था पुलिस पर। बंगाली नौकरी करता है, लेकिन उसका पेट नही भरता। इसलिए ज्यादा रोटी की मांग करते हुए वह अपने मालिक पर गुस्सा कर सकता है। लेकिन भुन्नू का मालिक तो भगवान है! सवारी मिली तो रोजगार हुआ, नही तो सब बेकार। इसलिए भुन्नू किस पर गुस्सा करेगा? फिर भी उसे गुस्सा आता है।

भुन्नू लाट साहब भजन को समझ नही पाता। खैर, वह समझना भी नही चाहता। लेकिन इस दोपहर मे भजन ने चिल्ला-चिल्ला कर उसे जगा दिया, इसलिए उसका मिजाज गरम हो गया। अगर कोई मुसाफिर होता और नगद नारायण मिलने की उम्मीद रहती तो किसी तरह मिजाज को ठंडा रखा जाता, लेकिन यह बेमतलब का हो-हल्ला कौन बरदाश्त कर सकता है?

अभी कल ही तो भुन्नू को घोडे के बकमुए के चालीस घुंघरू और सिर के साज बेचने पडे। टेंट में पैसा नही था, तभी तो ऐसा करना पडा। इस पर मनिया ने उसका मजाक उडाया। वह रात-दिन कहती रहती है कि तुमने दूसरों की खिदमत करने के चक्कर में पहले के दोनों घोड़ों को मार डाला है।

यही सब सोच कर भुन्नू फिर दोनों सोटों के बीच पेट रख कर लेटने का इंतजाम करने लगा तो भजन चिल्लाया, "अरे, ओ भुन्नू सारथी, बढाये चलो। तुम देखते नही कि द्रोणाचार्य किस तरह लड रहे हैं। उस बूढ़े के चेहरे पर मौत की हँसी है!"

साला शराबी कहीं का! मन ही मन बड़बड़ाते हुए भुन्नू ने गाड़ी के अंदर से हाथ निकाल कर मुंह से विचित्र आवाज की। नये राजा-रानी भुन्नू का संकेत समझ गये। वे हरकत में आ कर धीरे-धीरे दक्खिन वाला मोड़ पार कर सीधे अस्तबल की तरफ चले।

इस शोरगुल से स्टेशन के चबूतरे पर सोया एक मुसाफिर जाग गया। वह बेवकूफ की तरह भजन को देखता रहा। भजन ने उसी की तरफ देख कर मुस्कराते हुए कहा, "लड़ाई खतम हो गयी!"

दुनिया भर में मंदी है। वही मंदी अवसाद बन कर भुन्नू पर छाने लगी है। स्वदेशी आंदोलन के दौरान भुन्नू पगला गया था। न जाने कैसे उसके मन में यह विश्वास घर कर गया था कि देश भर में कुछ होने जा रहा है। अगर स्वराज हो गया

तो क्या होगा, यह सब भुन्नू नहीं समझता था। लेकिन जब इतने पढ़े-लिखे और ईमानदार लोग बिगड़ गये हैं, तब जरूर कुछ होना चाहिए। लेकिन क्या होना चाहिए, भुन्नू नहीं समझता था। फिर भी उस नासमझी में उत्तेजना थी, आशा थी। लेकिन उसके बाद काफी समय गुजर गया। कहीं कुछ हुआ, ऐसा तो भुन्नू को नहीं लगता।

मन थका हुआ है, फिर भी भुन्नू लाट साहब भजन की बात भूल नहीं सकता। वह भजन को समझ भी नहीं सकता। फिर भी भजन ठाकुर के लिए उसके मन में न जाने कहाँ दर्द छिपा हुआ है। भजन शराबी है तो क्या हुआ, पढ़ा-लिखा और शरीफ है। यहाँ के शराबी बाबू लोगों की तरह वह रंडियों के पीछे नहीं भागता। भुन्नू की गाड़ी से वह कभी भी और बाबुओं की तरह मौज-मस्ती के चक्कर में सैर-सपाटे के लिए नहीं जाता। फिर उसकी तरह कौन ऐसा है जो भुनू को खींच कर गले से लगा ले! यह सब तो लाट साहब भजन ही कर सकता है। कोई भी बाबू किसी कोचवान से दोस्ती नहीं करता, लेकिन भजन बाबू करता है। चार पैसे की जरूरत होने पर कोई बाबू नहीं देता, लेकिन भजन बाबू देता है। ऐसा वह दरियादिल है। इसी लिए भुन्नू उसके लिए सोचता है।

भुन्नू अपनी गिरस्ती के बारे में सोचता है कि वह तो उस बर्तन की तरह है जो ऊपर से टूटा और नीचे से छेदहा है। उस गिरस्ती को ले कर रात-दिन की परेशानी तो है ही। इसी लिए गाड़ी का कोई पहिया टूटता है या किसी सीट का गद्दा फटता है तो भुन्नू को सिर पकड़ कर बैठना पड़ता है। राजा-रानी मर गये तो उसी को भिखारी बनना पड़ा। हाँ, भजन ठाकुर ने रुपया देना चाहा था, लेकिन भुन्नू ने नहीं लिया। आखिर वह रुपया क्यों लेगा? क्या रुपये के लालच में उसने नरायन ठाकुर को हाड़मुंडी के पुल तक पहुँचाया था? फिर नरायन ठाकुर ने सोना देना चाहा तो उसने नहीं लिया। क्या रुपया लेने के लिए उसने वैसा किया? भुन्नू कोचवान हो सकता है, लेकिन ईमानदारी भी तो कोई चीज है! इसी लिए भुन्नू को कर्ज लेना पड़ा और मनिया के बदन के चांदी के सारे गहने बेचने पड़े। घर की तमाम बिकने लायक चीजें बेचनी पड़ीं। मनिया को आज भी इसके लिए गुस्सा है।

लेकिन भजन ठाकुर की तकलीफ को भुन्नू नहीं समझता। उसी तरह वह अपनी बीबी मनिया को भी पूरी तरह नहीं समझ पाता। खटारा घोड़ागाड़ी के कोचवान भुन्नू के मन में अपनी खूबसूरत बीबी के लिए न जाने कैसे संदेह की आग बराबर सुलगती रहती है। भजन ठाकुर उसी औरत को पता नहीं क्यों मिनिलोसा कहता है! पता नहीं, इस लफ्ज का क्या मतलब है! मनिया के पेट की भूख को तो भुन्नू समझ सकता है, लेकिन उसके मन की भूख को नहीं समझ पाता। मन की भूख भी शायद शरीर की भूख हो। मनिया जिस तरह हर वक्त खाना पसंद करती है, उसी तरह वह चाहती है कि मर्द भी साथ रहे। इसी लिए भुन्नू को मनिया गोद की बच्ची जैसी लगती है, जो सिर्फ खाना और सोना जानती है। और भी एक बात की उसे भूख है, वह है चिड़ियों की तरह चहकने और फुदकने की भूख। हो सकता है कि यह उसका स्वभाव हो, चरित्र नहीं।

शायद इसी स्वभाव के कारण मनिया टेढ़ी हँसी हँस कर भुन्नू से कहती है कि कोचवान की बीबी कहलाना मुझे कतई पसंद नही ! लेकिन मनिया को क्या पसंद है, शायद वह खुद भी नही जानती। शायद वह इसी लिए मजाक में भुन्नू से कहती है कि देख लेना, किसी दिन मैं किसी के संग भाग जाऊंगी। नाराज होने पर मनिया ऐसा कहती है, लेकिन दूसरे ही क्षण वह खिलखिला कर हँसने लगती है। इससे भुन्नू की छाती मे दबी आग दूनी तेजी से भड़क उठती है।

भुन्नू यह सुन कर नाराज न हो तो मनिया पर उसका क्या असर पड़े, यह तो नहीं कहा जा सकता, क्योंकि भुन्नू ऐसी बात को हजम नहीं कर पाता। अगर यह मजाक है तो वह भुन्नू के बरदाश्त के बाहर है। फिर भी वह सही ढंग से नाराज नहीं हो पाता।

इसके अलावा मनिया को सब से बड़ी दोस्ती है। पड़ोस के छोकरे मनिया के रूप पर लट्टू हैं। मनिया का भी रुख कुछ ऐसा है कि अगर कोई मेरी खूबसूरती पर फिदा होता है तो हुआ करे ! फिर कौन ऐसी औरत है जो अपने प्रशंसकों को तरजीह नही देती।

लेकिन एक बात है। मनिया में किसी तरह का लालच नही है। इसका कारण यह है कि अंदर से उसे कोई अभाव नही है। शायद इसी लिए उसकी चंचल आंखो की पुतलियाँ हर घड़ी नये अंदाज मे नाचती रहती हैं। इस तरह देखा जाय तो बाहर की जिंदगी मे भुन्नू नायक है तो घर की जिंदगी मे मनिया नायिका।

भुन्नू को पाने पर मनिया सब कुछ भूल जाती है। जिसको पाने पर वह सब कुछ भूल जाती है, फिर उसी के प्राणो मे वह हर घड़ी डंक मारती रहती है। ऐसे विचित्र नारी चरित्र का हाल शायद उस नारी का अंतर्यामी ही जानता है।

यह सब कुछ होते हुए भी भुन्नू का जीवन छोटे से घेरे मे नही बंधा है। कोचवान होते हुए भी उसके सोचने-समझने का दायरा बडा है। इसलिए काम के वक्त या फुर्सत के वक्त जब भी वह ज्यादा सोचने लगता है, अपने मिजाज को ठंडा नहीं रख सकता। अगर मनिया सचमुच बुरी है, तो भी मनिया के बगैर उसकी जिंदगी की गाड़ी नही चल सकती।

ठीक है, मेरी जिंदगी का रंग-ढंग ठीक नही है, इसमें कोई मजा नहीं है, लेकिन भजन ठाकुर का यह हाल क्यो है ? भुन्नू सोचता है। लंबे सड़क पर भजन ठाकुर का कैसा बढ़िया मकान है, स्टेशन के सामने कितना अच्छा होटल है, फिर भी वह न जाने क्यों परेशान रहता है। होटल नही, चाय की दुकान भी नही, उसका अजीब-सा नाम है 'सिरीमती काफे' ! खैर, उसका नाम कुछ भी हुआ करे और लोग उसे चाहे जिस नाम से पुकारे, लेकिन है तो दुकान अच्छी। आजकल दुकानो के नाम भी मजेदार होने लगे हैं। सदन साहू ने अपनी सत्तू की दुकान का नाम रखा है 'राम-लक्ष्मण भंडार' ! खैर, नाम से क्या आता-जाता है ! है तो वह सत्तू की दुकान ही, वहाँ सत्तू ही मिलता है, राम-लक्ष्मण नही मिलते। लेकिन भजन ठाकुर की दुकान मे ग

कितनी अच्छी-अच्छी चीजें बनती हैं। उन चीजों के दाम भी बहुत हैं। भुन्नू अक्सर वह सब खाता है। भजन ठाकुर उसे बुला कर खिलाता है। इसलिए उस दुकान का नाम 'सिरीमती' हो गया है।

इसके अलावा भजन ठाकुर की दुकान देखने में कितनी अच्छी है। कोई देखे तो थोड़ी देर देखता रह जाय। लेकिन उस दुकान में गणेश जी की मूर्ति है या नहीं कहा नहीं जा सकता, कम से कम भुन्नू की निगाह में कभी नहीं पड़ी।

भजन ठाकुर के घर की खबर अलबत्ता भुन्नू नहीं रखता। भजन ठाकुर के बाल-बच्चों के बारे में भी वह कुछ नहीं जानता। हाँ, उसके बाप हालदार बाबू को भुन्नू ने देखा है। हालदार बाबू मकान के बाहर वाले बरामदे में दिन भर आरामकुर्सी पर पड़े रहते हैं। बूढ़े हो गये हैं न! वे एकटक सामने की तरफ देखते रहते हैं। उनकी आँखों की दृष्टि कुछ धुंधली लगती है। शरीर उनका मजबूत ही लगता है, लेकिन वह कुछ बिना डाल-पात का सूखा दरख्त जैसा!

भुन्नू को भजन ठाकुर की गिरस्ती खुशहाल ही लगती है। फिर भी उसे लगता है कि भजन ठाकुर के दिल में कहीं आग सुलगा करती है। वह आग कैसी है, यह भुन्नू नहीं समझ पाता। हाँ, भजन ठाकुर की जबान पर हर घड़ी दो बातें सुनने को मिलती हैं — 'चलाये जाओ' और 'जलाये जाओ'! हर वक्त उसमें न जाने कैसी बेचैनी है। लगता है कि उसके अंदर तूफान छिपा हुआ है। इसी लिए वह हर चीज से चिढ़ता है और कुछ भी उसे बरदाश्त नहीं होता। भुन्नू शायद इतनी सारी बातें भी नहीं समझता, लेकिन वह भजन ठाकुर के दिल की जलन को समझ सकता है। शायद उसी जलन के मारे वह हर बात में जल्दबाजी करता है और खुद भी भागता-फिरता है।

एक बार भुन्नू ने सोचा था कि भजन ठाकुर शायद मेरी खूबसूरत बीबी से मुहब्बत करने लगा है। इसका कारण यह है कि उन दिनों भजन अक्सर भुन्नू की बीबी 'मिनीलोसा' की बात करता था। खैर, वह अब भी करता है। इसलिए लाट साहब भजन जैसा आदमी जब एक कोचवान की बीबी के बारे में इतनी बातें कहता है तो यह समझना चाहिए कि बाबू का मन डोलने लगा है। ठोकर खा कर भुन्नू को यह सबक मिला है। बात सही है कि छोटे घर में भी रूप है, लेकिन बड़े घर के रूप से वह अलग ही होता है। छोटे घर के रूप को धूल-मिट्टी और गरीबी में रहना पड़ता है, लेकिन बड़े घर के रूप पर ऊपर से पालिश भी चढ़ाई जाती है। फिर एक कोचवान के घर का रूप तो साफ-सुथरे फूलदान का फूल नहीं है। इसलिए स्टेशन के हेड टिकट कलक्टर से ले कर पास-पड़ोस के शरीफ घरों के पढ़े-लिखे, अनपढ़ और आवारा छोकरे, यहाँ तक कि बस्ती के मालिक बड़ी-बड़ी लाल आँखों वाले उस चंडूल तक तमाम लोग भुन्नू की बीबी मनिया के पीछे पड़े रहते हैं। जमींदार प्रसन्न चटर्जी जैसा कुछ नाम है उस चंडूल का।

भुन्नू के अस्तबल के पास ही नाड़ू पंडित की गली है। नाड़ू पंडित की गली का नाम लेते ही इस कस्बे के लोग समझ जाते हैं कि वहाँ वेश्याएँ रहती हैं। उसी

गली में जब वे छोकरे और वे लोग जाते हैं तब वे उस गली के पास ही रहने वाली मनिया को उन कोठेवालियों से अलग करके नहीं देख सकते।

इसके अलावा पंडितों का कहना है कि नर्तकियाँ और वेश्याएँ स्वर्ग में भी हैं। देवताओं को भी उनकी जरूरत पड़ती है। इसी लिए उर्वशी और मेनका पैदा होती हैं। फिर उनके पास रूप का ऐसा खजाना होता है जो किसी एक के हृदय में समा नहीं सकता, और समा भी जाय तो शोभा नहीं देता। इसी लिए उन स्वर्गकन्याओं को एकाधिक हृदयों की जरूरत पड़ती है। अगर देवलोक में ऐसी बात है तो मनुष्यलोक में क्यों न हो!

इसी लिए भुन्नू जब ज्यादा ताड़ी पी लेता है और उसे मनिया का मुस्कराता हुआ लाखों मे एक चेहरा याद आता है, तब उसके कलेजे में न जाने कैसा तनाव पैदा होता है और वह समझने लगता है कि यह संसार ही सपना है। तब उसे लगता है कि मैंने तो आसमान की चिड़िया को अपने गंदे पिंजड़े मे बंद करके रखा है। वह सोचता है कि मनिया तो रानी बनने लायक औरत है। उसके लिए तो राजाओं मे लड़ाई होनी चाहिए। उसके लिए तो बहुत कुछ होना चाहिए। वह तो बहुतों के लिए है, किसी एक के लिए नहीं। एक कोचवान तो उसके आगे उसकी कृपा का भिखारी बन कर ही जा सकता है।

लेकिन भजन ठाकुर के मामले मे भुन्नू को थोड़ा संतोष भी है। भजन ठाकुर भुन्नू की बीवी 'मिनीलोसा' की बात तो करता है, पर वह बात और लोगों की बातों की तरह नहीं होती। भजन ठाकुर जिस तरह घोड़े, अपने होटल और गाहकों के बारे में बात करता है, उसी तरह 'मिनीलोसा' के बारे मे भी — उससे अधिक नहीं।

भुन्नू को लगता है कि भजन ठाकुर को बाहर से जितना देखा जा सकता है, वही सब कुछ नहीं है। उसके अंदर भी कुछ है जो बाहर से दिखाई नहीं पड़ता, लेकिन उसके ऊल-जलूल काम-काज में उसका आभास मिलता है। इसी लिए भुन्नू भजन को पूरा तरह नहीं समझ पाता।

गाड़ी अस्तबल के पास आ कर खड़ी हो गयी। अस्तबल का दरवाजा बंद है। भुन्नू गाड़ी से उतर कर दरवाजा खोलने चला तो दरवाजा खुल गया। घोड़े अपने आप अस्तबल मे चले गये। भुन्नू ने देखा कि बगल में मनिया खड़ी है। उसकी टेढ़ी आँखों मे सीधी निगाह है। उसने पूछा, "*क्या स्वराज की लड़ाई स्टेशन पर होती है?*"

यह कह कर मनिया ने दरवाजा बंद कर दिया।

भुन्नू ने पूछा, "क्यों?"

"इतनी जल्दी क्यों चला आया? क्या आज बहुत कमाई हुई है?"

भुन्नू का मिजाज गरम हो गया। उसने कहा, "तुझसे मतलब?"

इस बात का कोई जवाब दिये बिना मनिया भुन्नू की टेंट टटोलने लगी। भुन्नू थोड़ा हट कर खड़ा हो गया और बोला, "क्या बात है, बता न?"

"कुछ नहीं।"

यह कह कर मनिया ने भुन्नू की टेंट से पांच आने पैसे निकाल लिये। पैसा पा कर वह खुश हो गयी और खिलखिला कर बोली, "इतना कमाया? वाह रे मेरा मर्द!"

भुन्नू को गुस्सा चढ़ गया। उसने कहा, "अच्छी मुसीबत में पड़ गया। स्टेशन पर साला लाट साहब है और घर में बेवकूफ औरत!"

मनिया फिर भी हँसती रही। बोली, "क्या लाट साहब ने तुझे भगा दिया? उनसे क्यों नहीं पैसा मांग लाया?"

हर बात मनिया की चुभने वाली होती है। लेकिन उसकी कनखियों में मन को मोहने वाली मुस्कराहट छिपी रहती है।

भुन्नू बाहर निकलने लगा तो मनिया ने उसको पकड़ कर खींचा। फिर थोड़ी देर दोनों में खींचा-तानी होती रही।

आश्चर्य है! मनिया मानो छोटी बच्ची है। वह उसी तरह बात और उसी तरह काम करती है। अचानक रोना शुरू कर उसने कहा, "ऐसा करेगा तो मैं जान दे दूंगी।"

भुन्नू ने कहा, "ठीक है, अभी जा।"

मनिया बोली, "तू भी चल।"

अब भुन्नू को हँसी आ गयी। वह हैरान हो कर मनिया को देखने लगा। इस हुस्न और इस नखरे का वह मतलब नहीं समझ पाता।

इसी तरह भुन्नू लाट साहब भजन को नहीं समझ सकता। चार हरी मिर्च के संग चार रोटियां खा कर मनिया इसी तरह हँसी-मजाक कर सकती है। इसलिए भुन्नू उसे समझ नहीं पाता। ऐसा भी दिन गुजरा है कि रोटी नहीं मिली, लेकिन वह इसी तरह भुन्नू को ले कर हंसती रही। बस, उसको कोई बहाना मिल जाय और वह हँसती रहेगी। हां, उसको कुछ न कुछ चाहिए। यही हाल है लाट साहब भजन का और बंगाली का। भुन्नू ने सोचा, अरे मुझको भी तो कुछ चाहिए। मुझे भी तेज-तर्रार दो घोड़े चाहिए और दिन भर ढोने के लिए सवारी।

भुन्नू ने पूछा, "फिर क्या हुआ? क्यों रोने लगी?"

"रोऊँगी। मेरी खुशी!"

"क्यों?"

"तूने मरने के लिए कहा है।"

"मैंने कब कहा? अगर कहा है तो मजाक में कहा होगा।"

मनिया के आंसू सूख गये। वह बोली, "तुझे दिन भर घर में रहना होगा।"

"क्यों?"

"अकेले में मुझे डर लगता है।"

"कैसा डर?"

"आदमी का।"

इतना कह कर मनिया सचमुच रोने लगी। फिर जरा रुक कर वह बोली, "तू कुछ भी नहीं समझता।"

यह मनिया की नखरे की रुलाई नहीं है। मनिया अकेली नहीं रह सकती। हर किसी आदमी का नहीं है, उसे कुछ चाहिए। वह कुछ करना चाहती है। उसके अंदर अजीब ख्वाहिश उमड़-घुमड़ रही है। कभी-कभी उसका मन करता है कि भुन्नू को घर में रख कर मैं ही गाड़ी ले कर निकल पड़ूँ। अकेलेपन में उसका दम घुटने लगता है।

थोड़ी देर चुप रहने के बाद भुन्नू ने कहा, "अच्छा चल, इटागढ़, बड़े भाई के पास।"

बाहर चलने की बात सुन कर मनिया खुशी से उछल पड़ी। बोली, "सच ?"

"हाँ।"

"फिर अभी तक क्यों नहीं कहा ?"

मनिया घर के अंदर भागी।

भुन्नू बेवकूफ सा मुस्कराता हुआ वहीं खड़ा रहा। इस अजीब दुनिया का मतलब भुन्नू नहीं समझता। एक मिनट पहले भी उसने कहीं चलने की बात नहीं सोची थी।

स्वयं अपने ऊपर भुन्नू को गुस्सा आने लगा। अपने मन को भी वह नहीं समझ सकता। शायद नहीं समझ सकता, इसी लिए वह चुपचाप अस्तबल से निकला। सड़क पर पहुँच कर वह धीरे-धीरे चलने लगा।

दोपहर बीत चुकी है। अब तीन बजने वाले हैं। भजन उसी तरह श्रीमती काफे के बरामदे में खड़े हो कर पागल की तरह बकता जा रहा है।

उसी समय भजन के दोनों बेटे एक दूसरे का हाथ पकड़ कर वहाँ पहुँचे। दूर से शराबी बाप को देख कर उनकी बड़ी-बड़ी आँखों में भय की छाया उतर आयी। बड़े लड़के में भय थोड़ा ज्यादा है। उसका नाम गौर है तो उसका रंग भी गोरा है। उसका चेहरा बाप के चेहरे से बहुत मिलता-जुलता है। लेकिन बाप का रंग-ढंग उसमें शायद नहीं है। उसके चलने-फिरने और हँसने-खेलने पर अधिक प्रभाव [illegible] गौर तेरह साल का हो गया है, लेकिन अब भी वह एक लड़की की तरह [illegible] है। उसके सभी मामा उसे बहुत चाहते हैं, इसलिए वह भी अपने ममिहर [illegible] लगाव रखता है। वह बाप से बहुत डरता है और भरसक बाप के सामने [illegible]

दूसरा भाई निताइ ग्यारह साल का है। वह माँ की तरह [illegible] वह स्वस्थ और बलवान है। लगता है कि उसको भी बड़ी-बड़ी [illegible] हुआ है। लेकिन वह डर नहीं, कौतूहल है। उसके हँसने [illegible] आवेग दिखाई पड़ता है। माँ की तरह उसके भी बाल [illegible] में सभी उसे ऊधमी कहते हैं। गौर से शुरू करके घर [illegible]

कोई भी निताई की पिटाइ से बच नहीं पाता। हँसना-रोना, जिद्द और गुस्सा, निताइ में सभी कुछ ज्यादा है। वह नटखट है, लेकिन अकपट गंभीरता उसी में ज्यादा है। वह ऊधम मचाता है तो गाना सुनने के लिए पागल भी बना रहता है। मानो वह स्वयं कोई सुर हो, गीत के अंतर में छिप. मूर्च्छना। मानो गीतों में अपने अस्तित्व को घोल कर वह सपना देखता है और हिलकोरे लेता है। उसमें भावना है, लेकिन बूढ़ों की तरह भावुकता नहीं है।

गौर की तरह निताइ अपने चारों तरफ की दुनिया से अलग-थलग नहीं रहता। सरस्त्रती जब्र भूगोल या विज्ञान के रूप में उसके सामने आती है तब वह बहुत डरता है। लेकिन वही सरस्वती जब छंदमयी कविता के रूप में होती है तब वह उसे बहुत भाती है। वह गौर से छोटा है, लेकिन वही उम्र में बड़ा लगता है। कुल मिला कर वह दुर्निवार है, लेकिन यह खाक दुनिया उसे ऊधमी ही समझती है।

जूही दिन भर चिल्ला-चिल्ला कर निताइ को डाँटती है, लेकिन रात को वही उसका चुम्मा लेती है। फिर नींद में निताइ की छाती को खाली करके जो लंबी साँस निकलती है, उससे मानो दिन भर में जमी उसकी सारी व्यथा खत्म हो जाती है। फिर उसी साँस को अपनी छाती में भर कर जूही लेटी रहती है। दूसरे दिन सवेरे निताइ की नींद खुलती है तो उसमें कोई दर्द या क्षोभ नहीं रहता, उसका मन निर्मल होता है। पिछले दिन की बात वह भूल जाता है। उसका हृदय नये खिले फूल की तरह तर व ताजा होता है, एकदम नवीन। क्यों ऐसा होता है, शायद वह खुद भी नहीं जान पाता।

फिर नया दिन शुरू होता है तो फिर वही पुराना क्रम भी। माँ फिर निताइ को डांटती है, दादा उसके कान उमेठते हैं, भाई-बहनों से उसका झगड़ा होता है और मुहल्ले का मरियल कुत्ता उसे अच्छा नहीं लगता। शराबी बाप का चिल्लाना उसे बुरा लगता है, आसपास के कुछ लोग भी उसे अच्छे नहीं लगते। लगता है कि कुछ लोग भूखे हैं और दिन भर खट रहे हैं। निताइ को यह सब कुछ भी अच्छा नहीं लगता। लेकिन यह सब क्या है, वह समझ नहीं पाता। उसकी उम्र भी यह सब समझने की नहीं है। इसलिए कुल मिला कर मानो उसकी छाती में बहुत गुब्बारा फूल उठता है।

ममियाउर से निताइ को खास लगाव नहीं है। इसलिए उसके मामा लोग भी उसे ज्यादा नहीं चाहते। लेकिन शक्ल-सूरत में वह 'नराणां मातुलाक्रम' है। भजन उसे ज्यादा चाहता है, इसलिए वह भी बाप से ज्यादा प्यार करता है।

दोनों भाई बाप के एकदम पास नहीं आये, दूर खड़े हो गये। थोड़ी देर बाद गौर ने धकेल कर निताइ को आगे करना चाहा तो निताइ ने भी उसका हाथ पकड़ कर जोर से खींचा। फिर दोनों भाई एक दूसरे को आगे करने के लिए धकेलने या खींचने लगे।

अब भजन की निगाह दोनों लड़कों पर पड़ी। वह लड़खड़ाती आवाज में चिल्लाया, "चरण !"

चरण ने पास आ कर कहा, "मालिक !"

आँखें बंद करके भजन ने कहा, "लाट के बच्चे खड़े हैं हरामजादा, उनको हाथ पकड़ कर यहाँ ले आ।"

एक-आध चपत पड़ने से पहले ही चरण आगे बढ़ गया। चपत की बात नहीं, चरण उन दोनों बच्चों को, खास कर गौर को बहुत चाहता है।

भजन ने दोनों हाथ फैला कर उन बच्चों को पास बुलाया, "आओ, मेरी आँखों के तारे, पास आओ।"

फिर अचानक बेसुरी आवाज में भजन ने लोकगीत के तर्ज पर गाना शुरू किया —

"आओ, दोनों भाई,
गौर निताइ
द्विजमणि द्विजराज हे !"

चरण दोनों बच्चों को ले कर आ गया। उधर शराबी भजन का तमाशा देखने के लिए सड़क पर और स्टेशन के चबूतरे पर निठल्ले लोगों की भीड़ लग गयी।

दोनों बच्चे पास आये तो भजन उनके आगे घुटनों के बल बैठ गया और 'लव-कुश' नाटक के राम की तरह कहने लगा —

"अरे ! अरे !! इस वन में क्या देख रहा हूँ !
दो निराले खिले फूलों की तरह
ये ज्योतिर्मय दोनों बालक कौन हैं ?
क्यों मेरे हृदय से बरबस
हाहाकार उठने लगा है ?
अरे ! तुम दोनों कौन हो,
बोलते क्यों नहीं ?
क्या तुम्हारा परिचय है ?
कौन भाग्यवान तुम्हारे पिता हैं।
और कौन तुम्हारी माता,
जिनकी गोद रोशन करने के बाद
इस वन में स्वर्गीय मुस्कान की तरह खिले हो ?"

बाप की हरकत देख कर शर्म से और गुस्से से गौर का चेहरा लाल हो गया। उसकी आँखों में आँसू आ गये। निताइ की आँखें गीली नहीं हुईं, बल्कि उसका बलिष्ठ बदन थोड़ा तन गया। उसने दूसरी तरफ मुँह फेर लिया।

चरण को भी गुस्सा आने लगा, लेकिन उसका गुस्सा किसी सुहागिन के अपने पति पर आये गुस्से की तरह है। भजन की हरकत देख कर उसे हँसी आ गयी। उसने धोती के छोर से मुँह दबा कर हँसी को रोकना चाहा तो गले से खाँसी की तरह आवाज निकली। अगर लाट साहब भजन उसे हँसते देख ले तो उसकी खैर नहीं। फिर उन

दोनों बच्चों के लिए उसके मन में दया उमड़ आयी। मालिक भजन शराब पी कर दूसरों के सामने ऊधम मचाये कोई बात नहीं, लेकिन बच्चों के सामने ऐसा क्यों कर रहे हैं ?

लेकिन भजन में एक बात का अद्भुत संयम है। उसने कभी अपने बच्चों को चपत तक नहीं लगायी। अगर कभी जूही ने बिगड़ कर भजन के सामने किसी बच्चे को हलकी-सी चपत भी लगा दी तो भजन ने नाराजगी जाहिर करने के बजाय व्यंग्य-बाणों से जूही का हृदय छेद दिया। जूही जैसी स्त्री के लिए वही काफी है। वह रो कर कहती है — क्या कोई माँ नाराज हो कर बच्चे को चपत नहीं लगाती ? क्या वह मारना-पीटना हुआ ?

बात तो सही है। भजन भी मान लेता है कि वह मारना-पीटना नहीं है। फिर भी वह कहता है — देखो निताइ की माँ, खुशबू देना जैसे फूल का दोष नहीं है, उसी तरह उसका झरना भी पेड़ का दोष नहीं है। फूलों की तरह ये बच्चे भी हैं। पीट कर अगर तुम उनका बचपना रोक सकती हो तो कोई बात नहीं, लेकिन बाद में तुम्हीं को सबक सीखना पड़ेगा।

वह तो सही है। फिर भी जूही जवाब दिये बिना नहीं रह सकती — सबक सीखना ठीक है, लेकिन अभी तो चैन मिले। जिंदगी भर तो सबक सीखती आयी, चैन न मिले तो कैसे जिंदा रहूँ ?

चलो, वही ठीक है। बाद के आराम से बड़ा अभी का चैन है। यही इस संसार का वेद-वाक्य है। कहाँ चल रहा हूँ, इसका ठिकाना नहीं है। लेकिन कदम रखते समय सिर्फ उस जगह को देख लेना जरूरी है। इसी लिए ज्यादातर चलने वालों के आगे भाँय-भाँय है तो पीछे हाय-हाय।

भजन के सीने में मानो कोई पागल जंगली जानवर गरज उठा। मन में आया कि सारी दुनिया को दोनों हाथों की मुट्ठियों में ले कर मसल डालूं। भजन चैन नहीं सुख चाहता है।

फिर भी आगे-पीछे का सब कुछ भूल कर भजन आकंठ शराब पीता है। अल्कोहल की तीखी क्षार से गले में और छाती में जलन होती है, जिगर जल जाता है और उसकी चेतना जवाब देने लगती है। बस, उसे इतना होश रहता है कि मैं लाट साहब भजन हूँ और श्रीमती काफे का मालिक। नहीं, नहीं, वह अपने को किसी का मालिक नहीं मानता। कभी वह श्मशान से अपनी जिंदगी का रास्ता तय करके लौटा था। उस दिन वह जहाँ से लौटा था, आज मानो फिर वहीं लौटा जा रहा है। आज वह अपने को बोझ ढोने वाला जानवर महसूस करता है। जिंदगी का बोझ उस पर लदा है। उस बोझ को वह उतार फेंकना चाहता है। इसका क्या मतलब है ? आत्महत्या ?

गौर को पास खींचते ही वह आ गया, लेकिन निताइ अपना शरीर कड़ा किये रहा। उसने दूसरी तरफ गर्दन मोड़ ली।

भजन ने प्यार करते हुए पूछा, "क्या हुआ है बेटा ? नाराज हो गये ?"

अब निताइ की आँखों में आँसू आ गये। उसने मानो चिल्ला कर कहा, "हाँ!"

भजन ने और भी धीमी आवाज में कहा, "ठीक है, फिर कोई बात नहीं।"

दूसरे ही क्षण निताइ बोला, "माँ ने आपको खाने के लिए बुलाया है। जल्दी चलिए।"

अचानक जूही का भूख से मुरझाया चेहरा याद आया और भजन को छाती में कहीं दर्द उठा। उसका नशा झटका खा गया। उसने अपने मन की आँखों से देखा कि पेट में भूख लिये घर का सारा काम कर चुकने के बाद अब जूही खाना ले कर अँधेरी गलियारी के सामने इंतजार कर रही है। शायद भौंहें सिकोड़ कर भजन यह देखने की कोशिश करने लगा कि जूही खुद तो नहीं आ रही है। लेकिन वहाँ, रास्ते के मोड़ पर कोई नहीं है, सिर्फ चैत के तीसरे पहर की धूप झिलमिला रही है।

शायद जीवन के रास्ते के उस दूर मोड़ पर भी सब कुछ मृगतृषा की तरह मिथ्या है, लेकिन उसकी झिलमिलाहट पथिक को आकृष्ट करती है। इस जीवन में जिसकी भी प्रतीक्षा की जाती है, क्या वह कभी आता है? फिर भी यह प्रतीक्षा क्या है? क्या वह भी दुनिया के तमाम नियमों में से एक है?

"चरण!" साफ आवाज में भजन ने कहा, "इनको कुछ खिला कर घर भेज देना।"

चरण ने सिर्फ कहा, "जी हाँ।"

फिर पलट कर बरामदे से उतरते समय भजन ने देखा कि उसी का तमाशा देखने के लिए वहाँ भीड़ लगी है। सब उसी की तरफ देखते हुए दाँत निकाल कर हँस रहे हैं। यह देखते ही वह चिल्लाया, "चरण!"

"जी हाँ।" चरण दौड़ कर आया।

तमाशबीनों की तरफ इशारा कर भजन ने चरण से कहा, "इन सब सालों से तमाशा देखने के चार-चार आने ले लेना।"

इतना कह कर भजन भीड़ की तरफ बढ़ा तो सब इधर-उधर भागने लगे। ठोकर खा कर एक-दो जने गिर पड़े। मानो कोई भयानक जीव उन लोगों की तरफ बढ़ रहा है।

भजन अपनी धुन में मुस्करा कर बोला —

"माँ! तू ने खूब हँसाया!
बच्चा कह कर गुड्डा दिया!"

फिर भजन ने चरण से कहा, "इन सालों पर थोड़ी शराब छिड़क दे।"

इतना कह कर भजन आगे बढ़ने लगा, लेकिन रुक गया। उसने देखा कि सब भाग चुके हैं, लेकिन एक लड़का खड़ा है। वह बेझिझक चुपचाप खड़ा है। उसके होंठ भिंचे हुए हैं। वह अपलक भजन को देख रहा है।

भजन ने उस लड़के से पूछा, "क्या नाम है तेरा?"

जवाब मिला, "कानू।"

"कानू ? बहुत अच्छा ! लेकिन तू क्यों नहीं भागा ?"

उस लड़के ने पलट कर पूछा, क्यों भागूंगा ?"

क्यों भागूंगा ? बात तो सही है। भजन ने मन ही मन कहा। फिर उसने पूछा, "तुम्हारा घर कहां है ?"

"ठाकुरपाड़ा।"

"पिता का नाम ?"

"श्री श्रीधर —"

भजन ने मानो उसकी बात लोक कर कहा, "चटर्जी ? अरे, तू तो दानव के घर में देवता है रे ! क्या तू गोश्त खाता है ?"

मानो थोड़ा असमंजस में पड़ कर उस लड़के ने कहा, "खाता हूँ।"

"अगर मैं खिलाऊँ तो खायेगा ?"

लड़का चुप रहा।

भजन ने हांक लगायी, "चरण !"

बेजार चेहरा लिये चरण ने कहा, "जी हां।"

"इसे चॉप-कटलेट और गोश्त खिला दे।"

इतना कह कर भजन आगे बढ़ा तो चरण ने कहा, "लेकिन आज तो माल –"

"चुप हरामजादा ! मैंने जो कहा सो कर।"

अब भजन रुका नहीं, चला गया।

शर्म के मारे वह लड़का चरण की तरफ आंखें उठा कर देख नहीं सका। शायद वह भाग निकलने की बात सोचने लगा। लेकिन चरण उससे पहले ही उसे खींच कर दुकान के अंदर ले गया।

गौर ने चुपचाप मुंह फुलाये सिर्फ आंखों से उस लड़के का स्वागत किया। इस बीच निताइ सीधे जा कर बाप की कुर्सी पर बैठ गया। उसी ने उस लड़के से पूछा, "तुम्हारा क्या नाम है ?"

शायद कानू ने एक बार सोच कर देख लिया कि यह सब जो रहा है, इससे मेरी इज्जत तो नहीं जा रही है। फिर उसने अपना नाम बताया, "कानू।"

"स्कूल में पढ़ते हो ?"

"हां।"

"किस क्लास में ?"

"सेवन में।"

निताइ थोड़ा बुझ-सा गया। वह क्लास फाइव में पढ़ता है। लेकिन कानू उसे बड़ा अच्छा लगा। उसने कानू से कहा, "यहां बैठो।"

फिर निताइ अपना रोब गांठने लगा। पीछे वाले कमरे में जा कर वह एक-एक चीज को अच्छी तरह देखने लगा। जो चीज उसे पसंद आयी, उसके बारे में उसने चरण से पूछताछ की। उसने गोश्त के शोरबे के देग का ढक्कन खोल कर देखा।

शायद उसने उंगली से शोरबा ले कर चख भी लिया। चूल्हे के पास जा कर वह मचलने लगा कि मैं खाना बनाऊँगा। चरण ने मना किया तो वह चरण से लड़ने के लिए तैयार हो गया। फिर उसने कोयला तोड़ना शुरू किया। उससे तबीयत ऊब गयी तो वह प्याज और खीरा काटने लगा। उससे भी जी भर गया तो उसने देखने के बहाने 'मस्टर्ड' का बर्तन उठा लिया और काफी 'मस्टर्ड' जमीन पर गिरा दिया।

उसके बाद निताइ ने खिलखिला कर हँसते हुए कहा, "सामने वाला कमरा बढ़िया है, सफेद है। वही हमारी दुकान है।"

टीन की छाजन से लटकता मकड़ी का जाला देखते ही निताइ की हँसी गायब हो गयी। वह सिहर उठा। मानो वह घिनौनी मकड़ी उसके सामने आ गयी हो। फिर उसने सोचा कि इस अँधेरे कमरे में लुकाछिपी का खेल बहुत बढ़िया हो सकता है। यही सोच कर वह बार-बार गौर के पास जा कर उसे खींचने लगा। लेकिन चूहों और तिलचटों की लुकाछिपी के खेल के आगे निताइ का खेल नहीं जमा। फिर वह जंगली शिकारी की तरह एक छोटी सी लाठी ले कर उन चूहों और तिलचटों के पीछे दौड़ने लगा। घर के लोगों से छिपा कर सीखी गालियाँ भी वह बकने लगा, "साला! बअनचोत!"

निताइ के मुँह से धाराप्रवाह गालियाँ निकलती रहीं और वह दौड़ता रहा।

चरण घबड़ा गया कि कहीं निताइ मुँह के बल जलते चूल्हे पर न गिरे, कहीं पानी का घड़ा न तोड़ डाले, कहीं कप-प्लेट ही न चूर-चूर कर दे और फिर खुद ही न चोट खा जाय।

दूसरे ही क्षण बेचैन निताइ भाग कर बाहर वाले कमरे में चला आया। यही कमरा असली श्रीमती काफे का है। यहाँ खुली हवा है, भरपूर रोशनी है। यहाँ पहुँच कर वह पीछे वाले अँधेरे कमरे में झाँकने लगा। मानों वह विभीषिका के राज्य की सीमा पार कर सुरक्षित जगह आ गया हो और अब यहाँ से पीछे पलट कर देख रहा हो। फिर उसने आँखें बड़ी-बड़ी कर के हाथ के इशारे से चरण को बुलाया और फुसफुसा कर उससे कहा, "यहाँ चले आओ। उस कमरे में भूत है।"

लेकिन वहीं तक। उसके बाद निताइ उछल कर प्रोप्राइटर की कुर्सी पर बैठ गया। वहाँ बैठ कर वह कैश वाला ड्रायर बार-बार खोलने और बंद करने लगा। उसने चिल्ला कर पूछा, "चरण, यहाँ कितना हुआ है?"

निताइ ने अपने पिता को सैकड़ों बार ऐसा कहते सुना है, इसलिए कह दिया।

चरण कुछ कर रहा है। उसने सोचा कि शायद कोई गाहक खा चुका है। वह झटपट हिसाब देने चला आया।

निताइ चरण की हालत देख कर खूब हँसने लगा।

भाई की शरारत देख कर गौर नाराज हुआ, लेकिन कुछ बोला नहीं। वह मुँह फुलाये बैठा रहा। अब वह घर जा कर एक-एक बात माँ से कहेगा और अपनी शांत बड़ी-बड़ी आँखों में उत्सुकता भर कर माँ की तरफ देखेगा कि इस मामले का—

कोई हल निकलता है या नहीं, निताइ को अपनी शरारत के लिए सजा मिलती है या नहीं।

लेकिन निताइ की शरारत के बारे में सुनकर पिता जी उससे कहेंगे — ठीक तो है। अगर तुम अपनी जिंदगी में कुछ भी नहीं कर सके तो श्रीमती काफे की प्रोप्राइटरी तुम्हारे लिए पक्की रहेगी।

निताइ की शरारत से ऊब कर चरण पीछे वाले उसी कमरे में चला गया, जहां बेडौल-बेढंगा चूल्हा है, जिसके धुएं से दीवारें काली पड़ गयी हैं और कालिख की मोटी-मोटी परतें मानो चारों तरफ लटक आयी हैं। उसी कमरे में चरण सचमुच भूत की तरह सूनी आंखों से न जाने क्या देखता रहा। इस श्रीमती काफे में चरण ने बार-बार एक ही बात सुनी है — हम अपना सब कुछ दांव पर लगा कर मुक्त होना चाहते हैं। जाते समय नारायण ने कहा था — चरण, मुक्ति की साधना करो! लेकिन वह मुक्ति क्या है? अपने बंदी प्राणों की मुक्ति के लिए चरण ने एक लड़की से प्यार किया। वह लड़की वारवनिता है। धीरे-धीरे चरण उस लड़की से बंध गया। चरण को मुक्ति नहीं मिली। फिर क्या चरण की मुक्ति की साधना बेकार हो गयी। लेकिन उस लड़की के बिना चरण मुक्ति भी तो नहीं चाहता। फिर क्या उसे मुक्ति नहीं मिल सकती। जिस मुक्ति की बात उसने यहां सुनी है, उसका क्या मतलब है?

उस मुक्ति का मतलब चरण नहीं जानता! इस अंधेरे कमरे में थोड़ी-सी हवा आते ही मकड़ी के काले-काले जाले कांपने लगते हैं। एकांत पा कर चूहों और तिलचटों का ऊधम शुरू होता है। कच्चा गीला फर्श, कोयला, कंडी और पानी के घड़े — वातावरण भी चूहों और तिलचटों के अनुकूल है। चूल्हे की दहकती आग से चरण का चेहरा चमकने लगा।

चरण का मन भी किशोर निताइ की तरह खेलना चाहता है। मनुष्य की जो आत्मा स्वर्गगामी न हो कर इस धरती पर मंडराती रहती है, उसी को लोग भूत कहते हैं। चरण मानो वही है। वह मुक्ति चाहता है। उसे अपनी जिंदगी एक भूत की जिंदगी लगती है। निताइ उस कमरे में भूत का अड्डा मानता है। चरण इस जिंदगी और इस कमरे को छोड़ कर जाना चाहता है। लेकिन इस कमरे के बाहर उसके लिए कहीं भी मुक्ति नहीं है! इसी लिए वह अपना सब कुछ दांव पर लगा कर मुक्त होना चाहता है!

मुक्ति! पता नहीं वह मुक्ति कहां है जिसके लिए चरण अपना सब कुछ न्योछावर करना चाहता है। अगर कोई कहता है कि स्वराज उस मुक्ति का प्रतीक है, तो कहना पड़ेगा कि सन् उन्नीस सौ चौंतीस ईसवी के बाद से, याने इस साल के शुरू से उस मुक्ति का स्वाद काफी कटु हो गया है। सन् उन्नीस सौ बाईस की तरह फिर ऊबाने वाली शिथिलता आने लगी है।

उस मुक्ति के मार की दाग श्रीमती काफे के चप्पे-चप्पे पर हैं। उसके दरवाजे, खिड़कियों, साज-सामान, उसके मालिक और नौकर के दिल पर उस चोट के निशान हैं। उसके निशान हर घर में, हर दीवार और हर सड़क पर हैं। होठों के कोनों में जम गये खून में, टूटी पसलियों में, माँ के आंसुओं में और पत्नी के टूटे दिल में उस चोट के निशान बाकी हैं।

फिर उस एक ही घटना की पुनरावृत्ति हुई। गाँधी जी ने कहा कि देशवासी मेरे सत्याग्रह का मतलब नहीं समझ सके। हम अंग्रेज शासकों का हृदय भी नहीं बदल सके। इसके बाद कानून तोड़ने का जिम्मा गांधी जी ने अपने ऊपर लिया।

बंगाल असेंबली में मुसलमानों के बहुमत ने मानो कांग्रेस को अपने ही घर में बेगाना बना दिया। बंगाल की तरफ से उसका मन खिंच गया। लेकिन वामपंथी सुभाषचन्द्र वसु को ले कर समस्या पैदा हो गयी। सारे भारत के लिए, यहाँ तक कि गांधी जी के लिए समस्या उठ खड़ी हुई।

इस कारण बंगाल में शिथिलता आयी। वही शिथिलता श्रीमती काफे में भी है।

यहाँ के सब लोग जेल से लौटे हैं। फिर उनका अड्डा श्रीमती काफे में जमने लगा है। लेकिन अंदर ही अंदर जरूर कुछ हुआ है, जिससे विचित्र परिवर्तन दिखाई पड़ने लगा।

सिर्फ नारायण जेल से नहीं लौटे। उनको और उनके दोस्तों को अंग्रेज सरकार इस देश की धरती पर भी रखने को तैयार नहीं है। इसलिए उनको समुद्र के बीच निर्जन टापू अंडमान में ले जाया गया। वहाँ भारत की कोई आवाज नहीं पहुँचती। *कभी-कभी भजन के पास नारायण की चिट्ठी आती है। उस चिट्ठी को देखने के लिए* राणाघाट के एक मामूली गाँव से एक सपन्न घर की बहू यहाँ तक भागी-भागी आती है। वह है प्रमीला। लेकिन उस चिट्ठी में एक निर्वासित के चारों तरफ फैले समुद्र की तरह गहरी जिज्ञासा होती है। वह जिज्ञासा यहाँ असर नहीं डाल पाती और दूर की पुकार की तरह गूंजती रहती है। असह्य प्रतीक्षा से थके मन में उस हलकी गूँज से कोई उत्साह नहीं आ पाता। मन मुरदा बना रहता है। लगता है कि जबर्दस्त आँधी आये बिना यह मुर्दनी दूर नहीं होगी। अँधेरे में और कितने दिन यह चेहरा छिपाये रखा जा सकता है। इससे तो बेहतर है कि जीवन का सारा अभिशाप धुल जाये।

नारायण के रास्ते पर चलने वाले सुनिर्मल और रथीन भी जेल से छूट कर आये हैं। प्रियनाथ की गिरफ्तारी के लिए जारी वारंट भी रद्द हो चुका है। अब वह कम्युनिस्ट पार्टी का संगठनकर्ता है।

कम्युनिस्ट पार्टी! राजनीतिक क्षेत्र में इस पार्टी का नाम अक्सर सुनाई पड़ता है। एक समय था, जब कम्युनिस्ट शब्द लोगों की जबान पर चढ़ चुका था। उस समय सबको 'कांग्रेस' नाम ही विदेशी और समझने में मुश्किल लगा था। मजे की बात है कि उस समय से लगभग पचास साल पहले ह्यूम साहब कांग्रेस की स्थापना कर चुके थे।

लेकिन आज कांग्रेस देशी शब्द बन गया है। आज यह सोचना भी मुश्किल है कि कांग्रेस विदेशी शब्द है और इसका कोई देशी अर्थ भी है।

खैर, इस समय 'कम्युनिस्ट' शब्द उस समय के 'कांग्रेस' शब्द की तरह है। हो सकता है कि कम्युनिस्ट नाम में कोई नयापन हो, या उसका काम ज्यादा नये ढंग का। लेकिन कम्युनिस्ट का आविर्भाव मानो सभ्य आर्य ऋषि के आश्रम के कुंज में असभ्य अनार्य नग्न शिव के आगमन की तरह है। उस शिव की मोहन मूर्ति देख कर ऋषि-वधुओं के अंगवस्त्र शिथिल पड़ जाते हैं। पता नहीं कब कम्युनिस्ट पार्टी जनगण के मन का भरम भी तोड़ दे।

जिस पथ पर चलने के कारण कभी प्रियनाथ ने नारायण का विश्वास खो दिया था, आज अपनी सिद्धि की खोज में प्रियनाथ उसी पथ से भागा जा रहा है। शहर के बाहरी इलाके में मजदूरों की बस्ती उसके काम करने की जगह है। जो रथीन कभी उसका विरोधी था, अब वही रथीन उसका हर वक्त का साथी बन गया है।

अपना सब कुछ दाँव पर लगा कर वे सब मुक्ति की खोज में भागे जा रहे हैं। लेकिन सारे देश में फिर दारुण शिथिलता आयी। यह शिथिलता पराजय की है।

सुनिर्मल फिर अपने रास्ते से डिगा है। वह दूर चला गया है। ठिठुरन भरे जाड़े में काँटों भरा रास्ता छोड़ कर उसने घर के गरम गुदगुदे कोने में शरण ली है।

हाँ, शिथिलता ही आयी है। अगर शिथिलता न आती तो कृपाल को पीने की आदत न पड़ती। कृपाल गुटबाजी तो पसंद करता था, लेकिन कभी छिप कर शराब नहीं पीता था। मगर आजकल वह शराब पीने लगा है। लोगों की निगाह बचा कर वह सिगरेट और विलायती शराब पीता है। शंकर घोष भी पीते हैं। वही इस काम में कृपाल के गुरु हैं। खैर, सोचने-समझने में जबर्दस्त फर्क आ गया है।

इस शिथिलता ने हीरेन को भी तोड़ा है। अब वह राजनीति से बहुत दूर चला गया है। लेकिन वह आज भी सूत कातता है और धर्मग्रंथ पढ़ता है। कभी-कभी वह वेद-वेदांत और भारतीय दर्शन के बारे में लेख लिखता है। उसने भी तो मुक्ति का स्वप्न देखा था, लेकिन आज वह जादुई महल की तरह न जाने कहाँ गायब हो चुका है।

जेल से लौट कर हीरेन रमिया को पहचान ही न सका था। असह्य दर्द और नफरत से उसका दिल भर उठा था। उस जलन को वह मानो बरदाश्त न कर सका था। रमिया के काले-लंबे बाल उलझ कर आपस में चिपक गये हैं। उनमें जूएँ भर गयी हैं। वह कभी-कभी सड़क के किनारे बैठ कर उनको मारा करती है। गंदी धोती जगह-जगह फटी हुई है। बदन पर कुरती भी नहीं है। अब वह बीड़ी पीती, खाँसती और सड़क के किनारे खड़ी हो कर फूहड़ ढंग से हँसती रहती है। उसके आसपास ढेर सारे बच्चे बिल-बिलाते हैं। जब वह सड़क पर झाड़ू लगाती है, वे बच्चे उसके अगल-बगल मँडराते हैं। हीरेन समझ नहीं पाता कि कैसे रमिया के इतने बच्चे हो गये! सिर्फ इतना ही नहीं, रमिया का पहले का मर्द मर चुका है। उसके बाद रमिया और एक झाड़ूदार के पास

चली गयी है। यह सब सोचने पर हीरेन के रोंगटे खड़े हो जाते हैं। क्या यह वही रमिया है? प्रियनाथ के प्रयास से अब म्युनिसिपैलिटी के मेहतरों और झाड़ूदारों की यूनियन बन गयी है। रमिया वहीं जाती है।

हीरेन को ऐसा महसूस होता है कि हजारों कीड़े मानो उसकी छाती में घुस कर उसे काटने लगे हैं। हीरेन को वह दिन याद आता है जब उसने मेहतरों की बस्ती में खाने-पीने का इंतजाम किया था और उसी दिन वहाँ से भागते समय रमिया उससे लिपट गयी थी। हीरेन समझ नहीं पाता कि अगर मैं उस दिन रमिया को अपने साथ ले आता तो आज क्या होता! उस दिन हीरेन को रमिया का उस तरह लिपटना महामृत्यु का आलिंगन जैसा लगा था। लेकिन आज तो वह उसी तरह के आलिंगन में बँध गया है। आज उसने अपनी भाभी के आगे आत्मसमर्पण किया है। वह आलिंगन रमिया का नहीं, भाभी का है। हीरेन को उसमें न कोई सुख मिला और न किसी तरह के दुख का अनुभव ही हुआ। इस भयावह स्थिति से भी वह मुक्त होना चाहता है। उसने कितनी ही बार आत्महत्या करने की बात सोची है। लेकिन भविष्य के बारे में विचित्र कौतूहल ने उसे बार-बार वैसा करने से मना किया है। फिर उसका मन भी बड़ा विचित्र है। रमिया को देख लेने पर आज भी उसका मन डोलने लगता है।

इसलिए हीरेन को अपना रास्ता बड़ा ही चक्करदार लगता है। उस रास्ते के हर मोड़ पर उसे रुकना पड़ता है। इसी लिए उसमें असहनीय अवसाद है, शिथिलता है।

फिर भी सब लोग चल रहे हैं, ठोकर खा रहे हैं और अपने-अपने ढंग से मुक्ति चाह रहे हैं। चरण भी अपना सब कुछ निछावर कर मुक्ति चाहता है।

शायद लीग मंत्रिमंडल के कारण ललित मुखर्जी वगैरह को आंदोलन छेड़ने का एक रास्ता मिल गया है। श्रीमती काफे में आजकल उस आंदोलन की गरज अक्सर सुनाई पड़ने लगी है। उसी तरह की गरज कांग्रेस की बैठकों में, गांधी जी के लेखों में, असेम्बली की कार्यवाही और 'इकनॉमिस्ट' के सपादकीय में सुनाई पड़ती है। श्रमिक सर्वेक्षण की रिपोर्ट, फजलुल हक के वक्तव्य, युवक श्यामाप्रसाद मुखर्जी के सिंहनाद और सुभाषचंद्र बसु के कांग्रेस विरोध में भी वही गरज है। कम्युनिस्ट पार्टी, ट्रेड यूनियन, बाटलीवाला, डांगे और मुजफ्फर अहमद में भी उसी गरज की गूँज है। देशी राजनीति का यही ओर-छोर है। इसके अलावा हिटलर, हिमलर, हेस, गोयरिंग, तोजो, मुसोलिनी, चेंबरलेन, ट्रटस्की और सब के ऊपर रूस और स्टालिन हैं।

उसके बाद आपस में गुटबाजी और झगड़े हैं।

उस नौजवान पुलिस अफसर का तबादला सन् इकतीस के मध्य में हो चुका है। उसके जाने के बाद श्रीमती काफे पर पुलिस वालों की उतनी बड़ी नजर नहीं है। इस समय नजर प्रियनाथ पर है। प्रियनाथ जैसे लोग ही यहाँ मजदूरों में असतोष पैदा कर सकते हैं।

प्रियनाथ जैसे लोगों के पास सुनिर्मल रोज बैठा रहता है। अधिकतर
चुप रहता है। जब वह बोलता है तब अचानक गांधी जी का विरोध

तो बहुत खुश हो कर कहता है कि फ्रांस के अगले चुनाव में पॉपूलर फ्रंट की जीत जरूर होगी।

श्रीमती काफे में लोग बहुत ज्यादा शोरगुल मचाने लगते हैं तो सुनिर्मल भीड़ भरी सड़क की तरफ स्वप्न भरी आँखों से देखता है। फिर वह शायद शोरगुल की तरफ कटाक्ष करके कहता है —

"यह मलिन वसन तुम्हें छोड़ना है,
छोड़ना है यह अहंकार।"

सुनिर्मल के स्वगत कविता-पाठ की तरफ कोई ध्यान नहीं देता। यहाँ तो हर कोई अपने को ले कर मशगुल है। सुनिर्मल इसकी परवाह किये बिना फिर अपने स्वर में सारा माधुर्य भर कर दूसरी कविता की पंक्तियां गुनगुनाने लगता है —

"यौवन सरसी के जल में
मिलन शतदल को
न जाने कौन लहरें कँपा रही हैं ?"

दूसरे ही क्षण सुनिर्मल को किसी दूसरी कविता की पंक्तियाँ याद आ जाती हैं —

"तुम्हारे और हमारे बीच
विरह-नदी के फासले को
क्या संगीत का सेतु मिटा सकेगा ?"

सुनिर्मल के जीवन में इस समय अगर कोई लक्ष्य है तो वह है प्रेम! सचमुच वह प्यार करने लगा है और वही उसके मानसिक द्वंद्व का कारण बन गया है। वह उसी सरसी राय से प्यार करने लगा है।

सरसी राय बढ़िया साड़ी पहनती है। गहने भी उसके बदन पर हैं। विश्वविद्यालय की डिग्री सोने के उज्ज्वल सितारे की तरह मानो उसके माथे पर चमचमाती रहती है। उसके घने काले बाल घुंघराले हैं। उसकी बड़ी-बड़ी आँखों में दर्द भरी मुस्कराहट है। उसके बलिष्ठ शरीर में नम्रता की झलक है। इस तरह उसका जीवन भरा-पूरा है, लेकिन उसके मन में उतना ही सूनापन है। उसने अपने बाहर से भरे और अंदर से सूने जीवन में सुनिर्मल का प्रेम स्वीकार किया है। उसे अपने जीवन के बारे में कोई गलतफहमी नहीं है, और न ऐसी गलतफहमी पालने जैसी कमजोरी ही उसमें है। इसी लिए उसने हमउम्र के भोले-भाले, लेकिन जोशोले सुनिर्मल को एक सहारा दिया, उसे बांधना नहीं चाहा।

तीस से ऊपर के ये लड़के अंधड़ में फँसे पंछी की तरह हैं। इनमें उछल-कूद की कमी नहीं है और न उन्माद का ही अंत है। सरसी राय यह भी जानती है कि इनमें बारूद भरी हुई है और इसी लिए चारों तरफ बस विस्फोट हो रहे हैं। प्रेम में मतवाला सुनिर्मल भी आज नहीं तो कल इसी तरह विस्फोट करने दौड़ पड़ेगा। लेकिन उसके बाद वह फिर इसी आश्रय में लौट आयेगा। सरसी के वक्ष में ही उसे चैन मिलेगा।

सरसी जानती है कि ऐसे लड़के कभी प्यार करके चैन से नहीं रहते, फिर भी प्यार किये बिना इनको चैन नहीं मिलता। ये लड़के ऐसे विचित्र हैं !

इसी लिए विधवा सरसी ने अपने हृदय का द्वार खोल रखा है। ऐसे ही लड़कों में से कोई थका-माँदा दौड़ा आयेगा और उसके हृदय में आश्रय पा कर भी उसे क्षत-विक्षत करेगा। इसी तरह ये लड़के पुरातन को हटा कर नवीन की प्रतिष्ठा करते हैं।

फिर जब ऐसे लड़के थक जायेंगे, तब उत्साह की अग्निशिखा बन कर सरसी जैसी लड़कियाँ ही रणडंका बजायेंगी। ऐसी ही लड़कियाँ उस समय अपनी चितवनों से आग बरसायेंगी और अपनी लाल साड़ी झंडे की तरह फहरा कर इन लड़कों को पथ का संकेत देंगी।

अचानक सुनिर्मल मुस्कराया। बस ! अब वह सब रहने दिया जाय। जनता की इस भीड़ में वह सिर्फ सरसी है, पढ़ी-लिखी विधवा है। राजनीति से भी अब कोई सरोकार नहीं है। जिसको करना हो, वही छात्र आंदोलन करे। क्या जरूरत है खबरों की गर्मी की ! फ्रांस के पॉपुलर फ्रांट की, स्पेन के फ्रैंको की और किशोर छात्रों के हार्दिक अभिनंदन की खबरों की भी जरूरत नहीं है। सुनिर्मल कविता की पंक्तियाँ गुनगुनाने लगा। यह कविता उसकी अपनी है —

"इस तरह मुझे नींद से न जगाओ !
प्रेम की प्यास दिल में लिये
मैं मतवाला बन रहा हूँ।
इस दुनिया के झमेले किस काम के,
लगता है तो लगे प्यार का मेला !"

क्या विधवा से विवाह करना विद्रोह नहीं है ? सुनिर्मल तो वही विद्रोह करेगा। पैसे के पीछे पिशाच बनने और चाँदी के जूते खाने के शौकीन इस समाज पर वह गाज गिरायेगा। अपने बाप-दादे की संचित दौलत को वह सरसी और उसके बच्चों के हवाले करेगा।

बूढ़े गोलोक चटर्जी उसी तरह आते हैं। श्रीमती काफे में आते ही वे अपनी कहानियों की थैली का मुँह खोल देते हैं। वे कहते हैं कि मेरी हर कहानी सही है, लेकिन सुनने वाले दिल खोल कर हँसते हैं।

किसी ने आम खाने की बात छेड़ी तो गोलोक बाबू ने फौरन कहा, "अरे आम खाने की बात कर रहे हो तो सुनो, एक बार मेरे साथ क्या हुआ था। मैं कलकत्ते गया था। आशू बाबू ने मुझसे कहा —। ये आशू बाबू कौन है, समझ रहे हो न ? सर आशुतोष मुखर्जी, जिनको लोग रायल बंगाल टाइगर कहते हैं ! हाँ, तो आशू बाबू ने मुझसे कहा, आओ गोलोक, आम खाया जाय। हम दोनों आम खाने के लिए अगल-बगल बैठे। आशू बाबू की माँ आम काट-काट कर देने लगी और हम दोनों मजे से खाते रहे। उसके बाद क्या हुआ भइया, क्या बताऊँ ? आम खा चुकने के बाद मैं आशू को ढूँढ़ने लगा तो वह दिखाई नहीं पड़ा। उधर आशू भी मुझे ढूँढ़ता रहा कि मैं कहाँ चला

गया ! असल में हम एक दूसरे को कैसे दिखाई पड़ते ? हम दोनों के बीच गुठलियों और छिलकों का पहाड़ लग गया था।''

गोलोक बाबू रोज सब को ऐसी विचित्र कहानियाँ सुनाते हैं और लोग भी उनको चाय पिलाने में कंजूसी नहीं करते।

और एक जने आते हैं भवनाथ बनर्जी। उनके बारे में बताये बिना श्रीमती काफे की बात पूरी नहीं होती। वे एकदम भजन के पास आ कर बैठते हैं। रोशनी पड़ने से उनका गंजा सिर चमकने लगता है। जब तक दुकान में भीड़ रहती है, तब तक मानो उनको अच्छा नहीं लगता और उनकी भौंहें सिकुड़ी रहती हैं। बस, बीच-बीच में वे भजन से एक-दो बातें करते हैं। वे सत्तावन-अट्ठावन के होंगे। पहले वे रेलवे में पार्सल क्लर्क थे, अब रिटायर कर चुके हैं। उनकी पत्नी की पहले ही मृत्यु हो चुकी है। घर में उनका नया जोड़ा है — बेटा और बेटे की बहू। भवनाथ बाबू के दो लड़के अब भी स्कूल में पढ़ते हैं। बड़े लड़के की उम्र लगभग तीस है और उसी की शादी हो चुकी है।

भजन उम्र में भवनाथ बाबू से बहुत छोटा है। फिर भी दोनों में दोस्ती बड़ी गहरी है। शकल-सूरत और चाल-चलन में एकदम एक-दूसरे के विपरीत होने पर भी ये दोनों शख्स बड़े विचित्र हैं। शायद इसी लिए दोनों में खूब पटरी बैठती है। भजन भवनाथ बाबू को 'आप' और 'बनर्जी भैया' कहता है। भवनाथ बाबू भजन को नाम ले कर पुकारते हैं। किसी जमाने में भवनाथ बाबू का घर बरीसाल जिले में था, लेकिन अब रेलवे कालोनी ही उनका घर है।

आजकल भवनाथ बाबू का जीवन बड़ा विचित्र बन गया है। दीया जलने के बाद वे श्रीमती काफे में आते हैं और एक कप चाय पीते हैं। उसके बाद वे बार-बार भजन से कहते रहते हैं — 'चलो न, जरा पीछे के कमरे से हो आयें !' याने वे शराब पीयेंगे, लेकिन भजन के साथ छिप कर, जैसे नया पियक्कड़ पीता है। लेकिन जिंदगी भर उन्होंने कभी बीड़ी-सिगरेट तक नहीं पी। वे नियम से नौकरी करते रहे, गिरस्ती चलाते रहे, बीबी-बच्चों की देखभाल करते रहे और करते रहे ऊपरी कमाई। इस तरह उन्होंने कुछ पैसा भी जोड़ लिया। यह सब करते-करते उनकी जिंदगी खत्म हो गयी तो अब उन्होंने नये सिरे से नयी जिंदगी शुरू की।

आजीवन नियम से रहने के कारण अभी तक भवनाथ बाबू का स्वास्थ्य टूटा नहीं है। लेकिन इस जीवन के बारे में उनकी आँखों में नया कौतूहल भर गया है। पिछले तीस साल की दुनिया के बारे में अगर उनसे पूछा जाय तो वे यही कहेंगे कि अरे, मुझे तो कुछ भी पता नहीं ! अभी तक उनकी आँखों में कोई भावना नहीं थी तो अब उनमें नयी भावुकता भरने लगी है। अब वे थक चुके हैं, किसी तरह का झमेला बरदाश्त नहीं कर सकते, फिर भी इस जिंदगी का मजा लेने का उनमें शौक पैदा हो गया है।

जितनी देर भवनाथ बाबू घर में रहते हैं, कनखियों से अपने बेटे और बहू के

नये जोड़े को देखते हैं। उनकी बातचीत, हँसी और लड़ाई को वे सुनते और देखते हैं। उससे उनमें नया कौतूहल पैदा होता है और उनके विस्मय की सीमा नहीं रहती। उस जीवन को मानो वे जरा भी नहीं जान सके, जरा भी नहीं देख सके। मानो यह नया ही संसार है, और एक शिशु दर्शक की तरह वे उस संसार का तमाशा देखते हैं।

श्रीमती काफे में आ कर भवनाथ बाबू वही सब कहानियाँ भजन को सुनाते हैं। सामान्य बातें भी भवनाथ बाबू के मुँह से सुन कर भजन को असामान्य लगती हैं। भवनाथ बाबू भी कहते हैं, "जानते हो भजन, मुझे बड़ा आश्चर्य लगता है। मैं समझ नहीं पाता कि ऐसा क्यों होता है!"

उसके बाद भीड़भाड़ खत्म हो जाने पर भवनाथ बाबू दुकान के पिछवाड़े जा कर गिलास में शराब ले कर पीते हैं। उस समय चरण भी वहाँ नहीं रह सकता। भवनाथ बाबू चाहते हैं कि चरण भी उन्हें शराब पीते हुए न देखे। लेकिन उसके बाद उनका बड़बड़ाना शुरू होता है। उस दौरान अभिनव दर्शन की कितनी ही विचित्र बातें उनसे सुनने को मिलती हैं। वे राजनीति पर भी बहस करते हैं। बहस के बीच वे चिल्लाने लगते हैं।

अंत में भवनाथ बाबू लड़खड़ाते कदमों से घर लौटते हैं। किसी-किसी दिन भजन उनको घर पहुँचा आता है।

भजन कहता है, "बनर्जी भैया, आपकी एक बात मेरी समझ में नहीं आती। आप लोगों की निगाह बचा कर क्यों शराब पीते हैं? बाद में तो सभी को पता चल जाता है। फिर आप डंके की चोट पर सबके सामने क्यों नहीं पीते?"

भवनाथ बाबू कहते हैं, "तुमने पूछ लिया, अच्छा किया, लेकिन नहीं पूछना चाहिए था। सृष्टि की प्रक्रिया हमेशा गुप्त रहती है, लेकिन सृष्ट वस्तु सबके सामने आती है।"

यह सुन कर भजन सोचता है कि भवनाथ बाबू भी मुक्ति चाहते हैं। लेकिन वह किसकी और कैसी मुक्ति है, यह भजन नहीं समझ पाता!

बंगाली अब नहीं आता, आता भी है तो बहुत कम। उसकी शराब पीने की आदत बहुत कम हो गयी है। वह दिनरात प्रियनाथ, यानी अपने पियानाथ के साथ घूमता रहता है। वह मुक्ति के पीछे पागल नहीं, विद्रोही है। इन कई बरसों में उसके बीवी-बच्चे मर चुके हैं, घर बिक चुका है और वह सड़क पर आ गया है। लेकिन वह रातदिन काम करता है। कहता है, "भजन भैया, जिंदगी में हार-जीत होती है। आज हार गये तो क्या फर्क पड़ता है, कल जरूर जीत जायेंगे।"

भजन पूछता है, "किससे क्या जीत लोगे?"

अनमना हो कर मानो आश्चर्य से बंगाली देखता है। उसके बाद वह दबी आवाज में बहुत धीरे-धीरे कहता है, "क्यों? बीवी, बच्चा और घर?"

बंगाली यह सब जीत लेगा! मानो हारी बाजी बदल जायेगी। भजन फिर हँसता है या रोता है, समझ में नहीं आता। हाँ, दो-चार घूँट शराब जरूर

है। फिर मदहोशी की हालत में उस समय भजन को बड़ी हैरानी होती है, जब वह देखता है कि श्रीमती काफे के पीछे के हिस्से में प्रियनाथ उस बंगाली को ले कर अपनी पार्टी की बैठक कर रहा है। उस बैठक में जूट मिल के मजदूर भागन और मनोहर भी आते हैं। अब भी उनमें भजन के प्रति अविश्वास है। लेकिन भजन को दूर से नमस्कार करके वे इतमीनान से अंदर वहाँ जाते हैं, जहाँ बैठक होती है। कानपुर का वही सूरज सिंह अब इसी इलाके में रहने लगा है। वह ट्रेड यूनियन का संगठन करता है। वह भी उस बैठक में आता है। उस बैठक में बहस कभी खत्म नहीं होती। उन लोगों में से कोई श्रीमती काफे के आगे वाले हिस्से में नहीं बैठता। उनकी उस बैठक में और भी कई लड़के आते हैं। वे स्कूल की ऊँची कक्षाओं में पढ़ते हैं। उनको इस दुनिया में कहीं जगह नहीं मिली तो लाट साहब भजन के श्रीमती काफे में चले आये।

कभी-कभी भजन प्रियनाथ से पूछता है, "तुम लोग आखिर क्या चाहते हो ?"

क्या चाहते हैं। प्रियनाथ तमाम बातें बताने लगता है, श्रमिकों की क्रांति, साम्यवाद, कम्युनिस्ट मैनिफेस्टो और अक्टूबर क्रांति···

भजन झटपट कहता है, "रुको !"

उसके बाद भजन बड़े ही कौतूहल से एक-एक बात पूछता है। वह समझ जाता है कि तैयारी चल रही है। यात्रा शुरू करने की और लक्ष्य तक पहुँचने की तैयारी ! लेकिन उन लोगों की मुक्ति का अभिप्राय भजन नहीं समझ सकता।

मुक्ति ! अल्कोहल की तीखी झार-झरस से जले पेट को दबा कर भजन बड़बड़ाता है —

"पता है, यह महानिद्रा टूटेगी,
ध्वनित होगा गगनमंडल में अभय !
मंत्र बन कर गूंजेगा वह धरती पर,
निर्भय बना देगा वह मानव मात्र को !"

हाँ, आजकल नशा चढ़ने पर भजन इसी तरह कविता झाड़ता रहता है। कभी-कभी हीरेन को ऐसी कविता बड़ी अच्छी लगती है। आँखों में विस्मय और प्रशंसा भर कर वह भजन की तरफ देखता रहता है। उसकी तरफ देख कर भजन फिर बड़बड़ाता है —

"बावरा का स्वर गूंजेगा दिशा-दिशा में,
जल उठेगी आग चप्पे-चप्पे में।
सोने का संसार जल कर खाक होगा,
धरती भी मुँह फेर लेगी, शरण न देगी।"

हीरेन इन पंक्तियों को सुन कर याद कर लेता है। फिर इन पंक्तियों को दोहराते हुए वह अपने अंदर न जाने कैसी बेचैनी महसूस करता है। वह सोचता है कि मुझको यह कविता सुनाने का क्या मतलब है। फिर इसी कविता और इन्हीं पंक्तियों की तरह उसे अपनी भाभी की बात याद आती है। नौजवान झाड़ूदार से मुहब्बत करके

तुम लोग रेलवे और जूट मिलों के मजदूरों को ठंडा रखोगे ? इसलिए लाट साहब भजन को बेवकूफ बनाने की कोशिश मत करो हीरेन ! अगले दो-चार सालों में तुम लोगों को और ज्यादा अधिकार मिल सकता है। यह भी हो सकता है कि तुम और कृपाल वगैरह को कोई न कोई पद मिल जाय, लेकिन समझ लो कि वही अंत नहीं है। तुम लोग भले ही बाना धारण कर लो, लेकिन साधु नहीं बन सकते।"

इतना कह कर भजन चुप हो जाता है, लेकिन वह शांत नहीं हो पाता। बार-बार उसे अपने भैया नारायण का चेहरा याद आता है। इस समय वे अंडमान में हैं। कभी-कभी भजन के नाम से उनकी चिट्ठी आती है। उस चिट्ठी के ज्यादातर हिस्से में स्याही पुती रहती है। उसी में जो कई वाक्य पढ़े जा सकते हैं, उनसे उस व्यक्ति को याद करना संभव होने पर भी, उसके मन को छुआ नहीं जा सकता।

फिर भजन हाँक लगाता है, "चरण, हीरेन को चाय पिला !"

चरण को चाय लाने का आदेश दे कर भजन हीरेन से पूछता है, "थोड़ी-सी शराब चलेगी ? डर लगता है, तुम लोग शाकाहारी हो !"

हीरेन का प्रतिरोध टूट-बिखर जाता है और वह कहता है, "लाओ !"

इधर भजन अपनी धुन में बड़बड़ाता है —

"भारत की यह धरती है लंदन के राजा की।
भारतवासी जय बोले लंदन के राजा की।"

श्रीमती काफे में और एक सज्जन अक्सर आते हैं। कहना चाहिए कि वे रोज आते हैं, लेकिन कभी नहीं बैठते। लोग उनको तिलक ठाकुर कहते हैं और भजन कहता है ठाकुर चाचा। सब जानते हैं कि वे जबर्दस्त तोताचश्म हैं। रुपया उधार देना उनका धंधा है।

कहा जाता है कि तिलक ठाकुर का रुपया जमीन के नीचे गड़ा रहता है। वही तो यक्ष का धन है ! मुहल्ले के बड़े आदमी प्रसन्न चटर्जी से उनकी बड़ी दोस्ती है। क्वारी और नौजवान लड़कियों को घूरना प्रसन्न चटर्जी का काम है। अपने घर में खूबसूरत पत्नी के रहते हुए भी वे कोचवान भुन्नू की बीवी मनिया को उसी तरह देखते रहते हैं, जिस तरह कोई पोपला-मुँह लालची बुढ़वा पकाये हुए रसेदार मांस की तरफ देखता रहता है। लोग कहते हैं कि उनको भी गड़ा हुआ धन मिला था, जिससे वे अमीर बने हैं। उनके पास भी यक्ष का धन है। लोगों का कहना है कि जिनके पास यक्ष का धन होता है, मरने पर वे दोबारा जन्म नहीं लेते। शायद इसी लिए प्रसन्न चटर्जी और तिलक ठाकुर में खूब पटती है।

यह भी सुना जाता है कि तिलक ठाकुर की नजर प्रसन्न चटर्जी की बीवी पर है। प्रसन्न चटर्जी की पत्नी सचमुच परम सुंदरी है। शायद प्रसन्न चटर्जी को भी इस

बात का पता है। लेकिन यक्ष का धन होने से उनके और तिलक ठाकुर के बीच जो मेल है, वह एकदम अटूट है।

फिर भी कहना पड़ेगा कि तिलक ठाकुर मे हिम्मत है। वे रोज श्रीमती काफे के बरामदे मे आ कर चुटिया हिलाते हुए हँस कर भजन से कहते हैं, "देखो बेटा, सच कह रहा हूँ, तुम्हारे इस श्रीमती काफे के कलिया की खुशबू मे खिंच कर मैं रोज इसी रास्ते चला आता हूँ। अब किसी दिन इस भले बाभन को खिला-पिला कर पुन्न कमा लो बेटा! *कभी ऐसा विलायती खाना चख कर भी नही देखा।"*

याने, जान चली जायेगी तो भी तिलक ठाकुर पैसा खर्च करके कभी नही खायगे। भजन भी जानता है कि ऐसे आदमी पर गुस्सा करना बेकार है। लेकिन वह मन ही मन बुरी तरह चिढ जाता है और बेमुरौवती से कहता है, "ठाकुर चाचा, आप तो अपने भतीजे का हाल जानते हैं। पैसा मिले बिना मैं भगवान का भी नाम नही लेता।"

कलिया की खुशबू से तिलक ठाकुर के नथने फूलने लगते हैं और मुँह में लार भर आती है फिर भी पैसा खर्च करके होटल में मास खाना, अरे बाप रे! बीबी-बच्चे की बात कौन करे, कभी मन होता है तो वे एक धेले की घुँघनी खरीद कर खुद भी नही खाते। बताया नहीं जा सकता, कही घाटा हो गया तो?

भजन सोचता है कि क्या ये तिलक ठाकुर मुक्ति नही चाहते? चाहें भी तो कैसे? उनकी दौलत की रखवाली तो यक्ष करता है न!

फिर कौन मुक्ति चाहता है? जूही? हां, जूही मुक्ति चाहती है! जूही!

लेकिन जूही की आँखो मे तो बगावत की झनक नही दिखाई पड़ती। उसके होंठों का बांकपन तो नीरव व्यंग्य से भजन के हृदय को नही जलाता? मानो अपने में मगन रहने के कारण उसके चेहरे पर किसी भाव की छाया नहीं पड़ती। इसलिए वह एक किशोरी जैसी लगती है। वह किशोरी जूडा नही बांधती और पांवो मे महावर नही लगाती। सजना-धजना भी उसे पसंद नही है। मानो वह बैरागिन बन चुकी है।

निताइ की मां का वह रूप देख कर भजन की *छाती में टीस नही पैदा होती,* फिर भी वहां छिपा कोई पुरुष आंखों को गीला किये बिना रोता रहता है। नहीं, जूही उसे छोड़ कर नही जा सकी। क्या मृण्मयी भी नवकुमार को छोड कर जा सकी थी? अगर जाती तो गगा की गहराई मे कौन समा जाता?

बकुल मां भी क्या वृंदावन से भागी-भागी चली आतीं? क्या उनको वहां मुक्ति नही मिली? कहां गये उनके देवता? अब तो वे रात-दिन सुमरनी हाथ मे लिये महादेव हालदार की आरामकुर्सी के पास जमीन पर बैठी रहती हैं। लेकिन दोनो ही खामोश हो चुके है। उनकी देह तो पड़ी है, लेकिन वे दोनों कहां हैं? न जाने वे कहां भाग निकले हैं!

क्या मुक्ति की खोज मे?

कुछ तो बोलो ऐ मौन रात !
आँखें खोलो ऐ अंधी रात !
मुक्ति माँगो ऐ बंदी रात !

भजन श्रीमती काफे में आया।

शाम हो चुकी है। चारों तरफ बत्ती जल गयी है। स्टेशन में और गाड़ियों में यात्रियों की भीड़ है। कलकत्ते में नौकरी करने वाले बाबू लोग दिन भर की नौकरी पूरी करके लौटने लगे हैं। सड़क पर भी भीड़ है।

अड्डे पर एक भी घोड़ागाड़ी नहीं है। चरही में नीचे लगे खुले नल से उबल-उबल कर पानी निकल रहा है। उसी पानी से चरही भर रही है। बस 'पुष्पमयी' का इंजन चालू हो चुका है। फिर भी उसका ड्राइवर चिल्ला रहा है — चले आइए ! आ जाइए ! बस एकदम खाली है।

शाम वाली भीड़ श्रीमती काफे में जुटने लगी है। उस भीड़ में हर कोई व्यस्त है, लेकिन भवनाथ बाबू में कोई व्यस्तता नहीं है। बल्कि वे भौंहें सिकोड़ कर थोड़ी नाराजगी के साथ सबको घूर रहे हैं।

चटर्जी बाबू, यानी गोलोक चटर्जी की मंडली निराली है। उस मंडली में बीच का आसन चटर्जी बाबू का है। आज वे भूत-प्रेत की कहानी सुना रहे हैं। किसी बादशाह के बेटे ने किसी भठियारिन की बेटी से प्यार करके किसी जिन को अपने कब्जे में किया था। यह उसी की कहानी है। आजकल तो प्यार करना ही भूत-प्रेत का काम बन गया है।

सुनिर्मल बार-बार सोने की हाथघड़ी देख रहा है। सरसी उसे बुलाने आयेगी।

रात के नौ बजने के बाद श्रीमती काफे जब करीब-करीब खाली हो जाता है, चरण जब अपना भात पकाने के लिए चूल्हे पर हाँड़ी रखता है, कस्बे की बड़ी सड़क पर जब लोगों की भीड़ कम हो जाती है, रेलवे स्टेशन पर जब लोकल ट्रेनों की आवाजाही कम होने के बाद मेल ट्रेन के मुसाफिर उसकी इंतजारी में ऊँघने लगते हैं, घोड़ागाड़ियों के कोचवान निराश हो जाते हैं और घोड़ों के मरियल शरीर निढाल लगने लगते हैं और दक्षिण से चैती हवा का झोंका दौड़ पड़ता है, तब भजन और भवनाथ बाबू पीछे की कोठरी में जाते हैं।

इतनी देर तक इंतजार करना भवनाथ बाबू के लिए बरदाश्त के बाहर है। बच्चे की तरह रोने को मन करता है। मन करता है कि भजन से लड़ जायँ। रोज वे अपनी इस बेचैनी को दबा कर शांत स्वर में कहते हैं, "अब कल से नहीं आऊँगा भजन।" लेकिन जब पेट में शराब पड़ती है, उनको अपना अस्तित्व महसूस होने लगता है और दूसरे दिन शाम को वे सही समय पर पहुँच जाते हैं।

शराब के इस अड्डे में कभी-कभी भजन भुन्नू सारथी को बुला लेता है। शुरू-

शुरू में यह देख कर भवनाथ बाबू घबड़ा गये थे एक कोचवान के साथ बैठ कर शराब पीना ! लेकिन भजन के चक्कर में पड़ कर उनको अपना आत्मसम्मान खोना पड़ा है। अब मुन्नू उनके लिए बरदाश्त के बाहर नहीं है। लेकिन शराब पीये बगैर चरण मुंह बाये देखता रहेगा, यह वे बरदाश्त नहीं कर सकते।

आज भी शराब पीने के बाद बाहर आ कर भवनाथ बाबू ने रोज की तरह वही बात कही, "देखो भजन, मैंने सुना था कि बूढ़ों को कोई ख्वाहिश नहीं रहती। लेकिन मैं ईमानदारी से कह सकता हूँ कि मेरे बड़े लड़के से ज्यादा ताकत मुझमें है।"

भजन कहता है, "आपको देख करके तो यही लगता है। क्या फिर से शादी करने को मन कर रहा है?"

"तुमको बस मजाक सूझता है। क्या इस उम्र में कोई शादी करता है?" फिर अचानक गंभीर हो कर भवनाथ बाबू आँखें बंद कर लेते हैं। फिर वे भारी आवाज में कहते हैं, "लेकिन एक बात है भजन, लड़के की शादी करके मैंने गलती की है!"

भवनाथ बाबू रोज ऐसी बक-बक करते हैं, इसलिए भजन निर्विकार श्रोता है। लेकिन अभी उसने कहा, "यह तो आपने नयी बात कही बनर्जी भैया!"

"हाँ भई, नयी बात कह रहा हूँ।" मानो भवनाथ बाबू थोड़ा उत्तेजित हुए। वे कहने लगे, "नौकरी, शादी और फिर गिरस्ती के जाल में न फँसा कर अगर लड़के को थोड़ा बिगड़ने देता तो देखता कि उसका क्या परिणाम होता है। यानी, वह अपनी जिंदगी को कैसे बनाता है, वही देखता।"

अब जरा हैरानी से भजन ने भवनाथ बाबू की तरफ देखा और कहा, "आप यह क्या कह रहे हैं बनर्जी भैया? बेटे की कीमत पर आप वैसा एक्सपेरिमेंट क्यों करते?"

पेट में अल्कोहल पड़ने के कारण भवनाथ बाबू के चेहरे पर अजीब-सी लाली झलकने लगी। काफे के तेज प्रकाश की किरण दरवाजे के शीशे से परावर्तित हो कर उनके चेहरे पर पड़ी तो उनका चेहरा बड़ा चमचमाता हुआ लगा। उनका चेहरा देख कर भजन ने सोचा कि शायद यह भवनाथ बाबू न हों!

भवनाथ बाबू ने कहा, "भजन, अपनी जिंदगी की तरफ देखता हूँ तो मुझे कुछ फाइलें, कागजात और बंगाल के कई रेलवे स्टेशनों के अँधेरे कमरों के अलावा और कुछ नजर नहीं आता। सच कहता हूँ, मुझे अपनी पत्नी का चेहरा भी याद नहीं पड़ता। अब मुझे अपने बेटे की जिंदगी देख कर लग रहा है कि शायद मैं भी ऐसा ही था — मानो एक ही सिक्के के दो पहलू! लेकिन इसकी क्या जरूरत थी?"

भजन ने कहा, "यही तो अच्छा है बनर्जी भैया, आप अपने को दोबारा देख रहे हैं।"

भवनाथ बाबू मानो असह कष्ट से छटपटाये और बोले, "राम! राम! मुझे तो घृणा हो गयी है भजन, अब वह जीवन मैं नहीं देखना चाहता। मेरी उम्र।

पहुँचते-पहुँचते मेरे बेटे का भी तो यही हाल होगा ! इसके अलावा और क्या हो स
है ? वह तो पिंजड़े में बंद हो चुका है ।''

भजन ने महसूस किया कि ये भवनाथ बाबू के मन की बातें हैं, एक शर
की अंटसंट बातें नहीं । इसलिए भजन ने पूछा, ''आपका लड़का कैसा होने
आप खुश होते ?''

''यह तो मैं नहीं जानता भजन, लेकिन मैं यह नहीं चाहता कि वह मेरी तर
बने !'' सुनसान सड़क की तरफ देखते हुए भवनाथ बाबू फिर बोले, ''अगर वह चोर
या डाकू बनता, अगर किसी की लड़की भगा कर उससे शादी करता तो भी मुझे एत-
राज न होता । लेकिन वह पान नहीं खाता, बीड़ी नहीं पीता और उसके लिए बीबी
नाम की जो लड़की ला दी है, उसके अलावा और किसी लड़की की तरफ देखता भी
नहीं । उसके बाद के दो लड़के भी मानो उसी की तरह बनते जा रहे हैं । इस आदर्श
से मुझे नफरत हो गयी है भैया ! मैं अपने घुटन भरे कमरे को हवादार देखना चाहता
हूँ । मैं आगे चल कर अपनी ही शक्ल को दोबारा नहीं देखना चाहता ।''

भवनाथ का दर्द मानो भजन को बुरी तरह जकड़ने लगा । वह समझ गया
कि यह दर्द एक गर्भवती का है, जिसकी अँधेरी कोख में शिशु इस दुनिया की रोशनी
देखने के लिए बेचैन होता है । भले ही उस शिशु के बारे में होने वाली माँ के मन में
लाख संशय हो । भजन ने देखा कि भवनाथ के गले की नसें फूल गयी हैं और उनका
चेहरा ज्यादा लाल हो गया है । उस लाल चेहरे पर विचित्र हँसी की झलक है ।

भजन का एक हाथ पकड़ कर भवनाथ बाबू ने बहुत धीरे-धीरे कहा, ''खुदीराम
ी एक बंगाली लड़का था । सरकार ने उसे फाँसी से लटका दिया । तुम्हारे बड़े भाई
ारायण से उसके बारे में बहुत कुछ सुना है । इसी लिए सोचता हूँ कि अगर मेरे बेटे
हाजीवन के उस महामरण के रास्ते पर भी जाते तो मुझे कोई अफसोस न होता !''

भवनाथ की लाल-लाल आँखों से आँसू बहने लगे । भर्रायी हुई आवाज में
ोंने कहा, ''अगर मैं एक बुजदिल बाप की तरह उनको रोकता, तो भी शांति
ती ।''

धीरे-धीरे कस्बे की बत्तियाँ बुझने लगीं और अँधेरा घिरने लगा । स्टेशन के
लोग सो गये । सामने वाली सड़क भी सोने लगी । पीछे की अँधेरी कोठरी में
ऊँघने लगा ।

खामोश चैती रात की हवा में उदासी भरने लगी । उसकी आहों से श्रीमती
ी अछूता न रहा ।

भजन बोला, ''चलिए बनर्जी भैया, घर चलें ।''

फिर दोनों जल्दी-जल्दी बाहर आये ।

ासमान में बादल नहीं हैं । तारे झिलमिला रहे हैं । आकाशगंगा की शुभ्रता
क निखर चली है ।

ावे यार्ड से लूज शंटिंग की धम-धम आवाज आ रही है ।

भजन ने कहा, "आज चलते-चलते भी बनर्जी भैया, आपने नशा चौपट कर दिया।"

फिर भजन गंभीर स्वर में बड़बड़ाने लगा —

"नीली शिराओं में घुलता रहा नीला विष,
लाखों जिंदगियाँ बरबाद होती रहीं,
आज ये किस उच्छ्वास के बुलबुले टूटते रहे !
यह किसका खून ब्याज माँगने लगा ?
एक-एक पैसे का हिसाब जोड़ने लगा ?
यह कैसी नीली बाढ़ जो रुकती नहीं —
लिये हाथ मे लाल पाती वह कौन शिशु
धूल से रंगीन सड़क से चला आ रहा है ?"

भवनाथ और भजन बीच सड़क से चलने लगे। उनके कारण एक मोटरकार को रुकना पड़ा। उसका रास्ता रुका हुआ है। ड्राइवर बार-बार हार्न बजाने लगा।

भजन ने चिल्ला कर कहा, "चुपचाप किनारे से निकल जा !"

मोटरकार मे इसी देश के लोग बैठे हुए हैं — पति-पत्नी। डर के मारे वे सिमट कर सीटों मे ज्यादा धँस गये।

ड्राइवर ने भी डरते-डरते लाट साहब भजन की तरफ मुड़ कर देखा और सचमुच चुपचाप मोटरकार को बगल से निकाल लिया। भजन का गुस्सा ठंडा पड गया। बाहर की खुली हवा मे उसे बड़ा आराम मिलने लगा। वह बोला, "बनर्जी भैया, अब मैं आपकी बातो का मतलब समझ रहा हूँ। आपके सूखे प्राणों में आग लगी है। आज संसार के सभी लोगो के प्राणों में इसी तरह आग सुलग रही है। लेकिन हम गूँगे हैं, कुछ बोल नहीं सकते।"

इतना कह कर भजन चुप हो गया। थोड़ी देर बाद वह फिर कहने लगा, "मैं तो मामूली भजन हूँ, लेकिन लोग मुझे लाट साहब और शराबी कहते हैं। सबने मुझे जमा खाते से निकाल बाहर किया है। करें ! मैं उनको दोष नहीं देता। बचपन से मैंने बाप को शराबी देखा और पड़ोसियों को स्वार्थी। पैसे के लिए ब्लेड से मौसी का गला रेतना भी मैंने अपने मुहल्ले मे ही देखा। माँ या बाप, किसी पर मुझे भरोसा नहीं था। अपने प्रति भी मुझे कोई मोह नहीं था। जिस दिन मैंने पहले पहल शराब पी, निडर हो कर पी। शराब पी कर बाप के सामने गया। पता नहीं, इसके अलावा मैं और क्या करता ? लेकिन किसी उम्मीद को ले कर मैंने कभी किसी की, या किसी बात की परवाह नहीं की। जिंदगी को किसी तरह गला देना ही जिंदगी है ! घर मे खाली शराब की बोतल रख नहीं सकता, बाप खाली कर देते है। गिरस्ती के आगे-पीछे सब सूना है। श्रीमती काफे बालू की भीत पर खड़ा है और मैं कर्ज मे डूबा हुआ हूँ। लोग कहेंगे, यह तो तुम्हारी गलती है। लेकिन मैं सही कैसे करूँ ? मुझे तो डब

की सुख-सुविधा का ख्याल रखना पड़ता है, और श्रीमती काफे से जो आमदनी होती है, वह उसके लिए काफी नहीं है। फिर मेरे बाप तो…"

भजन रुका। भवनाथ बाबू उसकी तरफ देखते रहे, कुछ बोल न सके। भजन फिर कहने लगा, "हाँ, जूही है। आज सोचता हूँ कि उसे क्यों ले आया। उसके पिता ने बहुत रुपया दिया था, वह सब कभी खत्म कर चुका हूँ। फिर मेरे बच्चे निताइ-गौर हैं। उनको मैं कहाँ किसके पास छोड़ जाऊँगा और कहाँ उनको शरण मिलेगी, मैं समझ नहीं पाता। जिंदगी के इस गोरखधंधे से मैं निकल नहीं पाया। जो निकल सके हैं, वे तो बच गये हैं। लेकिन मैं? मैं अपने संदेह, संशय और अविश्वास को ले कर क्या करूँ? कहाँ सिर पटकूँ?"

सहसा भजन को आँधी-पानी की वह रात याद आयी जब वह नारायण भैया को हाड़मुंडी के पुल तक पहुँचाने गया था। भुन्नू की घोड़ागाड़ी से दोनों गये थे। उसी की घड़-घड़ आवाज कानों में गूँजने लगी। भवनाथ बाबू ने भजन का हाथ पकड़ लिया तो भजन को ऐसा लगा कि नारायण भैया ने हाथ पकड़ लिया हो। नारायण भैया का स्वर भी मानो गूँज उठा — तुम्हीं उसको पथ बताओ, दूर करो यह अँधेरा और पथ की सारी बाधाएँ!

लेकिन किससे यह प्रार्थना की गयी और कौन है वह महाशक्ति? भजन को बार-बार निताई, गौर, चरण, जूही और भवनाथ का चेहरा याद आने लगा।

भुन्नू भी मिल गया। वह न जाने क्यों वहाँ खड़ा था। उस रात भुन्नू ने नारायण का दिया सोना नहीं लिया था। भजन ने बड़ी गर्मजोशी से भुन्नू का हाथ पकड़ कर कहा, "जिंदगी के बीहड़ रास्ते में मैं भी तुम्हारी तरह अपनी गाड़ी चलाना चाहता हूँ। मुझे कुली-कबाड़ी बनना गँवारा है, लेकिन मैं कभी रुकना नहीं चाहता, कभी भी नहीं।"

आधी रात, खामोश तारे, झींगुरों की आवाज भी मद्धिम और हवा के झोंके भी उदास-से। सिर्फ नाड़ू पंडित की गली में वारांगनाओं के यहाँ रोज की तरह सुहागरात की धूम मची हुई है।

तभी अचानक सारे वातावरण को चौंका कर किसी की मधुर चिरौरी सुनाई पड़ी — बहू, बोलो न!

अरे! यह तो चिड़िया बोली। गंगा के किनारे किसी पेड़ पर बैठी होगी। बंगाल में इस वनपाखी का नाम ही पड़ गया है — बहू, बोलो न!

श्रीमती काफे के पिछवाड़े चरण की कोठरी के पीछे वही लड़की खड़ी है। अब वह रोज आती है। शायद उसे इस तरह आने की आदत पड़ गयी है। न कहने पर भी वह अपनी इच्छा से काफी देर तक रुकती है। अब वह न जल्दबाजी करती है और न चरण की उपेक्षा।

लेकिन चरण का पहले वाला उच्छ्वास मर चुका है। अब उसमें आवेग भी उतना नहीं रहा। दिन भर चून्हे के सामने जलते रहने से इस समय उसका मिजाज गरम रहता है। लेकिन उस लड़की को देख कर उसका मिजाज ठंडा पड गया। चेहरे पर मुस्कराहट ला कर उसने अपनी चहेती का स्वागत किया और कहा, "आओ। क्या आज कमरे में कोई नहीं था ?"

वह लड़की बहुभोग्या वारवनिता है। उसके होंठों पर टेढ़ी मुस्कान दौड़ गयी। एकाएक उसकी आँखें उदास हो आयीं। फिर भी उन आँखों की उदासी को छिपाने की कोशिश करते हुए उसने कहा, "क्या तुम कोई नहीं हो ?"

"हूँ क्यों नही, लेकिन मैं तो चरण हूँ।"

"किसके चरण ?"

"तुम्हारे।"

"छि !"

वह लड़की हँसी। फिर उसने पूछा कि क्या खाया ? क्या हालचाल है ? उसने अपनी गली की तमाम खबरें सुनायीं। उसके बाद चरण से कहा, "मैं तुमसे प्यार करती हूँ।"

चरण समझता है कि शायद वह प्यार नही करती और ऐसा कहना उसकी आदत है। फिर भी चरण उसके लिए महीने भर की कमाई धीरे-धीरे खत्म कर डालता है। बचे चॉप-कटलेट भी उसे खिलाता है। कुछ कहे बिना ही चरण यह सब करता है जिससे कभी-कभी वह लड़की शरमा जाती है और कहती है, "आज रहने दो, कल लूँगी।"

फिर धीरे-धीरे चरण के मन में उत्तेजना आती है। फिर मन को पछाड कर शरीर जीत जाता है। चरण उस लडकी को दोनो हाथों से पकड कर उसी तरह मसलता है, जैसे कोई रुई के गाले को।

अब वह लडकी स्वाभाविक स्वर में कहती है, "मन करता है कि रोज रात को तुम्हारे पास चली आऊँ, लेकिन उन लोगों का हिसाब चुकाये बिना छुटकारा नही मिलता। तुमने बताया था कि मुझे मसाले वाली बडी पसद है। ठीक है, कल लेती आऊँगी।"

चरण एक बीड़ी खत्म कर दूसरी फूंकने लगता है। बातें करने के लिए उसका मन छटपटाता है, लेकिन जबान सुन्न पड जाती है। उसे अपनी आँखों के सामने मानो वही असीम समुद्र और वही अनंत आकाश दिखाई पड़ने लगता है। फिर वह कहता है, "मसालेदार बड़ी लाना और कल यहीं मछली-भात खा लेना।"

बंगाल मे मछली-भात खाने का न्योता सुहागिनों के लिए विशेष महत्व रखता है। हर सुहागिन यही कामना करती है कि 'नोआ' (लोहे की चूडी), सिंदूर, मछली-भात और पति बने रहे। कोई बड़भागी ही इनको पीछे छोड कर स्वर्ग को सिधारती है।

"जूही।"

भजन ने आवाज दी।

रात के सुनसान रास्ते की तरफ देखती जूही खिड़की के पास खड़ी है। उसने कहा, "आयी।"

जूही ने दरवाजा खोल दिया।

दरवाजा खोलने के बाद जूही रसोईघर की तरफ जाने लगी। भजन ने उसका हाथ पकड़ लिया। कहा, "आज कुछ नहीं खाऊँगा जूही।"

यह कोई नयी बात नहीं है। अक्सर रात को भजन खाना नहीं खाता। इससे जूही को तकलीफ होती है। वह कहती है, "इस तरह कब तक चलाइएगा। शरीर टूट जायेगा न?"

"सच कह रहा हूँ निताइ की माँ, भूख एकदम नहीं है।"

इस तरह कहने पर जूही जोर-जबर्दस्ती भी नहीं कर सकती। वह भजन के तपते माथे को सहलाती है। फिर घर-गिरस्ती की बात और बीमारी की बात शुरू होती है।

आज भजन अचानक ऐसी बात कह देता है, जिससे मानो जूही के हृदय का कपाट पूरी तरह खुल जाता है। भजन पूछता है, "जूही, क्या तुमने यही चाहा था? तुमने अपने जीवन में भविष्य का जो सपना देखा था, क्या उसमें कभी ऐसी रात की बात सोच सकी थी?"

जूही चुप रही। उसकी आँखों से आँसू बह चले। स्वप्न क्या, दुःस्वप्न में भी उसने कभी ऐसी रात की कल्पना नहीं की थी। किशोरावस्था में उसकी देह कभी-कभी उल्लसित हो उठती थी, लेकिन वह इस रात के लिए कभी नहीं। वह भजन की छाती से लग जाने के लिए आकुल हो उठती है क्योंकि पति उसके लिए शिव के समान है। लेकिन जब वह क्वारी थी, तब शिवपूजा के दौरान उसने कभी शिव की ऐसी मूर्ति की कल्पना नहीं की थी। आज वह सब सोचने से क्या लाभ है!

भजन कहता है, "मैं जानता हूँ कि तुमने ऐसा नहीं चाहा था। कोई भी लड़की ऐसा नहीं चाहती। लेकिन यह संसार बड़ा विचित्र है। इसलिए सिर्फ मुझको दोष मत दो जूही। अगर दोष देना है, अभिशाप देना है तो इस पुरुष-शासित समाज को दो। तुम घर के अँधेरे कोने में पड़ी रहती हो, लेकिन मुझे पता है कि तुम्हारी छाती में कैसी आग छिपी हुई है। अगर कभी वह आग जलाओ तो इस दुनिया को जला डालना।"

जूही कहती है, "छोड़िए। मैं आपकी इतनी बातें नहीं समझ सकती। लेकिन इतना समझ सकी हूँ कि मैं आपको बाँध नहीं सकी, आपको कभी पा नहीं सकी, अपना नहीं बना सकी।"

रुलाई उमड़ आयी तो जूही की आवाज लड़खड़ा कर खामोश हो गयी।

भजन के मन में आया कि चिल्ला कर कहे — सचमुच तुम मुझे नहीं बाँध सकी। तुमने अपनी नारी की सारी शक्ति को दबा रखा है। तुम अपनी हार का अप-

मान लिये पड़ी हो। इसलिए हम दोनों ही एक-दूसरे को नहीं पा सके।

शायद सपना देख कर निताइ पुकारा, "माँ !"

"यही तो हूँ बेटा !" जूही बोली। उसके बाद सो रहे निताइ के सिर पर हाथ फेर कर उसने भजन से कहा, "बे-सिर-पैर की चिंता छोड़िए और सो जाइए। बहुत रात हो गयी है।"

हाँ, बहुत रात हो गयी है। लंबी साँस छोड़ कर भजन चुपचाप जूही के पास लेट गया। फिर भी वह मन ही मन बड़बड़ाया — कुछ तो बोलो ऐ मौन रात, कुछ तो बोलो !

बाहर आधी रात का मौन गिड़गिड़ाता रहा — बहू, बोलो न ! बहू, बोलो न !

शाम को श्रीमती काफे में भीड़भाड़ रहती है। उसी समय तिलक ठाकुर का आगमन हुआ। शायद आदत के मुताबिक ही पिछवाड़े के कमरे की तरफ निगाह दौड़ाने के बाद उन्होंने नथना फूला कर भजन से कहा, "कम से कम एक दिन तो विलायती खाना खिला दो।"

आज शाम होते ही भजन ने टेबुल पर सिर टिका दिया था। यानी, उसने जम कर शराब पी थी। सिर उठा कर तिलक ठाकुर से कहा, "खायेंगे ? ठीक है, बैठिए। आज मैं आपको खिलाऊँगा।"

तिलक ठाकुर मानो भजन की बात पर विश्वास नहीं कर सके। फिर भी खुश हो कर लार निगलते हुए उन्होंने कहा, "सच कह रहे हो बेटा ?"

"क्या मैं झूठ बोल रहा हूँ ?" तिलक ठाकुर से यह कह कर भजन ने हाँक लगायी, "चरण !"

मुँह लटकाये चरण आया। भजन ने उससे कहा, "ठाकुर चाचा जो कुछ खाना चाहते हैं, खिला दे। कोरमा पोस, करी, चॉप-कटलेट वगैरह सब कुछ दे।"

तिलक ठाकुर ने हँस कर सब की तरफ देखा। फिर दोनों हाथ आपस में रगड़ते हुए वे भवनाथ बाबू के पास बैठ गये। फिर धीरे-धीरे, ताकि भजन सुन न ले, भवनाथ बाबू से बोले, "शराबी और भगवान, दोनों में ज्यादा फर्क नहीं है। दोनों एक जैसे हैं। फिर भजन तो मेरा भतीजा है !"

फिर तिलक ठाकुर लोभी राक्षस की तरह खाने और उस विलायती भोजन की तारीफ करने लगे। वे बोले, "अगर यही विलायती खाना है तो मैं दिल से कह रहा हूँ कि यह देश ही विलायत बन जाय ! जीता रहो बेटा, तुम्हारा श्रीमती काफे और भी तरक्की करे।"

तिलक ठाकुर खा चुके तो भजन ने उनसे पूछा, "और कुछ खायेंगे ?"

"नहीं बेटा, खूब छक कर खाया है। फिर किसी दिन आ जाऊँगा।"

भजन ने हांक लगायी, "चरण !"

"जी।"

"ठाकुर चाचा ने क्या-क्या लिया है ?"

चरण बोला, "चार पीस कोरमा, एक प्लेट करी, दो चॉप और दो कटलेट।"

भजन बोला, "यानी, तीन रुपये दस आने।"

तिलक ठाकुर जरा मन मारे हुए बोले, "सचमुच बेटा, बहुत ज्यादा खा लिया है।"

"अरे, इसमें हर्ज क्या है ? आपने अपने पैसे से खाया।" फिर भजन ने लाल-लाल आंखों से तिलक ठाकुर को देखते हुए कहा, "ब्याज वसूल कर लौट रहे हैं। टेंट में पैसा है। निकालिए।"

जबर्दस्ती हँसने की कोशिश करते हुए तिलक ठाकुर ने कहा, "कैसी बात कर रहे हो बेटा ?"

भजन खड़ा हो गया और बोला, "कोई ऐसी बात नहीं कर रहा हूं। तीन रुपये दस आने दीजिए, फिर जाइए। चरण, रुक जा।"

तिलक ठाकुर को काटो तो खून नहीं। मानो वे चीखे, "तुम्हीं ने तो खिलाया बेटा !"

"मैं तो सब को खिलाता हूं। क्या पैसा नहीं लेता ?"

तिलक ठाकुर ने रोनी सूरत बना ली। रेस्तोरां में जितने लोग बैठे थे, सबके लिए वे तमाशा बन गये। उनकी दुहाई पर किसी ने ध्यान नहीं दिया।

"ठाकुर चाचा ! इसी को कहते हैं पैसा दे कर सबक सोखना। जल्दी पैसा निकालिए, नहीं तो बेइज्जत होना पड़ेगा।" भजन ने कड़क कर कहा।

सचमुच तिलक ठाकुर की आंखें गीली हो आयीं। टेंट से पैसा निकाल कर देते हुए वे चीखे, "अगर मैं सच्चा बाभन हूंगा तो मेरा अभिशाप अवश्य फरेगा।"

"अभिशाप मुझे नहीं, अपने भगवान को दीजिए जिन्होंने मुझे बनाया है।" भजन ने मुस्कराते हुए कहा।

तिलक ठाकुर तब तक चीखते-चिल्लाते सड़क पर पहुंच गये।

भजन ने चिल्ला कर कहा, "ठाकुर चाचा, सुनिए !"

तिलक ठाकुर में आशा जगी कि शायद भजन पैसा लौटा देगा। वे लौट आये।

भजन ने पूछा, "बताइए मैं कौन हूं ?"

"भजन।"

"नहीं। लाट साहब भजन ! खैर, मिजाज खराब मत कीजिए। गानू पंडित की बेवा पतोहू के पास चले जाइए, सब ठीक हो जायेगा।"

तिलक ठाकुर जनेऊ हाथ में ले कर गुस्से के मारे कांपते हुए चीखे, "हे भगवान, हे ईश्वर, हे चंद्र-सूर्य, इस शैतान का विनाश करो !"

"वाह रे चाचा, आप के तो कई-कई भगवान हैं !"

लेकिन तिलक ठाकुर अब वहां नहीं रुके ।

तिलक ठाकुर चले गये तो भजन ने भवनाथ से कहा, "मुझे घिसने आये थे ! एक बार चित्तरंजन दास के साथ भी ऐसा हुआ था । किसी ने आ कर उनसे प्रफुल्ल घोष के बारे में कहा था कि घोष बाबू बड़े सीधे हैं । इस पर दास जी ने कहा था, जी हां । लोहे की छड़ गरम करके घोष बाबू की खोपड़ी में घुसेड़ कर निकाल लीजिए तो वह पेचदार बन जायेगी । घोष बाबू इतने सीधे हैं । बनर्जी भैया, ये लोग भी उसी तरह हैं ।"

भजन की बात सुन कर सब लोग हँसने लगे, लेकिन हीरेन को हँसी नहीं आयी ।

और भी एक जने को इस तमाशे से कोई मतलब नहीं है । वह है सुनिर्मल । वह सूनी आंखों से बाहर की तरफ देख रहा है । एक नंबर प्लेटफार्म के उस पार, दो नंबर प्लेटफार्म के ओवरब्रिज के शेड के नीचे से आसमान का जो टुकड़ा दिखाई पड़ रहा है, वहां बड़ा सा चमचमाता तारा है । सुनिर्मल उसी को देख रहा है । उसी को देखते हुए सुनिर्मल को सरसी राय, उसकी हँसी और उसकी आंखों की चमक याद आ रही है ।

उस शोरगुल में भी सुनिर्मल एक गीत की कड़ी गुनगुनाने लगा —

क्यों रे पथिक, यह चंचलता···

तिलक ठाकुर भी आसानी से मानने वाले जीव नहीं हैं । वे श्रीमती काफे से निकल कर सीधे भजन के पिता महादेव हालदार के पास गये और एकदम रोने लगे ।

महादेव हालदार बाहर वाले बरामदे में आरामकुर्सी पर लेटे हुए हैं । अब उनके चेहरे से जाहिर होने लगा है कि उनकी सेहत टूट चुकी है । खिन्नता और उदासीनता के कारण वे बहुत ज्यादा गंभीर लगने लगे हैं । भजन के चेहरे का तीखापन अब भी उनके चेहरे पर बाकी है, लेकिन विषाद की कई टेढ़ी-मेढ़ी रेखाओं के कारण वह मानो भोथरा बन गया है ।

हालदार बाबू को देखने से लगता है कि कभी उन्होंने इस संसार से प्यार किया था, लेकिन बदले में उन्हें बेवफाई मिली । इसी लिए मानो उनमें कड़ुवापन घुल गया है । कटार जैसी उनकी खड़ी नाक भी मानो अब काफी लटक आयी है ।

जैसे बैठे थे, वैसे ही बैठे रहे हालदार बाबू । अपलक खिन्न आंखों से उन्होंने एक बार तिलक ठाकुर को देखा ।

तिलक ठाकुर ने हालदार बाबू से भजन की बदतमीजी की शिकायत की और गानू पंडित की पतोहू वाली बात को छोड़ कर सारी बातें बतायीं । अंत में उन्होंने कहा, "आपको याद है न भैया, काली कायथ से आपके मुकदमे के आखिरी दिन आपने मुझसे दस रुपया मांगा था । मेरे पास उस समय सात सौ रुपया था, लेकिन मैंने आपको

दस रुपया नहीं दिया था। रुपया मेरे लिए बड़ा प्यारा है भैया! लेकिन आप तो उस वक्त मुझ पर नाराज नहीं हुए थे। लेकिन आज आपके लाड़ले ने मुझे खिलाने के नाम पर कितना बेइज्जत किया। अगर आप सच्चे बामन हैं तो इसमें न्याय कीजिए।"

सब कुछ सुन लेने के बाद भी महादेव हालदार का चेहरा वैसा ही निर्विकार बना रहा। जैसे निर्विकार भाव से उन्होंने सब कुछ सुना, वैसे ही निर्विकार भाव से उन्होंने कहा, "तुम एक काम करो तिलक। पांच रुपये खर्च करके दस रुपये पाना चाहते हो?"

तिलक ठाकुर की आँखें चमक उठीं। उन्होंने कहा, "यह कौन नहीं चाहता भैया?"

"फिर तो तुम्हें दस पैसे खर्च करके सदर जाना पड़ेगा। वहाँ जा कर हमारे वकील मित्र बाबू से मुलाकात करनी पड़ेगी। फिर उनसे कागजात तैयार कराके भजन के खिलाफ मुकदमा दायर करना पड़ेगा। मारपीट और मानहानि का मुकदमा। लेकिन कागजात भी ऐसे तैयार कराने होंगे कि वह मुकदमा एक नंबर मजिस्ट्रेट के पास जाय। इतना कर सकोगे?"

इतना कह कर महादेव हालदार ने फिर वैसे ही निर्विकार भाव से तिलक ठाकुर की तरफ देखा।

तिलक ठाकुर आँखें फाड़-फाड़ कर महादेव हालदार को देखने लगे। उनको कोई जवाब नहीं सूझा। वे बस यही सोचने लगे कि यह तो मैं और अच्छी जगह आ फँसा। फिर भी उनके मुँह से निकला, "आप अपने बेटे के खिलाफ मुकदमा लड़ने को कह रहे हैं?"

महादेव हालदार ने अपनी धुन में कहा, "मित्र बाबू से यह भी कह देना —"

लेकिन तब तक तिलक ठाकुर बरामदे से नीचे उतर गये। उन्होंने कहा, "अब और सलाह मत दीजिए भैया, आपको भी नमस्कार। तीन रुपये दस आने दे कर खूब सबक सीख लिया।"

इतना कह कर तिलक ठाकुर मानो वहाँ से भागे।

इस पर भी महादेव हालदार निर्विकार बने रहे। उन्होंने अँधेरे में पूरब आसमान की तरफ देखा। उन्होंने देखा कि उस अँधेरे में भी कहीं ज्यादा अँधेरा है। मानो धुएँ के विशालकाय छल्ले उठ रहे हैं। वही धुआँ चारों तरफ भर रहा है। उस धुएँ में साँस लेना भी मुश्किल हो गया।

अनायास हालदार बाबू के मुँह से निकला, "हे नारायण!"

फिर हालदार बाबू को मानो अपनी आँखों के आगे कोई अंधेरी छोटी कोठरी दिखाई पड़ी, जिसमें लोहे के सीखचे लगे हैं। उस कोठरी में बैठा कोई एक हाथ गाल पर धरे किताब पढ़ रहा है। मानो वह बहुत धीरे-धीरे कुछ कह रहा है और उस अँधेरे में उसी की आवाज गूँजने लगी है — मुक्ति, स्वतंत्रता, मैत्री!

उसी वक्त कोई हालदार बाबू के सामने आ कर खड़ा हुआ। उन्होंने आँखें बड़ी-बड़ी करके पूछा, "कौन, नारायण ?"

हालदार बाबू के बड़े लड़के का नाम नारायण है।

लेकिन हालदार बाबू को जवाब मिला, "जी नहीं, मैं नि हूँ।"

"नि कौन ?"

"जी ता !"

"ता ?"

"जी, छोटी इ भी है।"

हालदार बाबू ने स्नेह से कहा, "हरामजादा !"

इससे निताइ की हँसी और तेज हो गयी और उसकी गूँज से सारा मकान गूँजने लगा। जूही चौंक कर रसोईघर से बाहर निकली। कमबख्त पढ़ना-लिखना छोड़ कर दादा के पास पहुँच गया है।

जालियाँवाला बाग काड दोबारा हो जाय, ऐसे आंदोलन के लिए नहो, बल्कि उसकी यादगार मे जालियाँवाला बाग दिवस मनाने की अपील की गयी। यह अपील कांग्रेस ने की। बी० पी० सी० सी० की तरफ से यह अपील सारे भारत में प्रसारित की गयी। सुभाष बाबू से केन्द्रीय नेतृत्व के मतभेद को ले कर बंगाल कांग्रेस में मानो वामपंथी झुकाव आ गया है। फिर भी फूंक-फूंक कर कदम रखा जाने लगा। लेकिन कितना ही फूंक-फूंक कर कदम क्यों न रखा जाय, अफवाह सुनाई पड़ने लगी कि वर्किंग कमेटी सुभाष बाबू को कांग्रेस की सदस्यता से वंचित करेगी। यह भी सुनाई पड़ने लगो कि बी० पी० सी० सी० को भंग करके ऐड हाक कमेटी बनायी जायेगी। उस कमेटी में गांधी जी के समर्थक कांग्रेसी होंगे। यह भी सुनने मे आया कि सुभाष बाबू नयी पार्टी बनायेंगे।

इस झगडे में होरेन और कृपाल भी हैं। वे बी० पी० सी० सी० से खुश नही हैं। लेकिन वे वर्किंग कमेटी से भी खुश नहीं हैं। इधर कई बरसों में विभिन्न प्रदेशों में कांग्रेस की असेम्बली ने जिस ढंग से काम किया, वह होरेन या कृपाल को पसंद नहीं है। उन लोगो ने देखा कि आपस में ही गुटबाजी होती है और सत्ता का दुरुपयोग होता है। उन लोगो ने और गांधी जी ने जैसा चाहा था, पता नही वैसा कब होगा ! दूसरी तरफ वे सब लोग हैं, जो अर्धरात्रि के निद्रित भारत को, उषा के मंगलगान स्तवपाठ और घंटा-घड़ियाल की ध्वनि से मुखरित मंदिरमय भारत को संघर्परत वणिक मनोवृत्ति वाले पाश्चात्य देशों के समान बनाना चाहते हैं।

आजकल इसी लिए होरेन राजनीति से बहुत दूर रहने लगा है। ऐसा किये बिना चारा भी तो नहीं है। जिस मंदिर का उसने स्वप्न में निर्माण किया था, उसकी पुजारिन तो रमिया झाड़ूदारिन है। फूल, फल और अपने हाथ से बनाये मिष्टान्न से

देवता की पूजा करेगी। फिर उसी से प्रसाद पा कर लोग कृतार्थ होंगे। लेकिन वह सब नहीं हुआ। घिनौनी दुनिया ने रमिया को घिनौना और जहरीला कीड़ा बना कर छोड़ा। और वह भाभी? उसकी आंखों में आग और खतरनाक हँसी है। वैसी हँसी देख कर ही तो मर्द पागल बन जाते हैं। नहीं, हीरेन ने कहीं भाग जाने का इरादा किया।

कृपाल भी बी० पी० सी० सी० के रवैये से खुश नहीं है। लेकिन उसने दो नावों पर पांव रख लिया है। वह अधिकार पाना चाहता है। उसका सब से ज्यादा गुस्सा प्रियनाथ वगैरह पर है। लेकिन सेंट्रल कमेटी ने बड़े ढंग से और सौजन्य के साथ उन लोगों को बता दिया है कि कांग्रेस में रहने और न रहने को ले कर झगड़ा नहीं किया जायेगा। रास्ते भले ही अलग-अलग हों, काम को महत्त्व दिया जायेगा।··· लेकिन काम क्या हो रहा है, खाक! समाजवाद का ढकोसला करके बस मजदूरों को भड़काना ही उन लोगों का काम है। अंत तक वे सब भी तो सुनिर्मल की तरह मास्टरनी के पीछे भागेंगे और तपेदिक के शिकार होंगे।

इसलिए जालियाँवाला बाग दिवस मनाने की अपील के मामले में कृपाल को रथीन और प्रियनाथ पर विश्वास नहीं है। फिर भी कांग्रेस ने कहा है कि शांतिपूर्ण ढंग से जुलूस निकलेंगे और सभाएँ होंगी। सामान्य नागरिक और छात्र अपना प्रतिदिन का काम करते हुए शहीदों को याद करेंगे। कांग्रेस के कार्यकर्ता पार्टी दफ्तर में बैठक करेंगे। वहीं वे शोक व्यक्त करेंगे, शहीदों को श्रद्धांजलि देंगे और उनकी आत्मा की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करेंगे।

लेकिन दिन चढ़ते ही देखा गया कि स्कूल के छात्र फाटक के सामने खड़े हैं। फिर उन किशोरों के समवेत स्वर ने घोषणा की — जालियाँवाला बाग जिंदाबाद!··· उन नारों से आसमान चौंक उठा।

कृपाल और हीरेन वगैरह श्रीमती काफे में ही रुक गये। सब सोचने लगे कि यह क्या हुआ? यह किसकी शरारत है? हड़ताल या प्रदर्शन करने की बात तो नहीं थी। कांग्रेस की अपील तो ऐसी नहीं है।

हीरेन बोला, "लगता है, रथीन वहीं है।"

कृपाल ने पूछा, "क्यों?"

"यह मैं क्या जानूं!" औरतों की तरह हाथ चमका कर हीरेन ने जवाब दिया।

रथीन कांग्रेस का सदस्य है। वह कैसे छात्रों की हड़ताल में चला गया? उसे वैसा करने के लिए पार्टी की तरफ से निर्देश भी नहीं मिला!

"सुनिर्मल भी गया होगा!" कृपाल चिढ़ कर बोला।

इस पर हीरेन ने नाराज हो कर कहा, "तो मुझे क्यों डाँट रहे हो?"

हीरेन ने जेब से गीता निकाली।

स्कूल के फाटक के पास से किसी की आवाज सुनाई पड़ी, "बंधुओ! मेरे छात्र

साथियो ! यह अंग्रेजों के झूठे इतिहास का कालकोठरी हत्याकांड नहीं है। यह कोई कहानी नहीं है। आज के ही दिन अंग्रेजों ने सैकड़ों भारतवासियों की हत्या की थी। यह हत्याकांड पंजाब में हुआ था। छोटे से मैदान में, जहाँ से भागने का रास्ता भी एक ही था, निहत्थी जनता पर अंग्रेज सैनिकों ने गोलियाँ बरसायी थीं।''...

हल्ला बढ़ने लगा।

लोग समझ रहे हैं कि भजन टेबुल पर सिर रख कर सो रहा है। लेकिन अचानक वह चिल्लाया, ''एकदम सही कहा है ! एकदम सही !''

कृपाल ने उधर ध्यान न दे कर कहा, ''रथीन तो कम से कम लड़कों से घर जाने के लिए कह सकता है !''

हीरेन कृष्णार्जुन के प्रश्नोत्तर में डूब गया।

भजन ने भारी आवाज में कहा, ''अब वे लड़के कभी घर नहीं लौटेंगे !''

हेड मिस्ट्रेस सरसी का दिल धड़क उठा। हवा के झोंके में जंगली घास की तरह वह काँपने लगी। उसके चेहरे से लगा कि उसे आंधी-तूफान का इंतजार है। शायद अभी वह तूफान उसके स्कूल के फाटक से आ कर टकरायेगा। वह तूफान उसके लड़खड़ाते प्रतिरोध को धराशायी कर देगा। फिर वह तूफान उसके छोटे से स्कूल को अपने आगोश में ले लेगा। लड़कों की देखादेखी लड़कियाँ भी सड़क पर निकल जायेंगी। ऐसे तूफान के आगे-आगे सुनिर्मल जैसा बवंडर चलता है। सरसी सोचने लगी कि वह बवंडर मेरा यह घर ध्वस्त कर देगा और मेरे अस्तित्व की जड़ें हिल जायेंगी।

लेकिन सुनिर्मल वैसा कहाँ कर पा रहा है ! वह तो बीच रास्ते में आ कर रुक गया। उसने मुँह से जलती सिगरेट ले कर दूर फेंक दी। असह्य दर्द होने लगा। मानो कोई घुमा-घुमा कर छाती में पेंच धँसा रहा है। अब आंदोलन उसके लिए कोई मानी नहीं रखता, जालियाँवाला बाग दिवस भी नहीं। फिर भी वह एक बार छात्रों के सामने जा कर खड़ा होना चाहता है। चाहे जितना आलस हो और चाहे जितनी थकावट, यही उसका एकमात्र नशा है। लेकिन चलना भी उसके लिए मुश्किल हो गया। खाँसी के हर झटके के साथ खून के छींटे रूमाल को रँगने लगे। सरसी नाम का अंग्रेजी पहला अक्षर 'एस' रूमाल के कोने में मानो राजहंसी की तरह गर्दन टेढ़ी किये हुए है। लाल रेशम से कढ़े उस अक्षर पर भी खून के छींटे पड़े।

सुनिर्मल ने कभी ऐसी थकावट महसूस नहीं की। अरी पृथ्वी, रुक जाओ ! थोड़ी ही दूर पर स्कूल के फाटक के सामने छात्रों की भीड़ है। उनके नारे हवा में तैरते आ रहे हैं। वहीं तो श्रीमती काफे के बरामदे में कृपाल दत्त हक्का-बक्का खड़ा है। सिर्फ दर्शक के रूप में ही सही, आये बिना सुनिर्मल से रहा नहीं गया।

अचानक सुनिर्मल की छाती में रुलाई उमड़ आयी। यह कैसा जीवन बन गया है उसका ! क्या उसने अपने जीवन में यही चाहा था ? लेकिन सब कुछ गड़बड़ा गया।

वह मन ही मन बड़बड़ाने लगा — सरसी, सरसी मुझे कहीं ले चलो, बहुत दूर, जहाँ सिर्फ हम दोनों होंगे।···सुनिर्मल चलता रहा — हरिजन उद्धार, पॉपूलर फ्रंट, बंबई की कपड़ा मिलों में हड़ताल और स्पेन की राजधानी माद्रिद !

तभी कोई चिल्लाया, "पुलिस !"

छात्र तितर-बितर होने लगे।

जालियाँवाला बाग और अब्बास उद्दीन का कास-वन !

इधर भजन भी चिल्लाया, "भुन्नू सारथी, अपना रथ सड़क के बीचो बीच कर ले !"

हुक्म होते ही भुन्नू की घोड़ागाड़ी सड़क के बीच आड़े-तिरछे खड़ी हो गयी। उधर घबरायी हुई मनिया भागी आ रही है। मिनिलोसा ! कम चौड़ी सड़क पर पुलिस दल के सामने रुकावट खड़ी हो चुकी है।

भवनाथ बाबू के अफसोस का ठिकाना न रहा। उन्होंने घबड़ा कर भजन से कहा, "भजन ! भजन ! मेरा छोटा लड़का डर के मारे स्कूल से घर भागा जा रहा है !"

सुनिर्मल आ रहा है। द्रविड़ और आर्य सभ्यताएँ। जर्मन संसद राइकस्टाग और ग्रामीण बंगाल। सुभाष और सीतारमैया···

"घर चलो ! मेरी कसम घर चलो !"

यह कहते हुए मनिया ने कोचबॉक्स की तरफ ऊपर ऐसे हाथ बढ़ाये कि वह भुन्नू को खींच कर गाड़ी से उतार लेगी।

कोचवान भुन्नू कुछ नहीं समझता, फिर भी स्वराजियों के लिए उसके मन में हमदर्दी है। मनिया को इस बात का पता है। इसलिए हो-हल्ला शुरू होते ही वह घर से यहाँ सड़क पर चली आयी है। मनिया की आँखों में आँसू छलक आये। मनिया, याने भजन की मिनिलोसा को चिंता है कि इस गड़बड़ी में भुन्नू को कुछ न हो जाय। इसी लिए वह चिल्लाने लगी, "चले आओ। घर चलो।"

इधर भवनाथ बाबू का सब कुछ गड़बड़ा गया। मनिया की तरफ देखते ही वे दिग्भ्रमित से हो गये। जिंदगी में पहली बार मानो उन्होंने किसी औरत की तरफ इस तरह देखा। मानो एक पुरुष ने पहली बार एक नारी को देखा हो। भवनाथ बाबू का दिल धड़कने लगा।

भवनाथ बाबू मनिया को देखते रहे। भरी दुपहरिया जैसा बदन का रंग, आँखों में बेचैनी, उठे हुए सुडौल हाथ, आंचल के नीचे से झांकते पीनोन्नत उरोज, पेट का ऊपरी हिस्सा खुला हुआ और नाभि के नीचे साड़ी कसी हुई। मोनालिसा नहीं, मिनिलोसा ! भवनाथ बाबू ने अनेक बार यही नाम भजन से सुना है। भुन्नू भी मिनिलोसा कहता है, हालांकि वह इसका मतलब नहीं समझता। लेकिन भवनाथ बाबू को यह पता नहीं था कि एक कोचवान की बीवी इस तरह उसके दिल में हलचल मचा

देगी। आखिर दिल को क्या हो गया ? आँखों को क्या हो गया ? धिक्कार है भवनाथ ! तुम कौन हो भवनाथ ?

भवनाथ सज्जन है, चरित्रवान है। पूरा नाम भी कितना बढ़िया है भवनाथ बंद्योपाध्याय।

"गाड़ी हटाओ !" दारोगा चिल्लाया।

"रुक जाओ भुन्नू ! तुम्हारी गाड़ी से घर लौटूंगा।" इधर से लाट साहब भजन चिल्लाया।

जुलूस बायीं ओर सडक से मुड़ने लगा।

सुनिर्मल भीड़ में खो गया। कालिदास और भारतचन्द्र। माइकेल मधुसूदन दत्त और रवीन्द्रनाथ ठाकुर। सुनिर्मल का मन चौंक पड़ा। हाँ, सरसी के साथ शांति निकेतन जाना है।

पुलिसवाले कितनी देर रुक सकते हैं ? फिर इस मौके पर ! घोड़े के सिर पर लाठी पड़ी। गाड़ी पीछे हट गयी।

फिर पुलिसवाले स्कूल के फाटक पर टूट पड़े और बायी ओर की सड़क पर दौड़े। भुन्नू की गाड़ी के पास एक लड़का गिर पड़ा। मनिया ने उसे गाड़ी में उठा लिया और दरवाजा बंद कर दिया।

कृपाल ने हीरेन के हाथ से गीता छीन कर दूर फेंक दी। फिर वह श्रीमती काफे के पिछवाड़े के दरवाजे से बाहर निकल गया।

पुलिस के सिपाही मार्च करते हुए गीता पर से निकले। उनके बूटों से गीता रौंदी, कुचली।

यह १९२१ है या १९३० ?

भुन्नू ने उस लड़के को गाड़ी से उतार कर श्रीमती काफे के अदर कर दिया।

उस लड़के को देखते ही भजन बोल पड़ा, "तुम श्रीधर बाबू के लड़के कानू हो न ?"

कानू ने कहा, "जी हाँ ! और लड़के कहाँ गये ?"

भजन ने दोनों हाथों से खींच कर कानू को छाती से लगा लिया। कानू का माथा सूज गया है। उस सूजन से एक आँख बंद हो गयी है। भजन ने उससे कहा, "और लड़कों का बाद में पता लग जायेगा। लेकिन तुम तो देवता के पूत निकले बेटे !" फिर चरण से कहा, "एक गिलास दूध ले आ।"

भुन्नू ने कहा, "भजन भैया, बीबी को ले कर घर जा रहे हैं।"

"जाओ।" भजन ने कहा।

सामने वाली सड़क खाली हो चली है। पुलिसवाले जुलूस के पीछे भागे हैं। स्कूल भुतहे मकान की तरह लग रहा है।

गाड़ी में बैठी मनिया अब भी कानू को देख रही है। गाड़ी में वह ऐसे बैठी है, जैसे कोई सवारी हो।

भवनाथ बाबू की आँखें पलकें झपकाना भूल गयीं। एक घबड़ायी हुई औरत, बेतरतीब कपड़े, रूखे खुले बाल, लेकिन बदन कितना सुघड़ और कुंदन जैसा रंग। यह तो दुर्गा प्रतिमा जैसा रूप है। भवनाथ बाबू की आँखें किरकिराने लगीं। आखिर यह क्या हुआ? कहीं आँखों को कुछ हो न जाय!

हीरेन बेवकूफ सा खड़ा सड़क पर पड़ी गीता को देख रहा है। गीता के फटे पन्ने हवा में उड़ रहे हैं।···प्रसादे सर्वदुःखानां हानिरस्योपजायते···कायेन मनसा बुद्धया केवलैरिन्द्रियैरपि···मानो समग्र भारत छिन्न-भिन्न हो रहा है।

कानू ने संकोच के साथ दूध का गिलास मुँह से लगाया। भजन ने उससे कहा, "अरे, तुमको पकड़ रखने के लिए दूध नहीं पिला रहा हूँ, बल्कि तुम्हारे आराम के लिए। उस दिन तुम्हें मांस खिलाया था तो तुम्हारे पिता जी मुझे गालीगलौज करने आये थे। खैर, उससे कोई फर्क नहीं पड़ता। श्रीमती काफे का दरवाजा हमेशा तुम्हारे लिए खुला रहेगा।"

भजन को याद आया कि अरे, मेरे बच्चों को भी तो ठीक से दूध नहीं मिलता। न मिले! लेकिन कानू —!

"नारायण हालदार का नाम सुना है?"

लाठी की चोट से सूजी आँख खोलने की कोशिश करते हुए कानू ने कहा, "जी हाँ, आपके भैया।"

"और तेरा?"

कानू ने कहा, "रथीन भैया ने बताया है कि वे हमारे गुरुदेव हैं।"

गुरुदेव! भजन ने ड्रायर खोल कर उसमें से एक किताब निकाली और उसका एक चित्र कानू के आगे किया। फिर पूछा, "इनको पहचानते हो?"

चित्र के नीचे लिखा है — ऋषि कार्ल मार्क्स।

कानू ने पूछा, "ये कहाँ के ऋषि हैं?"

भजन ने कहा, "सारी दुनिया के! यह किताब तुम्हारे गुरुदेव के झोले में थी, अब मेरे हाथ लगी है। मैं तुमको यह किताब दे रहा हूँ, पढ़ना। लेकिन खबरदार, कोई देख न ले!"

कानू दूध पी चुका तो भजन ने उसे घर भेज दिया। फिर वह रैफेल की माँ, सिराजुद्दौला और रवीन्द्रनाथ के चित्रों के सामने जा खड़ा हुआ।

तभी पुलिसवाले बिना पूछे श्रीमती काफे में घुस कर तलाशी लेने लगे।

दारोगा ने भजन से पूछा, "क्या यहाँ कोई छिपा हुआ है?"

भजन ने धीरे से कहा, "है।"

घबड़ा कर दारोगा ने पूछा, "कौन? प्रियनाथ बाबू?"

भजन ने कहा, "जनाब! करीब आइए।"

दारोगा को बड़ा अचंभा हुआ। लेकिन दूसरे ही क्षण भजन उँगली से इशारा करके बताने लगा, "चित्तरंजन दास, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, रैफेल के माँ-बेटा और

रहा। उसने महात्मा गांधी, मोतीलाल नेहरू और अंग्रेजों के बारे में बहुत कुछ सुना था। वही दोहराने लगा। लेकिन किसी के बारे में उसे पूरी जानकारी नहीं है। आजादी क्या है और किस लिए है, यह भी वह नहीं समझता। फिर भी इन्हीं सब के बारे में वह मनिया को बताता रहा। थोड़ी देर आश्चर्य से सब कुछ सुन लेने के बाद मनिया ने अपना पुराना जादू दिखाया, "अगर तुम हर घड़ी यही सब करते रहोगे तो मैं भी किसी के संग भाग जाऊँगी।"

फिर वही बात ! सुनते ही भुन्नू के दिमाग में आग लग गयी और वह गंभीर बन गया। आँखें लाल किये उसने मनिया की तरफ देखा। मनिया ने भी मानो उसके दिल की उस गहराई तक झांक लिया हो। मजाक में भी भुन्नू ऐसी बात बरदाश्त नहीं कर सकता। मनिया उसकी इस कमजोरी को समझती है। इसी लिए वह कपोती की तरह गर्दन टेढ़ी करके मुस्कराती रही और कनखियों से भुन्नू को देखती रही। अपनी बात का असर होते देख कर वह बोली, "मजाक नहीं, मैं सच कह रही हूँ।"

यह सुन कर भुन्नू इस तरह उठ खड़ा हुआ कि अभी मनिया पर झपट पड़ेगा। लेकिन वह अचानक पलट कर बाहर जाने लगा। यह देखते ही मनिया खिलखिला कर हँस पड़ी। उसने आगे बढ़ कर भुन्नू को दोनों हाथों से पकड़ लिया। ऐसा करना भी मानो उसका एक तरह का नशा बन गया है। भुन्नू बाहर जाने के लिए जोर लगाने लगा तो मनिया भी उसे पीछे खींचती रही। इस खींचतान में मनिया का आंचल जमीन पर लोटने लगा। फिर भी उसने भुन्नू को नहीं छोड़ा। वह हँस-हँस कर कसम खाने लगी कि अब कभी ऐसी बात नहीं कहूँगी।

इस पर भी भुन्नू नहीं मानता। फिर मनिया हँसना भूल कर रोने लगी। भुन्नू भी गालीगलौज करने लगा। उसने एक-आध थप्पड़ भी जड़ दिया। उसके बाद इस मामले का रफा-दफा हो गया।

बांकी औरत की टेढ़ी बातें। उसकी आशा-आकांक्षाएँ भी टेढ़ी हैं। वह खुद नहीं जानती कि क्या चाहती है। क्या वह सचमुच मिनिलोसा बनना चाहती है ? लेकिन उसे कैसे मिनिलोसा बनाया जा सकता है, यह तो भुन्नू नहीं जानता !

मनिया मुक्त होना चाहती है। लेकिन वह मुक्ति कैसी है ? मनिया के रोम-रोम में महासागर की मुक्ति कैद है। क्या वह मुक्ति मौत है ? नहीं, नहीं, इस दुनिया में कोई भी मर्द औरत की तकलीफ को नहीं समझता। लेकिन हर औरत में प्रचंड शक्ति और उल्लास हैं। वह उनको अपने में समेटे नहीं रख सकती। उन्हीं को वह मुक्त करना चाहती है।

लेकिन यह कोई भी मर्द नहीं समझता। भुन्नू भी नहीं समझता। वह तो अपने आपको भी नहीं समझता। वह यह भी नहीं जानता कि उसे किस चीज की जरूरत है। बस, कभी-कभी उसके मन में आता है कि लगाम वगैरह सारा साज उतार कर अपने घोड़ों राजा-रानी को ऐसे खुले मैदान में छोड़ दूं, जिसका ओर-छोर न हो, ताकि वे दोनों जीव मुक्त हो जायँ !

भजन कहता है, "बनर्जी भैया, रोज सवेरे उठ कर देखता हूँ कि एक साल बीत चुका है। बाल सारे सफेद होते जा रहे हैं।"

भवनाथ बाबू कोई जवाब नहीं दे पाते। डेढ़ साल बीत चुके हैं, प्रथम प्रेम की गुप्त वेदना उनके बूढ़े दिल को घुन की तरह चाटने लगी है। इसके बारे में वे भजन से भी कुछ नहीं कह सकते। आखिर यह क्या हो गया? यगाना-बेगाना दोनों बराबर हो गये! क्या इसी को बुढ़ापे की सनक कहते हैं? हो सकता है। लेकिन दिल में तो तूफान उठा हुआ है और खून लहरें मार रहा है। क्या मुहब्बत करने वाले नौजवानों की भी ऐसी हालत होती है? रात को नींद नहीं आती और बस प्रेमिका का मुखड़ा याद आता है। लेकिन यह तो प्रेमिका नहीं, एक कोचवान की बीवी है!

भजन हाँफता रहता है। बदन मानो हर वक्त तपता रहता है। पेट में न जाने क्या हो गया है। लगता है कि एक साथ कई फोड़े निकल आये हैं। फिर भी भजन विलायती शीशे में अपना चेहरा देखता है और कहता है—

बालों में झलकती चाँदी, पर मन तो बना है सोना,
नखरे तुम हजार दिखाओ, पर लगना है हाय रोना।

आजकल भजन अक्सर भवनाथ बाबू से श्रीमती काफे, गौर-निताइ और जूही के बारे में बात करता है। न जाने कैसी बेचैनी, न जाने कैसी दुश्चिंता मानो अजगर की तरह उसे धीरे-धीरे निगलती जा रही है।

कभी-कभी भजन आश्चर्य से कानू को देखता रहता है। अब तो वह रथीन वगैरह के साथ श्रीमती काफे के पीछे के कमरे में होने वाली बैठक में भी आता है। वह भजन को देखते ही प्रणाम करता है और कहता है, "मैंने आपकी दी हुई किताब कई बार पढ़ी है और मेरे अनेक दोस्तों को पढ़ायी है। अब हमारे रास्ते में कोई अड़ंगा नहीं डाल सकता।"

सरसी की माँग के सिंदूर ने इस इलाके में तूफान खड़ा कर दिया है। उसने सुनिर्मल से शादी की है। अचानक कार चलने लगे तो उसमें बैठे लोगों को जैसा धचका लगता है, वैसा ही धचका यहाँ घरों के अंदर रहने वाली विधवाओं को लगा। सावन में मानो चैती बयार चलने लगी। कौन ऐसा उदार पुरुष है? सबके मन में बस यही जिज्ञासा है।

लेकिन सुनिर्मल? सरसी की माँग के सिंदूर की चमक उसकी आँखों में नहीं है। उसके सीलन भरे पुराने मकान का अँधेरा ही उसकी आँखों में है। पूजा करते या जप करते समय उसकी माँ जैसी निस्तब्ध रहती है, वैसा ही निस्तब्ध उसका हृदय हो गया है। देर, बहुत देर हो चुकी है। सरसी की सारी उष्णता भी मानो अब सुनिर्मल को उद्दीप्त नहीं कर सकती।

यहाँ की स्कूल कमेटी ने सरसी को नौकरी से बर्खास्त किया है। अब सरसी सुनिर्मल को ले कर समुद्र के किनारे किसी सैनेटोरियम में जायेगी। इतनी जल्दी वह

हिम्मत नहीं हारेगी। उसने फिर से अपनी माँग में सिंदूर भरा है तो क्या इतनी जल्दी पोंछ डालने के लिए ? अपने जीवन के तारे की तरह वह सिंदूर की उस बिंदी को किसी तरह खो नहीं सकती।

भुन्नू ! ओ भुन्नू !"

नाम ले कर पुकारते हुए भवनाथ बाबू भुन्नू के अस्तबल के अंदर उस गलियारी के सामने जा खड़े हुए जहाँ से मकान के अंदर जाना पड़ता है। यह क्या ! यह क्या करने लगे वे ! चरित्रवान भवनाथ बंद्योपाध्याय रेलवे के सेवानिवृत्त कर्मचारी हैं। घर में उनके तीन लडके हैं। बड़े लड़के की शादी हो चुकी है। लेकिन छाती जली जा रही है। गुप्त प्रेम की जलन अब उनसे बरदाश्त नहीं होती। आज वे मरना तय करके आये हैं। अब इसका अंत होना चाहिए।

मनिया बाहर आयी और सहम कर खड़ी हो गयी। उसने देखा कि एक सीधा-सादा बूढ़ा मुँह बाये उसे देख रहा है। बूढ़े की आँखों में पलक नहीं झप रही है। उन आँखों में हैरानी के साथ मानो और भी कुछ है। लेकिन यह बूढ़ा प्रसन्न चटर्जी की तरह बुरा नहीं लगा।

सिर खुला हुआ है मनिया का। घर के काम-काज की भीड़ में आँचल बस छाती पर पड़ा हुआ है। मनिया को किसी तरह का संकोच नहीं लगा। उसने बूढ़े की तरफ देखते हुए कहा, "वह तो घर में नहीं है बाबू जी।"

भवनाथ बाबू के हाथ-पाँव थरथर काँपने लगे। उन्हें ऐसा लगा कि मूँछ भी काँप रही है। उन्होंने भर्रायी हुई आवाज में कहा, "मैं तो तुम्हारे ही पास आया हूँ।"

मनिया के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। पता नहीं क्यों उसे लगा कि बेचारा बूढ़ा हकबका गया है। लगा कि इस बूढ़े को कोई सदमा पहुँचा है। लेकिन कैसा सदमा ? बूढ़ा दो कदम आगे बढ़ा। मनिया को और ज्यादा हैरानी हुई। क्या यह बूढ़ा रोने लगेगा ? जरूर कोई बुरी खबर आयी है और यह बूढ़ा मेरे मर्द की गाड़ी से कहीं जाना चाहता है। लेकिन मेरे पास क्यों आया ? मनिया सोचती रही। फिर दो कदम आगे बढ़ कर उसने पूछा, "आप कौन हैं बाबू जी ?"

भवनाथ बाबू ने एकदम घबड़ाये हुए बच्चे की तरह कहा, "मैं ? मैं भवनाथ हूँ। भवनाथ बनर्जी। नौकरी से रिटायर कर चुका हूँ। मैं रेलवे में नौकरी करता था। मेरे बड़े लड़के की शादी हो चुकी है। लेकिन मैं —"

लेकिन अचानक भवनाथ बाबू का गला रुँध गया। उनकी आँखों के आगे अँधेरा छाने लगा। उनको लगा कि किसी ने छाती के अंदर पिघला हुआ सीसा उँड़ेल दिया हो। उनको मानो अपना चेहरा साफ दिखाई पड़ने लगा, और वह चेहरा एक डरावने काले जानवर का है। वे बुदबुदाये, "मिनिलोसा ! मैं भवनाथ हूँ।"

इतना कह कर भवनाथ बाबू ने दोनों हाथों से अपना चेहरा ढँक लिया। फिर

वे काँपते हुए जल्दी-जल्दी वहाँ से निकल गये। मनिया के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। वह भवनाथ बाबू के पीछे-पीछे अस्तबल के दरवाजे तक गयी और उनको जाते हुए देखती रही। वहीं रुक कर वह बोली, "मिनिसोसा! भवनाथ! पता नहीं कौन है!"

शाम को भवनाथ बाबू श्रीमती काफे में आये। उनके एक हाथ में सूटकेस और दूसरे में छोटा-सा बिस्तर है। उन्होंने भजन से कहा, "लाट साहब, आज रात की ट्रेन से हरिद्वार जा रहा हूँ।"

भजन टेबुल पर सिर रखे पड़ा है। सिर्फ शराब का नशा नहीं, पेट में बड़ी तकलीफ हो रही है। दर्द के मारे वह बेचैन है। किसी तरफ उसका ध्यान नहीं है। फिर भी उसने भवनाथ बाबू से कहा, "चलिए, मैं भी चल रहा हूँ।"

भवनाथ बाबू ने भजन के सिर पर हाथ रख कर कहा, "थमो, अच्छा रहेगा।"

हँसते हुए आँसू पोंछ कर भवनाथ बाबू श्रीमती काफे से निकले।

डाकिया श्रीमती काफे में चिट्ठी दे गया। अंडमान से चिट्ठी आयी है। सीमाहीन समुद्र के बीच एक टापू से आयी वह चिट्ठी सवेरे की मीठी धूप की तरह है।

उस चिट्ठी को खोलने लगा तो भजन मुँह के बल जमीन पर गिर पड़ा। अँतड़ियों में मानो हजारों फोड़ों का दर्द एक साथ होने लगा। मानो जहरीले तीर और शूल से जिगर फूल गया है। मुट्ठी में चिट्ठी मसली जाने लगी। फर्श पर मुँह रगड़ा जाने लगा। मानो पथ का संकेत मिल गया है, मुक्ति का पता चल गया है और अब भजन इस बंधन को चकमा देना चाहता है।

दूर से भजन की हालत देख कर मुन्नू गाड़ी से उतरा। श्रीमती काफे में आ कर उसने दोनों हाथों से भजन को उठा लिया और पूछा, "क्या हुआ भजन भैया?"

दर्द के मारे भजन का चेहरा नीला पड़ गया है। उसके मुँह से आवाज नहीं निकली।

मुन्नू की आवाज सुन कर [illegible] के कमरे से बाहर निकला और समझ गया कि क्या हुआ है। उसने मुन्नू से कहा, "पेट में दर्द उठा है। घर ले जाना होगा।"

"मैं ले जा रहा हूँ।" मुन्नू बोला।

भजन की मुट्ठी में चिट्ठी अभी तक है। उसी हालत में मुन्नू ने उसे दोनों हाथों से उठा लिया और अपनी गाड़ी तक ला कर [illegible] लिटा दिया। फिर वह गाड़ी चला कर भजन के घर की तरफ चला।

मुन्नू ने घर के सामने भजन को गाड़ी से उतार कर दरवाजे से ही चिल्ला कर कहा, "माँ! माँ! [illegible]"

बूढ़ी दौड़ कर बाहर आयीं। मुन्नू ने भजन को ले जा कर बिस्तर पर लिटा दिया तो बूढ़ी बोल उठीं, "हाँ, यह क्या हो गया? [illegible]

हाय-हाय [illegible]?

बच्चे सब दौड़ कर आये। निताइ बोला, "शराब ठंडी होती है न।"

भजन के हाथ से चिट्ठी ले कर जूही ने देखा कि लिफाफा खुला ही नहीं है। इस चिट्ठी में किसी बुरे समाचार का अंदेशा तो नहीं है? फिर क्यों ऐसा हुआ? जूही ने भजन की छाती पर हाथ रख कर पूछा, "अरे सुन रहे हैं? क्या हो गया है आपको? पेट में दर्द है?"

किसी तरह सिर हिला कर भजन ने कहा — हां! उसके बाद वह न जाने क्या बुदबुदाने लगा।

जूही ने भुन्नू से कहा, "भैया, किसी डाक्टर को बुला दो।"

भुन्नू डाक्टर बुलाने दौड़ा। रसोईघर में जा कर जूही पानी गरम करने लगी। पानी गरम हो गया तो उसने उसमें दो बूंद तारपीन का तेल डाला। फिर गरम पानी और मोटा फलालेन का टुकड़ा ले कर वह भजन के पास आयी।

भजन की ऐसी हालत जूही ने कभी नहीं देखी। हाथ-पांव धीरे-धीरे ठंडे होते जा रहे हैं। जूही ने उससे कहा, "देखिए, मैंने कितने दिन मना किया था, कितने दिन आपको टोका था! आज आपने यह क्या कर लिया?"

सभी बच्चे आश्चर्य से मां की घबड़ाहट देखने लगे। सिर्फ निताइ मुंह फुलाये बाप के पास बैठा रहा — क्यों, क्यों इतनी शराब पी? अब मजा चखिए!

भजन ने धीरे से कहा, "चिट्ठी —"

जूही ने पूछा, "पढ़ूं?"

पढ़ो। भजन ने गर्दन हिलायी। जूही पढ़ने लगी —

भाई भजन,

तुम्हारी चिट्ठी मिली। जानते हो न, यहां चिट्ठी पहुंचने में कितना समय लगता है! इसलिए क्यों इतना घबड़ाते हो? क्या तुम्हीं लोग मुझे देखना चाहते हो, और मेरा मन नहीं करता कि तुम लोगों को देखूं? इसलिए ज्यादा परेशान मत होना। फिर एक बात है, मनुष्य कभी एक समान नहीं रहता। मैं भी नहीं रहा। बचपन की वह बात याद है न, एक बार मैं साधु बन कर घर छोड़ कर जाने लगा था? वह कितना बड़ा पागलपन था! उन दिनों मैं बेकार ही भगवान-भगवान चिल्लाया करता था। बार-बार मैंने आसमान की तरफ हाथ उठा कर नमस्कार किया है। अब पता चला कि वह भगवान नहीं था, तुम्हीं लोग थे। मैंने तुम्हीं लोगों को नमस्कार किया है! प्रमीला से भेंट हो जाय तो उसे बता देना कि यहां से मुक्त होने पर उससे मिलूंगा।...

इसके बाद चिट्ठी पढ़ी नहीं जा सकती। स्याही पोत दी गयी है। यह स्याही मानो अंडमान टापू के बाद समुद्र का अथाह पानी हो!

भजन यह समझ गया। उसकी आंख गीली हो आयीं। उसने लड़खड़ाती आवाज में कहा, "जूही! गौर, निताइ, शामू, मिनी!"

इतना कह कर भजन चुप हो गया।

जूही ने पूछा, "क्या कह रहे हैं, बोलिए न ?"

डाक्टर आये। आते ही उनके चेहरे का भाव एकदम बदल गया। उन्होंने भजन की नब्ज देखी।

डाक्टर ने अचानक लंबी साँस छोड़ कर कहा, "ये जो कुछ माँगें, वही दीजिए।"

"आपने ऐसा क्यों कहा ?" जूही रोने लगी।

अचानक भजन ने साफ आवाज में कहा, "जूही, रोओ मत। इधर आओ। मेरे बच्चों को मेरे पास बुलाओ।"

जूही ने जल्दी जल्दी सब बच्चों को उनके बाप के आगे कर दिया और कहा, "अब बताइए, आप क्या चाहते हैं ?"

भजन ने दोनों हाथों से सभी बच्चों को मानो समेट लिया और जूही से कहा, "मुझे थोड़ी-सी शराब दो।"

डाक्टर ने हैरान हो कर कहा, "शराब ?"

जूही ने घबड़ा कर डाक्टर की तरफ देखा।

डाक्टर ने फिर भजन की नब्ज देखी। लेकिन वे कुछ नहीं बोले। उनका चेहरा उदास दिखाई पड़ा।

जूही बोली, "मना मत कीजिए डाक्टर साहब, देने दीजिए शराब! अब तो ये कभी नहीं माँगेंगे।"

इतना कह कर जूही भागी-भागी बगल के कमरे में गयी। वहाँ पहुँचते ही वह ठिठक कर खड़ी हो गयी। उसके ससुर उसके पति की पूरी शराब पी कर खाली बोतल हाथ में लिये बेवकूफ की तरह खड़े हैं। मानो आँधी से टूटा पेड़ बिना डाल-पात के ठूंठ बना मुँह बाये खड़ा है। लेकिन लगता है कि वह भी अब गिर पड़ेगा।

जूही चिल्लायी, "पिशाच ! राक्षस !"

भजन का गला रुँधता जा रहा है। फिर भी उसने कहा, "सोचा था, न जाने कितना डर लगेगा। लेकिन कोई ऐसा डर नहीं है जूही ! पिता जी को बुला दो।"

फिर भजन बुदबुदाया —

कुछ तो बोलो ऐ मौन रात !
आँखें खोलो ऐ अंधी रात !

मुन्नू ने बेतहाशा गाड़ी भगायी। दस साल पहले एक बार उसने इसी तरह गाड़ी भगायी थी। वह राहगीरों को होशियार करता रहा, "हटो ! हट जाओ !" — घोड़ों को ललकारता रहा, "रुको मत राजा-रानी ! भाग चलो !" लेकिन इस तरह मुन्नू कहाँ जायेगा ? उसे भी अपनी जिंदगी का, अपनी जवानी का किस्सा खत्म होता सा लगा।

श्रीमती काफे का दरवाजा कई दिन बंद रहा। दरवाजे के शीशे पर उसी तरह लिखा है — श्रीमती काफे : पधारिए। लेकिन उस पर हलकी धूल जम गयी। घ रात को भजन के घर में सोने लगा। श्रीमती काफे के बरामदे में एक कुत्ता सोता रह

कुट्टी पगला भी वहीं जम गया। सिर्फ प्रियनाथ वगैरह मानो बेघर हो गये और कई दिन इधर-उधर भटकते रहे।

उसके बाद फिर श्रीमती काफे खुला। गौर के मामा उसे उसके बाप की कुर्सी पर बैठा गये।

भुन्नू मुंह बाये बालक गौर को देखता रहा। श्रीमती काफे का नया अध्याय शुरू हुआ। लेकिन भुन्नू को यही लगने लगा कि श्रीमती बेवा बावरी हो गयी है। उसकी हालत लाट साहब भजन की औरत की तरह है। लाट साहब को श्रीमती काफे से बड़ा लगाव था।

उसके बाद सन् १६४८ ई० के आखिर का एक दिन। इस बीच लंबा समय बीत चुका है। कई लंबे साल पीछे छूट गये हैं। उसी समय आये सर्वग्रासी द्वितीय विश्व-युद्ध और अकाल। लाखों की तादाद में लोग मरे। सन् बयालिस के संग्राम में और सन् छियालिस के आजाद हिंद दिवस पर सैकड़ों लोग शहीद हुए।

लेकिन आज इस सवेरे भी श्रीमती काफे उसी तरह खड़ा है। एकदम उसी तरह नहीं, थोड़ा-सा बदलाव आया है।

साइनबोर्ड उसी तरह है, लेकिन एक तरफ से जरा लटक गया है। बदरंग हो गया है! उसकी लिखावट भी धुंधली पड़ गयी है। दरवाजा पुराना लगने लगा है। कुछ कुर्सियां नयी आयी हैं। काफे के अंदर पुरानी तस्वीरें ज्यादातर नहीं हैं। भजन को रवीन्द्रनाथ ठाकुर, सिराजुद्दौला, मेरी और रैफेल के माता-पुत्र जैसी तस्वीरें बहुत पसंद थीं। अब वे तस्वीरें नहीं हैं। नारायण का चित्र भी नहीं है। खूबसूरत लड़कियों के चित्र वाले दो-तीन कैलेंडरों ने उनकी जगह ले ली है। दीवारघड़ी के अंक भी मानो घिस चुके हैं। उस घड़ी के नीचे चिपकाये एक कागज पर लिखा है — 'लिकर स्ट्रिक्टली प्रोहिबिटेड', याने शराब की सख्त मनाही है।

प्रोप्राइटर की कुर्सी पर कोई निर्जीव व्यक्ति बैठा है। शक्ल-सूरत से बेजान लगने पर भी उसके चेहरे पर बुद्धि की चमक है। वह मन लगा कर अखबार पढ़ रहा है।

उस व्यक्ति के पास एक लड़का झुका खड़ा है। उस लड़के को युवक ही कहना चाहिए। उसके सिर के बाल घने और घुंघराले हैं। काठी लंबी और बदन मजबूत। बड़ी-बड़ी आंखों में चमक की कमी है। उम्र के हिसाब से चेहरा बुढ़ा गया है। उस चेहरे पर कठोरता की छाप है।

बगल में बैसाखियां दबाये वह लड़का झुका खड़ा है। घुटने के थोड़ा ऊपर से उसका एक पांव नहीं है। हाफ पैंट के नीचे से वहां मांस का गोला लटक रहा है। अक्सर एक काबुली आ कर मांस के उस लोथड़े को दबाते हुए हंसता और भद्दा मजाक करता है। वह लड़का भी अपने पांव का वह हिस्सा देख कर हंसता है और कहता है कि अब इस मांस को कटवा दूंगा।

वह लड़का श्रीमती काफे का बावरची याने ब्वाय है। उसका नाम है निताइ। वह भजन का लड़का है।

भजन की मृत्यु के बाद गौर साल भर श्रीमती काफे मे बैठा था। लेकिन आश्चर्य की बात है कि साल भर के अंदर ही शांत-शिष्ट और सुंदर लड़का गौर एकदम दूसरी तरह का बन गया था। बुरी संगत मे पड़ कर उसका स्वभाव भी एकदम बदल गया था। इसलिए श्रीमती काफे की बागडोर संभालना उसके लिए संभव नही था। फिर कुछ ही दिनों मे श्रीमती काफे घटिया किस्म के बदमाशों का अड्डा बन गया था।

उसका विरोध करने वाला एकमात्र चरण था। प्रियनाथ ने भी गौर को समझाने की कोशिश की थी। लेकिन गौर ने उनको निकाल बाहर किया था।

कांग्रेस के लोग भी श्रीमती काफे से दूर हो गये। हीरेन अब कलकत्ता मे रहता है। कृपाल कांग्रेसी एम० एल० ए० बन गया है। अब वह कार मे बैठ कर इस रास्ते से जाता है तो शायद उसे श्रीमती काफे की याद भी नही आती।

प्रियनाथ ने एक दिन भजन के घर जा कर जूही से गौर की हरकत के बारे मे कहा था। इस पर जूही ने इतना ही कहा था, "भैया, उसे अपने बाप से विरासत में वह बात मिली है! फिर गौर जो ऐसा बना है, इससे मुझे जरा भी आश्चर्य नहीं है। अगर वह ऐसा न बनता तो शायद मुझे चिंता होती। अब रही श्रीमती काफे की बात, अगर वह उसे खत्म करना चाहता है तो करे। वह खत्म हो जायेगा तो यह सब सुनना भी नही पड़ेगा।"

उसके बाद प्रियनाथ जूही के चेहरे की तरफ देख भी न सके थे। शायद प्रियनाथ गौर के बारे मे और कोई रास्ता निकालते, लेकिन उसी समय सरकार ने कम्युनिस्ट पार्टी को गैर-कानूनी घोषित कर दिया। लिहाजा प्रियनाथ को भूमिगत होना पड़ा।

उसी समय हालदार बाबू अंतिम बार के लिए उठ खड़े हुए। उस उम्र में भी उन्होंने मुहल्ले मे घूम-घूम कर एक जने को श्रीमती काफे लीज पर दिया।

तब तक गौर हालदार पूरी तरह बिगड़ चुका था। बीड़ी-सिगरेट से बढ कर उसने शराब पीना शुरू कर दिया था। वह बदचलन भी बन चुका था।

प्राणहीन पुतली की तरह जूही वह सब देखती रही। उसकी आँखों की तरफ देख कर यह पता नही चलता कि उसे दुख है या आश्चर्य। रात को जब गौर सोता था, तब जूही उसे देखती थी। जूही को लगता था कि मानो भजन सो रहा है। लेकिन दूसरे ही क्षण उसका मन घिनाने लगता था और वह सिहर उठती थी। भजन और गौर, यह तो स्वर्ग और नरक का मुकाबला हुआ।

दूसरी तरफ मजे की बात यह रही कि हर साल श्रीमती काफे एक आदमी के पास से निकल कर दूसरे के पास पहुँचने लगा। हर आदमी कहने लगा कि श्रीमती काफे से सिर्फ घाटा होता है। श्रीमती काफे के प्रोप्राइटर की कुर्सी मानो अभिशप्त है

और अभिशप्त है वह दुकान। वहाँ कोई भी ज्यादा दिन नहीं टिक सकता। कोई-कोई कहने लगा कि लाट साहब भजन भूत बन कर उस कुर्सी पर बैठा है। अब उस दुकान को कोई नहीं चला सकता।

सचमुच श्रीमती काफे नहीं चलता। जो भी उसे लीज पर लेता है, उससे यही शर्त रहती है कि वह हर महीने एक निश्चित रकम जूही को देगा। लेकिन वह ज्यादा दिन उस शर्त पर अमल नहीं कर पाता। फिर भी श्रीमती काफे का ही एक भरोसा है। जूही चाहे जो कहे, श्रीमती काफे नहीं रहेगा तो वे सब खायेंगे क्या!

इतने दिनों बाद इस अंतिम घड़ी में हालदार बाबू बेचैन होने लगे। मानो इसी के लिए वे जिंदा हैं। बूढ़ी बकुल माँ जूही पर नाराज होती हैं। वे हालदार बाबू के लिए कहती हैं, "तुम लोग इस आदमी को शांति से मरने भी नहीं दोगे।"

जूही सोचती है कि सचमुच जिसे जिंदा रखना चाहिए था, उसी को तो जिंदा नहीं रख सकी! लेकिन किससे यह बात कहूँ और किसके आगे यह दुखड़ा रोऊँ? बिना कहे जो सब कुछ समझ लेता था और न देने पर भी जो सब कुछ ले लेता था, वह तो आज नहीं है। उस समय दर्द के बीच आग थी, लेकिन अब वह दर्द या आग कुछ भी नहीं है।

निताइ को एक मोटर कारखाने में भरती करने की बात चली थी। लेकिन उसका एक पैर काटना पड़ा। बड़ा ऊधमी लड़का! पेड़ से गिर कर उसके पाँव में खरोंच लगी और उसी से मामूली घाव हो गया। फिर वही घाव सड़ कर नासूर बना और पैर काटना पड़ा। उन बुरे दिनों में मानो उसे भी मौका मिला और वह अपंग बन कर बैठ गया। फिर वह ऊधम मचाना और बात-बात पर हँसना या गुस्सा करना भूल गया। शुरू-शुरू में वह रोज बगल में बैसाखी दबा कर गंगा के निराले किनारे चला जाता था। उस समय उसे सिर्फ अपने पिता की याद आती थी। फिर न जाने क्या सोच कर वह अपनी माँ जूही के पास भाग आता था। लेकिन वह कुछ कह नहीं पाता था। सिर्फ बैसाखी बगल में दबाये खड़ा रहता था। जूही कहती थी, "क्यों इस तरह खड़ा है नितू, थोड़ी देर बैठ जा।"

उसके बाद सन् बयालिस बीता। निताइ बैठा न रह सका। वह बगल में बैसाखी दबाये रोज श्रीमती काफे के बरामदे में जा कर बैठता रहा। दूसरी तरफ काफे का मालिक बदलता गया। अब वहाँ किसी राजनीतिक दल की बैठक नहीं होती। फिर भी पुलिस ने बार-बार श्रीमती काफे की तलाशी ली। शक्की तीखी निगाह से पुलिस-वालों ने एक टांग वाले निताइ को देखा।

आदमी न रहे, लेकिन श्रीमती काफे की ईंट-ईंट में राजनीतिक षड्यंत्र का इंधन भरा है। जब तक श्रीमती काफे रहेगा, तब तक यह इलाका आराम से नहीं रह पायेगा।

लेकिन निताइ को इससे मतलब नहीं [illegible] लि[illegible] साता। वह श्रीमती काफे को देखने के लिए आता है। वह चा[illegible] न न हो।

उसे कोई अधिकार नहीं है, फिर भी वह हर चीज को खुद अच्छी तरह देखता है।

निताइ श्रीमती काफे के पिछवाड़े के अँधेरे कमरे में भी झाँक कर देखता है। जरूरत पड़ने पर वह खुद झाड़ू लगा देता है। उस समय भी वह सोच नहीं सका था कि कभी इसी कमरे में उसे काम करने के लिए आना पड़ेगा। धुएँ की कालिख से काले मकड़ी के जालों से भरा यह अँधेरा कमरा कभी उसमें रोमांच पैदा करता था। इस कमरे से वह डरता था, इसे वह कभी अपना नहीं समझ सका था, क्योंकि यहाँ भूत है और यह कमरा काला है।

उसके बाद कम्युनिस्ट पार्टी पर से प्रतिबंध हटा और प्रियनाथ वगैरह बाहर आये। जापानी साम्राज्यवाद विरोधी आंदोलन उस समय कम्युनिस्टों का मुख्य काम हो गया। लेकिन फासिस्त विरोधी द्वितीय महायुद्ध की प्रकृति के बारे में वे देशवासियों को समझा नहीं सके। इस कारण उनको भयानक प्रतिक्रिया का सामना करते हुए अपमानित और लांछित होना पड़ा। उस प्रतिक्रिया के कारण कम्युनिस्ट आंदोलन मानो छिन्न-भिन्न होने लगा। लेकिन कम्युनिस्टों ने कभी हार नहीं मानी।

धीरे-धीरे देखा गया कि जिस-जिसने श्रीमती काफे का जिम्मा सँभाला, वे सभी किसी न किसी राजनीतिक दल से संबंधित हैं। इससे श्रीमती काफे में राजनीतिक चहल-पहल खूब बढ़ गयी। यहाँ तक कि हाथापाई और मारपीट भी हुई।

अंडमान से मुक्त हो कर नारायण आ गये। जूही के मन में भी शायद ऐसी आशा थी कि अब नारायण गिरस्ती का जिम्मा लेंगे। शायद नारायण ने भी इसे अपना कर्तव्य समझ कर कुछ दिनों तक इसकी कोशिश की।

नारायण की वह कोशिश देख कर घूंघट की आड़ में हँसना चाह कर भी जूही ने रो दिया। अब तक जूही कभी नहीं रोयी, लेकिन नारायण की हालत देख कर उसे रोना पड़ा। समुद्र के बीच एक अँधेरे टापू से मुक्त हो कर नारायण मानो दूसरी जगह कैद हो गये। जूही के कैदखाने में वे कैद हुए। रोज उनके पास तमाम लोग आते रहे और उनसे मिलने वालों का ताँता लगा रहा। इन कामों के सिलसिले में नारायण का भी बाहर निकलना जरूरी हो गया, लेकिन वे कैसे निकलते? भजन तो सब कुछ मझधार में छोड़ गया है न! अंडमान से लौट कर नारायण ने देखा था कि इस घर का खर्च चलना ही मुश्किल है। गौर का दिन भर पता नहीं रहता। निताइ अपंग है। और एक लड़का है मोंटू। वह साइकिल मरम्मत की किसी दुकान पर दिन भर पड़ा रहता है। वहाँ वह काम सीखता है। उसे पढ़ाने-लिखाने के लिए पैसा नहीं है। लेकिन नारायण ने उसका बाहर निकलना बंद कर दिया।

लेकिन नारायण क्या करें? क्या उनको नये सिरे से घर-गिरस्ती का बोझ ढोना है? इससे न वे खुद टिक पायेंगे और न यह गिरस्ती टिक पायेगी।

नारायण की हालत देख कर जूही चुप न रह सकी। जिंदगी में पहली बार वह घूंघट का सारा संकोच उतार कर जेठ नारायण के सामने आ खड़ी हुई। उसने "आप इस तरह बैठे रहेंगे तो क्या होगा?"

जूही की बातों से नारायण पर मानो घड़ों पानी पड़ गया। उन्होंने जल्दी-जल्दी कहा, "नहीं बहू, मैं कोशिश कर रहा हूँ। असल में घर-गिरस्ती का मामला मैं कभी-कभी समझ नहीं पाता, इसी लिए थोड़ी परेशानी होती है।"

"मैं घर-गिरस्ती की बात नहीं कर रही हूँ। आपकी यही एक घर-गिरस्ती नहीं, और भी है।" जूही बोली।

नारायण समझ नहीं पाये कि जूही क्या कह रही है। जूही ताना तो नहीं दे रही है?

जूही बोली, "आप सब कुछ छोड़-छाड़ कर घर में बैठे रहें, मैं यह नहीं चाहती। आपके लिए और भी कितने लोग इंतजार कर रहे हैं।"

"नहीं बहू, इस दुनिया में कोई किसी का इंतजार नहीं करता।"

जूही ने थोड़ा जोर दे कर कहा, "जी हाँ, इंतजार करता है। मैं तो अपनी आँखों से देख रही हूँ। देश के लोग आपको काला पानी से छुड़ा लाये। मैं भी तो देश के लोगों में हूँ। आप जल्दी जाइए और अपना काम शुरू कीजिए। मैं आपको रोक कर अपराधी नहीं बनना चाहती।"

नारायण का सीना गुब्बारे की तरह फूल गया। आँखों को सूखा रखना उनके लिए मुश्किल हो गया। उन्होंने कहा, "लेकिन घर को—"

जूही बोली, "घर को चलाने वाला चला ही लेगा। आप अपनी जान-पहचान के किसी भले आदमी के हाथ दुकान देते जाइए।"

नारायण सोचने लगे कि भजन तो सब को मझधार में छोड़ गया है। अब तो काफे ही एकमात्र भरोसा है।

आखिरी मुकदमे में हार कर हालदार बाबू ने भी कभी भजन की चाय की दुकान को ही तिनके का सहारा समझा था।

जूही की बात खत्म नहीं हुई थी। उसने कहा, "प्रमीला ननद का देहांत हो गया है।"

नारायण को यह खबर मालूम नहीं थी। कई क्षण वे हतप्रभ पागल की तरह खड़े रहे। फिर उन्होंने पूछा, "अरे! देहांत हो गया है। कब?"

"साल भर पहले। आपको एक बार देखने के लिए—"

"बहू!" नारायण ने मानो जूही को रोक दिया। मानो वे यह सब सुनना नहीं चाहते, सुन नहीं सकते। उनको मानो अब भी प्रमीला का वह स्वर सुनाई पड़ता है — अगर आप एक बार मेरे यहाँ नहीं आयेंगे तो मेरी जिंदगी का काफी हिस्सा सूना रह जायेगा!

जूही ने कहा, "अगर आप कभी रानाघाट जायँ तो प्रमीला ननद के पति से जरूर मिल लीजिएगा। प्रमीला ननद ने कहा है।"

नारायण गये थे। उन्होंने प्रमीला के पति से भेंट की थी। प्रमीला के पति बड़े सीधे-सादे संपन्न व्यक्ति हैं। उम्र काफी हो गयी है। इसलिए उन्होंने दोबारा शादी

नही की। उन्होंने नारायण से कहा था, "उसे रोक रखने की बड़ी कोशिश की थी भैया, लेकिन आपने बड़ी देर कर दी। शादी के बाद से उसे रोक रखना ही मेरा काम हो गया था, लेकिन आप जो इतनी देर कर देंगे, यह किसे पता था। आखिर एक इनसान की ही जिंदगी थी न, कितना उसे बरदाश्त होता ?"

इस पर नारायण ने उनको समझाने की कोशिश की थी। लेकिन उस सज्जन ने कहा था, "नहीं भैया, मुझे कहने दीजिए। जब तक ये बातें नही कह लूँगा, मुझे छुट्टी नही मिलेगी। आपको किस बात की परेशानी है ? किसी दिन आपको पुलिस की गोली लगेगी और आप चलते-फिरते चल बसेंगे। लेकिन मैं, मैं क्या करूँगा ?"

उस सज्जन ने हँसना चाहा था तो उनकी आँखो मे आँसू आ गये थे। उन्होंने कहा था, "मैं तो भैया, अब चुपचाप नहीं रह पाता। समझ गये न ? यह जो नवीन है न, इसे भी वह आपके जिम्मे कर गयी है। लेकिन मैं ? सच कह रहा हूँ भैया, अगर आप मुझको भी अपने साथ रख लें तो मैं निश्चिंत हो जाऊँ। अब यह अकेलापन अच्छा नही लगता।"

नारायण ने प्रमीला के पति के हाथ अपने हाथो मे ले कर सिर्फ इतना ही कहा था, "*अब आप शांत होइए।*"

उसके बाद दोनो ही असीम शून्य की तरफ देखते हुए खड़े थे। काफी देर तक वे महाशून्य को देखने लगे थे।

फिर श्रीमती काफे। जाते समय नारायण श्रीमती काफे यतीश बाबू नामक एक सज्जन को दे गये थे। यतीश बाबू को लोग कम्युनिस्ट विचार के समझते हैं।

श्रीमती काफे मे फिर प्रियनाथ वगैरह का अड्डा जमने लगा। लोग कहने लगे कि यह रेस्तोराँ नहीं, कम्युनिस्ट पार्टी का दफ्तर है। सचमुच कम्युनिस्ट पार्टी के प्रदेश स्तर के कोई नेता इस इलाके मे आते है तो श्रीमती काफे में उनका जरूर आना होता है। इसके अलावा कम्युनिस्ट पार्टी के लोग और उनके संगी-साथी तो दिन भर यही पड़े रहते हैं। वे कितने कप चाय पीते हैं, इसका कोई हिसाब नही रहता। असल में यह जगह उनके लिए बड़े मौके की है।

कभी-कभी यतीश बाबू बड़े गंभीर बने चुपचाप बैठे रहते हैं। असल मे वह सज्जन किसी के मुँह पर कुछ कह नहीं सकते। इसके अलावा वे भी तो उस मजमे में, उस राजनीतिक शोरगुल मे शामिल हो जाते हैं। फिर भी वे कभी-कभी नाराज हो कर कड़ी बात कह देते हैं, लेकिन किसी को मना नहीं कर सकते।

नवीन गांगुली इसी इलाके के कांग्रेसी एम० एल० ए० है। एक दिन उन्होंने कार से उतर कर श्रीमती काफे मे चाय पी थी। चाय पी चुकने के बाद उन्होंने यतीश बाबू से कहा था, "*यहाँ चाय का रंग भी लाल होने लगा है।* क्या आप भी प्रियनाथ वगैरह के दल के हैं ?"

यतीश बाबू ने झटपट कहा था, "जी नहीं।"

नवीन बाबू ने मुँह बना कर कहा था, "जी नहीं क्यों, जी हाँ कहिए न! अफसोस की बात है, इतनी पुरानी दुकान एकदम चौपट हो गयी। नारायण की वजह से ऐसा हुआ। अब इस दुकान को बंद कर देना चाहिए।"

कृपाल ने भी ऐसी बात कही है। शंकर घोष अब कलकत्ता कांग्रेस कमेटी के आदमी हैं और वहीं रहते हैं। हीरेन भी कलकत्ते में रहता है। सुनने में आता है कि आजकल वह भारत के तीर्थों को घूम-घूम देख रहा है और उनके बारे में प्राचीन सामग्री इकट्ठा कर रहा है। उसकी भाभी उसी के साथ कलकत्ता में रहने लगी हैं। भाभी अब कांग्रेस की नेता हैं। यहाँ उनकी बड़ी बदनामी हो गयी थी। लोग उनके चरित्र के बारे में तरह-तरह की बातें करने लगे थे।

कुट्टी पगला अब भी उसी तरह है। लेकिन वह एकदम बूढ़ा हो गया है। सिर के बाल पक गये हैं और चेहरे पर बड़ी-बड़ी दाढ़ी उग आयी है।

लेकिन चरण नहीं है। गौर ने जब श्रीमती काफे को सँभाला था और जब उसकी मौज-मस्ती चरम सीमा पर पहुँच गयी थी, तभी चरण श्रीमती काफे छोड़ कर नाडू पंडित की गली में चला गया था। उसने जिंदगी की लंबी राह पर निकल पड़ना चाहा था, लेकिन वह अकेला कहाँ जाता? उसका तो सब कुछ उस गली में पड़ा रहता। उस नौजवान वारवनिता ने उसे आशा दिलायी थी कि समय आने पर हम दोनों यहाँ से निकल पड़ेंगे। फिर हम दोनों को मुक्ति मिल जायेगी। लेकिन वह मुक्ति नहीं आयी। अब दोनों के बाल सफेद होने लगे हैं, लेकिन वह समय नहीं आया। आजकल लोग चरण को देख कर हँसते हैं, उसका मजाक उड़ाते हैं और उसके बारे में भद्दी-भद्दी बात कहते हैं। चरण के बदन पर भी गंदी बीमारी के लक्षण दिखाई पड़ने लगे हैं। धीरे-धीरे उसकी एक आंख खराब होती जा रही है। वही कानी आंख लिये वह कभी-कभी श्रीमती काफे के सामने आ कर खड़ा होता है। निताइ उसे देखते ही अंदर बुला लेता है।

श्रीमती काफे में आने पर चरण को स्यालदा स्टेशन की बात याद आती है। वहाँ वह भूखा-प्यासा, अशक्त-असहाय बुकिंग आफिस के सामने पड़ा था। भजन ने उसे सहारा दिया था। भजन सचमुच लाट साहब था, सचमुच एक मालिक। चरण को उस बाबू की भी याद आती है, जो जहाज पर उसे मिले थे। फिर नारायण और इरावती के किनारे का वह गांव भी चरण को याद आते हैं। उसी गांव में वह पैदा हुआ था।

यतीश बाबू के जमाने में निताइ श्रीमती काफे में आया। उसी ने एक दिन जूही से कहा था, "माँ, मैं तो बढ़िया खाना पका सकता हूँ। अब से मैं ही दुकान में खाना पकाया करूँगा। मैंने यतीश बाबू से कहा है। बेकार हर महीने एक आदमी तनखाह ले जाता है।"

बैसाखी के सहारे खड़े निताइ की तरफ जूही ने थोड़ी देर सूनी आंखों से देखा

था और कहा था, "ठीक है। जैसा तू अच्छा समझता है, कर !"

जूही समझ गयी थी कि अब निताइ अपने बाप की दुकान में नौकर बन कर जा रहा है। इसलिए माँ और बेटे, दोनों आमने-सामने थोड़ी देर सिर झुकाये खड़े थे। फिर किसी को किसी से कुछ कहने की जरूरत नहीं पड़ी थी। निताइ बैसाखी खटखटाता चला गया था। वह खट-खट जूही को विचित्र लगी थी। वह बैसाखी मानो जूही की छाती को सालने लगी थी। वह भाग कर छत पर चली गयी थी। फिर वहीं बुदबुदायी थी, "क्या विचित्र कारखाना निताइ के बाप ने खोला था !"

हालदार बाबू मरने वाले नहीं हैं। शायद बकुल भी उन्हें मरने नहीं देना चाहती। वे दिनरात हालदार बाबू के पास बैठी रहती हैं।

अंत तक हालदार बाबू के मन में एक इच्छा थी। वे चाहते थे कि जमीन के बारे में जो तमाम सही और गलत कागजात पड़े हैं, उनको गौर के जरिये काम में लगाया जाय। यानी मुकदमे शुरू किये जायें। लेकिन वह आशा निराशा में बदल गयी। फिर हालदार बाबू ने निताइ का सहारा लेना चाहा। लेकिन वह सहारा भी टूट गया। फिर प्रधान राय मंत्री बने हैं सुन कर हालदार बाबू को आशा बँधी। फिर बिस्तर पर पड़े-पड़े उन्होंने हिम्मत की। कभी कौंसिल के इलेक्शन में हालदार बाबू ने इस इलाके के सारे वोट प्रधान राय को दिलाये थे। उस इलेक्शन में सुरथनाथ बनर्जी हारे थे।

फिर गौर का कोई हिसाब बैठाने के लिए हालदार बाबू ने प्रधान राय को चिट्ठी लिखी थी और वह चिट्ठी गौर के ही हाथ से भेजी थी। कई दिन चक्कर लगाने के बाद गौर ने वह चिट्ठी प्रधान राय को दी थी। उस चिट्ठी का जवाब कृपाल के मार्फत आया था। जवाब में लिखा था कि फिलहाल गौर के लिए कुछ करना संभव नहीं है। यानी, नारायण के भतीजे के लिए सरकारी महकमे में कोई गुंजाइश नहीं है।

जवाब पढ़ कर हालदार बाबू ने कृपाल से सिर्फ कहा था, "निकल जा यहाँ से, निकल जा !"

गुस्से से तमतमाया कृपाल हालदार बाबू के पास से चला आया था। उस अपमान का बदला लेने के लिए वह बेचैन हो उठा था।

फिर १९४८ बीत चला। कम्युनिस्ट पार्टी फिर गैर-कानूनी घोषित हो गयी। प्रियनाथ फरार हो गया। कानू, बंगाली, मनोहर और माधव वगैरह जेल चले गये!

नारायण बहुत दिनों से विभिन्न जिलों का दौरा कर रहे थे। वे भी गिरफ्तार हो कर जेल गये।

श्रीमती काफे सूना हो चुका है। आजकल यहाँ साइकिल रिक्शा चलने लगा है। कई सौ साइकिल रिक्शे इधर-उधर घूमने लगे हैं। 'पुण्यमयी' बस नहीं है। लेकिन इस इलाके में नया बस-रूट चालू हो चुका है। आजकल कोई घोड़ागाड़ी में नहीं चढ़ता। लेकिन भुन्नू है। वह एकदम बूढ़ा हो गया है। उसे अफसोस है कि यह श-

श्रीमती काफे को नहीं समझ सका। वह यह भी नहीं समझ सका कि कैसे क्या हो गया। भजन भैया के बेटे को बावरची का काम करते देख कर भगवान पर से उसकी आस्था खत्म हो चुकी है। श्रीमती काफे से अब उसकी वह दोस्ती नहीं है। दोस्ती करने वाला आदमी ही नहीं रहा तो भुन्नू किससे दोस्ती करेगा? फिर भी कभी-कभी वह उस दुकान की तरफ देख कर चौंक पड़ता है। ऐसा लगता है कि कोई उसे भुन्नू सारथी कह कर पुकार रहा है। लेकिन अब तो वह सारथी नहीं रहा। अब तो वह कोचवान भी नहीं, बूढ़ा गाड़ीवान है!

अब वह मनिया, मिनिलोसा भी नहीं है। वह मर चुकी है। सूनी कोख, लेकिन छाती में महासागर का उल्लास समेटे वह चली गयी।

भवनाथ बाबू का कोई पता नहीं है।

श्रीमती काफे किसी तरह चलता है। अब चॉप-कटलेट खाने वाले लोग ढूँढ़ने पर भी नहीं मिलते। फिर इस इलाके में कितनी भीड़ बढ़ गयी है। पूर्वी बंगाल में घरबार छोड़ कर तमाम लोग इधर, याने पश्चिम बंगाल में चले आये हैं। शतरंज के मोहरे की तरह वे लोग चारों तरफ बिखर गये हैं।

फिर भी श्रीमती काफे पर कड़ी निगाह है। अँधेरी रात में अदृश्य प्रेत की आँखें मानो उसकी चौकसी करती हैं। श्रीमती काफे की ईंट-ईंट से धमाका होने की संभावना है।

रात में यहाँ दीवारों पर लाल रंग के पोस्टर चिपकाये जाते हैं। उन पोस्टरों इस सरकार को हटाने का आह्वान रहता है। आम आदमी की तरफ से भोजन-वस्त्र और जिंदा रहने की क्षुब्ध माँगें उन पोस्टरों में लिखी रहती हैं।

उन पोस्टरों की वजह से मुखबिरों और खुफियों की बेचैन निगाहें हर मुहल्ले में दीवारों और पेड़ों पर दौड़ती हैं। फिर भी पता नहीं चलता कि कौन वे पोस्टर चिपका रहे हैं। फिर सब की निगाहें श्रीमती काफे की तरफ जाती हैं।

शायद उस समय श्रीमती काफे के अँधेरे कमरे में निताइ की नींद खुल जाती है। आजकल वह वहीं सोता है। फिर उसे नींद नहीं आती। बगैर बैसाखी के वह एक टांग पर खड़ा होता है। उस पर विचित्र सनक सवार होती है। वह उछल-उछल कर पीछे के कमरे में जाता है। उस समय वह एक टांग वाला प्रेत जैसा लगता है। वह देखता है कि पीछे वाला टट्टर ठीक से लगा है कि नहीं। फिर अचानक वह बत्ती जलाता है। बत्ती जलते ही उसकी बेढब परछाईं टट्टर पर पड़ती है।

अचानक रोशनी हो जाने से चूहे और छछूंदर डर कर भागते हैं। तिलचटा निताइ की अकेली टांग पर चढ़ने लगता है। निताइ उसे झाड़ कर दूर फेंकता है और कहता है, "स्सा-ला!"

निताइ की तरफ देख कर पिंजड़े में बंद मुरगा पंख फड़फड़ाने लगता है। शायद वह मुरगा सोचता है कि अब यह एक टांग वाला जल्लाद मेरी गरदन पर तेज छुरी चलायेगा। वह कटी टांग से मुरगे को दबा कर उसका गला काटता है।

फिर बत्ती बुझाने के बाद सामने वाले कमरे में आ कर निताइ अपने बाप की कुर्सी देखता है। अब उस कुर्सी पर वह कभी नहीं बैठता। अब उस पर बैठने का उसे अधिकार नहीं है।

सचमुच निताइ का चेहरा अचानक बड़ा भयानक लगने लगता है। वह बहुत धीरे-धीरे अपनी कटी टांग पर हाथ फेरता है।

यतीश बाबू अखबार पढ़ रहे हैं। बैसाखी बगल में दाबे झुक कर निताइ वहीं देख रहा है। सवेरे का समय है। थोड़ी देर पहले श्रीमती काफे खुला है। अभी तक सब रिक्शेवाले नहीं आये हैं। मुन्नू नहीं आया है! स्टेशन पर मुसाफिरों की भीड़ भी नहीं है।

ऐसे ही समय हथियारबंद पुलिस की गाड़ी आयी। ड्राइवर के पास बैठे कोई बड़े अफसर नीचे उतरे। उनके हाथ में तलाशी लेने का परवाना और कुछ कागजात हैं। चेहरे से अधेड़ लगे। सिर के बाल अधपके। उम्र के कारण शरीर मोटा हो गया है। आँखों में कौतूहल लिये वे चारों तरफ देखने लगे। श्रीमती काफे को देख कर उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ।

उस अफसर ने यतीश बाबू से पूछा, "आप इस होटल के मालिक यतीश वंद्योपाध्याय हैं?"

"जी हाँ।"

"क्या यहाँ कम्युनिस्ट पार्टी का गुप्त कार्यालय है?"

"नहीं।"

"हम लोग देखेंगे।"

मामूली तलाशी हुई। कुछ नहीं मिला।

उधर सड़क पर भीड़ लग गयी है। पुलिसवाले भीड़ को हटाने लगे। वह अफसर घूम-घूम कर होटल को देखने लगे। फिर अचानक उन्होंने यतीश बाबू से पूछा, "-हले की तस्वीरें नहीं हैं? भजन बाबू के समय यहाँ दीवार पर कई तस्वीरें थीं।"

यह वही नौजवान पुलिस अफसर हैं। उस समय वे कभी यहाँ सिर ऊंचा किये नहीं घुस सके थे। लेकिन आज घुस सके हैं। पहले वे यहाँ जिन लोगों को पकड़ने आते थे, उन्हीं में से कइयों के हुक्म पर आज उनको यहाँ आना पड़ा है। यतीश बाबू से उन्होंने पूछा, "क्या आप कम्युनिस्ट पार्टी के मेम्बर हैं?"

यतीश बाबू बोले, "जी नहीं।"

"आपको एक बार थाने चलना पड़ेगा।"

अचानक यतीश बाबू के चेहरे का रंग उड़ गया। फिर भी उन्होंने कहा, "चलिए।"

फिर पुलिस अफसर ने कहा, "यह लीजिए सरकारी आर्डर। श्रीमती काफे में मैं ताला बंद करके जाऊँगा। सरकार इसे खुला रखना नहीं चाहती।"

इतना कह कर उस अफसर ने निताइ की तरफ देखा। पूछा, "क्यों रे छोकरा, क्या नाम है तेरा?"

पूछने के ढंग से निताइ के बदन में मानो आग लग गयी। फिर भी उसने कहा, "निताइ हालदार।"

"बाप का नाम?"

"भजनानन्द हालदार।"

मानो उस अफसर को विश्वास नहीं हुआ। अचानक वे सहम गये। फिर धीरे-धीरे बोले, "याने भजन बाबू। तुम भजन बाबू के लड़के हो?"

निताइ ने इस सवाल का जवाब नहीं दिया। पुलिस अफसर ने पूछा, "तुम्हारा पाँव कैसे —"

बैसाखी खटखटाता निताइ पीछे वाले कमरे में चला गया। थोड़ी देर पहले उसने चूल्हा जलाया था, पानी डाल कर उसे बुझा दिया। पिंजड़े में मुरगा बंद था। निताइ ने उसे बाजार के पिछवाड़े छोड़ दिया। अचानक मुक्त हो कर मुरगा थोड़ी देर सहमा खड़ा रहा। फिर धीरे-धीरे उसने गर्दन हिलायी। उसके बाद वह दौड़ कर एकदम बाजार के पीछे खुली जगह पर पहुँच गया और कूड़े-करकट में चोंच मार-मार कर कीड़ा-मकोड़ा पकड़ने लगा। एक सिपाही यह सब देखता रहा।

उसके बाद आगे वाले कमरे में आ कर निताइ ने यतीश बाबू से कहा, "आप जाइए। मैं जा कर माँ को बता दूँगा।"

पुलिस अफसर ने अचानक निताइ को बुलाया। वे निताइ के लिए कुछ करना चाहते हैं। भजन ने उनका बड़ा अपमान किया था। निताइ के लिए कुछ करके वे उसी का बदला लेना चाहते हैं। इस तरह वे फिर सिर ऊँचा करके श्रीमती काफे में आ सकते हैं।

निताइ पास आया तो पुलिस अफसर ने उससे कहा, "तुम किसी दिन कलकत्ते आ कर मुझसे मिलना। मैं समझ रहा हूँ कि यही तुम लोगों का आखिरी सहारा है। मैं नहीं चाहता कि यह बंद रहे। तुम आ जाना, मैं तुम्हारे नाम से यह दुकान खुलवा दूँगा। ठीक है न? मैं सारा इंतजाम कर दूँगा। जरा समझ कर चल[illegible] परेशानी नहीं होगी। सचमुच तुम शरीफ घर के लड़के हो। मैं इस [illegible] राजी कर लूँगा। ठीक है न?"

पुलिस अफसर ने मन ही मन कहा — साँप का बच्चा, सँपोला है ! नॉनसेन्स ! —शायद आज भी उनका सिर नीचा हुआ, इसलिए उन्हें गुस्सा आने लगा।

श्रीमती काफे को बंद करके पुलिस वाले चले गये।

वातावरण में जाड़े का रूखापन है। चारों तरफ तमाम पेड़ खड़े हैं, लेकिन किसी में पत्ते नहीं हैं। हवा में धूल और धुआँ है। मानो सब कुछ सिकुड़ा-सिमटा है। वह आसमान, धूल, मिट्टी, सब कुछ।

फिर भी दक्षिण से समुद्री हवा का झोंका रुक-रुक कर आ रहा है। जाड़ा मानो अँगड़ाई ले कर वसंत में बदलने लगा है।

निताइ ने आ कर जूही को सब कुछ बताया। जूही ने सब कुछ सुना। उसे जरा भी आश्चर्य नहीं हुआ। हालदार बाबू ने भी सुना, लेकिन वे कुछ समझ नहीं सके। उनके चेहरे से ऐसा ही लगा। अब तो उनको सुनाई भी नहीं पड़ता।

उस पुलिस अफसर के बारे में भी निताइ ने बताया। फिर भी जूही को आश्चर्य नहीं हुआ। उसने आँखें फाड़-फाड़ कर निताइ के कठोर चेहरे की तरफ देखा।

फिर निताइ का एक हाथ अपने कंधे पर रख कर जूही ने उसकी बैसाखियों को हटाते हुए कहा, "अब उन दोनों को छोड़, जरा मेरे सहारे खड़ा रह बेटा। मैं उन दोनों को देख नहीं सकती।"

निताइ बोला, "कब तक आपके सहारे खड़ा रहूँगा माँ ?"

जूही बोली, "क्यों मेरे सहारे खड़ा रहेगा ? क्या इसलिए मेरे पास नहीं आना चाहिए ? तेरे बिना मेरी छाती बड़ी सूनी लगती है।"

हवा आ रही है। उत्तर के दबाव को हटा कर दक्षिण से हवा आ रही है। निताइ को अपनी गरम जबान का स्वाद नमकीन लगने लगा।

--